श्रीः

नवबर्षाङ्क

श्रीस्वाध्याय

शरदङ्क

वर्ष
१३
सं० २०१०

संख्या
१
आश्विन

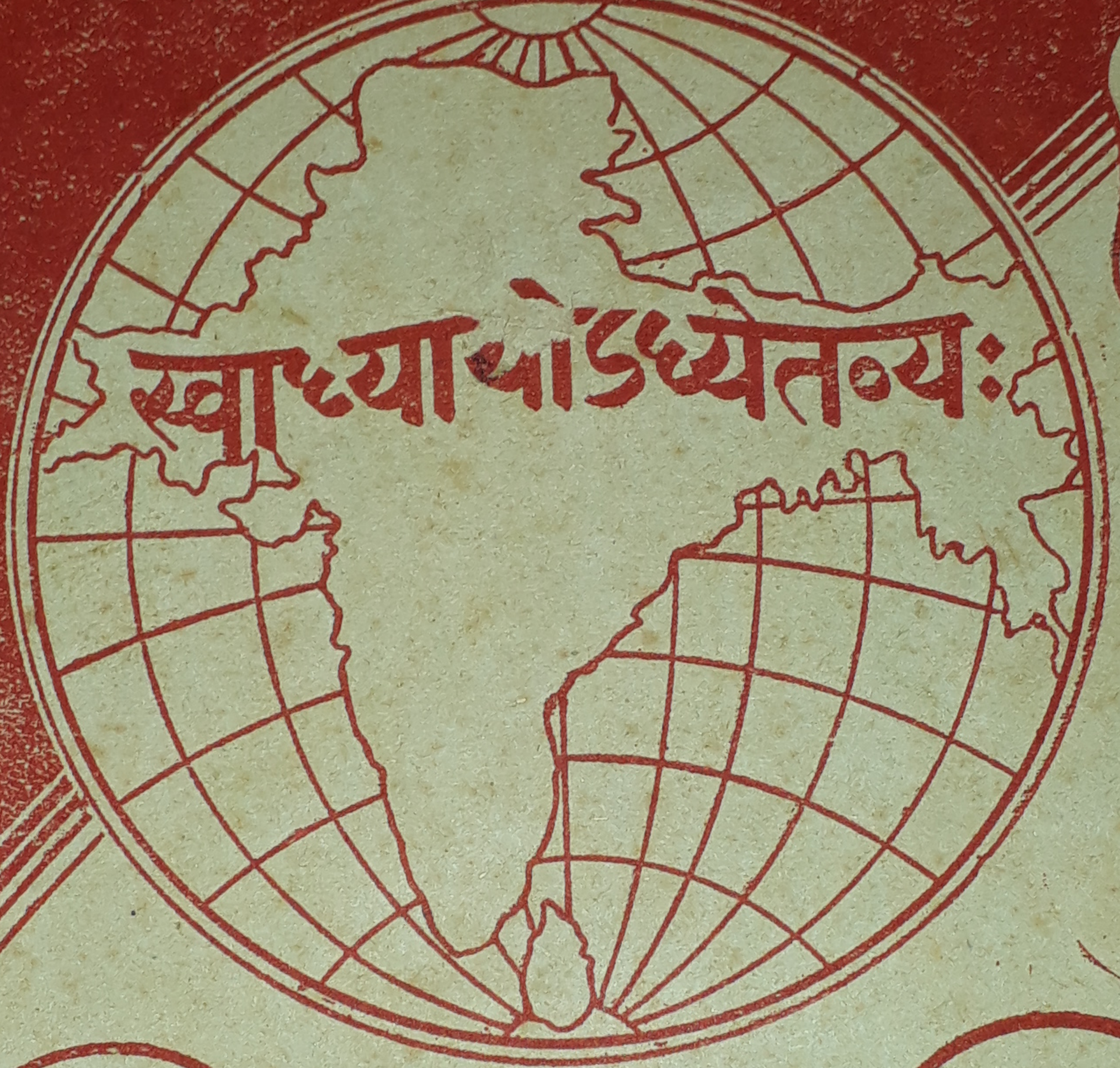

वार्षिक
मूल्य
४।)

इस अङ्कका
मूल्य २)रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय'के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।-) है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथ माङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे)ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजया दशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्र क अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न ले च हें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सक हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ) तकके शेष अङ्कों मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना ती अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।) रु० और एक अ का मूल्य १।-) मनी आर्डर द्वारा पेशगी आ चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्य ग्यारह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधि बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पू फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अ ना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्प अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्म न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' श नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक म वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफे कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसी नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्त दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी ति (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी स धानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होने तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहि बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दि जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवज महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री१०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।
श्रीमान् भाई चूहरमलजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली।
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी
श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलऑनर, लहरागागा [पटियाला-राज्यसंघ]
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यूअमरटाकीज, अजमेरीगेट, दिल्ली।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]
श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर [आसाम]

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	श्रीस्वाध्याय-महिमा [संस्कृत पद्य]	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	५
२	तेरहवें वर्ष में पदार्पण	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	६-८
३	प्रमाद [कहानी]	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	९-१४
४	मानस पर विचार	श्री पं० रामजीलालजी वेदपाठी कर्मकाण्ड-केसरी	१५-१६
५	श्रीमहानुभव-शक्तिस्तवः	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	१७-१८
६	स्वातन्त्र्य	श्री प्रो० बलजिन्नाथजी पंडित शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल.	१९-२१
७	श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्	श्री पं० रमानंदजी सारस्वत शास्त्री ज्यौतिषाचार्य	२२-२४
८	चरकसंहितामें आत्मविवेचन	श्री पं० नंदकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य	२५-२७
९	दीपावली	श्री पं० निरञ्जन शर्माजी 'अजित'	२८-३०
१०	शारदीय सुषमा		३१-३२
११	सफलताकी कुञ्जी	श्री वसन्त रामचन्द्र जवलकर	३३
१२	भारतीय युगगणना	श्री अम्बालाल गोविन्दराम दवे बी. एस. सी.	३४-३६
१३	पृथ्वीकी परिभाषा		३७-३९
१४	मृत्युसे मत डरिये	श्री पं० मुरारिलालजी शर्मा 'सुरस' बी. ए.	४०-४१
१५	अनुभूत योगमाला	श्री पं० तारादत्तजी राजगुरु ज्योतिषालंकार	४२
१६	ज्ञान और विज्ञान	महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानंदजी	४३-४५
१७	पौराणिक देव चरित्र चर्चा	श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत वि० वा०	४६-५२
१८	श्रीकृष्ण-पंचाशिका	श्री म० म० पं० कुञ्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर	५२-५३
१९	तुलालग्नजातक	श्री पं० अम्बालाल गोविन्दरामजी दवे बी० एस सी०	५४-५५
२०	व्यापार-चन्द्रिका	श्री पं० कृष्णदत्तजी शर्मा ज्योतिर्विद्	५६-५९
२१	तेजी-मंदी-पद्धति	श्री मनुभाई शाह	६०-६१
२२	अटल सिद्धान्त	श्री पं० कृष्णदत्तजी शर्मा ज्योतिर्विंद्	६१-६२
२३	अनुभूतयोग	श्री बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया गणकचूडामणि	६२
२४	अनुभूतयोगमाला	राजगुरु श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी	६३
२५	रुई तिलहन चांदी सोनाकी तेजी-मंदी	श्री मनुभाई एस-शाह कमर्शियल एस्ट्राबाजार	६३-६५
२६	व्यापारिक अनुभूत जनरल योग	श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिर्विंद्	६५
२७	युगोंमें मनुष्यायुः की भिन्नता	श्री पं० चिमनलालजी शर्मा ज्योतिषी गणितमार्तण्ड	६६-६८
२८	पाश्चात्य ज्योतिष		६८-७१
२९	चांदी सोनेका त्रैमासिक व्यापार भविष्य	श्री डा० अमरदत्तजी मिश्र राजवैद्य	७२-७३
३०	काश्मीर पर शनिका कुप्रभाव	श्री पं० गेन्दनलालजी ज्योतिषाचार्य	७४-७५
३१	भारतीय नारी जीवन	श्री राजगुरु पं० हरिदत्तजी शास्त्री	७५-७७
३२	श्रीमानस-विचार	श्री पं० यशोदानन्दनजी गौड़ आचार्य साहित्यरत्न	७७-७८
३३	भाग्यफल	श्री पं नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य	७९-८२
३४	सत्य और स्वप्न का विश्लेषण [कविता]	श्री पं० रमानन्द सारस्वत शास्त्री साहित्यरत्न	८३

३५	त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट	श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण	८३-८४
३६	व्यापारिक तेजी मन्दी	श्री यादवचन्द्र जी जैन ज्योतिर्विद्	८५
३७	चांदीके अचूक चान्स	श्री पं० रतिरामजी शर्मा शास्त्री	८६
३८	गौमाताका वध होते रहना क्या उचित है ?	भक्त श्री रामशरणदासजी	८७-९०
३९	सट्टा मार्केटोंके अचूक चान्स	श्री पं० गणेश दैवज्ञ ज्योतिषाचार्य	९०-९१
४०	त्रैमासिक व्यापार रुख	श्री गणेश, विद्यासागर, विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञ	९१
४१	त्रैमासिक व्यापार विमर्श	श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण	९२-९५
४२	त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय	'श्री विश्वविजय पंचाङ्ग' से	९५-९६
४३	त्रैमासिक भविष्यप्रकाश	श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य	९७-९८
४४	प्रगति या लिप्सा वृद्धि	सम्पादकीय	९९-१०१
४५	सामयिक टिप्पणियाँ	,,	१०१-१०५
४६	दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य	१०६-१११
४७	अनुभूत तेजी मन्दी और राशिफल	श्री राजाराम जैन ज्योतिषरत्न	१११-११२
४८	न्यूयार्क काटन फीगरकी तेजीमन्दी	श्री गणेश, विद्यासागर दैवज्ञ	११२

आवश्यक सूचना

गताङ्कमें सूचना दी थी कि जो २०० ग्राहक सर्व प्रथम 'श्रीस्वाध्याय' के तेरहवें वर्षका मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे उन्हें १५ दिनका एक वस्तुका चांस या दैनिक रुख तथा प्रकाशित होने वाली ॥) मूल्यकी पुस्तक उपहारमें भेजी जावेगी। तदनुसार एक मासके अन्दर ही दो सौ ग्राहकोंका मूल्य प्राप्त हो गया और अनेकों व्यापारियोंने दो आनेका टिकट भेज कर १५ दिनकी रुख मँगवाई, उन सबको कार्यालयसे श्री मनुभाई शाहका स्पेशल चांस और दैनिक रुख भेजी जा चुकी थी। पुस्तक छप रही थी, अतः चांसके साथ नहीं भेजी जा सकी। अब यह पुस्तक 'श्रीमहानुभवशक्तिस्तव' छप कर तैयार है, अतः जो ग्राहक मँगवाना चाहें वे डाक व्ययके लिए दो आनेके टिकटके साथ अपनी ग्राहक संख्या लिख भेजें, ताकि यह पुस्तक भेज दी जावेगी। कई ग्राहक अभी तक १५ दिनकी रुख और स्पेशियल चांस मुफ्तमें मँगवानेके लिए हमें लिख रहे हैं. परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि यह सुविधा हमने केवल सबसे पहले चन्दा भेजने वाले दो सौ ग्राहकोंको ही दी थी, न कि सदाके लिए सब ग्राहकोंको। अब किसी भी वस्तुका एक मासका स्पेशल अचूक चांस उन्हीं सज्जनोंको बिना मूल्य (फ्री) भेजा जावेगा, जो कमसे कम २ नये ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य १२॥) मनीआर्डर द्वारा कार्यालयमें भिजवा देंगे। दो नये ग्राहक बनाने वाले सज्जनोंको यदि वे चाहेंगे तो दिसम्बर जनवरी मासकी न्यूयार्क-काटन-फीगरकी तेजी मंदी भी फ्री भेजी जा सकेगी। श्रीस्वाध्याय अब वी० पी० से किसीको नहीं भेजा जायेगा। मूल्य मनीआर्डरसे भेजें।

अपनी नयी ग्राहक संख्या स्मरण रखिये

इस तेरहवें वर्षसे श्रीस्वाध्यायके सब ग्राहकोंका ग्राहक नम्बर बदल दिया गया है। विगत १२ वर्षोंमें बहुत से पुराने ग्राहक टूट गये कई नये बन गये और पश्चिमी पंजाबके पाकिस्तानमें चले जानेसे भी सैंकड़ों ग्राहक इधर उधर हो गये। अतः इस तेरहवें वर्षसे ग्राहक संख्या हमने १ से आरम्भ करके सबकी बदल दी है और सब रजिस्टर नये बना लिये गये हैं। जिस क्रमसे तेरहवें वर्षका मूल्य हमें प्राप्त हुआ उसी क्रमसे ग्राहक संख्या लगाई गई है। पत्र व्यवहारमें अब इसी नये नम्बरका उल्लेख करना चाहिए। आठआने मूल्य वाली पुस्तक प्राप्त करनेके लिए वे ही सज्जन दो आनेका टिकट भेजें। जिनकी ग्राहक संख्या २०० तक है। २०० से अधिक ग्राहक नम्बर वाले सज्जन यदि यह पुस्तक बिना मूल्य प्राप्त करना चाहें तो उन्हें एक नये ग्राहकका मूल्य भिजवाना होगा।

—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूल मात्र है। मूल्य ॥) डाक व्यय दो आने अलग।

श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याके साथ मुद्रित होकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है, मूल्य ॥) आठ आना। 'श्रीस्वाध्याय' के तेरहवें वर्षके नये ग्राहकोंको केवल डाकव्यय दोआने भेजने पर यह पुस्तक प्राप्त हो सकेगी। और लोगोंको दश आनेमें मिलेगी। यह पुस्तक कितनी उपयोगी एवं महत्वमण्डित है यह सब देखने पर ही विदित होगा।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवाद सहित तृतीय संस्करण।

२. श्रीसप्तपदी-हृदय, द्वितीय-संस्करण संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रान्ति-पंचदशी, द्वितीय संस्करण संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

छप गया ! शीघ्र मँगाइये छप गया

श्रीसनातनधर्मालोक

जिस महाग्रन्थकी धार्मिक संसार बहुत समयसे प्रती
कर रहा था—वह ग्रन्थमाला रूपसे प्रकाशित होना प्रार
हो गया है। इस महाग्रन्थके तीन पुष्प विकसित हो
हैं। इसमें ५० से अधिक विषयों पर विचार किया गया
४०० के लगभग पृष्ठ हैं। इस ग्रन्थके पढ़नेसे अनुसन्
की प्रवृत्ति वालोंको तथा अपनी धार्मिक शङ्काओंका समा
चाहने वालोंको बहुत आनन्द प्राप्त होगा।। शंकाएँ
होंगी। प्रश्नोंके उत्तर देनेका ढंग आवेगा। इसमें ऐत
महिदास, ऐलूष कवष, वसिष्ठ, सत्यकाम जावाल, वाल्मी
पुराणके वक्ता सूत, कक्षीवान्, व्यास, पाराशर, मतंग, श्रव
कुमार, आदिके कुल पर भी विचार किया गया है कि
नीच कुलके थे, वा उच्च कुलके ? शबरीके जूठे बेरों पर, स
और शूद्रके वेदाधिकारानधिकार पर भी विचार किया ग
है। पुस्तक वस्तुतः ही उपादेय है। थोड़ी प्रतियां छपी है
देर करने पर द्वितीय संस्करणकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आ
ही मंगानेका आर्डर दीजिये। मूल्य ३।), डाक व्यय एक पुस
का ॥=), दो का ॥≡), तीन का १।) पता—
पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत, सनातनधर्मालोक-कार्याल
रामदल, दरीबा, देहली

सं० २०११ विक्रमी सन् १९५४-५५ ई० का

"श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग"

(सम्पादक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य)

इस पंचाङ्ग में सदा की भांति अन्यान्य अनेक विशेषतायें तो हैं ही, साथ ही देशमें कांग्रेस, साम्यवादी समाजवादी और संघ सभा आदिकी प्रगति कैसी रहेगी ? तीसरा विश्वयुद्ध कब होगा ? इत्यादि प्रश्नोंका शास्त्रीय आधार पर विवेचनात्मक उत्तर लिखा गया है। काश्मीरका भविष्य, नेताओंकी जन्मकुण्डलियोंका विचार तथा सभी राजनैतिक सामाजिक धार्मिक और व्यापारिक हलचलोंके सम्बन्धमें इतना शुद्ध प्रामाणिक भविष्य आपको अन्य किसी पंचांगमें नहीं मिलेगा। १०४ पृष्ठके इस विशाल पंचांगका मूल्य ॥।=) चौदह आने। डाक रजिस्ट्री खर्च॥≡) अलग। थोक व्यापारियों और बुकसेलरोंको एक सौ या अधिक पंचांग मंगवाने पर भरपूर कमीशन मिलेगा। वी० पी० से एक पंचांग १॥=) में पड़ेगा अतः जितने अधिक मंगावेंगे उतना ही लाभ रहेगा। कार्तिक मासके अन्त तक २०११ का यह पंचाङ्ग प्रकाशित हो जाएगा। वर्तमान वर्ष सं० २०१० के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' की अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं, शीघ्र मंगवा लें।

प्रकाशक— **गोयल ब्रादर्स थोक पुस्तकालय, दरीबा कलां, दिल्ली**

स्वाध्यायोऽध्येतव्य

वर्ष १३

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

श्रीस्वाध्याय

(नव-वर्षाङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १३ | सोलन, आश्विन शु० १० शनिवार सं० २०१० वि० | संख्या १

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमायरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

श्रीस्वाध्याय-महिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

समर्प्य स्वान्तं स्वं विषयरुचये वस्तुनिचयं
नरः संगृह्णानः प्रकृतिकृपणो वित्तमिव चेत् ।
अनर्हः कल्याणं कलयितुमयं चित्रमिह किं
विहाय स्वाध्यायं क इह सदुपायं कथयतु ॥१॥

स्वतन्त्राणां वार्ता अथ विविधवृत्तीः परवतां
सखीन्स्वान्साकं तैर्व्यवहरणयोग्यां बुधकलाम् ।
प्रचारं चारीणां गमयति चराणां विचरणं
स नः श्रीस्वाध्यायः प्रलयमवसादं गमयतु ॥२॥

तेरहवें वर्षमें पदार्पण

श्रा भारती भारतीभिः सजोषा इला देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं सदन्तु ॥

'श्रीस्वाध्याय' का जन्म श्राजसे बारह वर्ष पहले हुश्रा था। किसी भी व्यक्ति श्रौर संस्थाके लिए प्रा १२ वर्ष चिन्ता, सङ्कट श्रौर अनिश्चितताके होते हैं। इन वर्षोंके पार हो जाने पर ही जीवनके दीर्घायु होनेको श्रा बंधती है श्रौर कुछ जीवनमें स्थिरता श्राती है। ज्योतिशशास्त्रमें भी बालकके प्रारम्भिक बारह वर्ष बालारिष्ट का माने जाते हैं। इस बालारिष्ट कालको 'श्रीस्वाध्याय' ने पार कर लिया है। इस श्रङ्कसे 'श्रीस्वाध्याय' तेरहवें में प्रवेश कर रहा है। पिछले बारह वर्षोंमें विश्वकी जैसी स्थिति रही वह सब जानते हैं। भारतमें भी द्वितीय म युद्धके कालसे श्रारम्भ कर जो मँहगाई बढ़ी वह सुरसाके मुखकी भांति बढ़ती ही गई श्रौर श्राज भी उसमें विशेष श्रन्तर नहीं श्राया है। इसके साथ ही 'श्रीस्वाध्याय' जैसे एक साधन सुविधारहित सांस्कृतिक पत्रके लि जो श्रन्य विविध समस्याएं बढ़ती रहीं उन सबका यदि उल्लेख करने बैठें तो पृथक् पुस्तक बन सकती है। विगत बा वर्षके विकराल कालमें बड़े-बड़े शक्ति श्रौर साधन सम्पन्न पत्र जिनके श्रपने विशाल मुद्रणालय (प्रेस) थे, श्र श्रच्छी श्रार्थिक सहायता श्रौर सहस्रोंकी संख्यामें ग्राहक थे वे भी रुद्ध हो गए। जहां बहुतसे साथी पत्र तो श्रप जीवन लीला ही इस श्रवधिमें पूरी कर चुके, वहाँ बारह वर्षकी लगातार कड़ी धूप श्रौर शीतको सहन करता हु 'श्रीस्वाध्याय' नियमित-रूपसे निश्चित समय पर बराबर निकलता रहा इसे पराम्बा श्रीजगदम्बाकी कृपा श्रौर वी राग श्रात्मनिष्ठ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्राचार्यचरण श्री १०८ श्रमृतवाग्भवजी महाराजके शुभाशीर्वादका पु प्रताप ही कहा जा सकता है—जो येन केन प्रकारेण यह कार्य हमारे जैसे श्रकिञ्चन व्यक्तिके हाथोंसे सम्पन्न हो सका जहाँ तक हमसे बन पड़ा इसे यथाशक्ति सुन्दर रूप देनेका ही यत्न किया गया, तथापि जैसा बन पड़ा वह विज्ञ पाठ के समक्ष है।

कालको श्रथर्ववेदने सबका ईश्वर श्रौर प्रजापतिका पिता कहा है—

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः॥ (श्र० १९।५३।८)

वेद कहता है कि काल ही ब्रह्म बनकर परमेष्ठिको धारण करता है—

तेने सितं तेनजातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम्।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा विभर्ति परमेष्ठिनम्॥

यही नहीं ऋषियोंका विश्वास रहा है कि काल ही भूत श्रौर भविष्यको उत्पन्न करने वाला है।

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा।
कालादृचः समभवन् यजुः कालदजायत॥

महर्षियोंने वेदोंको विद्या श्रौर ज्ञानका मूल-स्रोत कहा है, उन वेदोंका जन्म भी श्रथर्व ऋषिके श्रनुसार का से हुश्रा है। 'श्रीस्वाध्याय' ने कालकी इस महिमाका सर्वप्रथम श्रनुभव किया। उसका ज्ञान जन-जनमें प्रसा रित करनेके लिए श्रपना जीवन श्रर्पित कर दिया। 'दैवज्ञकी दृष्टि' का सर्वत्र स्वागत हुश्रा श्रौर उसकी प्रामाणिकत

सर्वत्र स्वीकृत की गई। यह हम मानते हैं कि इस दिशामें अभी बहुत कुछ करना शेष है। जनतामें अभी इसके प्रति उत्सुकता उत्पन्न हुई है। जिज्ञासाका उत्पन्न होना अभी शेष है। और कालगणना पर शास्त्रीय चर्चा होने में तो अभी और देर लगेगी। पर हम निराश नहीं। फलित ज्योतिषके प्रति शिक्षित जनतामें रुचि जिस तेजीसे बढ़ रही है उसको देखते हुए आशा बंधती है वह दिन दूर नहीं जब ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन अध्यापन न केवल विश्वविद्यालयोंमें अपितु प्रत्येक पाठशालाओंमें भी स्थान पायेगा और नागरिक शास्त्रके समान इसका प्रारम्भिक ज्ञान भी प्रत्येक बालक बालिकाओं के लिए आवश्यक समझा जायगा। हम उस दिनकी भी प्रतीक्षामें हैं जब राष्ट्रिय अनुसन्धानशालाओंके समान काल गणनाके लिए अनुसन्धान-भवनों और वेधशालाओंका निर्माण होगा तथा राष्ट्रपति वा प्रधानमन्त्री उनका उद्‌घाटन करेंगे और भारतके प्राचीन ऋषियोंकी अमूल्य देनमें प्राप्त इस ज्ञानकी रक्षा के आगे वृद्धि की जायेगी। भूतमें हमारे प्रयत्न इसी दिशामें रहे हैं और भविष्यमें भी हमारे प्रयत्न इस यकी पूर्तिकी ओर अग्रसर होंगे।

‘श्रीस्वाध्याय’ ने जीवनको एकाङ्गी रूपमें नहीं देखा। वह सदा सर्वाङ्गपूर्ण जीवनकी कल्पनाको लेकर चला। विगत द्वादश वर्षोंके लेखों और उनके विषयोंको देखते हुए पाठक कह सकते हैं कि मानव जीवनका ऐसा स्यात ही कोई अंग हो जो अछूता रहा हो। इसीलिए ‘श्रीस्वाध्याय’ में प्रकाशित सामग्रीका अनेक सहयोगियोंने सदुपयोग किया है। ज्योतिष सम्बन्धी “दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र’ लेखमाला कितनी उपयोगी सिद्ध हुई है यह विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं। भारतीय दृष्टिकोणसे राजनैतिक घटनाओंका उल्लेख भी किया है और जहां आवश्यक हुआ है हमने अपनी स्पष्ट एवं निर्भीक आलोचना प्रकट कर ‘पत्रकारिता’ का स्तर ऊंचा रखनेका प्रयत्न भी शक्तिभर किया है। इतना सब कुछ होते हुए भी हम अपनी कल्पनाके सर्वांगपूर्ण जीवनके अनुरूप पत्रको नहीं बना पाये, इसका कारण इच्छा कल्पना एवं आकांक्षाका अभाव नहीं अपितु साधनोंका सीमित होना और भारतीय आर्य संस्कृतिके अनुयायी साधन सम्पन्न सज्जनोंके सहयोगका अभाव है।

‘श्रीस्वाध्याय’ के इस द्वादशवर्षीय बाल्यकालमें महामहिम आचार्यचरण श्री १०८ अमृतवाग्भवजी महाराज का प्रेरणामय आशीर्वाद हमें सदा प्राप्त रहा इसको हम अपना परम सौभाग्य मानते हैं। यह हमारे जीवनका सम्बल और पथ प्रदर्शक ध्रुवतारा रहा है, आगे भी हमें उनकी पुण्यकृपाका भरोसा है। इस बाल्यकालमें जिनका हमें संरक्षण प्राप्त हुआ जिनकी कृपासे ‘श्रीस्वाध्याय’ का सम्वर्द्धन हुआ उनमें सोलनके महाराज धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंह जी महोदय के हम चिर आभारी रहेंगे। जन्मकालसे आज पर्यन्त यदि उक्त राजर्षिका संरक्षण ‘श्रीस्वाध्याय’ को प्राप्त न होता तो आजकी स्थिति तक भी हम पहुंच पाते या नहीं यह भी संदिग्ध है। श्रीस्वाध्यायसदन संस्थाके वर्तमान अध्यक्ष श्री पं० गोविन्दजी मिश्रका सहयोग संस्थाकी स्थापनाके प्रारम्भसे लेकर अब तक सबसे अधिक रहा है और उसीका यह फल है कि संस्था और पत्र उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। विगत वर्षोंमें अन्य जो महानुभाव पत्रके संरक्षक और सहायक रह चुके हैं उनके भी हम हृदयसे आभारी हैं। वर्तमान सहायकोंमें श्री पं० विद्याधरजी राजपुरोहित (सुपुत्र स्व० श्री पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित) श्रद्धेय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, श्री भाई चूहरमल्लजी मुंजाल, श्रीनरेन्द्रनाथजी ‘मोहन’ श्री ला० श्यामलालजी मित्तल, श्री ला० अमरनाथजी रईस, श्री बा० भागीरथलालजी और श्री सेठ गयाप्रसादजी महानुभाव धन्यवाद एवं बधाईके पात्र हैं, जिन्होंने ‘श्रीस्वाध्याय’को अपनानेका अनुग्रह किया। हम उन सभी विद्वान् लेखक महानुभावोंके भी चिरकृतज्ञ हैं जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग देकर पत्रके कलेवरको पुष्ट कर इसे सर्वप्रिय बनाया। सनातनधर्म-जगत्‌के सुप्रसिद्ध विद्वान् और यशस्वी लेखक विद्याभूषण विद्यावागीश श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत महोदयके हम विशेष आभारी हैं जिन्होंने विगत वर्षसे प्रूफ संशोधनादि कार्यमें निःस्वार्थ भावसे सहयोग देना प्रारम्भ किया है। इस अङ्ककी

छपाई प्रूफ संशोधनादिका सम्पूर्ण कार्य आपके ही तत्त्वावधानमें हुआ है, इस अनुपम सहयोगके लिए 'श्रीस्वाध्याय' चिर-ऋणी है।

आगामी योजनाएं—

भविष्यके लिए हमारी अनेक योजनाएँ हैं, जिनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं—

श्रीस्वाध्यायसदन संस्थाको सुदृढ करनेके लिए एवं पत्रको शीघ्र ही मासिक रूप देनेके हेतु तथा अपना मुद्रणालय (Press) स्थापित करनेके हेतु सदनका स्थायी कोष स्थापित करनेका निश्चय किया है। इस योजनाका विवरण हम गत वसन्ताङ्कके पृष्ठ ५६ पर प्रकाशित कर चुके हैं। १०१), ५०१), ११०१) और ३००१) रुपये एक बार सहायता देने वाले महानुभाव इस संस्थाके क्रमशः आजीवन सदस्य, सहायक, विशिष्ट सहायक, संरक्षक और रु० प्रतिवर्ष देने वाले सज्जन अस्थायी सदस्य बनकर संस्कृति एवं साहित्यसेवाके साथ अपना यश अमर कर सकते हैं। योजनामें कुछ प्रेमी पाठकोंने भाग लेना तो प्रारम्भ किया है, किन्तु उनकी संख्या अभी बहुत ही स्वल्प है। कुछ सज्जन आजीवन सदस्य सहायक बननेका केवल वचन मात्र दिया था, वे भी अब अपनी सहायता शीघ्र ही भेजकर अपने एवं कर्तव्यका पालन करें तो अच्छा है।

हम अपने सभी प्रेमी पाठकों, हितैषियों एवं विशेषकर उन व्यापारी बन्धुओंसे नम्र निवेदन करना चाहते जिन्होंने इसमें प्रकाशित तेजीमंदीके लेखोंसे पर्याप्त लाभ उठाया है—वे यदि इस ओर ध्यान दें तो समस्या बहुत सुलझ सकती है। इसके तीन प्रकार हो सकते हैं—प्रथम तो सभी ग्राहक-बन्धु प्रत्येक व्यक्ति अपने नगरमें 'श्रीस्वा... के कमसे कम दो चार नये ग्राहक अवश्य बनानेका प्रयत्न करें। दूसरा प्रकार यह है कि संस्थाके स्थायी कोषमें कुछ दान रूपमें दिया जाय और तीसरा प्रकार केवल व्यापारी बन्धुओंसे निवेदनके रूपमें है कि वे अपने लाभका दशांश जितना वे पुण्य सञ्चयार्थ निकाल सकें, इस संस्थाको भेजनेका प्रण करें। यह भी एक परम पवित्र पुण्य कार्य है। 'श्रीस्वा... के प्रेमी पाठक इसकी स्थिति और कठिनाइयोंको अनुभव करते ही हैं कि बारह वर्षमें भी 'श्रीस्वाध्याय' की आर्थिक ... ऐसी दृढ नहीं हो सकी कि इसमें वेतन पर कुछ सहयोगी रख लिये जा सकें। अहर्निश कठोर परिश्रमके कारण शारीरिक शक्ति भी न्यून होती जा रही है, फिर भी हम हतोत्साह नहीं हैं। ऐसी स्थितिमें प्रेमी पाठकोंका भी कर्तव्य कि इस पत्रकी यथाशक्ति जहां तक सम्भव हो अधिकाधिक आर्थिक सहायता करें, जिससे हम पत्रको और भी अच्छे ... निकाल सकनेके अपने स्वप्नोंको पूर्ण कर सकें। गत बारहवें वर्षके तीसरे अङ्क (वसन्ताङ्क) की योजनामें हमने सू... प्रकाशित की थी कि दिल्लीमें एक योगाश्रम और एक संस्कृत विश्वविद्यालयकी स्थापनाका विचार भी श्रीस्वाध्यायसदन तत्त्वावधानमें किया गया है। किन्तु ये सब योजनाएं तभी कार्यान्वित हो सकती हैं जब देशके धनीमानी सज्जनों प्रेमी पाठकोंका पूर्ण सहयोग हमें प्राप्त हो। क्योंकि—'सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः।'

वैसे तो सभी बातें कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ अखिल ब्रह्माण्डनायिका जगज्जननी पराम्बा श्रीजगदम्बा कृपाकोर पर ही अवलम्बित है, तथापि 'तितिर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्' के अनुसार अपनी कल्पना तो सभी ही करते हैं। आशा है विज्ञ पाठक इन योजनाओंके प्रति अपने सुझाव, परामर्श एवं समुचित जैसा भी दे सकें सहायता आदिके सम्बन्धमें सूचना देनेकी कृपा करेंगे।

'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'

श्रीस्वाध्यायसदन
सोलन (हिमाचल प्रदेश)
आश्विन शु० १, सं० २०१० वि०

विनीतः—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'

भगवान् की ओर—

प्रमाद

[लेखक—श्रीमान् १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

[द्वैत माया है, अद्वैत मायावी। द्वैत छाया है, अद्वैत छायावान्। द्वैत मेधा है, अद्वैत मेधावी। द्वैत प्रकाश है, अद्वैत प्रकाशवान्। साधारणतया संक्षेपमें कह सकते हैं—यच्च यावत् कल्पित द्वैत है और अद्वैत अकल्पित। कल्पित की ओर प्रवृत्ति दुःखका कारण है और उधर से निवृत्ति सुखका कारण। अकल्पित सनातन है, कल्पित क्षणिक। 'भगवान् की ओर चलना' का वास्तविक अर्थ है, कल्पितसे मुख मोड़ना। क्षणिक सभी दुःख है, चाहे फिर वह ब्रह्मलोक ही क्यों न हो। सापेक्ष सुख वस्तुतः सुख नहीं। वस्तुतः सुख सनातन महानन्द है। निरपेक्षताकी पराकाष्ठा हुए बिना महानन्दका रस अनुभूत नहीं होता। कल्पितकी ओर उन्मुख होना बहिर्मुखता है और उधरसे निवृत्ति अन्तर्मुखता। जितनी अधिक अन्तर्मुखता होगी, उतनी अधिक आत्मानन्दकी प्राप्ति होगी। भगवानकी प्राप्ति उसीका दूसरा नाम है। और इसीको तत्वदर्शी भगवदनुग्रह कहते हैं। शेष सभी निग्रह हैं। जहां निग्रहकी अनेक घटनाएं हैं, वहां अनुग्रहकी भी बहुत घटनाएं हैं। अनुग्रह-प्रधान सच्ची घटनाओंके आधार पर हमने कुछ कथानिकाएं (कहानियां) लेख बद्ध की हैं, उनको 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंके आग्रहसे प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है प्रेमी पाठकोंको इन कहानियोंके पढ़नेसे भगवदनुग्रह प्राप्त करनेमें सहायता अवश्य मिलेगी।

[वर्ष १२ अङ्क ४ से आगे]

जीवन के बीस वर्ष

एक बोला—'कलका छोकरा हट्टा कट्टा नया होनहार जवान और तेरी यह स्थिति ?' दूसरा—'हूं क्या, हो गया, मक्खीने छींक दिया ? चलो ! चलो ! चलते चलो। चलते-चलते ठीक हो जायेगा।' तीसरा—'अजी ! साथ छोड़ना चाहता है। हम जैसे अपढ़ गञ्जड़ भङ्गड़ोंको रुपये खिलाने पड़ते हैं न ?' तीन चार बोले—'हम लोग धीरे-धीरे चलते हैं, तुम थोड़ा ठहरके आजाना।' कुछ बोले—'हम लोग निर्धन हैं तुम्हारे पास धन है तुम चाहे जब आ सकते हो' उनके वाग्बाणोंने मेरे हृदयको भी चलनी कर दिया। उदर-शूलकी व्यथासे इतना दुःख नहीं था। मैं तो वहां बैठ ही गया। तीन चार साधु मेरे पास बैठ गये। उनको मुझसे स्नेह था पर जाने की शीघ्रता उनको भी थी। फिर एक साधु मेरे पास आकर खड़े खड़े ही बोला—'यह छल कपट छोड़ो, इन साथ छोड़नेकी युक्तियोंको हम भली प्रकार जानते हैं। हमने आज तक घास ही नहीं खोदा है। तुमने ठहरना है ठहरो हम तो जा रहे हैं।' मुझे उस समय क्रोध दुःख, शोक, पश्चात्ताप सभी पीड़ा देने लगे। आंखोंसे अश्रु टपकने लगे। उस समयके उनके दुर्व्यवहार का क्या वर्णन करूं, मैं महान् दुःख सागरमें गोते खा रहा था। इतनेमें एक साधु मेरे पास आया और बड़ी सहानुभूतिका ढोंग दिखाता हुआ बोला—'देखूं कहाँ पीड़ा है ?' पेट पर हाथ फेर कर बोला—'किसका गर्भ रहा ? अब शीघ्र प्रसव होने वाला है ? उसकी इस बात पर कुछ साधु हंस पड़े। पर मुझ से यह हंसी सही नहीं गई। मैं उठा और पूरे जोर से एक तमाचा मैंने उसकी कनपटी पर जड़ दिया। फिर

क्या था सन्नाटा छा गया।

एक दो मुझे मारनेके लिए आ गये परन्तु उन तीन चार मेरे स्नेही साधुओंने बीच बचाव करके उन्हें हटा दिया वे चले गये। फिर और भी धीरे-धीरे चले गये। चार पाँच मेरे पास रह गये। मेरी उदर व्यथा बढ़ती ही जा रही थी एक घंटा पूरा हो गया। व्यथा शान्त न हुई। मेरे पास बैठे साधुओंने कहा—'देखो हम वृद्ध शरीरके हैं हम फिर चल न सकेंगे। तुम बच्चे हो तुम तो कूदते फांदते भी चले जाओगे। दिन छोटे हैं। हम धीरे-धीरे चलते हैं।' मैं उठ भी नहीं सकता था। अन्त में वे भी तीन चार मेरे स्नेही चले गये। मैं उस व्यथामें कराहता वहीं पड़ा था। 'भगवन् शङ्कर !! मृत्युञ्जय !!! मेरी इस पीड़ाको दूर कर दो। शम्भो ! तुम्हारे बिना मेरा कौन इस संसारमें है ? तुम्हारे दर्शनके लिए मैंने सब छोड़ा है। नाथ ! मुझे बड़ी दुर्बुद्धि हुई जो इनके साथ आया। अब क्षमा करो' आज टिक्कड़में खस-खसके दाने भी डाले गये थे। मुझे प्यास भी बड़ी भारी लग रही थी। मैं सोचने लगा जिसने अब तक रक्षा की है वही आगे भी रक्षा करेगा। थोड़ा पानी मिल जाता तो बड़ा ही अच्छा होता। उसी स्थितिमें साहस करके मैं उठ पड़ा। मनमें आता था चारों ओर उजाड़ है। जिधर देखो उधर ही पहाड़ और चट्टानें दीख रही हैं। दूर ऊपर जंगल भी कुछ दीख रहा है। रात पड़ जाय तो कैसे रक्षा होगी। यहाँ तो जंगली हिंस्र पशु बाघ, चीता, भेड़िया, आदि होंगे ही। चलो थोड़ा पानी मिल जाय, प्रयत्न करो। भगवान्का नाम लेकर रोता कराहता हुआ ही चल पड़ा। मनमें उन साधुओंके दुर्व्यवहार पर अत्यधिक घृणा हो रही थी। मैं धीरे-धीरे चलने लगा। तीन चार सौ हाथ चलनेके अनन्तर मार्गके दाईं ओर कुछ थोड़ा सा पानी दीखा। वहां जाने पर मैंने देखा कि एक बड़ा विशाल वृक्ष है। उस वृक्ष की जड़ के पास ही एक छोटा झरना है। झरने से कनिष्ठिका उंगलीके तुल्य स्वच्छ जलकी धार निकल रही थी। मैंने भर पेट पानी पिया। फिर वृक्षके नीचे छोटी छोटी घास से हरी भूमि पर धोती बिछा लेट गया। आध घंटा लगभग मैंने निश्चिन्त हो विश्राम किया होगा। भगवान् जाने पानी में क्या अमृत घोलकर रक्खा था। पानी पीते जोर से दो डकारें आईं। और अपान वायु भी जोर निकल गई। उदर-शूल शान्त हो गया। चित्त अब पू स्वस्थ हो चला था। भगवान्की दयाका अनुभव हुआ पर अब शीघ्र मार्ग चल कर सूरज छिपते छिपते किसी नि पद मानव स्थान पर पहुंच जानेकी धुन थी। मैं उठा अ मान था कि अभी अढ़ाई तीन बजे का समय होगा। शी लम्बी-लम्बी डग भरने लगा। वैसे शुक्लपक्ष भी था। थो रात भी हो जाती तो भी चांदनीका सहारा मिल जाने आशा थी। पैर छलनी हो चुके थे। यद्यपि उनका दुःख फिर भी उन साधुओंके दुःसंगके छूटनेसे बड़ी शान्ति प्राप्त हो थी। रुपयोंके उड़ जानेका वैसा कोई दुःख नहीं था। अब आनन्दके उल्लासमें कुछ गाना गुनगुनाने लगा। मार्ग बांईं ओर पहाड़ी और दाईं ओर एक सूखी बरसाती न थी। जहाँ तहां डण्डा थूहर ही डंडा थूहर दीख रही थी नदी के उस पार भी पहाड़ियाँ थीं' और बांसके जङ्गल थे। बड़ी लम्बी चौड़ी पथरीली चट्टानोंमें से मार्ग चल था। सूरज पीठ पीछे हो गया था इसी प्रकार आध के मार्ग और भी काट लिया। अकस्मात् एक शब्द दूरसे कानमें पड़ा—'नारायण चिलम पी लो' मैं इधर उ देखने लगा। दुबारा पुनः वही शब्द आया। अब मैंने दे उस सूखी नदीके पार चार बांस गड़े हैं ऊपर एक घास फू का छप्पर छाया है। धूनी जल रही है, थोड़ा धूआं उ रहा है। दुबले पतलेसे एक महात्मा वहाँ धूनी के पास बै हैं। मैंने उनकी ओर देखा और उन्होंने भी मेरी ओर देख हुए फिर वही 'नारायण आओ चिलम पी लो' कहा ! ए बार तो मेरे मनने कहा—छोड़ो गोली मारो इन चिलमक्क लक्कड़ फक्कड़ोंको।' पर चिलम पीनेकी बुरी तरह पीछे पड़ हुई धत्त ने कहा—'तुम्हारा क्या लेगा ? इसक सङ्ग तो करना ही नहीं है। पांच दस मिनट ऐसे ही हो चलो चिलम भी पी लेंगे और इस प्रान्तकी कुछ जानकारी भी हो जायगी।'' मैं वहाँसे नीचे नदीमें उतर उसके पा हो पांच दस निमेषोंमें ही उनके पास पहुंच गया। स्था

वर्ण दुबला पतला शरीर था उनका और यही कोई पचास पचपनकी लगभग वय। उनके शरीरके साथ कपड़ोंके नाम पर एक कौपीन मात्र थी। एक तूँबी एक चिमटा, चिलम, और थोड़ी तमाखू वहां पड़ी थी। मैंने नम्रतासे हाथ जोड़े और बैठ गया। चिलम भरी मुझे उन्होंने पहले पिलाई फिर आप पी। धूएँको थोड़ा बाहिर छोड़ते हुए वे बोले—"क्या परशुरामकुण्ड जा रहे हो?" मैं—"जी हाँ" वे—"साथी कोई नहीं?" मैंने साथियोंकी कथा सारी सुना दी। वे हंसकर बोले—"यह संसार है, नाना प्रकारके लोग हैं" मैं--"जी महाराज सत्य है" वे--"आज ठहरो यहां" मैं—"महाराज! मार्ग बहुत है और हम एक दिन पिछड़ गये हैं" वे--"कल थोड़ा अधिक चल लेना" कहकर चिलम में सूटा भरने लगे! फिर चिमटेसे आग लेकर चिलम पर रखी और एक श्वासमें ही उन्होंने बड़ी ज्वाला निकालकर चिलमको खाली कर दिया। थोड़ा खांसते हुए वे फिर बोले-"बच्चा तुमको भूख लगी होगी" वास्तवमें उस समय मुझे भूख लग आई थी। मार्गका पानी क्या था वह तो अग्निमुख चूर्ण अथवा कोई रसायन ही था। मैंने भी उनसे कह दिया—"हाँ महाराज। लगी तो है" मैं सोच रहा था—देखूँ खानेका क्या इनके पास प्रबन्ध है। फिर कुछ तो बात चलानी ही थी इसलिये ही मैंने पूछा—"महाराज! यहाँ आसपास कोई गांव है?" वे--"छह-छह मीलके भीतर तो कोई नहीं" मैं सोचने लगा--"अब छह-छह मीलमें कोई गांव नहीं तो ये भी यहां रहते न होंगे। ऐसे ही आए होंगे, पर छप्पर क्यों डाला है? फिर उनसे पूछा--"महाराज आप यहां कितने समयसे ठहरे हैं?" वे--"आठसौ वर्ष बीत गये।" उन्होंने सहज भावसे यह उत्तर दिया था। मेरी बुद्धिने इसे एक चण्डूखानेकी बड़ी गप्प समझा, फिर मैंने उनसे पूछा--"इसके पहले कहां रहते थे?" वे--"इस पहाड़ीके" उँगलीसे निर्देश करते हुए बोले--"जो यह सबसे ऊँची दूर दिखाई दे रही है। उससे भी परली पार तिब्बत में रहते थे" मैंने जो यह प्रश्न किया था उसमें मेरा भीतरी भाव हँसी उड़ानेका ही था। पर बाहिरसे मैंने सभ्यताका आवरण ओढ़ रक्खा था जैसाकि शिक्षितंमन्य किया ही करते हैं। किन्तु उन्होंने सहज, सरल भावसे ही दिया था उत्तर। मैंने फिर पूछा--"उधर कितना समय आपने बिताया" वे बड़ी सरलतासे बोले--"उधर अठारह सौ वर्ष रहा था। मेरा अन्तःकरण पुकार उठा--"सर्वथा असत्य, भयानक अनृत" यह तो कोई बड़ा भारी पाखण्डी है और मुझे बातोंमें फंसाकर अपना चेला बनाना चाहता है। अभी अभी चूल्हेसे निकल आया हूं। इधर दूसरा भाड़ यह प्रस्तुत हो गया है। अब शीघ्र यहाँसे निकल चलना चाहिए। मुझसे सुदृढ़ तो यह है नहीं। फिर भी यहां अब एक क्षण भी ठहरना उचित नहीं।" मैं बोला--"अच्छा महाराज! नमो नारायणाय, मैं तो अब जाऊँगा" वे थोड़े हँसकर बोले—"इतनी क्या शीघ्रता है, अभी दो ढाई घण्टे दिन पड़ा है। तुम इतने समयमें सात-आठ मील भली प्रकार पथ पार कर सकते हो। मैं तुमको रोकूंगा नहीं, तुम निश्चिन्त रहो। मैं उन साधुओं जैसा नहीं। पड़ाव भी तुम्हारा सात मीलसे कुछ इधर ही है। अधिक नहीं" वे धूनीमें चिमटा डाल कुछ इधर-उधर करने लगे। मेरे मनमें ऐसे लगा जैसे मेरे भावको ये ताड़ गये हों। वे फिर बोले--परशुराम-कुण्ड से लौटती बार यदि मिलना चाहो तो यहीं मिल सकता हूं। पर साथ किसीको नहीं लाना और मेरे बारेमें किसी को कुछ कहना भी नहीं। यदि किसीको कह दिया या साथ लाये तो मैं फिर तुमको कभी न मिलूंगा।" यह सब बात बड़ी सरलता और दृढ़ताके साथ वे कह गये। मेरे मन में दुविधा थी। एक मन कहता था--"यह सब मुझ अकेले को फाँसनेका जाल रचा जा रहा है।" दूसरा मन कहता था--"नहीं देखो उसके मुख पर कितनी निश्छलता है।" फिर मनमें आता था--"मैं तो चौदह वर्षका सर्वथा अज्ञान बच्चा हूँ कौन जाने ठीक क्या है। "जानी न जाइ निशाचर माया" पुनः मन कहता था--"नहीं संसार विचित्र है, अनन्त है, अश्वत्थामा आदि चिरजीवी भी तो सुननेमें आते हैं।" इसी समय पुरानी बातें घरसे निकल भागनेकी सभी बातें तब तक का जीवन आँखोंके सामने प्रत्यक्ष सा हो विलीन हो गया। स्वप्नसे जागा सा महात्माजीकी ओर देखने लगा। वे बोले--"जाओ दो पत्ते तोड़ लाओ" उन्होंने धूनीसे कुछ

आलू जैसा निकाला उसको छील कर साफ कर दिया। मैंने पत्ते महात्माजीके आगे धर दिए। एक पत्ते पर तोला तक भर उस कन्दको रखकर मेरे आगे पत्ता उन्होंने खिसका दिया और बोले वे-"बच्चा खा लो इसे" मैंने मनमें सोचा 'इससे क्या भूख मिटेगी' फिर सोचा 'पड़ाव पर खानेका कुछ करेंगे ही। इनको क्यों कुछ कहना है "चलो खिलवाड़ ही सही।" मैंने ऊपरी प्रसन्नता दिखाते हुए उसे खा लिया। वह बड़ा ही सुस्वादु था। मैंने कहा-"क्या इतना ही आप खाते हैं?" वे बोले-"चौबीस घण्टोंके लिये इतना ही बहुत है बेटा!" मुझे बाबा सच्चिदानन्दकी एक बार स्मृति हो आई। अब मैंने उनको फिर हाथ जोड़े और कहा-"अब आप मुझे आज्ञा दीजिये और आशीर्वाद दीजिये जिससे मैं निर्विघ्न निरापद स्थान पर पहुँच जाऊं" वे प्रसन्न भावसे मन्द हंसतेसे बोले--"तुम शीघ्र परशुराम कुण्ड पर पहुंच जाओगे" मैं भी शीघ्र चल पड़ा। मैं ऐसा हल्का हो गया था मानो मेरे सिरसे बड़ा भारी भार उतर गया हो। उन्होंने फिर कहा--"बच्चा मेरी बात फिर सुन लो, जो मैंने कहा है वह सब सत्य है। किसीको कह दोगे या किसी को साथ लाओगे तो मैं कदापि नहीं मिलूंगा" मैंने अब चलनेकी की! दिन थोड़ा दीखता था। सूरज पहाड़ीकी ओटमें वारुणी सुखके लिए मुंह छिपानेके प्रयत्नमें था और मैं महात्माजीसे ओझल होनेके प्रयत्नमें। सूखी नदी पार कर के अपनी पुरानी पहाड़ी पगडण्डी पर पहुँच गया और एक बार देख लिया कि मैं ठीक मार्ग पर हूँ। फिर एक बार महात्माजी पर दृष्टि दौड़ाई। वे खांस पड़े। मैंने डगें भरनी प्रारम्भ कीं। मैं कहता-'न जाने आज क्या बीतती। अब किसीके चंगुलमें नहीं आऊंगा। उन साधुओंके साथ न रहूँगा। इन महात्माजीको तो हमने ढूंढना ही क्यों है?" इस समय मेरा पेट भरा हुआ सा प्रतीत हुआ। मुझे भूख लेशमात्र भी न प्रतीत होती थी। पैरोंको भी कोई कष्ट नहीं प्रतीत हो रहा था। एक गुलाबी मद सा हो रहा था। इसी प्रकार लगभग आधा घण्टा मार्ग चलते बीता होगा एक पड़ाव दिखाई दिया। बहुत लोग इधर-उधर चल फिर रहे थे। घोड़े थे बैलगाड़ियाँ थीं। बड़ा हाट लगा था। मैंने पूछा--"इस स्थानका नाम क्या है?" एक मनुष्य बोला 'परशुरामकुण्ड" मैंने आश्चर्यचकित होकर "क्या परशुरामकुण्ड?" वह--"हाँ, जी हाँ परशुराम" मैं---"कुण्ड कौनसा है?" वह--"वह देखिये थोड़ा सा चले जाईये बाबाजी!" मैं तीन एक फर्लांग आगे था और वह विशालकुण्ड जिसका निर्माण प्रकृतिने अपने हाथों किया है मेरी दृष्टिमें पड़ा।" पण्डित जी! कुण्डके सौन्दर्यका वर्णन क्या किया जाय। मैं अत्य आश्चर्यसे चकित था। मेरी समझमें यह बात नहीं बैठ थी कि आध घण्टे में छह दिनका पहाड़ी मार्ग कैसे पार लिया मैंने। कभी सोचता सुपना तो नहीं यह? पर कईयोंसे पूछा और यह भी पूछा कि स्नान कबका वहांके लोगोंने कहा अभी छह दिन शेष हैं। फिर महात्माजीकी और उनकी उन विचित्र अनृत भय असत्य चण्डूखानेकी गप्प लगने वाली बातोंकी आई। और साथ ही अपने मूर्खतापूर्ण व्यवहार पर पश्चात्ताप हुआ। उनका वह अन्तिम वाक्य—"तुम परशुरामकुण्ड पर पहुँच जाओगे" इतना विलक्षण होगा इसकी कल्पना किसे थी। यदि उनके सामर्थ्यका सा भी सत्य आभास मुझे उस समय मिला होता तो जी! मैं उनके चरण पकड़ लेता और फिर सदाके उनका हो जाता। फिर भी मिलनेकी आशा थी और आशाके मदमें ऐसा चूर हो गया था कि मैं अपने आदिको छोड़ और कुछ न कर सकता था। छह रात्रि छह वर्षके तुल्य बीतीं। पर्व आया; पर्वके पूर्व, रात्रिको वह साधुओंकी टोली वहां आ पहुंची: उसमेंसे एक अकस्मात् ही कुण्डके पास मुझे बैठे देख लिया। एक स्नेही वृद्ध साधुने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं चुपचाप उन ओर देखने लगा। अब वे बार-बार हाथ जोड़े क्षमा मां लगे। मैंने भी दया परवश क्षमा कर दिया। इतनेमें साधु उधर आ निकला जो कि हमारी टोलीका नहीं था और हमारा परिचित भी नहीं हुआ था, किन्तु वह मुझे पांच दिनसे बराबर देख रहा था। वह भी वहां बैठ गया वृद्ध साधु पूछने लगे--"तुम यहां कब पहुंचे"। मैं बड़ा

में पड़ गया। बोलना चाहता नहीं था किन्तु उनके बार-बार स्नेह भरे आग्रहके कारण मुझे बोलना पड़ा। मैंने कहा—"आपने जब देखा तभी समझ लो" उन्होंने पीछा नहीं छोड़ा। वे फिर भी पूछते ही जा रहे थे। इतने में वह अपरिचित साधु बोला—"इनको मैं चार पांच दिनसे बराबर यहां देख रहा हूं।" वे उसको अपनी सारी कथा सुना कर कहने लगे ऐसा कैसे हो सकता है। छः दिन का मार्ग एक दिनमें कैसे पार हो सकता है; और फिर मार्ग भी एक ही है। हमें यह कभी भी तो दीखता। वह साधु बोला—"मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, मैं भगवान्के चरणोंकी शपथ खाकर कहता हूं कि चार-पांच दिनसे मैं बराबर इनको देख रहा हूं। ये कोई सिद्धि रखते होंगे। यदि आपको विश्वास न हो तो यहाँके लोगोंको पूछ लें।" इतनेमें एक और मनुष्य आया वह कोई बनिया था। उसने सबको हाथ जोड़े। फिर पूछने लगा—"क्या बात है" उस साधुने सब बात कह दी। तब वह फिर बोला—"हां यह ठीक कह रहे हैं" और मेरी ओर मुख करके बोला—"क्यों महाराज! आपने मुझसे पूछा यह कौनसा पड़ाव है और मैंने कहा यह परशुरामकुण्ड है। इस बातको चार पांच दिन तो बीत ही चुके हैं। इसमें झूठ क्या है? मैं प्रतिदिन यहां तबसे आपको बराबर देख रहा हूँ। हमारी दृष्टिमें अवश्य ही आप कोई सिद्ध पुरुष हैं। और नहीं तो आप स्वयं ही कह दीजिये कि इसमें क्या रहस्य है।" अन्तमें मैंने मान लिया कि मैं चार पांच दिन पूर्वसे ही यहाँ आया हूं। अपना पीछा छुड़ानेके लिये मैंने कह दिया कि फिर बताऊंगा।" "अब वहांसे उठकर एक जगह रात जहां सोता था वहाँ आया पर साथ ही वे मेरे स्नेही वृद्ध साधु भी आ गये और उनके गिड़गिड़ाने और रोने पर मैंने सब घटना उनको सुना दी।

पर्व स्नान किया और उसी दिन वहाँसे चल पड़े वहां फिर कोई ठहरता नहीं है। वर्ष भरमें एक ही बार यह मेला जुड़ता है! सरकारी प्रबन्ध भी होता है। तीन चार दिनमें ही सब चले जाते हैं। मुझे उन सिद्ध महात्माजीके पास पहुंचनेकी त्वरा थी। और मैं वहांसे चल पड़ा: किन्तु मेरी यह बात अब कानों कान कई साधुओंके पास और कई दूसरे गृहस्थ यात्री पथिकोंके पास पहुंच चुकी थी। इन्होंने मुझ पर कड़ा पहरा बिठा दिया था। मुझे प्रसन्न करनेके लिये अनेक ठकुर सुहाती चिकनी चुपड़ी बातें वे लोग मुझसे करने लगे थे: खाने पीने का चलानेका मेरे स्वास्थ्यका बड़ा ध्यान रखते थे, मुझे किसी प्रकारका कोई कष्ट न होने पाये इस बातकी पूरी सार सम्भाल करने लगे थे। हम मार्ग पर शीघ्रतासे चले जा रहे थे। पांचवें ही दिन उस स्थान पर पहुँच गये। धूनी थी चिलम थी चिमटा था, तूंबी थी, छप्पर था पर महात्मा न थे। मेरे तो धकसे तोते ही उड़ गये। मैंने उन साधुओंसे कहा—"आप लोगोंने मेरा भी विनाश किया।" मैं असहाय सा दहाड़ मारकर रोने लगा। वे मेरे वृद्ध स्नेही साधु मेरा ढाढ़स बंधा रहे थे। पर मुझे खाना पीना किसीसे बात करना कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वे साधु छह सात मील दूर-दूरसे भिक्षा मांग लाते रोटी पकाते और मुझे खिलाकर आप खाते। एक दिन चार दिन आठ दिन कई साधु रहे और दूसरे भी कई पथिक वहाँ ठहरे। पर सिद्ध महात्मा न मिले। टोली धीरे-धीरे खिसकने लगी। मेरा रोना बक झक और गाली-गलोच देखकर वे साधु और दूसरे पथिक मुझे पागल समझने लगे। होते-होते तीन चार मेरे स्नेही साधु मात्र रह गये और सब चले गये। मैं दिन भर रोता था कभी बड़-बड़ाता कभी गिड़-गिड़ाता तो कभी मूर्च्छित हो जाता। वे मेरे वृद्ध स्नेही साधु अशक्त थे। दूरसे माँग लाना पकाना आदि बातें उनकी शक्तिके बाहिरकी थी। मैंने उनको हाथ जोड़े और कहा—"आप सब लोग जाओ मैं यहीं रहूंगा। वे सब वहां रहते-रहते उकता गये थे और मुझे पागल समझते हुए चले गये।

मैं अकेला छह महीने वहां रहा। क्षमा मांगी पर सिद्ध महात्माजीके दर्शन न हुए। मैं अत्यधिक दुर्बल हो गया था। रोटी खाए आठ-आठ दिन बीत जाते थे। क्या कहूं पण्डित जी! अपने प्रमादकी स्मृतिमें मैं बड़ा व्याकुल हो जाता हूँ। इसी अवस्थामें एक दिन मैं चेतनाहीन होकर वहां पड़ा था। मुझे स्वप्न सा हुआ; देखा कोई साधु कह

रहा है—"ब्राह्मण बालक ! तुमने बड़ा भारी प्रमाद किया है। फिर भी तुमने क्षमा मांग ली है इससे मैं प्रसन्न हूँ। हाँ तुमको अब मेरे मिलनेका हठ छोड़ देना चाहिये। तुम्हारे इस शरीरके छोड़नेके पश्चात् तुम्हें फिर हिमालयमें एक ब्राह्मणके घर शरीर प्राप्त होगा। वहां तुम बड़ी तपस्या करोगे। वहां तुम्हें गुरु रूपसे मैं मिलूँगा। अब शेष जीवन निःसङ्ग होकर शिवभक्तिमें बिताओ, अपना समय स्नान सन्ध्या, पूजा पाठ, गायत्री जप, अध्यात्म चिन्तन, और दिगम्बर बाबासे बतलाये हुए मन्त्रका जप करते हुए बिताओ। साँसारिक बातोंमें न लगो। एषणाओंको अपने पास न आने दो। संसार मर जायगा। तुम अमर हो। आत्मस्वरूप अमर है। शरीर कितने ही आये और गये। सुकृत और दुष्कृतकी चिन्ता छोड़ो। वे सब नश्वर हैं, विज्ञानानन्द घन स्वरूपमें रमो। तुम कई जन्मोंसे योगभ्रष्ट हो रहे हो। चिन्ता न करो अब यहांसे चले जाओ। गुरुकी आज्ञा ही प्रमाण है। वे जो भी कहें उस पर ननु नच बिना किये ही चलो। वे दुराचारी भी हों तो भी तुम उनके दोषोंका चिन्तन कीर्तन और प्रकाशन मत करो। उनका किसी प्रकार भी अनिष्ट चिन्तन मत करो। जो गुरुजनोंका तिरस्कार करते हैं उन्हें आत्म-प्राप्ति कभी नहीं होती। वे असुर योनियोंमें अनेक बार जाते हैं। वे कृमि कीट, पतङ्ग, पक्षी, पशु, चण्डाल आदि होते हैं। वे किसी भी लोकमें सुखी नहीं हो सकते। अच्छा अब तुम यहाँसे जाओ। भगवान्की भक्ति करो। तीर्थोंके स्नान करो। भगवान्की मूर्तियोंके दर्शन करो। मौन, निराशा, निर्मानता, निर्मोहता, एकान्त सेवन, भूतमात्रका हित-चिन्तन, अनायास प्राप्त भोजनाच्छादन-संतोष आदिमें लगे रहो। सर्वश्रेष्ठ तो बात यह है कि निरन्तर अध्यात्म भावमें रत रहो। और सम्पूर्ण चिन्ताओंको और संकल्प विकल्पोंकी उपेक्षित कर दो। जाओ उठो, अब प्रमाद मत करना। अगले जन्ममें मैं तुम्हें अवश्य मिलूँगा।" "पण्डितजी ! यही मेरी संक्षिप्त कथा है। पन्द्रह वर्ष इस घटनाको बीत चुके हैं। आज भी उस घटनाकी स्मृतिने मुझे व्याकुल किया था। वैसे मुझे अब शान्ति है। घरसे निकलनेके पश्चात् घर वालोंका समाचार एक बार किसीसे प्राप्त हुआ था। उस बातको बारह वर्ष बीत चुके हैं। तबसे न उनका कोई समाचार लिया और न अपना कभी भी दिया। इस क्षणभंगुर शरीरका क्या? भोग समाप्त और यह भी समाप्त।" इतना कहकर वह साधु युवा हंसा और बोला—"पण्डित जी, प्रातःकाल हो गया है मैं भी शौचादिमें लगता हूँ और आप भी अपने नित्यकृत्यमें लग जाइये।"

पण्डितजी बहुत ही प्रभावित थे। वे शौचादिके लिये चले गये। साधु युवक भी शौचादिसे निवृत्त हो वितस्ता कुण्ड पर स्नान करने आया और पण्डितजी भी। पण्डितजीने युवकसे श्रीनगर चलनेके लिये बड़ा आग्रह किया था। युवकने भी "भगवान्की इच्छा होगी तो चलूँगा अवश्य और नहीं तो नहीं।" यह कह दिया था। पण्डितजी अपने कार्यमें लग गये और वह साधु युवक अपने कार्यमें।

उस दिन मठमें कुछ अधिक अतिथि आ गये थे। युवा महन्त साधु युवाके लिये प्रातराश भेजना भूल गया। दोपहरका भोजन भी कुछ अधिक विलम्बसे सिद्ध हुआ। पण्डितजी किसी अत्यावश्यक कार्यसे बेरीनाग गये थे। दिन के दो बजनेके अनन्तर महन्त थाली परोसकर साधु युवकके पास भोजन ले गये पर वहां उस छप्परनुमा चौकी पर वह साधु युवा नहीं था, न ही उसका कोई उपस्थितिका चिन्ह ही। इधर-उधर ढूँढना वृथा ही था। मठके उत्तराधिकारीको अपने प्रातःकालके प्रमाद (प्रातराश न ले जाना) की स्मृति आई। सभी पश्चात्ताप करने लगे पण्डितजी भी शामको बेरीनागसे आए। उनको तो युवकका चले जाना ऐसा लगा कि मानो उन्होंने अपनी चिर-संचित निधि ही खो दी हो। एक बार तो वे उसके विरहमें रो भी पड़े। जिसने भी पण्डितजी से यह कथा सुनी और युवक साधुका वैशिष्ट्य सुना वह भी बड़े पछताये कि ओह हमने उसके दर्शन न किये। भगवदिच्छा बड़ी प्रबल है। इस कहानीके लेखकने बीस वर्ष पहले उन पण्डितजी के मुखसे ही यह कथा सुनी थी। उस साधु युवकका कोई भी समाचार आज तक दुबारा सुननेमें नहीं आया। (शमस्तु)

★

रहा है—"ब्राह्मण बालक ! तुमने बड़ा भारी प्रमाद किया है। फिर भी तुमने क्षमा मांग ली है इससे मैं प्रसन्न हूँ। हाँ तुमको अब मेरे मिलनेका हठ छोड़ देना चाहिये। तुम्हारे इस शरीरके छोड़नेके पश्चात् तुम्हें फिर हिमालयमें एक ब्राह्मणके घर शरीर प्राप्त होगा। वहां तुम बड़ी तपस्या करोगे। वहां तुम्हें गुरु रूपसे मैं मिलूँगा। अब शेष जीवन निःसङ्ग होकर शिवभक्तिमें बिताओ, अपना समय स्नान सन्ध्या, पूजा पाठ, गायत्री जप, अध्यात्म चिन्तन, और दिगम्बर बाबासे बतलाये हुए मन्त्रका जप करते हुए बिताओ। सांसारिक बातोंमें न लगो। एषणाओंको अपने पास न आने दो। संसार मर जायगा। तुम अमर हो। आत्मस्वरूप अमर है। शरीर कितने ही आये और गये। सुकृत और दुष्कृतकी चिन्ता छोड़ो। वे सब नश्वर हैं, विज्ञानानन्द घन स्वरूपमें रमो। तुम कई जन्मोंसे योगभ्रष्ट हो रहे हो। चिन्ता न करो अब यहांसे चले जाओ। गुरुकी आज्ञा ही प्रमाण है। वे जो भी कहें उस पर ननु नच बिना किये ही चलो। वे दुराचारी भी हों तो भी तुम उनके दोषोंका चिन्तन कीर्तन और प्रकाशन मत करो। उनका किसी प्रकार भी अनिष्ट चिन्तन मत करो। जो गुरुजनोंका तिरस्कार करते हैं उन्हें आत्म-प्राप्ति कभी नहीं होती। वे असुर योनियोंमें अनेक बार जाते हैं। वे कृमि कीट, पतङ्ग, पक्षी, पशु, चण्डाल आदि होते हैं। वे किसी भी लोकमें सुखी नहीं हो सकते। अच्छा अब तुम यहाँसे जाओ। भगवान्‌की भक्ति करो। तीर्थोंके स्नान करो। भगवान्‌की मूर्तियोंके दर्शन करो। मौन, निराशा, निर्मानता, निर्मोहता, एकान्त सेवन, भूतमात्रका हित-चिन्तन, अनायास प्राप्त भोजनाच्छादन-संतोष आदिमें लगे रहो। सर्वश्रेष्ठ तो बात यह है कि निरन्तर अध्यात्म भावमें रत रहो। और सम्पूर्ण चिन्ताओंको और संकल्प विकल्पोंको उपेक्षित कर दो। जाओ उठो, अब प्रमाद मत करना। अगले जन्ममें मैं तुम्हें अवश्य मिलूंगा।" "पण्डितजी ! यही मेरी संक्षिप्त कथा है। पन्द्रह वर्ष इस घटनाको बीत चुके हैं। आज भी उस घटनाकी स्मृतिने मुझे व्याकुल किया था। वैसे मुझे अब शान्ति है। घरसे निकलनेके पश्चात् घर वालोंका समाचार एक बार किसीसे प्राप्त हुआ था। उस बातको बारह वर्ष बीत चुके हैं। तबसे न उनका कोई समाचार लिया और न अपना कभी भी दिया। इस क्षण भी शरीरका क्या; भोग समाप्त और यह भी समाप्त।" इतना कहकर वह साधु युवा हंसा और बोला—"पण्डित जी! प्रातःकाल हो गया है मैं भी शौचादिमें लगता हूँ और आप भी अपने नित्यकृत्यमें लग जाइये।"

पण्डितजी बहुत ही प्रभावित थे। वे शौचादिके लिये चले गये। साधु युवक भी शौचादिसे निवृत्त हो वितस्ता कुण्ड पर स्नान करने आया और पण्डितजी भी। पण्डितजीने युवकसे श्रीनगर चलनेके लिये बड़ा आग्रह किया था। युवकने भी "भगवान्‌की इच्छा होगी तो चलूँगा अवश्य और नहीं तो नहीं।" यह कह दिया था। पण्डितजी अपने कार्यमें लग गये और वह साधु युवक अपने कार्यमें।

उस दिन मठमें कुछ अधिक अतिथि आ गये थे। युव महन्त साधु युवाके लिये प्रातराश भेजना भूल गया। दोपहरका भोजन भी कुछ अधिक विलम्बसे सिद्ध हुआ। पण्डितजी किसी अत्यावश्यक कार्यसे वेरीनाग गये थे। दिन के दो बजनेके अनन्तर महन्त थाली परोसकर साधु युवकके पास भोजन ले गये पर वहां उस छप्परनुमा चौकी पर वह साधु युवा नहीं था, न ही उसका कोई उपस्थितिका चिन्ह ही। इधर-उधर ढूँढना वृथा ही था। मठके उत्तराधिकारीको अपने प्रातःकालके प्रमाद (प्रातराश न ले जाना) की स्मृति आई। सभी पश्चात्ताप करने लगे पण्डितजी भी शामको वेरीनागसे आए। उनको तो युवकका चले जाना ऐसा लगा कि मानो उन्होंने अपनी चिर-संचित निधि ही खो दी हो। एक बार तो वे उसके विरहमें रो भी पड़े। जिसने भी पण्डितजी से यह कथा सुनी और युवक साधुका वैशिष्ट्य सुना वह भी बड़े पछताये कि ओह हमने उसके दर्शन न किये। भगवदिच्छा बड़ी प्रबल है। इस कहानीके लेखकने बीस वर्ष पहले उन पण्डितजी के मुखसे ही यह कथा सुनी थी। उस साधु युवकका कोई भी समाचार आज तक दुबारा सुननेमें नहीं आया।

(शमस्तु)

★

मानसपर विचार

(ले० श्री पं० रामजी वेदपाठी, कर्मकाण्ड-केसरी)

श्रीस्वाध्याय वर्ष बारह संख्या १ (आश्विन) में मुद्रित "मानस पर विचार" नामक लेख पढ़ा जिसमें प्रमाणों से कन्यादानके समय दाताकी पत्नीको अपने पतिके दक्षिणाङ्ग में होनेका विधान सिद्ध किया गया है इसके विषयमें श्री स्वाध्याय वर्ष बारह संख्या ४ (आषाढ) में मुद्रित श्री पं० चिम्मनलालजी शर्मा ज्योतिषी गणित मार्तण्ड द्वारा लिखित लेख भी देखा। पं० जी के मतमें दाताकी पत्नीका वामाङ्गमें स्थित होना अधिक प्रशस्त है इस सम्बन्ध में मैं अपने भी विचार प्रकट कर रहा हूं। वर्तमानमें दाताकी पत्नीका दक्षिण और वाम दोनों ही दिशाओंमें प्रयोग चल रहा है ऐसी दशामें जबकि एक प्रश्न किसी शास्त्रकी विधिके वास्तविक शास्त्रानुमोदित स्वरूपके स्पष्टीकरणका विद्वत्समाजके संमुख उपस्थित होता है तो पण्डित वर्ग (कर्मकाण्डी विद्वान्) का यह कर्तव्य हो जाता है कि उस विषय पर शास्त्रानुसार ही जो मत स्पष्ट ग्राह्य हो वही जनताके सामने उपस्थित किया जाय। पं० जीने विश्वनाथादि के प्रमाणोंका उल्लेख जो किया है वह भी सर्वथा उन विद्वानोंके ही मतके प्रतिकूल है। स्वयं विश्वनाथने उक्त विषय में लिखा है कि 'वर कन्या प्राङ्मुख सपत्नीक दाता उत्तर मुख' अर्थात् दाताके दक्षिण भागमें पत्नी ऐसा दाता उत्तर मुख, इतना ही नहीं इस विषयके बहुसंख्यक विद्वान् एवं अनुभवी लेखकोंका मत इसीके अनुकूल है उनमेंसे कतिपय प्रमुख ग्रन्थोंके प्रमाणोंका दिग्दर्शन कराया जाता है।

१. कात्यायन श्रौतसूत्र अ० ४ कं० ७ सू० १६ पश्चादग्नेरुपविशतो दक्षिणतः पत्नी।

२. प्रयोगरत्न—स्वदक्षिण देशस्थ पत्नीसहित उपविश्य।

३. हिरण्यकेशीय ब्रह्मकर्म समुच्चय—दाता वरवधू दक्षिणत उदङ् मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीमुपवेश्य।

४. दानचन्द्रिका—पित्रादिको वधूवरदक्षिणतः स्वदक्षिणस्थ-पत्नीसहित उदङ् मखो दर्भेष्वासीनः।

५. लघुदर्पण—कन्या पिता उदङ् मुखस्तत्पत्नी तद्दक्षिणतश्चोपविशति।

६. काशीस्थ श्रीपं० विद्याधरः—कन्यादाता स्नातः पवित्रपाणिरुदङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीम्।

७. गदाधरः—दाता वरदक्षिणतः स्वदक्षिण देशस्थ पत्नीसहित उपविश्य।

८. विश्वनाथः—चतुरिकोत्तरतः वरं प्राङ्मुखं कुशास्तीर्णे आसने उपविष्टं वराद्दक्षिणतः कन्यामुपवेश्य ततः प्रागुदङ्मुखः प्रदः कन्यायाः आसने उपविशेत् दक्षिणतः पत्नी तिष्ठेत्॥

९. संस्कार रत्नमाला—वधू वरयोर्मध्य प्रदेशस्य दक्षिणतः उदङ् मुखउपविश्य दक्षिणतः पत्नीमुपवेश्य।

१० संस्कार प्रकाश—दाता स्व दक्षिणदेशपत्न्या सह वरपार्श्वभागे शुभासने उदङ्मुख उपविश्य।

११. संस्कार भास्कर—दाता स्वदक्षिणे पत्न्या सह वरपार्श्वभागे शुभासने उदङ्मुख उपविश्य।

१२. संस्कार दीपक–जातके नामके चैवेत्यनुक्रम्या-प्रदाने मधुपर्कस्य कन्यादानेतथैव च। कर्मस्वेतेषु वै भार्यां दक्षिणे तूपवेशयेत् ।

१३. प्रतिष्ठेन्दुः----स्वदक्षिणे पत्नीमुपवेशयेत् ।

१४. महा रुद्रपद्धतौ---यजमानः ऊर्णावस्त्राच्छादिते पीठे उपविश्य पत्नीं स्वदक्षिणतः उपवेशयेत् ।

यद्यपि उक्त विषयमें अन्य बहुसंख्यक ग्रन्थ भी डंकेकी चोटसे यही घोषित कर रहे हैं कि दाताकी पत्नी कन्यादानके समय स्वपतिके दक्षिण पार्श्वमें ही होनी चाहिये किन्तु लेखके कलेवर-वृद्धिके भयसे अधिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इतनेसे ही यह स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्रोक्त विधान दातृ पत्नीका स्वपतिके दक्षिणमें ही होनेका है।

पं० जी ने 'उत्तरत आयतना हि स्त्री, यह श्रुति प्रमाण देकर वामभागमें बैठाना सिद्ध किया है सो भी असंगत है इसके सम्बन्धमें काशीस्थ पदवाक्यप्रमाणपारावारीण महामहोपाध्याय श्री पं० नित्यानन्दजीने अपने संस्कार दीपकमें हृदयालम्भनके पश्चात् सिंदूरदानके पूर्व लिखा है। 'अत्रावसरे उत्तरत आयतना हि स्त्री, श० का० ८ अ० ४ ब्रा० ४ कं० ११ इतिलिङ्गानुमितात् शिष्टाचारात् वरस्य वामभागे वधूमुपवेशयन्ति ।

इससे स्पष्ट है कि सप्तपदी हो जानेके पश्चात् पत्नीका दक्षिण और वामभागमें स्थित होना कर्मविशेष पर व्यवस्थित है सभी कर्मोंमें वामभागमें (सप्तपदी क्या क्रिया है इसको वास्तविक रूपसे जाननेके लिए सर्वतन्त्र स्वतन्त्र महामहिम श्री १०८ मान् अमृत वाग्भवाचार्य जी रचित 'सप्तपदीहृदय' देखना अत्यावश्यक है।) वहां तो केवल शतपथ ब्राह्मण यह बतलाता है कि यहां स्त्री वामभागमें होनी चाहिये जिस शतपथ ब्राह्मणके अभिप्रायको स्मृतिकार स्पष्ट करते हैं। (वामे सिन्दूरदाने चेति) सिन्दूरदानमें वामभागमें बैठानी चाहिये यही हरिहरादिकोंका मत है कि आचारसे यहां पर बधूको वामभागमें बैठाना। वहाँ वामभागमें बैठाना केवल कर्म विशेष अर्थात् सिन्दूरदानके कारण है इससे यह नहीं कि सर्वदाके लिये वामभागमें ही बैठने लग जाय। यह तो कर्मविशेषमें कहीं वामाङ्ग और कहीं दक्षिणाङ्ग और कन्यादानके समय तो शास्त्रोक्त विधान दातृ-पत्नीका दक्षिणाङ्ग ही पाया जाता है अतः श्री गोस्वामी तुलसीदासजी महाराजकी 'जनक वाम दिशि सोह सुनयना, वाली चौपाईका अभिप्राय वही प्रतीत होता है कि जैसा पूर्वमें श्री पं० ज्वालाप्रसादजीने भी अपनी टीकामें स्वीकार किया है और मानस पर विचारके लेखकने भी अपने विचार व्यक्त किये हैं।"

★

बालक बालिकाओं और कम पढ़े लिखे प्रौढ़ों का
सचित्र सुन्दर सरस, सलोना आदर्श
मासिक-पत्र

कुमार

सम्पादक—[बच्चोंके अपने कवि] 'चौबेजी'

वार्षिक शुल्क—(चार विशेषांकों सहित) पांचरुपये
विद्यार्थियों से— ढाई रुपये

नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता।

कुमार के कुछ कलाकार—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सत्यदेव विद्यालंकार, हरिकृष्ण प्रेमी, डा० रघुवीर सिंह, गणेश दत्त इन्द, 'स्वर्णसहोदर', सरस्वती कुमार दीपक, काशीनाथ त्रिवेदी और अनेक।

कुमार के स्थाई-स्तम्भ—चौबेजी का कमरा, सखी सहेली, गांवकी बातें, याद करो, हा हा ही ही, बाल-मन्दिर और ४००) रुपये की इनामी 'कुमार वर्ग पहेली प्रतियोगिता' 'कुमार' प्रतिमास आपको हंसाएगा, बहलाएगा गुदगुदाएगा और नया ज्ञान सिखाएगा।

ग्राहक बनिए, विज्ञापन और एजेन्सीके लिए लिखिये

संचालक—'कुमार' कुमारघर इतवारिया इन्दौर

श्रीमहानुभवशक्तिस्तवः

(श्रीराष्ट्रभाषापद्यानुवादलसितः)

[प्रणेता—श्री १०८ अमृतवाग्भवाचार्यः] (पद्यानुवादकः—'रसेन्द्र':)

अपूर्य स्वातन्त्र्यादनुपमनिजानन्दसुधया मुहुर्नानाकारान्निजरचितसद्भावचषकान् ।
स्वमेव प्रीणानं निजललितघूर्णानमतुलं नमामो विश्वेषां त्रिमलचरणं दैशिकवरम् ॥१॥

जो स्वतन्त्र अपनी अनुपम आनन्द सुधासे भर कर।
विविध रूपमें बार-बार अपने प्यालोंको पीकर ॥
हो निजमें ही तुष्ट, स्वयं अपनेको देखा करते।
सबके उन दैशिकवर का, हम हैं पद-वन्दन करते ॥१॥

प्राक्सर्गतोऽपि परतोऽपि च मध्यदेशे सांसर्गिकेऽत्र सकले परिपूर्णरूपा ।
नैसर्गिकी परशिवाऽऽकृतिबिन्दुबीजं नैसर्गिकी जयति शक्तिरनन्तवीर्य्या ॥२॥

सृष्टिकालसे पहले भी है जिसकी ज्योति चमकती ।
पूर्णरूपसे महाप्रलयके पीछे भी जो रहती ॥
करती पालन मध्यकालमें सबका सदा सदय हो।
बिन्दुमयी उस शिवरूपा माँ शक्तिमतीकी जय हो ॥२॥

अस्मीतिमात्र भरिताऽखिलसर्वभावा ेधाभिनन्दनसमुच्छलितात्मरूपा ।
शान्ताऽपि घोरतरघोरतमस्वरूपैराभाति सङ्कलितपञ्चविधप्रपञ्चा ॥३॥

मैं हूं ऐसा भाव सदा जो सबमें भरती मिलती।
महाबोधके अभिनन्दनसे आत्मरूप उच्छलती ॥
शान्तमूर्ति होने पर भी वह घोर घोर रूपों वाली।
लगती पंच प्रपंचमयी सी महामहामहिमाशाली ॥३॥

यस्याः स्वतन्त्रकलनाकलिता विचित्रा ज्ञानावलीवलयमूलमतीव सूक्ष्मा ।
इच्छाऽभिधा हृदि 'झगि' त्यवभासमाना नित्या विराजतितरां शिवभूतिभूता ॥४॥

जिसकी शुभ स्वातन्त्र्यकलासे सूक्ष्मज्ञानके द्वारा ।
उद्भासित्त हो उठता प्रतिपल मूल रूप यह सारा ॥
अन्दरमें चिर चिन्तन से जो 'झक्' से जागृत होती ।
नित्यमयी शिवभूतिमयी वह 'इच्छा रूपा' ज्योती ॥४॥

यावत्क्रियाप्रचयपुष्टिनिदानभूता 'ज्ञाना'ऽभिधा शिवतनूः श्रुतिशास्त्रमूलम् ।
इच्छाविकाशफलितं हृदयं क्रियायाः सर्वत्र या विजयतेऽवतु सा समस्तम् ॥५॥

निखिल क्रियायें हो सकनेमें जो है एक मात्र कारण।
सब शास्त्रोंका मूल और जो करता क्लेश निवारण॥
इच्छाका फल कान्त, क्रियाका सारा हृदय सनातन।
जय महिमामय 'ज्ञान' रूप वह सबका सदा करे रक्षण॥५॥

आब्रह्मकीटहृदयेष्वनुभूयमाना सर्वेषु कार्यकरणेषु विराजमाना
शम्भोः प्रसिद्धतमवर्ष्मविकासभूमिः प्रीणातु सन्ततमियं सुभगा 'क्रिया'ख्या॥६॥

ब्रह्मासे लेकर कीड़े तक सबमें बसने वाली।
सारे कार्य करणमें स्थित हो, स्वयं सभी करने वाली॥
शिवकी निखिल-ललित लीलामें नवजीवन देने वाली।
हो प्रसन्न वह 'क्रिया'रूपसे व्याप्त सदा रहने वाली॥६॥

चिदानन्दाशंसा विदिकृतिमयी भावसुभगा कलाधन्या कन्या जयकृतिरनन्या शिवगुरोः।
ददानैन्द्रीं भूतिं हिमकिरणशौक्लीं तनुरुचिं प्रभां सौरीं सोमाऽमृतकवलिनी पातु जयिनी॥७॥

ज्ञान और आनन्द प्रशंसित विदि-कृतिभावसुरम्या।
शिव गुरुवरकी अनुपम जयकृति धन्य कलामय कन्या॥
इन्द्र विभव औ 'इन्दुकान्तितन' रवि-छवि देनेवाली।
जय शीला सबको वह पाले शिवा सुधा पीने वाली॥७॥

महानुभवसंस्तुतां महितबिन्दुमध्यस्थितं महार्थमणिमेखलाम्मदनसूदनानन्दिनीम्।
महामृतमदं श्रयन् विजयते स्तुवन् सम्मदान् महामहिममण्डितोऽप्यमृतवाग्भवः पण्डितः॥८॥

महानुभवसे संस्तुत नित ही बिन्दु मध्यमें रहती।
महा महा अर्थों वाली जो मदन दहन हर्षित करती॥
महा सुधा मदमस्त स्तवन रत रहते सदानुभवसे।
महामहामहिमामय जो 'आचार्य अमृत वाग्भव' वे॥८॥

राधाधिपमिते वर्षे श्रीशिवरात्रिपर्वणि।
स्तुतिमेतां विनिरमा-दाचार्योऽमृतवाग्भवः॥९॥

दृग नव नन्द धरणि संख्याके विक्रम संवत्सर पर।
शिवरात्रीके प्रथित पर्व पर स्तुति यह सबको हितकर-
रची, सदामृतरूप गहन गरिमा गौरव मण्डितने।
'श्री अमृतवाग्भवाचार्य' वर्य शुभनाम लसित पण्डितने॥९॥

(अथोपसंहृतिः)

धनन र मित वर्षे फाल्गुने शुक्लपक्षे रतिपतिमदहतुर्स्सचिथौ सौरिवारे।
'शिव' पदकमलालिः स्तोत्ररत्ने 'रसेन्द्रो' व्यरचयदनुवादं राष्ट्रभाषाऽनुबद्धम्॥१०॥

॥ शिवमस्तु॥

स्वातन्त्र्य

[ले०—श्री प्रो० बलजिन्नाथजी पण्डित शास्त्री M.A., M.O.L.]

व्यावहारिक स्वातन्त्र्य

व्यावहारिक स्वातन्त्र्य अनेक प्रकार से होता है। पहिले ही व्यक्तिगत और समाजगत ये दो भेद इससे बनते हैं। कहीं कहीं व्यक्ति और समाज दोनोंकी एक ही गति होती है। जैसे कोई राष्ट्र परतन्त्र हो तो राष्ट्रके सभी व्यक्ति परतन्त्र हुआ करते हैं। पर कहीं-कहीं भेद भी होता है। जैसे कोई राष्ट्र समृद्ध हो पर उसमें भी दरिद्र लोग हुआ करते हैं। या दरिद्र राष्ट्रमें भी कोई कोई धनवान् हुआ करते हैं। वे धनवान् शेष लोगोंकी अपेक्षा स्वतन्त्र होते हैं। इस प्रकारसे व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य राष्ट्रगत स्वातन्त्र्यसे भिन्न है। वस्तुतः राष्ट्र भी स्वतन्त्र होना चाहिए और राष्ट्रके निवासी व्यक्ति भी, तभी उस राष्ट्रको स्वतन्त्र जाना जा सकता है। राष्ट्र और व्यक्तियोंकी स्वतंत्रता भी अनेक प्रकारसे होती है। अनेक प्रकारसे उन्हें दूसरों का मुख ताकना पड़ता है। यह परतंत्रता राजनैतिक भी होती है और आर्थिक भी। इसी तरह धार्मिक बौद्धिक और सामाजिक आदि भी इसके प्रकार होते हैं। इनमें से अत्यन्त दुःखदायिनी राजनैतिक परतन्त्रता होती है। आर्थिक परतन्त्रता दूसरी कक्षामें आती है। तीसरा स्थान धार्मिक आदि परतन्त्रताओंका है। कहीं कहीं एक राष्ट्रका शासन दूसरे राष्ट्रके हाथमें होता है। जैसे अभी तक भारत पर अंग्रेजोंका शासन था। सारा भारत राष्ट्र राजनैतिक परतन्त्रतासे पीड़ित हो रहा था। अभी तक एशिया महाद्वीपके कुछ एक देश विदेशियोंके अधीन हैं। इनकी यह नैतिक परतंत्रता असंख्य कष्टोंका कारण हुआ करती है। शेष सभी परतंत्रताका मूल कारण यह नैतिक परतंत्रता ही होती है। स्वतंत्र राष्ट्र वही है जो दूसरे राष्ट्रोंसे सम्बन्ध जोड़नेमें [चाहे वह मैत्रीका सम्बन्ध हो, या शत्रुताका अथवा तटस्थताका ही क्यों न हो] स्वतंत्र हो, जिस राष्ट्रकी सेना और जिस राष्ट्रका कोष राष्ट्रियोंके हाथमें हो, तथा जो राष्ट्र बिना किसीके मुखकी ओर देखे अपनी रक्षा स्वयं कर सकता हो, इतनी शक्ति के होते हुए ही राष्ट्रमें राजनैतिक स्वातन्त्र्य हो सकता है। जिस राष्ट्रमें इतनी शक्ति न हो, उसे स्वतंत्र नहीं माना जा सकता। स्वतंत्रराष्ट्रमें भी कहीं कहीं ऐसी व्यवस्था हुआ करती है कि राष्ट्रके निवासियोंका एक ही वर्ग राष्ट्र पर शासन कर सकता है। दूसरे वर्गके लोगोंका शासन पर कोई भी अधिकार या प्रभाव नहीं पड़ता, वह राष्ट्र तो स्वतंत्र है, परन्तु वहांके निवासी परतंत्र हैं। जैसे दक्षिण अफ्रीकाके भारतीय और अफ्रीकन विचारे राजनैतिक परतंत्रतासे पीड़ित हैं। शासन गोरोंका है और काले केवल शास्य ही हैं। वे शासक नहीं हैं। यह व्यक्तिगत परतंत्रता है। भारतवर्ष इस समय राजनैतिक स्वातन्त्र्यके सुखको भोग रहा है। परन्तु अभी तक आर्थिक स्वातन्त्र्य हमें देखनेमें नहीं आया। अभी तक अन्नके लिए, धनके लिए, मशीनोंके लिए, तथा अन्य-अन्य वस्तुओंके लिए हमें अन्य देशोंके मुखकी ओर देखना पड़ रहा है। अभी तक हम आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी बने नहीं हैं। इस तरहसे हम आर्थिक पराधीनतासे अभी छूट नहीं गये। हमारे राष्ट्रमें लाखों व्यक्तियोंके पास खानेको अन्न नहीं। पहनने को वस्त्र नहीं, रहनेको घर नहीं, रोगोंके लिए औषध नहीं, बच्चोंको पढ़ानेका कोई सुभीता नहीं। इस प्रकारसे व्यक्तिगत आर्थिक परतन्त्रताका घर ही हमारा राष्ट्र बन गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम सैंकड़ों वर्ष राजनैतिक पराधीनताके पात्र बने रहे। उस पराधीनता ने हमें तथा हमारे राष्ट्रको दरिद्र बना दिया। अब हमने नैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की है। इस लिए आशा है कि शीघ्र ही आर्थिक स्वतन्त्रता भी हमारा सम्मान करेगी। अमेरिका जैसे समृद्ध राष्ट्रोंमें भी ऐसे लोग हैं जो हमारी तरह आर्थिक पराधीनताके कृपापात्र हैं। यह वैयक्तिक आर्थिक पराधीनताका स्पष्ट उदाहरण है। रूसमें व्यक्ति भी आर्थिक दृष्टिसे स्वतन्त्र हैं और राष्ट्र भी। वे लोग

इस स्वतन्त्रताके ही माहात्म्यसे पिछले महायुद्धकी बड़ी भारी आपत्तिको भी पार कर गये। परन्तु इतना होते हुए भी वहां धार्मिक और बौद्धिक स्वतन्त्रता नहीं है। कोई भी वहां धर्मका प्रचार नहीं कर सकता। अनेक वर्षों तक वहां गिरजे भी बन्द थे और पादरियोंको नागरिक अधिकार भी नहीं थे। यही धार्मिक स्वतन्त्रताका अभाव है। प्राचीन इस्लामी साम्राज्योंमें इससे भी बढ़कर धार्मिक पराधीनता थी। रूसमें यदि कोई धर्मका पालन अपने घर में करे तो कोई भी रुकावट नहीं। परन्तु मुसलमान सम्राटोंके शासनमें हिन्दु या बौद्ध या किसी और धर्मका आसरा लेना ही बड़ा भारी अपराध था। ईरानमें मुसल्मानी शासन कालमें वहांके अग्निपूजकोंका सर्वनाश ही किया गया। भारतमें भी अकबर जैसे विशाल हृदय सुलतानों के समयको छोड़ कर लगभग एक सहस्र वर्षके इस्लामी शासनमें हिन्दू जनता धार्मिक पराधीनतासे पीडित रही। निजामके राज्यमें अभी २ तक अपनी इच्छा से यज्ञ करना शंख बजाना मन्दिर आदि बनाना या ऐसा कोई और काम बड़ा भारी अपराध माना जाता था। पाकिस्तानने भी आरम्भमें धार्मिक पराधीनताको हिन्दू जनता पर ठोंसा। हिन्दुस्थान, चीन, वियतनाम आदि पूर्वीय राष्ट्रोंमें सहस्रों वर्षोंसे धार्मिक स्वतन्त्रता चली आ रही है। उन राष्ट्रोंमें लोग किसी भी धर्मको अपनानेमें तथा पालन और प्रचार करनेमें स्वतन्त्र हैं। इस समयके भारतवर्षके स्वतन्त्र शासन ने इसी अपनी प्राचीन धार्मिक स्वातन्त्र्यकी नीतिको अपनाया। यूरोपमें भी अब कोई प्यूरिटनोंको जला नहीं देता है। इस्लामी राष्ट्रोंमें भी अब अन्य धर्म वाले लोग स्वतन्त्रता पूर्वक काम काज कर सकते हैं। ईरानमें भी अब अग्निपूजकको मारा नहीं जाता है, और मन्सूरको सूली पर नहीं चढ़ाया जाता। पाकिस्तान भी धार्मिक स्वातन्त्र्यकी नीतिको क्रियात्मक रूप देनेके लिए विवश हो रहा है। रूसमें भी कभी धार्मिक स्वतन्त्रता अपना पैर जमा ही लेगी। अमेरिका में तो यह स्वतन्त्रता है ही। इस तरहसे समस्त संसारमें धार्मिक स्वतन्त्रताका विकास होने वाला है। इस स्वतन्त्रताके बिना मनुष्य कभी भी आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकते। चाहे वे आर्थिक उन्नति कितनी भी करें। इस कारण मनुष्यको पूरा मनुष्य बननेके लिए और पूर्ण पारमार्थिक स्वातन्त्र्यको प्राप्त करनेके लिए धार्मिक स्वतन्त्रता परम आवश्यक है। इस समय भारत अमेरिका यूरोप आदि राष्ट्रोंमें मनुष्य जो चाहे सोच समझ सकता है, और सोच समझ कर अपने विचारोंको व्याख्यानों द्वारा पुस्तकों द्वारा और पत्र पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित कर सकता है। इसीको हम बौद्धिक स्वतन्त्रता कहते हैं। रूस जैसे उन्नत देशमें इस प्रकारकी स्वतन्त्रता नहीं है। वहां स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचारोंको जनताके सामने प्रकट नहीं किया जा सकता। स्वामी रामतीर्थ अमेरिका गये, वहां उन्होंने लोगोंको अपने ब्रह्मज्ञानके विचार सुना दिये, तो राष्ट्र भरमें उनका स्वागत किया गया। ऐसी बात रूस में सम्भव नहीं। शमसतबरीजने ईरानमें एक बार अपने वेदान्तिक विचार लोगोंके सामने प्रकट किये तो उसको बड़ा ही कष्ट दिया गया। वहां बौद्धिक स्वातन्त्र्य नहीं था। भारतवर्ष में अनादि कालसे ही बौद्धिक स्वातन्त्र्य चला आ रहा है। एक और प्रकारकी विचित्र पराधीनता होती है। जिसका पूरा विकास हमारे देशमें और विशेष कर हिन्दु जातिमें ही हुआ है। यह सामाजिक पराधीनता है हम लोग सामाजिक बन्धनोंमें इतने जकड़े हुए हैं कि किसी प्रकारसे उन्नति कर ही नहीं सकते। किसी हिन्दूके घर जवान लड़को है, उसके विवाहकी आयु हुई है, परन्तु जब तक उसका पिता विवाह पर अपव्यय करनेके लिए सहस्रों रुपये जमा न करे तब तक उसका विवाह करा नहीं सकता। एक विद्यावान् आचारवान् और धनवान् नवयुवक कन्याके लिए वरके रूप में मिल रहा है; परन्तु वह उच्च वंशका नहीं। उसका परदादा किसी सेठकी दुकान पर नौकर था। इसलिए उसे कन्या दी नहीं जा सकती। उसकी अपेक्षा एक खानदानी बुढ्ढेको दी जा सकती है, जहां उसका सर्वनाश अन्धेको भी दिखाई पड़ता है। इस प्रकारकी असंख्य पराधीनताओंको हम सामाजिक परतन्त्रता कहते हैं। मुसल्मानोंमें ऐसे बन्धन बहुत थोड़े हैं। यूरोपमें प्रायः यह बन्धन नहीं हैं। और रूसमें तो इनका नाम भी शेष नहीं रहा है। वहां पर ही सामाजिक स्वतन्त्रताका पूरा विकास देखनेमें आता है। इस प्रकार

से व्यावहारिक स्वतन्त्रताके अनेकों भेद हैं। व्यावहारिक स्वातन्त्र्यसे ही मनुष्यका जीवन सुखमय बन सकता है। जिस राष्ट्र और जिस व्यक्तिमें जितना व्यावहारिक स्वातंत्र्य हो उसका जीवन उतना ही सुखमय बन जाता है। इसके विरुद्ध जहां-जहां जितनी व्यावहारिक पराधीनता हो वहां-वहां उतने ही अधिक कष्ट हुआ करते हैं। कहीं कहीं व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य राष्ट्रके स्वातंत्र्यसे विरोध रखता है। जैसे एक बदमाश डाकू है वह जिस किसीके धन धान्य वस्त्र भूषण स्त्री इत्यादिको लूटकर अपनी कामनाओंको शान्त करके सुखसे जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसे इस काममें स्वातन्त्र्य होना चाहिये कि नहीं। यदि राष्ट्रमें वही एक मनुष्य होता और यदि व्यावहारिक स्वातन्त्र्य ही जीवनका सार होता तो सभी कहते कि उसे इस प्रकारका स्वातन्त्र्य होना चाहिए। परन्तु ऐसी बात नहीं। राष्ट्रमें उस डाकूकी स्वतन्त्रता अनेक सज्जनोंकी परतन्त्रताका कारण बन रही है। अतः अधिक लोगोंकी स्वतन्त्रता ही एक डाकूकी स्वतन्त्रताकी अपेक्षा अधिक वांछनीय है। इस प्रकारकी खुली स्वतन्त्रतासे वह डाकू पारमार्थिक स्वतन्त्रताको अधिकाधिक खोता जायगा। इसलिए ऐसी स्वतन्त्रताको स्वतन्त्रता नहीं कहते। यह स्वतन्त्रताका आभास मात्र है, और नृशंसता है। पशु पक्षियोंमें भी कुछ नियम हुआ करते हैं। वे भी समष्टिकी स्वतन्त्रताके लिए नियमोंके अधीन रहते हैं। तो समष्टि अर्थात् राष्ट्रकी स्वतन्त्रता वैयक्तिक स्वतंत्रतासे अधिक आवश्यक है। राष्ट्रकी ही स्वतन्त्रता वस्तुतः वैयक्तिक स्वतंत्रताका मूल आधार है। राष्ट्रकी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए राष्ट्र निवासी व्यक्तियोंको नियमोंके अधीन रहना पड़ता है, इसलिए व्यावहारिक स्वतन्त्रताके विषयमें यह बात याद रखनी चाहिए कि प्रत्येक प्रकारकी स्वतंत्रता मनुष्यको उतनी ही होनी चाहिए जितनी राष्ट्रके लिये घातक न बने। इसी लिए राजनैतिक स्वतन्त्रतामें भी नियम होते हैं। जो चाहे वह शासक नहीं बनता। योग्यता अयोग्यता उचितता अनुचितता आदिका विचार रखना पड़ता ही है। आर्थिक स्वतन्त्रतामें भी नियम होते हैं। कोई किसीके धनको छीन नहीं सकता। कोई किसीका ऋण खा नहीं सकता। धर्मके विषयमें भी यही बात है। नर बलि देने वाले हबशी-धर्मको कोई भी सभ्य राष्ट्र स्थान नहीं दे सकता। चौर्य-शास्त्रका प्रचार, मारण, मोहन, उच्चाटन आदिके विषयमें भाषण आदिकी कहीं भी स्वतंत्रता नहीं। इस तरहसे बौद्धिक स्वतन्त्रता भी सीमित ही है। रूसमें सामाजिक नियमोंके बन्धन नहीं, परन्तु वहाँ भी लोग पशुओंकी तरह नहीं रहते। वहां भी पतिपत्नी-भाव पिता-पुत्र-भाव, भ्रातृ-भाव आदि सामाजिक सम्बन्ध होते ही हैं। वहां भी विवाहका कोई नियम होता ही है। यद्यपि वह इतना कड़ा नियम नहीं होता। इस प्रकारसे व्यावहारिक स्वतन्त्रता सदैव सीमित ही हुआ करती है, तभी तक वह स्वतन्त्रता कहलाती है। अन्यथा उसीके गुण्डेबाजी, उच्छृंखलता या पागलपन आदि नाम पड़ते हैं। व्यवहार सांसारिक सम्बन्धों और कार्योंका नाम है। संसार स्वयं सीमित है। इसलिए व्यावहारिक स्वतन्त्रता भी सीमित ही हुआ करती है, जितनी सीमामें व्यावहारिक स्वतन्त्रता पारमार्थिक स्वतन्त्रताकी बाधक न बने, तथा और लोगोंकी स्वतन्त्रताको दबाये नहीं, उतनी ही सीमामें उसे स्वतन्त्रता कहते हैं। अब इस व्यावहारिक स्वतंत्रताके उपायों पर कुछ लिखा जा रहा है। राष्ट्र और लोग व्यावहारिक दृष्टिसे स्वतन्त्रताको प्राप्त कैसे करें, और प्राप्त करके उसकी रक्षा कर सकें। स्वातन्त्र्यके योग-क्षेमका मूल कारण होता है अच्छा शासन। अच्छा शासन ही राष्ट्रमें हर एक प्रकारसे स्वतन्त्रताको स्थापित कर सकता है। अच्छे शासनको हम 'आर्य शासन' कहते हैं। लोग कहेंगे, प्रजातन्त्र, व्यक्तितन्त्र वा राजतन्त्र शासन अच्छा शासन होता है। कोई साम्यवादके शासनको ही शुभ शासन कहेंगे। परन्तु हमारे मतमें प्रजातन्त्र अर्थात् लोक-राज्य तभी तक अच्छा शासन है जब तक उसको उचित और शुभ ढंगसे चलाया जाय। यही दशा व्यक्तितन्त्र अर्थात् डिक्टेटरशिप और राजतन्त्र अर्थात् राजाके राज्यकी है। साम्यवाद भी यदि उचित ढंगसे चलाया न जाय तो वह अच्छा शासन नहीं बन सकता। साम्यवादियोंने पूर्वी एशियामें जो आतंककी परम्परा चला रखी है वही इस बातको बता रही है कि उन लोगोंका शासन कैसा होगा। इसलिए हमारा सिद्धान्त यही है कि आर्य शासन ही अच्छा शासन है। उसीको हम रामराज्य कहते हैं। राम आर्य था। आर्यसे हम किसी जातिको नहीं कहते।

[क्रमशः]

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्

[लेखक—श्री रमानन्द सारस्वत शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

गतांक १२-१ से आगे

जैसा कि पिछले श्लोककी व्याख्यामें कहा गया था वस्तुतः 'श्रीराष्ट्रालोक'के दो प्रारम्भिक श्लोक तो मङ्गलाचरणपरक हैं, यद्यपि प्रथममें राष्ट्रका बीज रूप तथा दूसरे में उसका व्यावहारिकतया विशिष्टरूप वर्णित किया गया है और तृतीय श्लोकमें तो राष्ट्रका साधारण स्पष्टीकरण किया ही गया है। तथापि मुख्य रूपमें ग्रन्थका आरम्भ चतुर्थ श्लोकसे होता है जिसका कि विस्तृत यथामति पीछे अवलोकन किया जा चुका है। अब यहाँ पञ्चम श्लोकका अवलोकन किया जायगा। इससे पूर्व, प्रसङ्ग अनुबन्धकी दृष्टिसे एक बार चतुर्थ श्लोकका भाव पुनः हृदयङ्गम किया जाता है—

'पितृपुण्य भुवं राष्ट्रं यन्मन्यन्ते च ये नराः।
तेषां नराणां राष्ट्रं तत् स्वीयं भवति सर्वथा ॥४॥'

अर्थात् जो व्यक्ति जिस राष्ट्रको अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानते हों वही राष्ट्र उन व्यक्तियोंका अपना अतएव ममत्वपूर्ण होता है। इस श्लोकमें राष्ट्रके अपनत्वका आधार पितृ-पुण्य-भूत्व बतलाया गया है जिसका विवेचन प्रथम ही हो चुका है। अब इससे अग्रिम श्लोकमें किस राष्ट्र पर किन लोगोंका स्वत्व या अधिकार होता है यह बतलाया गया है। मूल श्लोक इस प्रकार है :—

"पितृभूत्त्वं पुण्यभूत्त्वं द्वयं यस्य न विद्यते।
तस्य स्वत्त्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलार्हति ॥५॥"

अर्थात् जिस व्यक्तिका जिस राष्ट्रमें न तो पितृभूत्व हो और न पुण्यभूत्व ही, इन दोनोंके अभावमें उस व्यक्तिका उस राष्ट्रमें कोई स्वत्व नहीं हो सकता। भाव यह है कि स्वत्व प्राप्तिके लिए पितृभू और पुण्यभू दोनों बातें समान रूपमें आवश्यक हैं। ग्रन्थकर्ताने भाषानुवादमें स्वत्वका अर्थ अपनापन किया है। किंतु विचारनेसे प्रतीत होता है कि यहां स्वत्व एक प्रकारसे सिटिजनशिप [Citizenship] या नागरिकताके रूपमें प्रयुक्त हुआ है क्योंकि सारे ग्रन्थ पढ़ जाने पर भी आगे नागरिकता पर प्रकाश डालने वाला कोई सूत्र नहीं मिलता। अतः मानना पड़ेगा यह श्लोक नागरिकताकी परिभाषामें प्रयुक्त हुआ है और यहां स्वत्वका भाव अधिकारसे है, अपनापन या अपनत्वकी भावना-विशेष नहीं। इसके अतिरिक्त एक यह भी बात है कि चौथे श्लोकके बाद पाँचवें श्लोकके भावकी अप्रयोजनता भी सिद्ध हो जाती है। क्योंकि चौथे श्लोकमें जब यह बतला ही दिया है कि जो लोग जिस राष्ट्रको अपनी पितृपुण्यभूमि मानते हैं उन व्यक्तियोंका वह राष्ट्र स्वीय अर्थात् सब प्रकारसे अपना होता है, तब पाँचवेंमें उसी बातको पौनःपुन्यसे कि पितृभूत्व और पुण्यभूत्व ये दोनों जिस व्यक्तिका जिस राष्ट्रमें नहीं होता उस व्यक्तिका उस राष्ट्रमें कोई स्वत्व अर्थात् अपनापन नहीं होता—यह बात कुछ जँचती नहीं। अतः यहां स्वीय और स्वत्व दोनों शब्दों पर पहले विचार करना ठीक होगा। स्वीय शब्द बिलकुल अपना, अतिरिक्त अन्यके भावमें प्रयुक्त होता है। इससे हृद्गत भाव-वैशिष्ट्य प्रकट होता है, अतः यह ममत्वका व्यञ्जक है। आर्ष ग्रन्थोंमें यह प्रणाली भी होती है कि वे आध्यात्मिकभाव-अनुस्यूत होते हैं, और आध्यात्मिक भावोंका आधार सर्वत्र होती है आत्मा। राष्ट्रवादमें राष्ट्र वस्तुतः आत्मा ही है, अतः सर्वाधिक स्वीयता आत्मेतर होगी भी किसमें? बाहरी दृष्टिसे फिर बात होती है वस्तु पर अधिकारकी, वह भी हो नहीं सकती पृथक्। तब यह स्पष्ट है कि तत्वतः हैं तो दोनों एक ही, किंतु अन्तर इतना अवश्य है कि एक भावना-वैशिष्ट्यमें प्रयुक्त होने वाला शब्द है और दूसरा अधिकारितामें। इस अन्तरको स्पष्ट समझ लेनेके बाद और कुछ गम्भीर दृष्टि से सोचा जाय तो ज्ञात होता है कि पहली की गयी शङ्का निर्मूल है। चौथे श्लोकमें किन लोगोंका राष्ट्रप्रेम होता

है यह बतलाया गया है जो, 'मन्यन्ते' शब्दसे ध्वनित होता है। भाव यह है कि चाहे व्यक्ति राष्ट्रमें रहे या उससे बाहर, किंतु यदि वह उस राष्ट्रको अपनी पितृभूमि और पुण्य भूमि मानता हो तो ऐसी भावनाओं वाला व्यक्ति उस राष्ट्रके संकटको अपना संकट मानेगा और उस राष्ट्रके सुखको अपना सुख एवं अपनी ही समृद्धि अनुभव करेगा। चाहे लाख व्यक्ति उसे समझाएँ, वह अपनी भावनाओंके वशीभूत होकर उस राष्ट्रसे पराङ्-मुख नहीं हो सकेगा, यह एक प्रकारसे राष्ट्रियताकी कसौटी है। इसके अतिरिक्त अब किसी राष्ट्र पर अधिकार किसका होता है—यह व्यक्त करनेके लिये पञ्चम श्लोककी रचना हुई है और उसमें पितृभू और पुण्यभू ये दोनों होने चाहियें यह 'द्वयम्' शब्दसे प्रतीत होता है। इस बातको सोचने पर दोनों श्लोकोंका अन्तर स्पष्ट दिखने लगता है। एक विशेष बात ध्यान देनेकी यह भी है कि चतुर्थ श्लोकमें 'पितृपुण्यभुवं' एक सम्मिलित पद है किंतु पञ्चम श्लोकमें इसके विपरीत 'पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं' यह पद प्रयुक्त हुआ है—भला, एक ही बातको बार बार कहनेमें क्या स्वारस्य हो सकता है ? इसका विचार करनेसे ज्ञात होता है कि राष्ट्रियताका आधार पितृपुण्यभूमें कोई सा भी एक हो सकता है, किंतु स्वत्वके लिये इन दोनों बातोंका समान रूपमें होना आवश्यक है। एक वस्तु केवल राष्ट्रियता तो व्यक्त कर सकती है, किंतु पूर्णतः स्वत्व या अधिकारिता सिद्ध नहीं कर सकती। अतः किसी राष्ट्रके स्वत्व प्राप्तिके हेतु इन दोनों बातोंका समान रूपमें होना अनिवार्य है। हाँ, राष्ट्रियताके लिए दोनों ही कुछ न्यूनाधिक भी हो सकते हैं। यद्यपि आजकलकी नागरिकताके नियमोंमें केवल उस स्थानका निवासी होना ही पर्याप्त माना जाता है, किंतु प्राचीन कालसे यह व्यवस्था होगी कि उसके बारेमें उन्हें पर्याप्त अनुभव भी हो। अनुभवका तात्पर्य उस गवेषणा-विषयक धिषणासे है जिसके आधार पर व्यक्तिको राष्ट्रका स्वरूप, सम्बन्ध एवं कर्तव्योंका सम्यक् बोध भी हो। यद्यपि यह आज तक एक विवादास्पद विषय है कि वास्तवमें लोगोंमें राष्ट्रियताका आविर्भाव कबसे हुआ और किस समय राष्ट्रवादको लक्ष्यकर शासन पद्धतिका विस्तार हुआ और उस समयकी पद्धति कैसी थी। इस विषयके प्रमाण अनुपलब्ध होनेसे यह नहीं बतलाया जा सकता कि उस समयकी नागरिकताकी परिभाषा क्या थी ? किंतु पाश्चात्य विद्वानोंके मतानुसार समान इतिहास, धर्म, भौगोलिकतादि कारणोंके सम्मिलित होने पर ही वर्ग विशेषमें एक स्थान पर मिलजुल कर रहनेकी भावनाने क्रमशः राष्ट्रवादको जन्म दिया। कुछ लोग सम्मिलित कुटुम्ब रहनेकी उग्र भावनाको ही चरमफल राष्ट्रियताका मूल कारण मानते हैं। कुछ लोग समान हितोंका ही एक मिला जुला प्रयत्न 'राष्ट्रियताके' नामसे व्यवहृत करते हैं। जहाँ तक भारतीय शास्त्रोंका प्रश्न है उनमें भी इस बारे में कुछ विशेष विवेचन नहीं मिलता। वेदोंमें राष्ट्रवादका व्यापक यशोगान तो है, और राष्ट्रके अनेक भेदोंका वर्णन भी मिलता है [जिन पर कभी विस्तृत विवेचनात्मक प्रबन्ध यथासमय लिखा जायगा] किंतु क्रम बद्ध शासन-पद्धति नहीं प्राप्त होती। पुराण उपनिषदोंमें तो राजन्यवर्गका प्रभुत्व अतएव राज्यवादका ही डिम-डिम घोष सुनाई पड़ता है, और इसके पश्चात्के ग्रन्थोंमें तो यह धूमिल सा चिन्ह रह जाता है। हां, राष्ट्रवादकी विचारधारा विनष्ट नहीं हुई दिखती, क्योंकि उत्तर कालीन राज्यवादके आधारग्रन्थ 'कौटलीय-अर्थशास्त्र'में भी राष्ट्रवादकी चर्चा एक प्रकारसे मिल जाती है। जहां तक ऐतिहासिकोंने प्राचीन सांस्कृतिक विश्लेषण किया है, उन्होंने यह माना है कि राजनीति कमसे कम भारतीय राजनीतिका आधार ब्राह्मण और क्षत्रिय दो वर्गोंका संघर्ष ही रहा है। जब क्षत्रियोंने ब्राह्मी सत्ताको एक तरहसे पराजित कर दिया—शुष्क आत्मज्ञानका अधिष्ठान एकमात्र केकय विदेहसे लेकर बौद्ध महावीर तक—केवल क्षत्रियोंने स्वयंको उद्घोषित किया तो फलस्वरूप कर्मकाण्डकी गुत्थियोंसे सुलझता हुआ ब्राह्मण वर्ग दर्शनोंकी भूमिकामें स्थित हो गया और राजन्यवर्गको अवतारों में स्थान दे स्तावक मात्र रह गया। पर चूंकि राजन्यवर्गकी यह एक अनधिकारिता थी, फलतः उनमें क्लीबत्व आ गया और वे विशाल साम्राज्य जिनका आधार मङ्गलमयब्राह्मणोंके आशीर्वाद और उनकी कृपाण थी कराल कालकी विकराल चपेटोंसे टूक टूक हो गये। तात्पर्य यह है कि दो वर्ग विशेषोंकी इस संघर्ष भावनाने राज्यवादको विनष्ट किया और सम्मिलित रूपमें प्रतिष्ठित भी किया था। महाभारतके संकेतानुसार आदि कालमें ब्राह्मण शासन था, हो सकता है यही राष्ट्रवादका स्वर्णयुग रहा हो, जब कि प्रजा ही

राष्ट्र थी, और वही स्वयं शासन करती थी, न कोई शासक था और न कोई शासित। सब लोग परस्पर समान भ्रातृ-भावसे रहते होंगे। पर जैसा कि ऊपर लिखा गया है वर्तमानमें तात्कालिक कोई स्पष्ट उल्लेख प्राप्त न होनेसे निश्चित रूपमें कुछ कहा नहीं जा सकता। किंतु हां, इतना अवश्य है कि प्राग्वैदिककालमें ऐसी व्यवस्था रही है, और यह काल वह है जिसमें मानवको सभ्यताका ज्ञान तो हो गया था किंतु वर्ग विशेषकी भावनाने तब तक जन्म धारण नहीं किया था। अतीतके उन धुँधले सुनहले पृष्ठोंको पढ़नेकी चेष्टाके पश्चात् और उपलब्ध पुस्तकीय ज्ञानको एक दृष्टिसे देखनेके बाद सहज ही साधारणतया राष्ट्रियताका मूल 'समान संस्कृति' शब्दमें मिल जाता है। यों राष्ट्रियताका आधार समान संस्कृति, पितृभावना और पुण्यभावना, ही मिलाकर दीख पड़ती है। बात भी ठीक है, अन्तःप्रेरणा एक मानसिक शक्ति पर ही तो आधारित है, और उसे जितने अंशमें जहां विकसित होनेका अवसर मिलेगा वहीं तो वह विकास करेगी। और यह अन्तःप्रेरणा, यह मानसिक शक्ति एक विशेष कर्तृत्व भावना, धर्म या हित विशेषों पर ही प्रतिष्ठित रही है और इसे ही 'समान संस्कृतिमत्ता' कहा जा सकता है। पितृभावना और पुण्यभावना इस संस्कृतिमत्ताको पल्लवित करनेके एक प्रकारसे साधन भी हैं। यद्यपि है इनमें तादात्म्य सम्बन्ध ही और यह सम्बन्ध भी विवेचनसे लगता है—चार प्रकारका है १. पितृ-सम्बन्ध, २. पुण्य सम्बन्ध, ३. पितृभावनाश्रित पुण्यसम्बन्ध और ४. पुण्याश्रित पितृसम्बन्ध। इन सम्बन्ध चतुष्टयोंमें सम्मिलित रूपसे व्यापक राष्ट्रियताका ही प्रसार है। पितृ पुण्यभूत्वका विशिष्ट विवेचन गताङ्कोंमें जा चुका है, अतः यहाँ रोमन्थन रूपमें व्यर्थ विस्तारकी अपेक्षा ही क्या है? हां, राष्ट्रिय 'नागरिकता' प्राप्त होनेमें क्या आवश्यक है यही पञ्चम श्लोकका प्रकृत विषय है। अर्थात् राष्ट्रमें राष्ट्रिय जनोंको वहांका निवासी होनेके लिये उस राष्ट्रमें अपना योग क्षेम निर्वाहार्थ बसनेके लिए पितृभूपना और पुण्यभूपना दोनों होना चाहिए, यही एक अनिवार्य शर्त है। इसमें कारण भी है कि यदि वह राष्ट्र पितृ-भूमि और पुण्य-भूमि नहीं है तो उसके प्रति पूर्ण प्रेम लोगोंका रह कैसे सकता है? और ऐसे ही कच्चे व्यक्ति या विदेशी व्यक्ति अवसर आने पर प्रच्छन्न और प्रत्यक्ष रूपसे राष्ट्रद्रोह कर बैठते हैं, और राष्ट्रद्रोही जनोंका राष्ट्रमें उत्पन्न हो जाना ही राष्ट्रको अधःपतनकी ओर ले जाता है, यह सुनिश्चित है। और किसी भी राष्ट्रको जितनी अधिक क्षति राष्ट्र-द्रोहियोंसे पहुँचती है उतनी शायद ही अन्य किसी प्रकारसे पहुंचती हो। इसीलिए इस ग्रन्थमें स्थान स्थान पर राष्ट्रघातियों, राष्ट्रद्रोहियोंका वर्णन किया गया है। जिनका आगे यथास्थान निर्देश किया जायगा। अतएव इस श्लोक या कारिकामें राष्ट्रनिवासियोंके लिए जो शर्त सी बतलाई गई है वह साधार और सयुक्तिक है। किंतु पितृपरम्परा कितनी पीढ़ियोंसे मानी जाय और पुण्य भावनाका आधार क्या हो—यह ग्रन्थमें स्पष्ट नहीं हो सका। किंतु यह ग्रन्थ सूत्र रूपमें है और ऐसे विवेचनोंका संग्रह करने पर ग्रन्थ बृहदाकार हो जाता—अतएव इस संकेतसे ही सन्तोष करना पड़ेगा। ऐसी कतिपय शङ्काओंका उत्तर पृथक् पूर्वमें चतुर्थ श्लोक-क्रममें बहुत कुछ आ गया है तथापि यथामति अग्रिम श्लोकमें विशेष विवेचन हो सकेगा।

"एवमवलोकनेऽस्मिन् हि राष्ट्रे स्वत्त्व-विधायकम्।
पितृत्वं पुण्यभूत्वं च द्वयमावश्यकम्मतम्॥"

शिवमस्तु।

शुक्रनीतिमें एक जगह कहा है कि आचारवान् पुरुष ही समयका निर्माण किया करते हैं—'आचारप्रेरको राजा ह्येतत् कालस्य कारणम्।'

एक बार धर्मराज युधिष्ठिरने भीष्मपितामहसे यही प्रश्न पूछा था—कि समय मनुष्यको बनाता है या मनुष्य समयको। तब भीष्मने महाभारतके शान्ति पर्वमें इस प्रश्नका उत्तर इस प्रकार दिया—

हे युधिष्ठिर! देशमें अच्छी और बुरी परिस्थितिका कारण एक मात्र राजा ही है। राजा ही सतयुग लाता है और राजा ही कलियुगका भयङ्कर दृश्य दिखा सकता है। यदि सिंहासनारूढ़ राजा तथा उसके अधिकारीगण सदाचारसे हीन होंगे, तो निश्चय ही—महामारी, विसूचिका, प्लेग, दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, असमयवृष्टि, जलप्लावन, भूकम्प, ज्वालामुखिका उद्गार इत्यादि द्वारा प्रजाओंको महान् कष्ट होगा—अर्थात सारी प्रकृति ही प्रतिकूल हो जायगी।

चरकसंहितामें आत्मविवेचन

[लेखकः—श्री पं० नन्दकिशोरजी आयुर्वेदाचार्य]

आत्माका स्वरूप और कुछ एक आत्मविषयक शंकाओं का सोत्तर वर्णन पहिले किया जा चुका है। अब आत्म-दर्शन के उपाय बतलाते हैं। आत्माका साक्षात्कार करनेके लिए 'सत्या' सदसद् विवेकवती बुद्धि होना आवश्यक है, इसी अभिप्रायसे महर्षि आत्रेय जी कहते हैं:—

श्रृण्वग्निवेश सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोके सममनुपश्यतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। सर्वलोकं ह्यात्मनि पश्यतोभवत्यात्मैव सुखदुःखयोः कर्ता नान्य इति। कर्मात्मकत्वाच्च हेत्वादिभियुक्तः सर्वलोकोहमिति विदित्वा ज्ञानं पूर्वमुत्थाप्यतेऽपवर्गायेति।

अर्थात्—हे अग्निवेश! सुनो, सभी जगत्को आत्मामें और आत्माको सभी जगत्में सम्यक् प्रकारसे देखने वाले मनुष्यको सत्या बुद्धि प्राप्त हो जाती है। सकल ब्रह्मांडको आत्मामें स्थित, देखने वाले मनुष्यको मैं चेतन स्वरूप आत्मा ही समस्त सुखःदुखका उत्पादक हूँ, मुझसे भिन्न कोई दूसरा नहीं, कर्माधीन हो हेतु बुद्धि आदिसे युक्त होकर मैं ही सर्वजगत् स्वरूप हूं—इस प्रकार का दृढ़ विश्वास हो जाने पर मोक्ष प्राप्तिके लिए पहिले ज्ञान उत्पन्न होता है अथवा ज्ञान-मोक्षके लिए मनुष्य उद्यम करता है।

लोक और पुरुषकी समानता बतलाते हुए महर्षि जी कहते हैं—

'पुरुषोऽयं लोकसंमितः' 'यावन्तो हि लोके भावविशेषास्तावन्तः पुरुषे, यावन्तः पुरुषे तावन्तो लोके'।

यह मानव शरीर तीनों लोकोंके समान है अर्थात् जितने सूक्ष्म और स्थूल भाव विशेष मनुष्यमें उपस्थित होते हैं उतने ही लोकोंमें हैं और जितने लोकमें भाव-विशेष यानी तत्त्व आदि किसी भी कार्य या कारण रूपसे वर्तमान हैं उतने ही मनुष्यमें होते हैं। यद्यपि ये लोक और पुरुषकी समानताएँ असंख्य हैं, तो भी शिष्योंके ज्ञान विवर्धनार्थ कुछ एकका दिग्दर्शन कराते हैं:—

तद्यथा—पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं ब्रह्म चाव्यक्तमिति, एत एव च षड् धातवः समुदिताः पुरुष इति शब्दं लभन्ते।

जैसे भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश और अव्यक्त ब्रह्म इन्हींसे संसार बना है, एवमेव इन छहों धातुओंके संयोग से मनुष्य बनता है।

तस्य पुरुषस्य पृथिवी मूर्तिः, आपः क्लेदः, तेजोऽभिसंतापः, वायुः प्राणः, वियत्सुषिराणि, ब्रह्मान्तरात्मा। यथा खलु ब्राह्मी विभूतिर्लोके तथा पुरुषेप्यान्तरात्मिकी विभूतिः, ब्रह्मणो विभूतिर्लोके प्रजापतिरन्तरात्मनो विभूतिः पुरुषे सत्त्वं, यस्त्विन्द्रो लोके स पुरुषेऽहङ्कारः, आदित्यस्त्वादानं, रुद्रो रोषः, सोमः प्रसादः, वसवः सुखम्, अश्विनौ कान्तिः, मरुदुत्साहः, विश्वेदेवाः सर्वेन्द्रियाणि सर्वेन्द्रियार्थाश्च, तमो मोहः, ज्योतिर्ज्ञानम्, यथा लोकस्य सर्गादिस्तथा पुरुषस्य गर्भाधानम्, यथा कृतयुगमेवं बाल्यं, यथा त्रेता तथा यौवनं, यथा द्वापरस्तथा स्थाविर्यं, यथा कलिरेवमातुर्यं, यथा युगान्तस्तथा मरणमिति। एवमेतेनानुमानेन—अनुक्तानामपि लोकपुरुषयोरवयवविशेषाणामग्निवेश सामान्यं विद्यादिति।

पुरुषका शरीर ही पार्थिव उपादानोंसे बना होनेके कारण पृथिवी है, शरीरस्थ गीलापन ही जल है, शरीरोष्मा ही अग्नि है, प्राण रूपसे वायु शरीरमें विराजमान है, शरीर के नाड़ियों-शिराओं तथा आशयों आदिके खाली स्थान आकाश ही हैं, संसारमें प्रकाशित होने वाला ईश्वर-आत्मा आदि अनेक नामों वाला ब्रह्म ही मनुष्य शरीरमें अन्तरात्मा नामसे पुकारा जाता है।

जैसे लोकमें ब्रह्मका विलास सर्वत्र दिखाई देता है, वैसे ही शरीरमें अन्तरात्माका वैभव प्रकट होता रहता है। लोकमें ब्रह्मका विलास सृष्टिके प्रारम्भमें प्रजापतिके रूपमें प्रकट होता है, वैसे ही पुरुषशरीरमें अन्तरात्मा सत्त्व-मन रूप से प्रकट होता है। जो लोकमें इन्द्र नामसे देवता पुकारा जाता है, पुरुष शरीरमें वही अहंकार रूपसे स्थित है आदित्य ही आदान-ग्रहण करना या हाथ हैं, रुद्र भगवान्

क्रोध रूपसे, चन्द्रमा प्रसन्नता रूपसे, आठों वसुदेवता सुख स्वरूपसे, अश्विनी कुमार शरीरके लावण्य रूपसे, मरुद्वतागण उत्साह रूपसे, विश्वेदेव संपूर्ण इन्द्रियों तथा उनके गुण रूपसे, तम-मोह-अज्ञान रूपसे, प्रकाश-ज्ञान रूप से, मनुष्यशरीरमें स्थित हैं। संसारमें सृष्टि निर्माणका पहिला समय पुरुषके गर्भाधान कालके सदृश है। जैसे बाल्यावस्थामें सरलता-सचाई आदि होते हैं वैसे ही सत्य युगमें होते हैं, त्रेता और द्वापरके सदृश ही यौवन तथा वृद्धावस्थामें कई गुणोंमें परिवर्तन हो जाता है, जैसे कलि-युगमें धर्मके पाद सत्य-तप-दया-दान क्षीण हो जाते हैं, इन्द्रिय-लोलुपता और विषयप्रवणता आचार-हीनता बढ़ जाती है वैसे ही मनुष्यके रोगी हो जाने पर पवित्रता नष्ट हो जाती है, धर्मसे द्वेष हो जाता है, पापवासनायें बढ़ जाती हैं, जैसे प्रलयकाल होने पर सभी भूतादि तत्त्व अपने कारण में लीन हो जाते हैं, वैसे ही मृत्युके समय और पश्चात् मानसिक वासनायें चित्तमें लीन होकर कारण शरीरमें लीन हो जाती हैं और स्थूल शरीर शीर्ण होकर पाँच महाभूतोंमें लीन होने लग पड़ता है। हे अग्निवेश! इस प्रकार अनुमान से—नहीं कहे गये भी लोक और पुरुष के अवयवविशेषोंकी समानता जान लेनी चाहिये। दूसरे निगम-आगम शास्त्रोंमें भी ब्रह्मका ज्ञान करानेके लिए कई उलटे-सुलटे प्रकारोंसे वर्णन किया गया है, कहीं पुरुष-सूक्त जैसे वर्णनों द्वारा, कहीं अध्यात्म आधिदैविक आधि-भौतिक वर्णनों द्वारा और कहीं स्पष्ट ही 'यद्यदण्डे तत्तद् ब्रह्माण्डे' आदि सूक्तियों द्वारा परम प्रिय ब्रह्मदेवका वर्णन है।

जब इस प्रकारके सामन ज्ञानसे सत्य स्वरूपा बुद्धि अर्थात् प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है तब विचार-मनन करते करते 'तस्य हेतु-रुत्पत्तिवृद्धिरुपप्लवो वियोगश्च' उस शरीरके हेतु उत्पत्तिमें कारण, उत्पत्ति—शरीरका जन्म होना, वृद्धि—शरीरका मान और परिमाणमें बढ़ना, उपप्लव—शरीरको कई प्रकारके दुःख प्राप्त होना, वियोग-शरीरके संघटक पाँच महाभूतों और अन्तरात्माका विश्लेषण होना, इन पाँच विकारोंका ज्ञान होता है। शरीर और सभी प्रकारके दुःखोंका मूल कारण प्रवृत्ति ही है। शरीर तथा दुःखोंकी शांतिका मूल निवृत्ति ही है।

प्रवृत्तिदुःखं निवृत्तिः सुखम्, इति यज्ज्ञानमुत्पद्य तत्सत्यम्। तस्य हेतुः सर्वलोकसामान्यज्ञानम्। एतत्प्रयो सामान्योपदेशस्येति।

प्रवृत्ति ही दुःख है और निवृत्ति ही सुख है— इस प्रका का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, और इस ज्ञानका मू कारण अंड और ब्रह्माण्डकी समानताका ज्ञान होना ही है लोक और पुरुषके सामान्योपदेशका यही तो केवल मा प्रयोजन है।

इस प्रकारके उपदेशको सुनकर, हिमालयकी शा उपत्यका में बैठे हुए प्रसन्न चित्त, पुलकिततनु अग्निवे जी बोले—

'किंमूला भगवन्! प्रवृत्तिर्निवृत्तौ च क उपाय इति'

हे भगवन्! किस कारणसे मनुष्य प्रवृत्ति मार्ग प्रवृत्त होते हैं और निवृत्तिका क्या उपाय है?

श्री आत्रेयजी बोले—

मोहेच्छाद्वेषकर्ममूला प्रवृत्तिः।

अर्थात्—मोह-अज्ञानके कारणसे इन्द्रियार्थोंमें प्रि अप्रियकी कल्पना होनेसे इच्छा द्वेष उत्पन्न होते हैं, इष्टकी प्राप्तिके लिए और अनिष्ट विषयका त्याग क के लिए मनुष्य कर्म करता है, यही कर्मके कर्तृत्व कल्पना प्रवृत्ति है।

तज्जा ह्यहंकार-संग-संशयाभिसंप्लवाभ्यवपातविप्रत्यय विशेषानुपायास्तरुणमिव द्रुममतिविपुलशाखास्तरव ऽभिभूय पुरुषमवतत्यैवोत्तिष्ठन्ते, यैरभिभूतो न सत्त मतिवर्तते।

इस प्रवृत्तिसे, उत्पन्न हुए अहंकार[1] संग[2] संशय अभिसंप्लव[4] अभ्यवपात[5] विप्रत्यय[6] अविशेष[7] औ अनुपाय[8] पुरुषके ज्ञानको आच्छादित करके बढ़ते जाते जैसे कि विस्तृत और स्थूल शाखाओं वाले वृक्ष तरुण वि को ढक लेते हैं। इन अहंकारादियोंसे संक्रान्त पुरुष सं की संसरणशीलतासे अपनेको पृथक् नहीं कर सकता है। अहंकारादि की पृथक् २ व्याख्या करते हैं—

[१] तत्रैवं जाति रूप वित्त वृत्त बुद्धि शील विद्याभि वयो वीर्य प्रभाव सम्पन्नोऽहमित्यहंकारः। मैं इस प्रका

क्रोध रूपसे, चन्द्रमा प्रसन्नता रूपसे, आठों वसुदेवता सुख स्वरूपसे, अश्विनी कुमार शरीरके लावण्य रूपसे, मरुद्‌गण उत्साह रूपसे, विश्वेदेव संपूर्ण इन्द्रियों तथा उनके गुण रूपसे, तम-मोह-अज्ञान रूपसे, प्रकाश-ज्ञान रूप से, मनुष्यशरीरमें स्थित हैं। संसारमें सृष्टि निर्माणका पहिला समय पुरुषके गर्भाधान कालके सदृश है। जैसे बाल्यावस्थामें सरलता-सचाई आदि होते हैं वैसे ही सत्य युगमें होते हैं, त्रेता और द्वापरके सदृश ही यौवन तथा वृद्धावस्थामें कई गुणोंमें परिवर्तन हो जाता है, जैसे कलि-युगमें धर्मके पाद सत्य-तप-दया-दान क्षीण हो जाते हैं, इन्द्रिय-लोलुपता और विषयप्रवणता आचार-हीनता बढ़ जाती है वैसे ही मनुष्यके रोगी हो जाने पर पवित्रता नष्ट हो जाती है, धर्मसे द्वेष हो जाता है, पापवासनायें बढ़ जाती हैं, जैसे प्रलयकाल होने पर सभी भूतादि तत्त्व अपने कारण में लीन हो जाते हैं, वैसे ही मृत्युके समय और पश्चात् मानसिक वासनायें चित्तमें लीन होकर कारण शरीरमें लीन हो जाती हैं और स्थूल शरीर शीर्ण होकर पाँच महाभूतोंमें लीन होने लग पड़ता है। हे अग्निवेश! इस प्रकार अनुमान से—नहीं कहे गये भी लोक और पुरुष के अवयवविशेषोंकी समानता जान लेनी चाहिये। दूसरे निगम-आगम शास्त्रोंमें भी ब्रह्मका ज्ञान करानेके लिए कई उलटे-सुलटे प्रकारोंसे वर्णन किया गया है, कहीं पुरुष-सूक्त जैसे वर्णनों द्वारा, कहीं अध्यात्म आधिदैविक आधि-भौतिक वर्णनों द्वारा और कहीं स्पष्ट ही 'यद्यदण्डे तत्तद् ब्रह्माण्डे' आदि सूक्तियों द्वारा परम प्रिय ब्रह्मदेवका वर्णन है।

जब इस प्रकारके सामन ज्ञानसे सत्य स्वरूपा बुद्धि अर्थात् प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है तब विचार-मनन करते करते 'तस्य हेतु-रुत्पत्तिवृद्धिरुपप्लवो वियोगश्च' उस शरीरके हेतु उत्पत्तिमें कारण, उत्पत्ति—शरीरका जन्म होना, वृद्धि—शरीरका मान और परिमाणमें बढ़ना, उपप्लव—शरीरको कई प्रकारके दुःख प्राप्त होना, वियोग-शरीरके संघटक पाँच महाभूतों और अन्तरात्माका विश्लेषण होना, इन पाँच विकारोंका ज्ञान होता है। शरीर और सभी प्रकारके दुःखोंका मूल कारण प्रवृत्ति ही है। शरीर तथा दुःखोंकी शांतिका मूल निवृत्ति ही है।

प्रवृत्तिदुःखं निवृत्तिः सुखम्, इति यज्ज्ञानमुत्पद्य[ते] तत्सत्यम्। तस्य हेतुः सर्वलोकसामान्यज्ञानम्। एतत्प्रयोज[नं] सामान्योपदेशस्येति।

प्रवृत्ति ही दुःख है और निवृत्ति ही सुख है— इस प्रका[र] का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, और इस ज्ञानका मू[ल] कारण अंड और ब्रह्माण्डकी समानताका ज्ञान होना ही है[।] लोक और पुरुषके सामान्योपदेशका यही तो केवल मा[त्र] प्रयोजन है।

इस प्रकारके उपदेशको सुनकर, हिमालयकी शा[न्त] उपत्यका में बैठे हुए प्रसन्न चित्त, पुलकिततनु अग्निवे[श] जी बोले—

'किंमूला भगवन्! प्रवृत्तिर्निवृत्तौ च क उपाय इति'

हे भगवन्! किस कारणसे मनुष्य प्रवृत्ति मार्ग[में] प्रवृत्त होते हैं और निवृत्तिका क्या उपाय है?

श्री आत्रेयजी बोले—

मोहेच्छाद्वेषकर्ममूला प्रवृत्तिः।

अर्थात्—मोह-अज्ञानके कारणसे इन्द्रियार्थोंमें प्रि[य] अप्रियकी कल्पना होनेसे इच्छा द्वेष उत्पन्न होते हैं, [प्रि] इष्टकी प्राप्तिके लिए और अनिष्ट विषयका त्याग क[रने] के लिए मनुष्य कर्म करता है, यही कर्मके कर्तृत्व[की] कल्पना प्रवृत्ति है।

तज्जा ह्यहंकार-संग-संशयाभिसंप्लवाभ्यवपातविप्रत्यय-विशेषानुपायास्तरुणमिव द्रुममतिविपुलशाखास्तर[वो] ऽभिभूय पुरुषमवतत्यैवोत्तिष्ठन्ते, यैरभिभूतो न स[त्ता]मतिवर्तते।

इस प्रवृत्तिसे, उत्पन्न हुए अहंकार[1] संग[2] संश[य][3] अभिसंप्लव[4] अभ्यवपात[5] विप्रत्यय[6] अविशेष[7] औ[र] अनुपाय[8] पुरुषके ज्ञानको आच्छादित करके बढ़ते जाते [हैं] जैसे कि विस्तृत और स्थूल शाखाओं वाले वृक्ष तरुण वि[टप] को ढक लेते हैं। इन अहंकारादियोंसे संक्रान्त पुरुष सं[सार] की संसरणशीलतासे अपनेको पृथक् नहीं कर सकता है। अहंकारादि की पृथक् २ व्याख्या करते हैं—

[१] तत्रैवं जाति रूप वित्त वृत्त बुद्धि शील विद्याभि[जन] वयो वीर्य प्रभाव सम्पन्नोऽहमित्यहंकारः। मैं इस प्रका[र]

ऊंची जातिका, स्वरूपवान्, धनी सदाचारसम्पन्न मेधावी शीलस्वभाव वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त, परिवारादि वर्गसे युक्त, युवा, अद्भुत पराक्रमी, विलक्षण प्रभाव वाला हूँ—इस प्रकार की षड्धातुनिर्मितस्वशरीरकी कल्पना करना ही अहंकार है। इस अहंकारका आसुरी संपत्तिमें प्रधान स्थान है। श्री भगवान् कृष्णचन्द्र जीने गीतामें बड़ा अच्छा व्याख्यान किया है:—

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोन्योऽस्ति सदृशो मया
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये·········।१३-१५ अ. १६

[२] यन्मनोवाक्कायकर्म नापवर्गाय स संगः।

जो मानसिक वाचिक और शारीरिक कर्म, कर्मबंधन से न छुड़ा सके वह किया गया कर्म ही संग है। इसीलिए ही कहा है—

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौंतेय मुक्तसंगः समाचर॥ ९ अ. ३ गीता

[३] कर्मफलमोक्षपुरुषप्रेत्यभावादयः सन्ति वा नेति संशयः।

किये गये शुभा-शुभ कार्योंका फल परलोकमें प्राप्त होता है या नहीं? दुःखोंका अत्यन्ताभाव होता है या नहीं, शरीरसे भिन्न चेतन शक्तिका अस्तित्व है या नहीं, मृत्युके पश्चात् शरीर प्राप्ति होती हैया नहीं—इस प्रकारके संदेह ही संशय नामसे कहे गये हैं। यह संशय बड़ा दुर्गुण होनेसे 'संशयात्मा विनश्यति' ऐसा कहा गया है।

[४] सर्वावस्थास्वनन्योऽहमहं स्रष्टा स्वभावसंसिद्धोऽहं-शरीरेन्द्रियबुद्धिस्मृतिविशेषराशिरितिग्रहणमभिसंप्लवः।

प्रत्येक अवस्थामें मैं शरीरसे भिन्न अन्य चेतन स्वरूप नहीं हूं, अपि तु शरीरमात्र ही हूँ, मैं प्रत्यक्ष स्थित शरीर रूपी ही सन्तानादिकाउत्पादक या कार्यकर्ता हूं। मेरा यह दृश्यमान शरीर स्वभावसे ही (प्रकृति द्वारा) निर्मित है, ईश्वरादि कोई अन्य इसका निर्माता नहीं है, देह इन्द्रियें बुद्धि और स्मरण शक्तिका संयोग विशेष ही मैं हूँ, अन्तरात्मा आदि कोई भिन्न वस्तु मुझमें नहीं है इस प्रकारसे अनात्म वस्तुओंमें आत्मभावना करना ही अभिसंप्लव है, इस दोषको दूर करनेके लिए ही श्रीगीतामें क्षेत्र-क्षेत्रज्ञका ज्ञान करानेके लिए पृथक ही एक अध्याय रच दिया गया है।

[५] मम मातृ-पितृ-भ्रातृ दारापत्य-बन्धु-मित्र-भृत्य-गणो गणस्य चाहमित्यभ्यवपातः।

माता-पिता-भाई-पत्नी-पुत्र-बन्धु मित्र और यह सेवक वृन्द मेरा है और मैं इनका पुत्र भाई पति आदि हूं—इस प्रकारकी स्वकल्पना करके उनसे अनुचित स्नेह करना ही अभ्यवपात है, अर्थात् 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इस सिद्धान्तसे जो कुछ भी विपरीत है वह सभी अभ्यवपात ही है। 'निर्ममो निरहंकारः' होकर ही मनुष्य परम आनन्दको प्राप्त कर सकता है।

[६] कार्याकार्यहिताहितशुभाशुभेषु-
विपरीताभिनिवेशो विप्रत्ययः।

कार्याकार्य, हित-अहित, सत्-असत् इनका उलटा ज्ञान होना ही विप्रत्यय है। अर्थात् 'अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता। सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥' (गीता) इस प्रकारकी तामसी बुद्धि ही विप्रत्यय कहलाती है।

[७] ज्ञाज्ञयोः प्रकृतिविकारयोः प्रवृत्तिनिवृत्त्योश्च सामान्यदर्शनमविशेषः।

आत्मा और परमात्माका प्रकृति और विकारोंका प्रवृत्ति और निवृत्तिका भेद न जान सकना अविशेष है।

[८] प्रोक्षणानशनाग्निहोत्रत्रिषवणाभ्युक्षणावाहन याजन-यजन-याचन-सलिलहुताशनप्रवेशादयः समारम्भाः प्रोच्यन्ते ह्यनुपायाः।

प्रोक्षण (होम संबंधी संस्कार) उपवास—अग्निहोत्र—त्रिकाल स्नान-अभ्युक्षण (भूमि का संस्कार विशेष) देवता आदिका आवाहन-यज्ञ कराना और करना, भिक्षावृत्ति, जल तथा अग्निमें प्रवेश। इस प्रकारके कार्य लौकिक कार्योंके फल देने वाले होते हुए भी मोक्षके लिए उपाय नहीं हैं। इसीलिए अनुपाय कहलाते हैं। भगवान् शंकराचार्यजीने भी कर्म-तथा ज्ञान कर्मके समुच्चयको भी मोक्षका साधन न मानकर केवल ज्ञानको ही मोक्षदाता बतलाया है।

इस प्रकार यह पुरुष धी-धृति-स्मृतिसे रहित होकर, अहंकार से ग्रस्त हुआ काम भोगादिमें आसक्त संशयात्मा अभिसंप्लुतबुद्धि ममतामें जकड़ा हुआ अयथार्थदर्शी अविशेषज्ञ कुपथगामी मानसिक और शाररिक दोष रूपी मूलोंका सभी दुःखोंका आश्रय होता है। इस प्रकार अहंकारादि दोषोंसे चक्रवत् घुमाया जा रहा प्रवृत्तिपथ से अन्यत्र जा ही नहीं सकता है। और यह प्रवृत्ति ही पाप का मूल है।

[क्रमशः]

संस्कृति—साहित्य
कला - संगीत
समृद्धि—सुखमय

दीपावली

लेखक—श्रीयुक्त पण्डित निरंजन शर्माजी 'अजित'

सर्वोत्तम त्योहार

दीपावली, हिन्दुओंके त्योहारोंमें ही नहीं, संसारभरकी समस्त सभ्य जातियोंके त्योहारोंमें सबसे सुन्दर, सबसे सुखद, सबसे अधिक गौरवगरिष्ठ और सबसे अधिक उज्ज्वल त्योहार है। हमारे सुविज्ञ पुराणेतिहासज्ञ प्रायः इसके विषय में कहते हैं कि विजयादशमीको प्राप्त की गई—युग-युग और समय-समयमें—अनेक विजयोंके आनन्दोल्लास प्रकाशनार्थ इस दीपोत्सवीकी रचना होती चली आई है। मुख्य रूपसे, कब, किसकी विजयका उत्सव मनानेके लिए, दीपावलीका श्रीगणेश हुआ था, यह विषय आजतक निर्विवाद रूपमें उपस्थित नहीं किया गया; पर इसमें भारतीय वीरोंकी, महापुरुषों की, यशस्वियोंकी और पराक्रमियोंकी सुकीर्त्तिका समावेश सुनिश्चितरूपेण माना जाता है।

(१) इसमें अनेक रहस्य हो सकते हैं—और हैं भी हो सकता है कि यह सूर्यके अयन-परिवर्तनसे सम्बन्ध रखनेवाला उत्सव हो। सूर्यनारायणके दक्षिणायन और उत्तरायणमें होने के समय होली और दिवालीके उत्सवोंकी सृष्टि हुई हो, यह असम्भव नहीं है। विशेषरूपसे जब हम देव-प्रबोधिनी एकादशीका समारोह इस मासकी विस्तृत उत्सवावलीके साथ पाते हैं, तो लोकमान्य तिलककी खोज हमें हठात् अपनी ओर खींच लेती है। उनके मतसे, एक समय, आर्यलोग उत्तरध्रुव-भूभागके अधिवासी थे जहां दीपावली और देव-प्रबोधिनी एकादशीके साथ ही रात्रिका अवसान और प्रभात का उदय होता है। वर्तमानमें भी अयनके परिवर्तनकालमें थोड़े दिनोंका अन्तर ही रहता है। उसको हम उस भूलका स्वरूप मान सकते हैं, जो सूर्यादिकी गतिकी सूक्ष्मताकी न्यूनता आदिको संशोधित करते न रहनेसे पैदा हो गई है। इस बातके पक्षमें हमें यह वस्तु और अधिक आकृष्ट करती है कि:—

जिस प्रकार सती स्त्री पतिके उठनेसे पूर्व ही जागा करती है, उसी प्रकार श्रीलक्ष्मी महारानी अपने पति विष्णु भगवान्के जागरित होने के १२ दिन पूर्व निद्रात्याग करके अपनी सृष्टि पर दृष्टिपात करनेके लिए एक फेरी लगाती हैं। उनके स्वागत-सत्कारके लिए ही दीपावली महोत्सव है। यह वस्तु पुराणोंमें अनेक जगह मिलती है और यह भी मिलता है कि इस सुभीते के समय जिनके घरोंमें दीपदान नहीं होता; श्रीलक्ष्मीजी उनके द्वारसे लौट जाती हैं।

(२) हो सकता है, कि दीपोत्सव अनाजकी फसलोंकी प्राप्तिके पश्चात्का उत्सव हो और कदाचित् अनादिकालसे इसीलिए दीपावलीके दूसरे ही दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता रहा हो। अनेक विद्वान् होली-दिवालीको इसी सिद्धान्तपर आधारित मानते हैं।

(३) वेद-पुराणादिमें, सर्वांशतः सिद्ध अथवा रूपकात्मक एक शङ्खासुरकी कथाका वृत्त मिलता है—ये हयग्रीव वेदोंको चुराकर भाग निकले थे। बहुत दिनों तक वेद समुद्र में रहे। इनका उद्धार विष्णुने मत्स्यावतार लेकर किया था। इस रूपमें हो सकता है कि यह उत्सव इस कल्पारम्भकी स्मृतिके रूपमें भी हो।

और भी अनेक विषयोंकी छानबीन की जा सकती है पर इस समय इतना विस्तार देनेके लिए न तो समय

रह गया है और न इस विशेषाङ्कमें स्थान ही मिल सकने की सम्भावना है।

धार्मिक स्वरूप की झलक

भगवान् श्रीकृष्णने, अपने स्वरूपोंका वर्णन गीतामें किया है; वे श्रीमुखसे कह गये हैं कि "मासानां मार्गशीर्षोऽस्मि।" महीनोंमें मार्गशीर्ष महीना मेरा ही स्वरूप है। इसमें क्या रहस्य है; यह बात हमारे विषयकी परिधिसे परेकी वस्तु है। पर पुराणोंमें लिखा मिलता है कि:—

१—कार्तिक विष्णुको सबसे अधिक प्यारा है—और इस मास में विष्णुकी पूजाका महत्व सबसे अधिक है।

२—आश्विनमें (विशेषरूपेण पौर्णिमाके दिन) ब्रह्माकी पूजा का महत्व और फल असाधारण है।

३—फाल्गुनमें शिवशङ्करकी पूजाका महत्व सर्वोपरि है।

४—भाद्रपदमें गणेशजीकी पूजाका फल अतिशय और अमित है। लिखा है:—

कमलैः कमलाकान्तः कार्तिके पूजितस्तु यैः।
कमलानुगता तेषां जन्मान्तर शतेष्वपि॥

कमलाकान्त की पूजा, कार्तिकमें, जो लोग कमलके फूलोंसे करते हैं, उनके घरों पर सैकड़ों जन्मान्तरोंमें भी, कमला महारानीकी कृपा बनी ही रहती है।

वास्तवमें आश्विनमें पितरों और ऋषियोंको तृप्त करनेके उपरान्त, कार्तिक मासमें हिन्दू सर्वदेव शिरमौर विष्णु भगवान्‌की पूजा करते हैं। पितर और देवता हिन्दू-धर्मका यह एक बड़ा रहस्य है—पितर और देवता दोनों ही हमारे द्वारा सुपूजित होने चाहियें। इसपर भी कार्तिक मासमें देवार्चनके साथ जो तर्पण किया जाता है या आंवले अथवा तुलसी-वनमें श्राद्ध सम्पन्न होता है वह पितरोंको अनन्तकाल तक तृप्ति प्रदान करता है।

यावन्तः कार्तिके मासे वर्तते पितृ तर्पणे।
तिलास्तत्संख्यकाब्दान्तं पितरः स्वर्गवासिनः॥

कार्तिक मासमें किये गये पितृ-तर्पण में जितने तिल होते हैं, उतने वर्षों तक पितर स्वर्गमें निवास करते हैं।

सारांश यह कि पूरा कार्तिक मास ही व्रतोत्सवादिके लिए परम सुखद है—और इसमें दीपावलीका लक्ष्मी-पूजन महोत्सव परमोच्च है। इस महीनेमें अनेक प्रकारके जप-तप-तीर्थ-दानादिका विधान हमें पुराणोंमें मिलता है और अन्तमें यह फैसला भी मिलता है कि:—

तावद्गर्जन्ति पापानि शरीरस्थानि देहिनाम्।
यावन्न ज्वाल्यते ज्योतिः कार्तिके केशवाग्रतः॥

मनुष्य शरीरमें तभी तक पापपुञ्जका प्राबल्य रह पाता है; जबतक कि कार्तिक मासकी अमावस्याको लक्ष्मी और नारायणके सामने दीपक नहीं जलाया जाता। और इसीलिए कार्तिक मासके भीतर, आस्तिकजन वेद, ब्राह्मण, गौ, गुरु, राजा, महात्मा और स्त्रीकी निन्दा नहीं करते।

पद्मपुराणमें लिखा है इस मासका माहात्म्य बताते हुए ब्रह्माजीने नारदको बताया था कि—

यत्किञ्चित् कुरुते कर्म विष्णुमुद्दिश्य कार्तिके।
तदक्षयं भवेत् सर्वं सत्यमुक्तं मयानघ॥

हे निष्पाप नारद, कार्तिक मासमें जितना भी धर्म-कर्म लक्ष्मी-नारायणको मानकर किया जाता है वह अक्षय होता है।

आश्विनकी पूर्णिमासे कार्तिककी पूर्णिमातक नित्य व्रतोत्सव और त्यौहार ही त्यौहार हैं और ये सबके-सब धर्मके साथ लौकिक सुख-शान्ति वृद्धिके लिए भी हैं।

इनमें भी अहोयी अष्टमीसे गोपाष्टमी तक लौकिक सुख-वृद्धिकी भरमार है। अहोयी अष्टमीके दिन चण्ड मुण्ड-विनाशिनीकी पूजाके साथ रोग-शोक दुःख दारिद्र्यके विनाशका क्रम प्रारम्भ होता है। पूर्वकालमें इस समय, कभी, इतनी महामारियां फैलीं, कि पृथिवी प्राणिरहित-सी हो गई थी, विद्वज्जनोंके प्रसादसे भगवतीकी प्रसन्नताके लिए इस दिन महाकालीकी आराधना की गई और भगवतीने इस बार एक ही दिनमें प्रसन्न होकर दर्शन दिये, सब रोग-शोक हरनेके बाद यह वरदान भी दिया, कि इस दिनकी पूजासे मैं सदा इसी प्रकार प्रसन्न होती रहूंगी। एक दिनमें ही मान जानेके कारण भगवतीका अहोयी नाम प्रसिद्ध हुआ। पूजाके समय एक धीमर स्त्री भी विद्यमान थी। भगवतीने उसकी प्रार्थना सुनकर कहा कि मेरी पूजा सबके लिए समान भावसे रहेगी, और मेरी पूजाके साथ ही, भविष्यमें, लोगोंको तेरी सन्ततिको भी मानना पड़ेगा।

रोग-निवृत्तिके बाद त्रयोदशी से यम-पंचक प्रारम्भ

रह गया है और न इस विशेषाङ्कमें स्थान ही मिल सकने की सम्भावना है।

धार्मिक स्वरूप की झलक

भगवान् श्रीकृष्णने, अपने स्वरूपोंका वर्णन गीतामें किया है; वे श्रीमुखसे कह गये हैं कि "मासानां मार्गशीर्षोस्मि।" महीनोंमें मार्गशीर्ष महीना मेरा ही स्वरूप है। इसमें क्या रहस्य है; यह बात हमारे विषयकी परिधिसे परेकी वस्तु है। पर पुराणोंमें लिखा मिलता है कि:—

१—कार्तिक विष्णुको सबसे अधिक प्यारा है—और इस मास में विष्णुकी पूजाका महत्व सबसे अधिक है।

२—आश्विनमें (विशेषरूपेण पौर्णिमाके दिन) ब्रह्माकी पूजा का महत्व और फल असाधारण है।

३—फाल्गुनमें शिवशङ्करकी पूजाका महत्व सर्वोपरि है।

४—भाद्रपदमें गणेशजीकी पूजाका फल अतिशय और अमित है। लिखा है:—

कमलैः कमलाकान्तः कार्तिके पूजितस्तु यैः।
कमलानुगता तेषां जन्मान्तर शतेष्वपि॥

कमलाकान्त की पूजा, कार्तिकमें, जो लोग कमलके फूलोंसे करते हैं, उनके घरों पर सैकड़ों जन्मान्तरोंमें भी, कमला महारानीकी कृपा बनी ही रहती है।

वास्तवमें आश्विनमें पितरों और ऋषियोंको तृप्त करनेके उपरान्त, कार्तिक मासमें हिन्दू सर्वदेव शिरमौर विष्णु भगवान्‌की पूजा करते हैं। पितर और देवता हिन्दू-धर्मका यह एक बड़ा रहस्य है—पितर और देवता दोनों ही हमारे द्वारा सुपूजित होने चाहियें। इसपर भी कार्तिक मासमें देवार्चनके साथ जो तर्पण किया जाता है या आंवले अथवा तुलसी-वनमें श्राद्ध सम्पन्न होता है वह पितरोंको अनन्तकाल तक तृप्ति प्रदान करता है।

यावन्तः कार्तिके मासे वर्तते पितृ तर्पणे।
तिलास्तत्संख्यकाब्दान्तं पितरः स्वर्गवासिनः॥

कार्तिक मासमें किये गये पितृ-तर्पण में जितने तिल होते हैं, उतने वर्षों तक पितर स्वर्गमें निवास करते हैं।

सारांश यह कि पूरा कार्तिक मास ही व्रतोत्सवादिके लिए परम सुखद है—और इसमें दीपावलीका लक्ष्मी-पूजन-महोत्सव परमोच्च है। इस महीनेमें अनेक प्रकारके जप-तप-तीर्थ-दानादिका विधान हमें पुराणोंमें मिलता है और अन्तमें यह फैसला भी मिलता है कि:—

तावद्गर्जन्ति पापानि शरीरस्थानि देहिनाम्।
यावन्न ज्वाल्यते ज्योतिः कार्तिके केशवाग्रतः॥

मनुष्य शरीरमें तभी तक पापपुञ्जका प्राबल्य रह पाता है; जबतक कि कार्तिक मासकी अमावस्याको लक्ष्मी और नारायणके सामने दीपक नहीं जलाया जाता। और इसीलिए कार्तिक मासके भीतर, आस्तिकजन वेद, ब्राह्मण, गौ, गुरु, राजा, महात्मा और स्त्रीकी निन्दा नहीं करते।

पद्मपुराणमें लिखा है इस मासका माहात्म्य बताते हुए ब्रह्माजीने नारदको बताया था कि—

यत्किञ्चित् कुरुते कर्म विष्णुमुद्दिश्य कार्तिके।
तदक्षयं भवेत् सर्वं सत्यमुक्तं मयानघ॥

हे निष्पाप नारद, कार्तिक मासमें जितना भी धर्म-कर्म लक्ष्मी-नारायणको मानकर किया जाता है वह अक्षय होता है।

आश्विनकी पूर्णिमासे कार्तिककी पूर्णिमातक नित्य व्रतोत्सव और त्यौहार ही त्यौहार हैं और ये सबके-सब धर्मके साथ लौकिक सुख-शान्ति वृद्धिके लिए भी हैं।

इनमें भी अहोयी अष्टमीसे गोपाष्टमी तक लौकिक सुख-वृद्धिकी भरमार है। अहोयी अष्टमीके दिन चण्ड मुण्ड-विनाशिनीकी पूजाके साथ रोग-शोक दुःख दारिद्र्यके विनाशका क्रम प्रारम्भ होता है। पूर्वकालमें इस समय, कभी, इतनी महामारियां फैलीं, कि पृथिवी प्राणिरहित-सी हो गई थी, विद्वज्जनोंके प्रसादसे भगवतीकी प्रसन्नताके लिए इस दिन महाकालीकी आराधना की गई और भगवतीने इस बार एक ही दिनमें प्रसन्न होकर दर्शन दिये, सब रोग-शोक हरनेके बाद यह वरदान भी दिया, कि इस दिनकी पूजासे मैं सदा इसी प्रकार प्रसन्न होती रहूंगी। एक दिनमें ही मान जानेके कारण भगवतीका अहोयी नाम प्रसिद्ध हुआ। पूजाके समय एक धीमर स्त्री भी विद्यमान थी। भगवतीने उसकी प्रार्थना सुनकर कहा कि मेरी पूजा सबके लिए समान भावसे रहेगी, और मेरी पूजाके साथ ही, भविष्यमें, लोगोंको तेरी सन्ततिको भी मानना पड़ेगा।

रोग-निवृत्तिके बाद त्रयोदशी से यम-पंचक प्रारम्भ

होता है—और दीपावलीके बाद द्वितीयाको बहन-भाई यमुनास्नान पूर्वक मृत्युको भी जीतते हैं। महालक्ष्मीका पूजन पति पत्नीके महत्वके साथ सुख-समृद्धिवर्धक है, तो द्वितीयाका भाई बहनके साथ। गोपाष्टमीको पुनः सांसारिक सुख और सम्पत्तिकी वृद्धिके लिए गौका पूजन होता है।

सर्वोच्च और परमोच्च दीपावली त्यौहार

धार्मिक दृष्टिसे थोड़ा—यत्किंचित् दिग्दर्शन मात्र हमने कराया है; दीपावली त्यौहारका जो कार्तिक मासके वैशिष्ट्यके साथ राधामाधव और लक्ष्मीनारायणकी आराधनाका महापर्व है, सामान्यतः लोगोंको ऐसा सुनाया और समझाया जाता है कि श्रावणी ब्राह्मणोंका, विजयदशमी क्षत्रियोंका, दीपावली वैश्योंका, और होली शूद्रोंका त्यौहार है। पर यह वस्तु अधिक महत्व नहीं रखती। हां, भावनाका इनमें समावेश अवश्य हो जाता है। दीपावली को वैश्यवृत्ति प्रधान इसलिए कह देते हैं कि संसारने लक्ष्मीका मोह वैश्योंके लिए ही सुरक्षित मान लिया है। किन्तु वास्तविक बात यह है कि लक्ष्मी-नारायण संसारके रक्षक-पोषक देवता हैं। इसलिए सुख-समृद्धिकी वृद्धि (धार्मिकताके साथ) इनको विशेष प्रिय है।

और सुखी-समृद्ध-सुसँस्कृत कला कीर्तियुक्त भारतका—एवं उसकी ऊँची भावनाका यह दीपावली त्यौहार है। कवि कुलगुरु महाकवि कालिदासने लिखा है, कि—

सर्वं रुचिरश्चारुतरं वसन्ते

अर्थात् वसन्त ऋतुमें प्रकृतिकी प्रत्येक वस्तु परम सुन्दर और सुखद हो उठती है— पर कार्तिकमें कदाचित् शारदागमनके साथ प्रकृति जो परम रम्यरूप लेती है वह फिर कभी नहीं लेती, और प्रकृतिके इस परम रम्यरूपको चतुर्गुणित रूपमें सुसमलंकृत करके आनन्द प्राप्त करनेका कोई भी उपाय इतना सुन्दर नहीं है जितना दीपोत्सव मनाना है। वर्षाकी समाप्तिके पश्चात् न तो कीचड़ रहता है और न गर्द उड़ती है। भूमि पुष्पान्वित और हरित होकर निखरती चली जाती है।

(१) भूमि पर जितना सौन्दर्य इन दिनों होता है;

(२) कमलों और कमलिनियोंके विकाससे जो शोभा इन दिनों जलराशियां लेती हैं;

(३) निर्मल आकाशमें जो छवि इन दिनों चन्द्र और तारागण प्राप्त करते हैं—वह अनुपमेय है। वास्तवमें इसी मासके "दिन और रात्रि" सुखवर्धक होते हैं।

इस सौंदर्यको देखकर इन्हीं दिनों "आक जवास मनहिं मन मजरे मुझे देत दिखाई"–का दृश्य उपस्थित होता है। चांदनी इन्हीं दिनों छिटकती है तो पिछली तु... चांदीका फर्श सा बिछा देती है। चन्द्रविहीन अमावस्या... अँधेरी रातमें इस महीनेमें ही तारामण्डल पूर्ण प्रकाश... जगमगाता है।

और जब हम भारतवासी अगणित दीपदानपूर्वक लक्ष्मी-पूजन करते हैं तो मानो हमारी दीपकावलि, आकाश की तारावलीसे, आंखें मटकाकर, भारतीय सँस्कृति और सौंदर्यप्रियताका भेद कहने लगती है। मानो इस सौंदर्य और चकमकको देखनेके लिए ही सरोवर-तड़ाग आदि कुमुदिनियोंके रूपमें अगणित नेत्रों से यह चमत्कार देख लगते हैं—

मनुदृगधार अनेकजमन निरखत ब्रजशोभा।

यह उक्ति, भारतेन्दुजीकी यहीं चरितार्थ होती है।

यह त्यौहार—

(१) धर्ममय है,

(२) इतिहास-पुराणबद्धहै,

(३) स्वास्थ्य-सुख-धन युक्त है,

(४) कलामय है—

(५) और कवित्व तथा संगीतमय है। यह दीपावलीकी रात्रि वह है जिसपर हजारों पूर्णिमा और लाखों बसन्त दिवसोंको न्यौछावर किया जा सकता है—

पावसके गीत कवियोंने सबसे अधिक गाये हैं। पर वह ऋतु संकटसँकुल भी कम नहीं होती। फिर भी विजय... जयन्ती फहराती चली आने वाली पावस ऋतु, फले हु... कासोंके रूपमें (पराजय स्वीकार करके) सफेद झण्डी दिखा देती है।

घनघेरो छुटिगो हरखि चली चहुं दिश राह
किये सुचैनो आय जय शरद शूर नरनाह

शत्रुसेनाने बादलोंके जो घेरे दशों दिशाओंमें डाले हु... थे, सब शरदृतुराजके आते ही छिन्न भिन्न और विली... हो गये। जगत् में सर्वत्र चैनकी वँशी बजने लगी है।

★

शारदीय–सुषमा

प्रकृतिकी परिवर्तनशील परम्पराके अनुसार आज उसके वर्षाकालीन समस्त चिह्न लुप्तप्राय हो गये हैं। न तो अब अन्तरिक्षमें प्रधावित मेघमालाके ही दर्शन होते हैं और न उनमें रह रहकर विद्युत्प्रकाशका ही प्रस्फुटन होता है। आज आकाश-मण्डल नवीन दर्पण या बाल-मानव हृदयकी भाँति स्वच्छ और समालोकित हो रहा है। कीचड़से लथपथ और जलप्लावनसे डूबी हुई वसुन्धरा अपना तत्स्वरूप-त्यागपूर्वक विमल जलसे स्नात शिशुकी न्याईं शोभायमान और आकर्षक प्रतीत हो रही है। जलाशयों और नदी-नालोंका मटमैला जल अब अपनी आन्तरिक शुद्धता और शुभ्रताका परिचय दे रहा है। नदियोंका नवयौवन चांचल्य और आवर्तनशील वेग विलीन हो चुका है; अब वह धीर-गम्भीर नवयुवतीकी भांति मन्थर गतिसे प्रभावित हो रही है। वन-उपवनों में रङ्ग-बिरङ्गे कुसुमसमूहकी प्रफुल्ल और उल्लसित मुसकान और उनके निकट मकरन्दलोलुप मधुपोंका गुञ्जार भावुक हृदयोंमें एक अभूतपूर्व आनन्दका सृजन कर रहे हैं। आज शारदीय सुषमाने विश्वके रंगमंचपर उतरकर अपनेको नैसर्गिक सौन्दर्यके प्रसाधनोंसे सुसज्जित कर लिया है। शारदीय निशा शरदिन्दुकी रश्मियों से धवलित है और शरदिन्दु शुभ्र आकाश-सरोवरमें राजहंसकी भांति सुशोभित हो रहा है। आइये, पाठक ! सुधाकरकी सुधासिंचित रश्मियोंसे आकण्ठमग्न शरदकी और भाव-भङ्गिमा तरङ्गिणी एवं विविध अलंकार-परिधाना प्रकृतिका रूप दर्शन तो कर लीजिये।

वन-उपवन निर्भर सर सोभा सने,
अम्बर-अवनि कल-वल बरसावनी।

हंस जल रखित खचित थल-वननि,
तारापति सरद जुन्हाई सुखदायिनी॥

ऋषिनाथ मालती मुकुन्द कुन्द कुसुमित,
कास पारिजात पारिजातावली पावनी।

मन अरुभावनी रसिक रासरसरंग,
भावनी सरद रैन सरद सुहावनी॥

वन, उपवन, झरने सरोवर आदि शारदीय शोभासे समन्वित हैं। अम्बरसे अवनिमण्डलपर या आकाशसे पृथ्वीपर शोभाकी अजस्र वर्षा हो रही है। हंसोंसे सुशोभित जलाशय, स्थल और वन-उपवन चन्द्रमाकी शरत्कालीन चन्द्रिकासे अभिषिक्त और आच्छादित है। मालती, मुकुन्द, कुन्द और पारिजातकी कुसुमित और पावनी पंक्तियां अपना सौरभ बिखेर रही हैं। प्रकृति-सुन्दरीकी यह सौन्दर्य-गरिमा देखकर मन उलझ रहा है, रसिकोंका हृदय रस और रङ्गीनीसे ओत-प्रोत हो रहा है। सचमुच ही शरद्की निशा-सुन्दरी मनोहारिणी है, उसमें सौन्दर्य-राशिकी पराकाष्ठा है।

हिन्दी-साहित्यका काव्य-पुरुष रसात्मक भाव-व्यञ्जनासे विलसित और अलंकारिक सौन्दर्य-विधानसे देदीप्यमान हो रहा है। उसकी रसमयी अनूठी उक्तियां और भावमयी तथा अलङ्कारपूर्ण शब्द-संयोजना पढ़-सुनकर भावुक हृदय भाव-धाराकी उत्ताल तरंगोंमें गोते लगाने लगते हैं। कविताके यही दो गुण मानव हृदयका स्पर्श करते हुए उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हिन्दीके कवियोंने इन दो आदर्शों और उनके भेदोपभेदोंके आधारपपर जिस सुरम्य काव्य-रसका आस्वादन कराया और उसके जिस आभूषणाभूषित दिव्य-रूपकी प्रतिष्ठा की, उससे उनकी प्रतिभाकी ज्वलन्त ज्योति प्रत्यक्ष-सिद्ध है। हिन्दी-काव्यमें समाहित अन्य विषयोंके साथ-साथ ऋतु-वर्णनको भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हिन्दीके प्रायः सभी उच्च कोटिके कवियोंने इस विषयको

लेकर अपनी अगाध रसार्द्रता और प्रकाण्ड पाण्डित्यका निदर्शन दिया है। ऋतु-वर्णन हिन्दी-काव्यका एक अंग है। वास्तव में ऋतु-वर्णनके अभावमें हिन्दी-कविता अपूर्ण ही दिखाई देती। इसीलिए हमारे रसज्ञानगुंजित प्रकृति प्रेमी कवियोंने ऋतुओंके तत्कालीन दृश्योंका मनोरम चित्र अङ्कित किया है। शारदीय-ज्योत्स्नासे स्नात भूमिपर नंदलालकी रास-क्रीड़ाका अनुपम दृश्य देखिये—

वृन्दावन बीथिनमें, शरद निसीथिनमें,
फूले द्रुम-जाल माल मिलित मलिन्दको।
मंजुल निकुञ्ज केलि बेलि अलबेलि देखु;
चलु री कलिन्दी-कूल इन्दीवर-वृन्दको॥
गोपी ग्वाल गीत, नन्दलालको संगीत होत,
पण्डित प्रवीन मन उमग अनन्दको।
बंसीवट बंसी बाजै, रासको हुलास होत,
चन्द्रको प्रकास री! बिलास ब्रजचंद्रको॥

कोई ब्रजनागरी अपनी सखीसे रामलीलास्थलका सम्पूर्ण दृश्य दर्शन करते हुए कह रही है, कि चलकर देख तो सही आज मिलिन्दोंके मधुर कलरवसे गुञ्जायमान प्रफुल्लित सुमन संकुल नील कमलों और विविध पादपावलीसे सुशोभित यमुनातटवर्ती वृन्दावनके मनोरम निकुंजमें नन्दलालने रास-लीलाका समायोजन किया है। आज वहां गोपियों, ग्वालों और नन्दलालके अद्भुत संगीतका संचालन हो रहा है। ब्रजचन्द्रकी वंशीध्वनि और रास-क्रीड़ा हृदयको आनन्द और उमंगोंसे ओत-प्रोत कर रही है। चलो देखें। महाकवि 'पद्माकर'का भी रासमण्डल देखने योग्य है—

खनक चूरीनकी, त्यौं ठनक मृदंगनकी,
रुनुक झुनुक स्वर नूपर के जालको।
कहैं 'पद्माकर' त्यौं बांसुरी की धुनि सुनि,
रह्यो बंधि सरस सनाको एत तानको॥
देखत बनत, पै न कहत बनै री! कछू,
विविध विलास औ हुलास यह ख्यालको।
चन्द छवि रास, चांदनीको परगास,
राधिकाको मन्द हास, रासमण्डल गोपालको॥

कोई ब्रजवनिता अपनी सहेलीसे कह रही है, कि चन्द्रकी आह्लादिनी छटा और चन्द्रिकाके प्रकाशपूर्ण वा… वरणमें गोपाल श्रीकृष्णने जिस रास-मण्डलका आ… किया है और वहां जो चूड़ियोंकी मधुर झङ्कार, मृदं… ठनक, नूपुरोंके मादक कलरव वंशीके अपूर्व ध्वनि-मा… साथ एक ताल और एक लयमें आबद्ध हो गये हैं, वह … नहीं, देखते ही बनता है। राधिकाका मन्द हास्य … दर्शनीय है।

शरद विभावरी (निशा) का नागरीके रूपमें परि… कीजिये—

तारागण भूषण सघन अंग-अंगनमें,
वसन मयूरनसों रही लोनि लसिकै
दन्त मुकतावलीं चमक चारु चोरै चित,
जोरै मुखचन्दको सुमन्द मन्द हंसिकै
मालती सुगन्ध सनी, सालती हियेमें साल,
रहें नन्दलाल कहूं याके ख्याल फंसिकै
सरद विभावरी न होय सुन बावरी! तू,
दांव री! लियौ है यह सौति श्याम बसिकै

कोई उत्कण्ठिता नारी अपनी सखीसे कह रही है, यह शरद विभावरी (निशा) ने श्यामके हृदय-प्रदेश … अधिकार जमाकर—उन्हें अपने वशीभूतकर सौतका … अदा करते हुए मुझसे बदला लिया है। श्याम उसी… भावनामें फंस गये हैं। जानती है वह निशा सुन्दरी कौ… है और उसके कौन-कौन से परिधान हैं? उस शरद् निशा… अङ्ग-प्रत्यङ्ग तारागण रूपी आभूषणोंसे आच्छादित हैं। चन्… किरणरूपी उज्ज्वल परिधान उसकी शोभाको बढ़ा रहे हैं… उसकी दन्तमुक्तावलीकी चमक हृदयहारिणी है। जब … हंसती है, तब उनका मुख चन्द्र-ज्योत्स्नाका तत्तुल्य … हो जाता है। मालतीकी मोहक सुगन्धसे ओत-प्रोत हो… उसने श्यामको अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। … स्थिति मेरे लिए अत्यन्त कष्टकर है।

हमारी कामना है, कि ऐसी मत्त-मदनोल्लासकारी शर… हमारे पाठक-पाठिकाओंको नित्य नवरस-स्निग्ध करती हु… उनका कल्याण-साधन करती रहे।

★

सफलताकी कुञ्जी

[ले०—श्री वसन्त रामचन्द्र जवलकर]

विवाद बढ़ चला था और बात अधूरी ही थी । मेरा मित्र कह रहा था "मैंने अनेकों प्रयत्न किये, सफलताने कभी दर्शन न दिया । मैंने परिश्रम करनेमें कोई कसर नहीं रखी थी ।" मैंने कहा "बात स्पष्ट है कि तुम असफल रहे । तुमने प्रयत्नमें, परिश्रममें कोई कसर नहीं रखी यह भी सच ही है, परन्तु क्या प्रयत्न तथा परिश्रमकी वही सीमा है ? क्या आपका प्रयत्न उस क्षितिजके छोरको छू रहा था, जिसके बाद स्वर्गका मार्ग हो है ?" मित्रका मन लड़खड़ा रहा था । हृदयके पास बुद्धिका आधार नहीं था । प्रश्नको वह समझकर भी नहीं समझता था, क्योंकि उस असफलता का बीज उत्तर में है ।

आज हमारी यही परिस्थिति है । हम अपनी असफलताओंका कारण अपनी निर्बलताओंको माननेके लिए प्रस्तुत नहीं हैं । और यदि कोई यह माननेको प्रस्तुत है, तो विश्वास रखिये, उसे यह माननेका अवसर हो प्राप्त नहीं होगा । वह सफल ही होगा । वह सफल ही होगा । क्योंकि उस सफलता तक ले जाने वाला मंत्र, सबल रूपमें उसके पास है । वह क्या है ?

वस्तुस्थितिको समझकर हमने जो अपना गंतव्य स्थान निश्चित किया है, जिस सफलताके हम इच्छुक हैं उसकी सम्पत्ति है, तड़पन उस स्थान तक पहुँचनेका अर्थ है प्रयत्न । और तड़पन कैसी हो ?

यह कथा सबको ज्ञात है । एक शिष्यने एक अवधि तक तपस्या की । पश्चात् उसने खिन्न मुद्रासे गुरुजीसे कहा कि "अभी तक ईश्वरने मुझे दर्शन ही नहीं दिये ।" शब्दोंका अर्थ होता है और वे अपना उत्तर स्वयं देते हैं । गुरुजीको कारण ज्ञात था । गंगा स्नानके लिये दोनों चल पड़े । गंगाकी लहरोंमें गुरु शिष्य (दोनों) हाथ चलाने लगे । धारा जोरों से बह रही थी । गुरुजीने शिष्यका सिर पानी में दबा दिया । श्वासके हेतु शिष्य तड़प उठा । पानीसे बाहर आनेके लिये उसने अथक प्रयत्न किया । उसने किसी बातकी कमी न की । बेहोश हो गया । होश आने पर गुरुने उससे पूछा 'क्या भगवानके दर्शन हुए ?" उत्तरमें शिष्यने सिर हिला दिया । गुरुने उसे आदेश दिया कि कि क्या तुम्हारे मनमें ईश्वर प्राप्तिके लिए उतनी ही तड़पन है, जितना पानीसे निकलनेके लिए थी । शिष्य मौन था ।

प्रत्येक मनुष्य जो असफल हो जाता है, वह यह सुन कर मौन हो जाता है । कुछ सोचता है, कुछ अपनेको समझाता है । सार यह है कि ध्येय पूर्तिकी कुञ्जी तड़पन है वह तड़पन जिसका आदेश है—मृत्यु पर्यन्त मैं प्राप्तिमें भिड़ा ही रहूँगा, चाहे सब क्यों न चला जावे ।

"कार्यं वा साधयामि देहं वा पातयामि ।"

तड़फन यह एक मानसिक स्थितिका नाम है । इसके लिए एक भूमिका होना आवश्यक है । वह भूमिका है ध्येय पर निष्ठा । यदि ध्येय पर जरा सा भी असन्तोष हो, उसे प्राप्त कर लेनेके पश्चात्की परिस्थिति पर शंका हो, तो निश्चय जानिये ध्येयकी प्राप्ति कठिन हो जायेगी; क्योंकि साधन जुटाते समय चित्तकी एकाग्रता नष्ट हो जावेगी । तथा तड़पन तुरन्त कम हो जायेगी । यदि ध्येयमें निष्ठा है तब चिन्ताकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती क्योंकि प्रश्नकी गुत्थियाँ आप ही आप सुलझने लगती हैं । कहावत भी है "जहां चाह वहां राह ।"

ध्येय स्पष्ट चाहिये । इसका पाठ हमें अर्जुनसे सीखना चाहिये । वृक्ष पर एक चिड़िया रखी थी । उस चिड़ियाकी आँखको निशाना बनाना था । निशाना मारनेसे पहिले गुरु ने अर्जुनसे पूछा "अर्जुन ! तुम्हें क्या दिखाई देता है ?" अर्जुनने तुरन्त उत्तर दिया "आंख, केवल आंख ।" अर्जुन को पेड़ नहीं दीख रहा था । उसे चिड़िया नहीं दीखती थी । उसे केवल आँख दीखती थी । कहिये जहाँ एक ही वस्तु है वहाँ तीर दूसरी जगह कैसे लग सकता है ।

यदि ध्येय ज्ञात है, मार्ग भी ज्ञात है, उस मार्ग पर चलनेकी तैयारी है, तब आप ही कहिये---क्या अब भी ध्येय प्राप्त नहीं होगा । यदि आप समझते हैं, तब आज ही क्यों न अपनी सफलताका कारण समझ काममें लग जायँ ?

सफलताकी कुञ्जी

[ले०—श्री वसन्त रामचन्द्र जवलकर]

विवाद बढ़ चला था और बात अधूरी ही थी। मेरा मित्र कह रहा था "मैंने अनेकों प्रयत्न किये, सफलताने कभी दर्शन न दिया। मैंने परिश्रम करनेमें कोई कसर नहीं रखी थी।" मैंने कहा "बात स्पष्ट है कि तुम असफल रहे। तुमने प्रयत्नमें, परिश्रममें कोई कसर नहीं रखी यह भी सच ही है, परन्तु क्या प्रयत्न तथा परिश्रमकी वही सीमा है? क्या आपका प्रयत्न उस क्षितिजके छोरको छू रहा था, जिसके बाद-स्वर्गका मार्ग हो है?" मित्रका मन लड़खड़ा रहा था। हृदयके पास बुद्धिका आधार नहीं था। प्रश्नको वह समझकर भी नहीं समझता था, क्योंकि उस असफलता का बीज उत्तर में है।

आज हमारी यही परिस्थिति है। हम अपनी असफलताओंका कारण अपनी निर्बलताओंको माननेके लिए प्रस्तुत नहीं हैं। और यदि कोई यह माननेको प्रस्तुत है, तो विश्वास रखिये, उसे यह माननेका अवसर हो प्राप्त नहीं होगा। वह सफल ही होगा। वह सफल ही होगा। क्योंकि उस सफलता तक ले जाने वाला मंत्र, सबल रूपमें उसके पास है। वह क्या है?

वस्तुस्थितिको समझकर हमने जो अपना गंतव्य स्थान निश्चित किया है, जिस सफलताके हम इच्छुक हैं उसकी सम्पत्ति है, तड़पन उस स्थान तक पहुँचनेका अर्थ है प्रयत्न। और तड़पन कैसी हो?

यह कथा सबको ज्ञात है। एक शिष्यने एक अवधि तक तपस्या की। पश्चात् उसने खिन्न मुद्रासे गुरुजीसे कहा कि "अभी तक ईश्वरने मुझे दर्शन ही नहीं दिये।" शब्दोंका अर्थ होता है और वे अपना उत्तर स्वयं देते हैं। गुरुजीको कारण ज्ञात था। गंगा स्नानके लिये दोनों चल पड़े। गंगाकी लहरोंमें गुरु शिष्य (दोनों) हाथ चलाने लगे। धारा जोरों से बह रही थी। गुरुजीने शिष्यका सिर पानी में दबा दिया। श्वासके हेतु शिष्य तड़प उठा। पानीसे बाहर आनेके लिये उसने अथक प्रयत्न किया। उसने किसी बातकी कमी न की। बेहोश हो गया। होश आने पर गुरुने उससे पूछा 'क्या भगवानके दर्शन हुए?" उत्तरमें शिष्यने सिर हिला दिया। गुरुने उसे आदेश दिया कि कि क्या तुम्हारे मनमें ईश्वर प्राप्तिके लिए उतनी ही तड़पन है, जितना पानीसे निकलनेके लिए थी। शिष्य मौन था।

प्रत्येक मनुष्य जो असफल हो जाता है, वह यह सुन कर मौन हो जाता है। कुछ सोचता है, कुछ अपनेको समझाता है। सार यह है कि ध्येय पूर्तिकी कुञ्जी तड़पन है वह तड़पन जिसका आदेश है—मृत्यु पर्यन्त मैं प्राप्तिमें भिड़ा ही रहूँगा, चाहे सब क्यों न चला जावे।

"कार्यं वा साधयामि देहं वा पातयामि।"

तड़फन यह एक मानसिक स्थितिका नाम है। इसके लिए एक भूमिका होना आवश्यक है। वह भूमिका है ध्येय पर निष्ठा। यदि ध्येय पर जरा सा भी असन्तोष हो, उसे प्राप्त कर लेनेके पश्चात्की परिस्थिति पर शंका हो, तो निश्चय जानिये ध्येयकी प्राप्ति कठिन हो जायेगी; क्योंकि साधन जुटाते समय चित्तकी एकाग्रता नष्ट हो जावेगी। तथा तड़पन तुरन्त कम हो जायेगी। यदि ध्येयमें निष्ठा है तब चिन्ताकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती क्योंकि प्रश्नकी गुत्थियाँ आप ही आप सुलझने लगती हैं। कहावत भी है "जहां चाह वहां राह।"

ध्येय स्पष्ट चाहिये। इसका पाठ हमें अर्जुनसे सीखना चाहिये। वृक्ष पर एक चिड़िया रखी थी। उस चिड़ियाकी आँखको निशाना बनाना था। निशाना मारनेसे पहिले गुरुने अर्जुनसे पूछा "अर्जुन! तुम्हें क्या दिखाई देता है?" अर्जुनने तुरन्त उत्तर दिया "आंख, केवल आंख।" अर्जुनको पेड़ नहीं दीख रहा था। उसे चिड़िया नहीं दीखती थी। उसे केवल आँख दीखती थी। कहिये जहाँ एक ही वस्तु है वहाँ तीर दूसरी जगह कैसे लग सकता है।

यदि ध्येय ज्ञात है, मार्ग भी ज्ञात है, उस मार्ग पर चलनेकी तैयारी है, तब आप ही कहिये—क्या अब भी ध्येय प्राप्त नहीं होगा। यदि आप समझते हैं, तब आज ही क्यों न अपनी सफलताका कारण समझ काममें लग जावें?

भारतीय-युग गणना

[ले०—श्री अम्बालाल गोविन्दराम दवे, बी. एस. सी.]

समयकी नाप सेकण्डसे लेकर बड़े बड़े युगों तकमें की जाती है; किन्तु न हम समयको देख सकते हैं और न उसके नापदण्डको ही। दोनों ही अव्यक्त हैं। फिर भी किसी वस्तुको नाप सकना, उसके व्यक्त होनेका सबसे बड़ा प्रमाण कहा जा सकता है। हम यह भी सुनते हैं कि समय का प्रवाह नहीं रुकता। एक अव्यक्त वस्तुका क्या प्रवाह? फिर यह समय क्या है?

समयको परिवर्तनोंका दूसरा नाम कहें तो अत्युक्ति न होगी। इन परिवर्तनोंका क्रम ही समयका प्रवाह है। हम परिवर्तनोंको नापते हैं, समयको नहीं। यदि सृष्टिमें परिवर्तन होने बन्द हो जायं, तो यह समस्त समुदाय एक शून्य बन जाय और समयका अस्तित्व ही मिट जाय।

यही कारण है कि जिस व्यक्ति पर किसी अशुभ ग्रहकी दशा चल रही होती है, उससे ज्योतिषी कह देते हैं—"भाई तुम्हारा समय ठीक नहीं चल रहा"—अर्थात् तुम्हारी घटनाओंका क्रम तुम्हारे लिये सुखकारी न होगा। यहां समय और घटनाओंसे एक ही तात्पर्य है। वास्तवमें हम घटनाओंका लेखा बनाते हैं और कहते हैं कि हमने समयको नाप लिया।

पृथ्वीका अपनी कीली पर घूम जाना एक सुव्यवस्थित घटना है जिसे हम एक दिन (अहोरात्र) का नाम देते हैं। इसी भांति पृथ्वीका सूर्यकी परिक्रमा करना एक घटना है और ऐसी एक घटनाका नाम एक वर्ष है।

इन घटनाओं वा परिवर्तनोंका क्रम अनन्त कालसे चल रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। इस क्रम अर्थात् 'समय' को नापनेके लिए हमारा वषका नाप-दण्ड अति ही छोटा ठहरता है। आधुनिक वैज्ञानिकोंको आकाश-स्थित ग्रहोंके बीचकी दूरियों का ज्ञान हुआ तब भी उन लम्बी-लम्बी दूरियोंको मीलोंमें नापना असम्भव जान पड़ा, और उन्होंने अपनी इस कठिनाईको, दूरी का एक नया नाप-दण्ड निर्माण कर दूर किया। इस नाप-दण्ड का नाम Light-year प्रकाश वर्ष अर्थात् वह दूरी जो प्रकाशकी गति एक वर्षमें तय करती है) है। 'लाइट-इयर' (प्रकाशवर्ष) १८६००० × ६० × ६० × २४ × ३६० मीलका होता है क्योंकि प्रकाश एक सेकण्डमें १८६ ००० मील चलता है।

कुछ ऐसी ही कठिनाई इस अनन्त समयको नापने समय भारतीय विचारकोंके समक्ष आई होगी, और उन्होंने इस कठिनाईका हल अति सुन्दरतासे ढूंढ निकाला।

वे अपने गणित-बलसे सूर्य-मण्डलकी एक अति विचित्र घटनाकी ओर आकर्षित हुए। उन्होंने ज्ञात किया कि एक समय आता है जब कि सूर्य-मण्डलके सातों ग्रह एक राशि में आ जाते हैं और उन सबका मध्य भोग होता है। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि इस घटनाकी आवृत्ति ४३२००० वर्ष बाद निरन्तर हुआ करती हैं।

इस भांति उन्हें ४३२००० वर्षका एक सुव्यवस्थित नाप-दण्ड मिल गया, जिससे भूत और भविष्य दोनों की ही गहराइयोंका अनुमान किया जा सकता है। इस नाप

दण्डका नाम 'कलि' रक्खा गया। यह समयका सबसे छोटा युग हुआ। इसके अनुसार एक 'कलि-युग' में ४३२००० वर्ष हुए।

चार लाख बत्तीस हजार ज्योतिषमें एक महत्वपूर्ण संख्या है। इसके आधार पर ही भारतीयोंकी युग-गणना अवलम्बित है। किन्तु अधिकतर आजके समाजमें सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग आदिको अधिक महत्व नहीं दिया जाता और कहीं कहीं समझ लिया जाता है कि इतनी लम्बी समयकी अवधियां ज्योतिषियोंकी कल्पनाके अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकतीं। उनसे हमारा कहना है कि वे गणित करके देख लें भ्रम मिट जायगा। योरोपके प्रसिद्ध ज्योतिषी बेली (Bailley) ने विपरीत गणित करके इस तथ्यकी जांच की थी। उनका कहना है कि ईसासे ३१०२ वर्ष पूर्व २० फरवरीको २ बजकर २७ मि० ३० से० पर सातों ग्रह एक राशिमें थे। अतः यही समय वर्तमान कलि-युगके प्रारम्भका समय कहा जा सकता है। ३१०२ वर्षों में यदि ईसासे बाद के वर्ष अर्थात् वर्तमान सन् जोड़ दें तो ३१०२+१९५३= ५०५५ वर्ष आज तक कलियुगको प्रारम्भ हुए हो गये। सूर्य-सिद्धान्तके अनुसार भी कलि-युगको प्रारम्भ हुए इतने ही वर्ष हुए, केवल अन्तर इतना ही है कि उसके अनुसार प्रारम्भ समय १७ और १८ फरवरीकी मध्य रात्रि था जोकि बेलीके निकाले समयसे अधिक भिन्न नहीं है।

भारतवासी कलि-युगकी अवधिकी संख्या ४३२००० को अति महत्वपूर्ण समझते आए हैं। यहां तक कि इस सख्याका सम्बन्ध वेदोंके अक्षर और छन्दोंसे भी है। ऋग्वेद में १२००० बृहती छन्द हैं। एक बृहती छन्दमें ३६ अक्षर होते हैं। अतः कुल ऋग्वेदमें १२०००×३६=४३२००० अक्षर हुए—और यही कलि-युगकी अवधि है। इसी भांति साम और यजुर्वेदमें भी मिलकर इतने ही अक्षर होते हैं।

एक कलिका—अर्थात् ४३२००० वर्षोंका नाप-दण्ड लेते हुए भारतवासियोंने समयके लम्बे लम्बे युगोंकी गणना इस भांति की है।

१ कलियुग=४३२००० वर्ष

१ द्वापर=२×४३२००० वर्ष

१ त्रेता=३×४३२००० वर्ष

१ सत-युग=४×४३२००० वर्ष

इन चारों युगोंकी एक चतुर्युगी कहलाती हैं।

अतः १ चतुर्युगी=४३२०००(४+३+२+१) वर्ष

=४३२०००×१० वर्ष

=४३२०००० वर्ष

एक चतुर्युगीका नाम महा-युग भी है। अतः एक महा-युगमें ४३२०००० वर्ष हुए। ऐसे ७१ महायुगों(चतुर्युगियों) में एक सत-युगके वर्षोंकी संख्या जोड़नेसे एक मन्वन्तर (मनु) होता है:—

१ मन्वन्तर (मनु) =७१ महा-युग+१ सतयुग

=७१ (४३२०००×१०)+(४३२०००×४) वर्ष

=४३२००० (७१०+४) वर्ष

=४३३०००×७१४ वर्ष

ऐसे १४ मन्वन्तरोंमें एक सत-युगके वर्ष जोड़ देनेसे एक कल्प, अर्थात् ब्रह्माका एक दिवस होता है।

१ कल्प =१४ मन्वन्तर+१ सत-युग

=१४ (७१४×४३२०००)+४×४३२००० वर्ष

=४३२००० [१४(७१४)+४] वर्ष

=४३२००० [९९९६+४] वर्ष

=४३२०००×१०,००० वर्ष

=४३२००००००० वर्ष

अर्थात् एक हजार महा-युगोंका अथवा दस-हजार कलि-युगोंका एक कल्प होता है। ज्योतिषमें सृष्टिका आदि कल्प के आरम्भसे माना जाता है। इस भाँति भारतीयोंने कलियुग के प्रमाणसे समस्त सृष्टिके कालको नाप लिया है। यह एक प्रकारसे सारी सृष्टिकी आयु वा जीवन प्रमाण है। हम इसे दो प्रलयोंके बीचका समय भी कह सकते हैं। अब एक और महत्वपूर्ण बात दृष्टिगोचर होती है। वह यह है कि सूर्य-मण्डलमें आरम्भमें भी सातों ग्रह युतिमें अथवा एक राशि में ही थे।

आधुनिक वैज्ञानिकों और भू-गर्भ शास्त्रियोंने सृष्टिकी आयु, पृथ्वीकी आयु, और मनुष्य जातिकी आयु ज्ञात करने का प्रयास किया है, किन्तु वे किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुंच पाए। उनकी निकाली हुई पृथ्वीकी आयु बढ़ती ही

जाती है। रेडियो-एक्टीविटी द्वारा यह आयु लगभग ३०० मिलियन वर्ष बताई जाती है जब कि एक मिलियन दस लाखका होता है। किन्तु वे इस संख्या पर भी नहीं ठहरते और कहते हैं कि पृथ्वीकी आयु इससे भी अधिक हो चुकी है।

पृथ्वीकी आयुका अनुमान करनेका प्रयास कई प्रकारसे किया गया है। सूर्य-तापसे यह आयु २० मिलियन वर्ष आती है, भूतापसे ६० मिलियन वर्ष, समुद्र जलसे १०० मिलियन वर्ष। भूगर्भ शास्त्रियोंके मतके अनुसार भी १०० मिलियन वर्ष पृथ्वीकी आयु हो चुकी है।

यह सारे अनुसन्धान परस्पर मेल नहीं खाते। अतः यह अत्यधिक सम्भव है कि वे सभी सत्यसे दूर हैं। इन अनुसन्धान कर्ताओंकी स्थिति एक ऐसे मनुष्यकी भांति है, जो कि किसी व्यक्तिकी आयु ज्ञात करनेके लिये उसके जन्म-पत्र अथवा जन्म समयके ग्रहोंकी स्थितिका अध्ययन न करके, कई डाक्टरोंके पास उसके शारीरिक अवयवों, जैसे दांत, त्वचा, हड्डी आदिकी परीक्षा कराने जाय। प्रत्येक डक्टरका अनुमान पृथक् और सन्देहपूर्ण होगा। कहना न होगा कि उसकी वास्तविक आयु तो उसके जन्म समयकी ग्रह-स्थिति से ही ज्ञात हो सकेगी!

ठीक यही हाल इन अनुसन्धानकर्ताओं और उनके अनुसन्धानोंका है! उनकी वैज्ञानिक वृत्ति सराहनीय है। अतः उन्हें चाहिये कि भारतीय ज्योतिषकी ओर भी ध्यान दें। इस शास्त्रमें सृष्टिका सारा जन्मपत्र विद्यमान है और वह सृष्टिकी सामूहिक समरसतासे सामंजस्य भी रखता है।

वेदानुकूल भारतीय ज्योतिषमें, सृष्टिकी उत्पत्ति सबसे पहले मनु 'स्वायम्भुव-मनु' में हुई। इस मनुमें छोटे-छोटे परमाणु आपसमें मिले और नाक्षत्र जगत उत्पन्न हुआ। बड़े-बड़े सूर्योंने जन्म लिया। दूसरे मनुमें इन बड़े-बड़े सूर्यों और नक्षत्रोंका खण्डन हुआ और प्रत्येकके अपने 'मण्डल' बने। इस मनुको स्वारोचिष मनु कहते हैं। इसी मनुमें पृथ्वी सूर्यसे पृथक् हुई और अन्य ग्रह भी पृथक् हुए जिसके बारे में जीन्स (Sir James Jeans) महोदयका सिद्धान्त सर्वमान्य हो चुका है। तीसरे मनुमें चन्द्रमा पृथ्वीसे अलग हुआ (यह भी जीन्स महोदयके सिद्धान्तसे मिलता है)। ... मनुमें समुद्रसे पृथ्वी निकली। पांचवेंमें वनस्पतियां हुई। छठे मनुमें पशुओंने जन्म लिया। सातवें मनु ... मनु' में मनुष्योंने जन्म लिया। यही वर्तमान मनु है। इस समय अट्ठाइसवीं चतुर्युगीमें कलि-युग चल रहा है।

अब भली भांति हिसाब लगाया जा सकता है कि सृष्टिको उत्पन्न हुए कितने वर्ष हुए। हम देख चुके हैं कि सृष्टि-काल १४ मन्वन्तरोंका होता है। इस समय सातवां मन्वन्तर चल रहा है। यदि हम सात मन्वन्तरोंके वर्षोंमें वर्तमान मनुके अब तकके बीते वर्ष जोड़ दें तो सृष्टिके आदि से अब तकके वर्ष आजायंगे। इस भांति गणित करके कहा जा सकता है कि सन् १९५३ ई० तक सृष्टि उत्पन्न हुए १९७२९४९०५४ वर्ष हो चुके हैं।

प्राचीन समयमें, समय नापनेमें जितनी चतुरता भारतवासियोंने दिखलाई है किंचित् अन्य किसी जातिने नहीं दिखलाई। उच्चकोटि के ज्योतिष शास्त्रके प्रादुर्भावसे ही यह सम्भव हो सका था। भारतवासी आज भी नित्य पूजाके समय संकल्प पढ़ते हुए कहते हैं "द्वितीय परार्द्धे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे ५०५५ गताब्दे" जिसका अर्थ है कि यह वैवस्वत मनुका अट्ठाइसवाँ कलि है जिसके ५०५५ वर्ष बीत चुके हैं। ज्योतिष भारतीय जीवनमें किस सीमा तक व्याप्त हो चुका है!!

आज स्वतंत्रताके नव प्रभातमें, बूढ़ा भारत विज्ञानकी जगमगको अनिमेष नेत्रोंसे देख रहा है। इस नवीन ज्योतिने उसके मस्तिष्कमें प्राचीन स्मृतियोंको जगा दिया है। नवीन वैज्ञानिककी महानता आज उसे अपनी प्राचीन महानताका मान करा रही हैं। इस अनुभव-शील संयोजक शक्तियां आज चैतन्य हैं और वे वैज्ञानिकको रूपसे समझनेका प्रयास कर रही हैं। क्या वैज्ञानिक भारतीय दार्शनिकताको समझनेका प्रयास कर अपनी दार्शनिकताको चरितार्थ करेगा?

हमारा विश्वास है उसे ऐसा करना ही होगा।

★

पृथ्वी की परिभाषा

प्राचीन महर्षियोंने पृथिवीका आकार और सूर्यचन्द्रादिकोंका सम्बन्ध बताते हुए पृथ्वीको चारों ओरसे गोल माना है। जैसे नारंगी, अंडा, या गेंदका आकार गोल है। उसी प्रकार पृथिवीका आकार भी गोल है। यदि नारंगीकी फांकोंको अलग २ कर दिया जाय तो वे सीधी प्रतीत होंगी। परन्तु उन्हें मिलाने पर गोल ही दिखाई देंगी। यदि हम किसी गोलाकार वृहत मृतपिण्ड पर चढ़ कर देखें तो वह पिंड चिपटा ही दिखाई देगा। इसी प्रकार पृथिवीका आकार बहुत बड़ा है। और मनुष्य छोटा है। अतएव पृथिवीका आकार चिपटा दिखाई देता है सिद्धान्त शिरोमणिमें लिखा है।

समौ यतः स्यान् परिधेः शतांशः।
पृथिवीच पृथ्वी नितरां तनीयान ॥
नरश्च तत्पृष्ठगतस्य कृत्स्नाम्।
समेव तस्य प्रतिभात्यतः सा ॥

पृथिवीका आकार बहुत विस्तृत है, इस वास्ते मनुष्यको उसका सौवां भाग समान दिखाई देता है और मनुष्य उस पृथिवी पर स्थित सारी वस्तुओंको समान ही देखता है। अतः चपटी प्रतीत होती है। परन्तु वास्तवमें उसका आकार गोल है।

ग्रहलाघवके चतुर्थाधिकारमें लिखा है कि "छादयत्यर्क मिन्दुर्विधुं भूमिभा" अर्थात ग्रहणके समय पृथिवीकी गोल छाया चन्द्रमा पर गिरती है, सो वह स्थान गोल छायाका प्रतिविम्ब गोल दिखाई देता है, और शेष चन्द्रमा तिरछा प्रतीत होता है, क्योंकि जब किसी गोल वस्तुको गोल वस्तुसे काटा जाता है तो वह उस पदार्थसे गोलाई ले लेती है। और अवशिष्ट भाग तिरछा रह जाता है। क्योंकि जो वस्तु जिस आकारकी होती है उसका प्रतिविम्ब भी वैसा ही होता है।

श्री कमलाकर भट्टने लिखा है कि यदि पृथिवी चिपटी होती तो—

"उदग्दिशं याति यथा यथा नरः तथा तथा पश्यत्युन्नतं ध्रुवम्"।

मनुष्य ज्यों-ज्यों उत्तर दिशाकी ओर जाता है त्यों-त्यों ध्रुव नामक तारा अधिक ऊंचा दिखाई देता है। और यह तब हो सकता है कि जब भूभाग एक ओर ऊंचा और दूसरी ओर नीचा हो, इससे स्पष्ट है कि हम किसी गोलाकार वाली चीज पर चल रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि पाश्चात्य विद्वानोंने भी इस सिद्धान्तका अध्ययन भारतवर्षसे ही किया था।

आश्चर्य है कि हम लोग अपने सिद्धान्तोंको न जानते हुए, पाश्चात्य विद्वानोंका ही आविष्कार बता रहे हैं। यह हमारी सरासर भूल है। अब प्रश्न यह है कि सूर्य पृथिवी के चारों ओर घूमता है अथवा पृथिवी सूर्यके चारों ओर घूमती है। हमारे आधुनिक भारतवासियों का मन्तव्य है कि पृथिवीके चारों ओर सूर्य और तारागण घूमते हैं। उनका कहना है कि हमारे ऊपर एक "शिशुमार चक्र" है जो चाककी भांति भ्रमण कर रहा है। और ज्यों-ज्यों वह चक्र घूमता हुआ हमारे सामने आता है, त्यों-त्यों सूर्यादि तारागण दिखाई देते हैं। वास्तवमें यह कथन बुद्धि और प्रमाणसे बिल्कुल असंगत है, वेद इसका स्पष्टीकरण करता हुआ बता रहा है—

आ गौः वर्तनी पर्येति विवस्वते (ऋ० ८।३।१०।१)

यह पृथिवी अपनी सीमामें सूर्यके चारों ओर घूमती है। आर्य्य भट्टने लिखा है—

भपञ्जरः स्थिरो भूरेवावृत्यावृत्य प्रतिदैवसिकम्।
उदयास्तमयं सम्पादयति ग्रहनक्षत्राणाम् ॥

सूर्यादि सब नक्षत्र स्थिर हैं, पृथिवी ही अपनी धुरी पर बार-बार घूम कर प्रतिदिन इन नक्षत्रोंके उदय और अस्त का सम्पादन करती है।

श्री भास्कराचार्यने सिद्धान्त शिरोमणिमें लिखा है—

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भान्ति तद्वत् सपश्चिमगानि लंकायाम् ॥

जैसे नौकामें बैठा हुआ मनुष्य किनारेकी स्थिर वस्तुओं को उलटी चलता हुआ देखता है, इसी प्रकार मनुष्योंको सूर्यादि नक्षत्र अस्थिर और पश्चिमकी ओर चलते हुए दिखाई देते हैं परन्तु वास्तवमें पृथिवी ही अपनी सीमामें घूमती है।

इन प्रमाणोंको देखते हुए स्पष्ट जाना जाता है कि पृथिवी ही नक्षत्रोंके चारों ओर घूमती है।

पाश्चात्य विद्वानोंका भी यही सिद्धान्त है कि पृथिवी गोलाकार है। किंतु आज यह सिद्धान्त नूतन प्रतीत होता है, यह हमारी सरासर भूल है, परन्तु "अंधा मनुष्य किसी वृक्षसे टकरा कर गिर पड़े तो उसमें वृक्षका कोई अपराध नहीं" इसी प्रकार शास्त्रोंको न जानने वाला व्यक्ति यदि इस आविष्कारको यूरोपीय पण्डितोंकी विद्वत्ता कहे तो यह केवल उसकी अविद्याका ही दोष है। जिन सिद्धान्तोंको उन्होंने भारतवर्षसे सीखा था, जो वास्तवमें हमारी सम्पत्ति थी वह आज अविद्याके प्रबल अन्धकारमें छिप ही नहीं गई अपितु उन शास्त्रोंकी सत्ता ही संसारसे उठ गई। और भी पृथिवीके पक्षमें 'सूर्य सिद्धान्त' ब्रह्मसिद्धान्त आदि अनेक ग्रन्थोंमें इन विषयोंका विशद वर्णन है।

अथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्त मित्वाऽथात्मानं विपर्यस्यते अहरेवावस्तात् कुरुते रात्रिः परस्तात् स वा एष कदाचन निम्रोचति न वै कदाचन निम्रोचति।

(ऐतरेय ब्राह्मण)

इसका भावार्थ यह है कि सूर्य न कभी अस्त होता और न कभी उदय होता है। केवल पृथिवीके घूमनेसे पूर्व और पश्चिमके भागोंमें उदय और अस्त होता है। पृथिवीका जो भाग सूर्यके सामने आता है तो वहाँ दिन होता है, और जब उस पृथिवीका पृष्ठ भाग सूर्यके सामने आता है तो रात्रि हो जाती है। अर्थात् सूर्यके दीखनेका नाम दिन और सूर्यके न दीखनेका नाम रात है। जहाँ यह बात स्वयं भगवान् स्वयं कहते हैं कि पृथिवी घूमती है तो फिर इससे अधिक और कौन सिद्धान्त प्रमाण्य माना जा सकता है और यह कहना सर्वथा निर्मूल है कि यह पाश्चात्य पण्डितोंका मत है कि "पृथिवी घूमती है" यह भारतवर्षका प्राचीन सिद्धान्त है। अब प्रश्न यह होता है कि यदि पृथिवी सूर्यके चारों ओर घूमती है तो हिलती क्यों नहीं? और चलती दिखाई क्यों नहीं देती?

पाठक! संसारमें प्रायः बहुत सी वस्तुएं चलती हुई भी दिखाई नहीं पड़तीं। यदि साफ सुथरी सड़क पर गाड़ी चलती हो उसमें हिलना प्रतीत नहीं हो सकता। नाव में बैठा हुआ मनुष्य नावके चलते रहने पर भी यह नहीं जानता कि नाव चलती है या नहीं। जैसे—

कुलाल चक्रभ्रमिवाप्य गत्या
यान्तो न कीटा इव भान्ति यान्तः।

(सिद्धान्त शिरोमणि)

जैसे कुम्हारके घूमते हुए चाक पर बैठे हुए कीड़ेको चाकका घूमना प्रतीत नहीं होता और न इस चाककी गति ही मालूम होती है। इसी प्रकार मनुष्योंको भी पृथिवीकी गति प्रतीत नहीं होती।

पृथिवी का आकार

अब आगे पृथिवीकी परिधि और व्यासका वर्णन प्राचीन शास्त्रोंसे बतलाते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है कि ४९६७ योजन पृथिवीकी परिधि है। और १५८१ योजनका व्यास है। सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा है—

प्रोक्तो योजन संख्यया कुपरिधिः सप्तांग नन्दाब्धयः।
तद्व्यासः कुभुजंगसायकभुवोऽथ प्रोच्यते योजनैः ॥

वा गौः वर्तनी पर्येति विवस्वते (ऋ० ८।२।१०।१)

यह पृथिवी अपनी सीमामें सूर्यके चारों ओर घूमती है।

आर्य्य भट्टने लिखा है—

भपञ्जरः स्थिरो भूरेवावृत्यावृत्य प्रतिदैवसिकम्।
उदयास्तमयं सम्पादयति ग्रहनक्षत्राणाम् ॥

सूर्यादि सब नक्षत्र स्थिर हैं, पृथिवी ही अपनी धुरी पर बार-बार घूम कर प्रतिदिन इन नक्षत्रोंके उदय और अस्त का सम्पादन करती है।

श्री भास्कराचार्य्यने सिद्धान्त शिरोमणिमें लिखा है—

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भान्ति तद्वत् सपश्चिमगानि लंकायाम् ॥

जैसे नौकामें बैठा हुआ मनुष्य किनारेकी स्थिर वस्तुओं को उलटी चलता हुआ देखता है, इसी प्रकार मनुष्योंको सूर्यादि नक्षत्र अस्थिर और पश्चिमकी ओर चलते हुए दिखाई देते हैं परन्तु वास्तवमें पृथिवी ही अपनी सीमामें घूमती है।

इन प्रमाणोंको देखते हुए स्पष्ट जाना जाता है कि पृथिवी ही नक्षत्रोंके चारों ओर घूमती है।

पाश्चात्य विद्वानोंका भी यही सिद्धान्त है कि पृथिवी गोलाकार है। किंतु आज यह सिद्धान्त नूतन प्रतीत होता है, यह हमारी सरासर भूल है, परन्तु "अंधा मनुष्य किसी वृक्षसे टकरा कर गिर पड़े तो उसमें वृक्षका कोई अपराध नहीं" इसी प्रकार शास्त्रोंको न जानने वाला व्यक्ति यदि इस आविष्कारको यूरोपीय पण्डितोंकी विद्वत्ता कहे तो यह केवल उसको अविद्याका ही दोष है। जिन सिद्धान्तोंको उन्होंने भारतवर्षसे सीखा था, जो वास्तवमें हमारी सम्पत्ति थी वह आज अविद्याके प्रबल अन्धकारमें छिप ही नहीं गई अपितु उन शास्त्रोंकी सत्ता ही संसारसे उठ गई। और भी पृथिवीके पक्षमें 'सूर्य सिद्धान्त' ब्रह्मसिद्धान्त आदि अनेक ग्रन्थोंमें इन विषयोंका विशद वर्णन है।

अथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्त मित्वाऽथात्मानं विपर्यस्यते अहरेवास्तात् कुरुते रात्रिः परस्तात् स वा एष कदाचन निम्रोचति न वै कदाचन निम्रोचति। (ऐतरेय ब्राह्मण)

इसका भावार्थ यह है कि सूर्य न कभी अस्त होता और न कभी उदय होता है। केवल पृथिवीके घूमनेके कारण पूर्व और पश्चिमके भागोंमें उदय और अस्त होता है। पृथिवीका जो भाग सूर्यके सामने आता है तो वहां पर दिन होता है, और जब उस पृथिवीका पृष्ठ भाग सूर्यके सामने आता है तो रात्रि हो जाती है। अर्थात् सूर्यके प्रकाशका नाम दिन और सूर्यके न दीखनेका नाम रात है। जब भगवान् स्वयं कहते हैं कि पृथिवी घूमती है तो फिर इससे अधिक और कौन सिद्धान्त प्रमाण माना जा सकता है। यह कहना सर्वथा निर्मूल है कि यह पाश्चात्य पण्डितोंका मत है कि "पृथिवी घूमती है" यह भारतवर्षका प्राचीनतम सिद्धान्त है। अब प्रश्न यह होता है कि यदि पृथिवी सूर्यके चारों ओर घूमती है तो हिलती क्यों नहीं? और चलती दिखाई क्यों नहीं देती?

पाठक! संसारमें प्रायः बहुत सी वस्तुएं चलती हुई भी दिखाई नहीं पड़तीं। यदि साफ सुथरी सड़क पर गाड़ी चलती हो उसमें हिलना प्रतीत नहीं हो सकता। नावमें बैठा हुआ मनुष्य नावके चलते रहने पर भी यह नहीं जानता कि नाव चलती है या नहीं। जैसे—

कुलाल चक्रभ्रमिवात्म गत्या
यान्तो न कीटा इव भान्ति यान्तः।
(सिद्धान्त शिरोमणि)

जैसे कुम्हारके घूमते हुए चाक पर बैठे हुए कीड़ेको चाकका घूमना प्रतीत नहीं होता और न इस चाककी गति ही मालूम होती है। इसी प्रकार मनुष्योंको भी पृथिवीकी गति प्रतीत नहीं होती।

पृथिवी का आकार

अब आगे पृथिवीकी परिधि और व्यासका वर्णन प्राचीन शास्त्रोंसे बतलाते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है कि ४९६७ योजन पृथिवीकी परिधि है। और १५८१ योजनका व्यास है। सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा है—

प्रोक्तो योजन संख्यया कुपरिधिः सप्तांग नन्दाब्धयः।
तद्व्यासः कुभुजंगसायकभुवोऽथ प्रोच्यते योजनैः ॥

पृथिवीकी परिधि ४९६७ योजन है, और व्यास १८५१ योजनका है, ५ मीलका एक योजन होता है, अब ४९६७ पांचसे गुणा किया जाये तो २४८३५ मीलकी परिधि होती है। और १८५१ योजनको ५ से गुणें तो ७९०१ मीलका व्यास हुआ। अब देखिये योरूपीय और भारतीय पण्डितों में क्या मतभेद है? जो बात योरूपीय गणित करके लिखते हैं वह बात हमारी पुस्तकोंमें सहस्रों वर्ष पहिले लिखी हुई है। फिर भी उन सिद्धान्तोंको नवीन मानना कितनी भूल और अल्पज्ञता है। आधुनिक पंडित पृथिवीकी परिधि २५ करोड़ योजन मानते हैं। और अपने सिद्धान्तको पुष्ट करनेके लिए श्रीमद्भागवत के इस श्लोकको प्रमाण रूपमें रखते हैं।

अण्डमध्यगतः सूर्यो द्यावाभूम्योर्यदन्तरम् ।
सूर्याण्ड गोलयोर्मध्ये कोट्यः स्युः पंचविशतिः ॥
भा० स्कं ५।२०।४३।

इस श्लोकके अनुसार पृथिवीकी परिधि २५ करोड़ मानते हैं।

परन्तु इस श्लोकका अर्थ यह नहीं है, सम्भव है सूर्य को मध्यभागमें मान कर स्वर्ग और पृथिवीका अंतर बताया हो। यह भागवतका प्रमाण पृथिवीकी परिधिके विषयमें नहीं है। शिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है।

कोटिघ्नै र्नख नन्दषट् कनखभू भूभृद् भुजंगेंदुभिः ।
ज्योतिः शास्त्रविदो वदन्ति नभसः कक्षामिमां योजनैः ॥
तद् ब्रह्माण्ड कटाह सम्पुटतटे केचिज्जगुर्वेष्टनम् ।
केचित् प्रोचुरदृश्यकं गिरि पौराणिकाः सूरयः ॥

इसका अभिप्राय यह है कि १८७१२०६९२००००००००

यह संख्या एक संख्याकी है। इसको ज्योतिष शास्त्रके जानने वाले ईश्वरीय समस्त सृष्टिका एक छोटा सा भाग समझते हैं। और पौराणिक विद्वान् इसको केवल एक लोकालोक पर्वतकी ऊंचाई बतलाते हैं। इसी प्रकार योगवासिष्ठादि ग्रन्थोंमें असंख्य सृष्टियोंका वर्णन है, तथा वेद शास्त्रोंमें लिखा है कि ईश्वरकी सृष्टिमें कोटि योजनकी कोई चीज नहीं है अंग्रेजोंने जो २४८५६ मीलकी परिधि और ७९१२ मीलका व्यास लिखा है वह मनुष्य लोकका विस्तार है, यह समस्त ब्रह्माण्डका क्षेत्रफल है। इस ब्रह्माण्डमें ऐसे २ अनेक लोक हैं जिनमें मनुष्य बसते हैं। जो आकाशमें तारागण दिखाई देते हैं यह सब लोक हैं; और पृथिवी से किसी प्रकार भी कम नहीं हैं। पुराण शास्त्रोंमें नक्षत्र का नाम वसु लिखा है, क्योंकि संस्कृतमें नक्षत्रका नाम वसु है। अर्थात् इसमें मनुष्य बसते हैं, और यही लोक पुराणों में स्वर्ग, यम, सूर्य, वरुण, वसु, लोक, इन्द्र, कुबेर, रुद्र और ब्रह्म तथा और भी अनेक नामके होते हैं। अगस्त्य और ध्रुव नामक तारे जो आपको दिखाई देते हैं वे भी लोक ही हैं। और इनमें मनुष्य निवास करते हैं। यही यूरोपीय पंडितोंका भी मत है कि यह पृथिवी इस ब्रह्माण्ड में एक छोटा सा लोक है, और आकाशमें भी अनेक लोक हैं, जो पृथिवीसे बहुत बड़े हैं। तथा उनमें मनुष्योंका भी वास है। गुण और कर्मके भेदसे वे हमसे बहुत भिन्न हैं, वैसे पाश्चात्य पंडितोंका मत कोई नया तथा हमारेसे भिन्न नहीं है। अपितु वह सब प्राचीन शास्त्रोंके आधार पर ही लिखा गया है।

★

मृत्युसे मत डरिए

[ले०—श्री पं० मुरारीलालशर्मा 'सुरस' बी. ए.]

जीवन और मृत्युके विषयमें पुराने आचार्योंने बहुत कुछ लिखा है। आत्माको नित्य और शरीरको अनित्य बताया है। आत्मा और पाञ्चभौतिक शरीरके संयोगका नाम जीवन है उनके वियोगका ही नाम मृत्यु है। जीवन और मृत्यु दिन-रातके समान मनुष्यसे बंधे हुए हैं जिस प्रकार दिनभर काम करके मनुष्य थकानकाअनुभव करता है तो उसके अन्तःकरण (मन, बुद्धि आदि) और बाह्यकरण (कान, नाक, मुंह, हाथ आदि) पूर्णरूपेण काम करने योग्य नहीं रह जाते। दिनमें जहां मनुष्यकी इन्द्रियां बड़ी तत्परता और परिश्रमसे काम करती थी, अब रात्रि आनेपर मनुष्य प्रगाढ़ निद्रामें सो जाता है। उसके अन्तःकरण और बाह्यकरण सभी विश्राम करते हैं। जिस प्रकार काम करनेसे शक्तिका ह्रास होता है, वैसे ही विश्राम करनेसे पुनः शक्तिका संचय होता है । यह क्रिया अनादिकालसे चली आ रही है।

एक बार तीन आदमी अपना हिसाब तय कर रहे थे। हिसाब करते-करते बहुत रात बीत गई, पर वह छोटा सा हिसाब न मिला । जो हिसाब कर रहे थे, वे ज़ोर-ज़ोरसे कहते थे—आठ दूना दस। परन्तु सुनने वालोंने उनकी भूल नहीं समझी। अन्तमें हिसाब करना बन्द करके तीनों सो गए। दूसरे दिन प्रातःकाल उठते ही हिसाब उठाया और उसे फिर करने लगे। झट ठीक हो गया। इसका कारण यह था कि इन्द्रियोंमें काम करनेकी क्षमता तो रही नहीं थी अतः वे प्रश्न हल नहीं कर पा रहे थे। अन्तमें हमने देखा कि जब वे सोकर उठे तो वही हिसाब तुरन्त हल हो गया।

इसी कारण हम देखते हैं कि मनुष्यका जीवन काम करने के लिए और मृत्यु शाश्वत विश्रामके लिए है। मनुष्य स्वभाव से ही क्रियाशील है, अतः वह जन्मभर कुछ न कुछ ... ही रहता है। वृद्धावस्था में जब उसके शारीरिक अ... में कमी आजाती है या वे बिल्कुल बेकार हो जाते हैं ... कार्यक्षमतामें भी ह्रास होने लगता है। जब मनुष्य अ... हो जाता है, तब भी उसे मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, तृ... चिन्ता और मोहकी भावनाएं घेरे रहती हैं।

वृद्ध मनुष्यके हृदयमें जब अपनी कार्य-अक्षमता, आल... चिंता और अतीतके सुख दिवसोंकी स्मृति सामने आती ... तो वह उनको स्मरणकरके पश्चात्ताप और वेदना ... अग्नि में जल उठता है । जब वह अपने ... कार्यों और उन दिनोंको भूल जानेमें असम... का अनुभव करता है तो उसके हृदयमें 'हीनता की भाव... का उद्रेक होने लगता है। वह सोचता है, मेरे ... शिथिल पड़ गए । आंखोंसे दिखाई नहीं देता, कानों... सुनाई नहीं पड़ता, हाथ-पैरोंसे पर्याप्त कार्य नहीं होता। ... अपने जीवनमें कितनोंको धोखा दिया और कितनोंका स... अपहरण किया। अब तो मैं बच नहीं सकता, शीघ्र ... मेरी मृत्यु आकर मेरा प्राणांत करदे, यही उत्तम है।' ... योंही कहते-सुनते वह एक दिन मर जाता है । जिस प्र... मनुष्य रात्रिमें आराम करके प्रातःकाल नवीनशक्ति और न... स्फूर्ति को लेकर जाग उठता है, उसी प्रकार जीवनरूपी ... में काम करके थकने पर मृत्युरूपी रात्रिमें विश्राम क... मनुष्यजीवनके प्रातःकालमें नवीनशक्ति और सामर्थ्यसे ... बाल्यावस्थाको प्राप्त होता है। जहां बुढ़ापेमें कार्य करने ... कष्ट होता था जीवन भार स्वरूप लगता था, वही मृ... विश्रांत होकर मनोहर और शाश्वत आनंदमें विलीन हो ग...

इस प्रकार अब समझे कि मृत्यु दुःख देनेके लिए नहीं अपितु सुख देनेके लिए है । श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि—

‘वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य-
न्यानि संयाति नवानि देही ।’

अर्थात् जिसप्रकार मनुष्य फटे-पुराने वस्त्र छोड़कर नए वस्त्र पहन लिया करता है, उसी प्रकार आत्मा जीर्ण और निकम्मा शरीर छोड़कर नया शरीर ग्रहण कर लेता है। प्रत्येक मनुष्य पुराने कपड़ोंको बदलकर जब नये कपड़े पहनता है तो उसे सुखानुभूति ही होती है, लेशमात्र भी दुःख नहीं होता। तो फिर आत्माको ही जर्जर और अशक्त शरीर को छोड़कर पुष्ट नये शरीरके ग्रहणमें ही दुःख क्यों होगा ? परंतु साधारणतः देखनेमें यह आता है कि—दुःख उठा रहे हैं, तन जर्जर हो गया है, न आंखोंसे दिखाई देता है, न कानोंसे सुनाई पड़ता है। पर यदि उनके सामने “मौत” शब्दका उच्चारण कर दिया जाय तो भी वे बुरा मानते हैं। उन्हें मरनेसे डर लगता है। ऐसी दुरवस्थामें भी वे जीवित रहना चाहते हैं। मृत्युसे होने वाले दुःखका कारण मृत्यु नहीं परंतु उन्हें तो ममता के कारण दुःख होता है। संसारके सभी पदार्थ कुछ समय उपयोग करनेके बाद छोड़ देनेके लिए हैं। परंतु फिर भी—यदि कोई उसे रखना ही चाहे तो उसकी भूल होगी। जहाजपर यात्रा करने वाले यात्रीको उसकी सुविधाके लिए बहुत सी वस्तुएं दी जाती हैं। यात्रा की समाप्ति पर वे सब वस्तुएं उसे वापस लौटानी पड़ती हैं। यदि वह यात्राके बाद भी उनसे ममता जोड़े रहे और उन्हें न छोड़े तो सिवाय दुःखके उसे और कुछ नहीं मिलेगा। जो मनुष्य बिना किसी मोह ममताके ही उन वस्तुओंको छोड़कर चल देते हैं, वे सोचते हैं ‘ये सब यात्राकी सुविधा के लिए थी। वह अपनी वस्तु नहीं, ऐसे व्यक्तिको मृत्युसे भय नहीं लगता।

अन्त में हम इसी निष्कर्षपर आते हैं कि मृत्युसे न डरना चाहिये, क्योंकि मृत्यु सुख देने वाली होती है। परन्तु तभी जबकि सांसारिक पदार्थोंमें प्रयोगके अतिरिक्त आसक्ति, माया और ममता न हो अतः मनुष्यको ममताके चक्रसे मुक्त रहना चाहिये, जिससे मरनेमें कष्ट न हो। और फिर जब हमें एक न एक दिन मरना ही है तब फिर क्यों आगा पीछा करके व्यर्थकी दुश्चिन्ताओं एवं मोह-ममताके पचड़ेमें अधिक व्यस्त रहा जाय। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि न समझ लेना चाहिये कि हम अकर्मण्य अथवा हाथपर हाथ रखे या कल्पनाकी उड़ान करनेवाले व्यक्ति ही बनें। हमें तो यह चाहिये कि सब कुछ देख सुनकर भी निर्लिप्त योगीकी भांति आचरण करके मरना ही अधिक श्रेयस्कर समझें।

★

विजय-रथ

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना।
विरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परसु बुद्धि सक्ति प्रचण्डा।
वर विज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना।
शम यम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा।
यही सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहें न कतहूँ रिपु ताके ॥

महा अजय संसार रिपु, जीत सके सो वीर।
जाके अस रथ होई दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनि प्रभुवचन विभीषण, हरषि गहे पदकंज।
एहि मिस मोहि उपदेसहु, राम कृपा सुख पुंज ॥

★

अनुभूत योग माला

[ले०—राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

यह एक परलोक गत पुरुषकी जन्म-कुंडली है। इस कुण्डलीमें देह-स्थानके स्वामी शनैश्चर का अधिशत्रु मृत्युस्थान का स्वामी क्रूरग्रह सूर्य है। देह स्थानका स्वामी शत्रु स्थानमें है। पाप-ग्रह राहु-केतु केन्द्रमें है। पापग्रह मङ्गल त्रिकोणमें है। केन्द्र और त्रिकोणमें शुभ ग्रहोंका अभाव है। (अल्पायुर्लग्नपे भानोः शत्रौ) इत्यादि विचारसे आयुयोग भी श्रेष्ठ नहीं है। इस प्रकार यह कुण्डली अल्प आयु वाले अस्वस्थ पुरुष की सी प्रतीत होती है। परन्तु यह पुरुष पुष्ट शरीर वाला था और स्वस्थ रहता था। ७८ वर्षके आरम्भमें इसकी मृत्यु हुई है।

होराहस्कर नामक हस्तलिखित ग्रन्थमें लिखा है कि यदि द्वितीय-द्वादशमें शुभ ग्रह हों तो १०० सौ वर्षकी आयु होती है।

"रिःफ धने द्वि सौम्याः"

इस कुण्डलीमें बुध बृहस्पति शुक्र ये तीनों ग्रह द्वि... द्वादशमें है।

प्रतीत होता है कि सूर्य-शनिकी अनिष्ट स्थितिसे ... अतः सूर्यकी अनिष्ट स्थितिसे २२ वर्षोंका ह्रास हो गया।

जिस प्रकार समीपमें रक्षक पुरुष शत्रुओंके आक्र... प्राणीका बचाव करते हैं, उसी प्रकार देह स्थान ... समीपमें शुभ ग्रह आयु और स्वास्थ्यके विरोधी ग्र... आक्रमणसे बचाव करते हैं। द्वितीय स्थानमें स्थित शुभ ... आयुः स्थानको पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। इस प्रकार भी वे ... और आरोग्य देने वाले हैं।

इस लेखका सार रूप स्वनिर्मित श्लोकः—

लग्नस्योभयतः सौम्या-
भीतितो देह वैरिणाम्।
कुर्वन्ति रक्षां देहस्य,
रक्षकाः पुरुषा इव ॥

आत्मसुधारकी आवश्यकता

आज जितना अन्यान्य बातोंके सुधारकी ओर ध्यान दिया जा रहा है, उतना आत्म-सुधारकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता; और न ही चरित्र निर्माणकी ओर। आजके लोगोंके जीवनमें कितनी विकृतियों वा दुष्प्रवृत्तियोंका समावेश हो गया है। कुछ कहते नहीं बनता, सबसे पहले जीवन सुधार ही करना होगा। उसको सुश्रृंखलित बनाना होगा। आत्मसुधार या व्यक्ति सुधार ही समाज राष्ट्र वा समष्टि सुधारका मुख्य हेतु है। सामाजिक राजनैतिक वा धार्मिक जीवनके यह तीनों अंग विकृत हुए जा रहे हैं। आजके जीवनमें, सत्य, धर्म अहिंसा, वा सदाचारका अंश बहुत कम रहा है। हां, सामाजिक कर्मोंमें रहने वाला व्यक्ति सर्वथा सत्यका पूर्णपालक हो, यह सम्भव है किन्तु अनर्थकारी असत्य तो न बोलें, विश्वासघात तो न करें। इसी प्रक... अहिंसाको अपने जीवनमें पूर्णतया न उतार सके तो कम... कम हिंसा वा दुराचारसे तो बचे। राजनैतिक जीवनमें प्रा... प्रायः घूसखोरी वा भ्रष्टाचार जैसी कुप्रवृत्तियां घर कर ... हैं। अपने दोष परिवारकी दृष्टिसे कहा जाता है कि ... किया जाये कम आमदनोमें काम नहीं चलता। विवशता... ऐसा करना होता है। किन्तु, मैं स्पष्ट कहता हूं कि ऐ... कहना केवल अपनी दुर्बलताओंको छिपाना है। संसार... ऐसे व्यक्ति भी तो हैं जो प्रतिदिन एक रुपया कमाते हैं... वास्तविक तथ्य तो यह है कि मनुष्योंने अपनी आवश्य-कताओंको असीम किया, परिणामतः उनको पूर्तिके लि... औचित्य अनौचित्यकी सीमाओंका लंघन करना पड़ा।

ज्ञान और विज्ञान

[ले०—महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्द जी शास्त्री]

गीताके सातवें अध्यायके प्रारम्भमें श्री भगवान् कृष्णने अर्जुनको उपदेश देते हुए कहा है—

"असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु"

अर्थात्—तुम मेरा संदेह रहित पूर्ण ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हो, यह मुझ से सुनो। इसके अनन्तर फिर कहा—

'ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते' ॥

अर्थात् मैं तुम्हें पूर्ण रूपसे विज्ञानसहित ज्ञानका स्वरूप अभी अभी बताऊंगा, जिसके जान लेनेसे इस संसार में और कोई ज्ञातव्य शेष नहीं रह जाता। गीताके उपर्युक्त इन दोनों वचनों से प्रतीत होता है कि भगवान्‌का संदेहरहित पूर्ण ज्ञान ज्ञान-विज्ञानके ज्ञातासे ही हो सकता है, और भगवान् स्वयं ज्ञान-विज्ञान स्वरूप हैं, जिसे जानकर 'ज्ञान-विज्ञानके ज्ञान जिसके बाद कोई ज्ञातव्य शेष नहीं रहता' यह उक्ति सार्थकता सफल होती है। ये ज्ञान और विज्ञान क्या हैं? इनका क्या स्वरूप है? इसका उत्तर हमें गीतासे ही लेना चाहिए, क्योंकि भगवान्‌ने गीतामें ही इनके स्वरूपका परिचय कराने की प्रतिज्ञा की है। ज्ञान और विज्ञानके परिचय के लिए गीताके वचनोंको उद्धृत करनेसे पूर्व इनका ठीक-ठीक आशय समझनेके लिए, हमें यह जानना आवश्यक है कि इस विभिन्न नाम रूपवाली सृष्टिका मूल कारण क्या है? अनादि वैदिक सिद्धान्त यही है कि विभिन्नताओंसे भरी इस सृष्टिका मूल कारण एक ही तत्त्व है। 'एकं वा इदं विबभूव सर्वम्' (ऋक् ८, ५८, २)। 'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्' (यजु अध्याय ३१। २) अर्थात् यह सकल दृश्यमान जगत् एक ही तत्त्वका वैभव है। एक ही तत्त्वसे उत्पन्न हुआ है। भूत, भविष्यत् वर्तमान सकल ब्रह्माण्ड पुरुष-रूप है। 'ज्ञानं विज्ञान-सहितम्' इत्यादि श्लोकके अनन्तर भगवान् कृष्णने अपनी अपरा और परा प्रकृतिकी चर्चा की है। पंच भूत, मन, बुद्धि और अहङ्कार ये आठ भगवान्‌की अपरा प्रकृति हैं, और जीव परा प्रकृति है। इन्हीं दोनोंसे सकल संसारकी उत्पत्ति हुई है—'एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय'।

अब प्रश्न यह होता है कि ये अपरा और परा प्रकृतियाँ क्या भगवान्‌से पृथक् हैं, और भगवान् इनकी सहायता से जगत्का उत्पादन करता है, जैसे कुम्हार घड़ेसे पृथक मिट्टी

धर्म जीवनमें शान्ति या सुखका स्रोत माना जाता है। यह विकासका केन्द्र है किन्तु आज धार्मिक कहे जाने वाले लोग भी धर्मके वास्तविक स्वरूपको छोड़ आडम्बर बाह्य प्रदर्शनमें विश्वास करने लगे हैं। परिणामतः तथा कथित धर्म भी अशान्तिका वर्धक रहा है। आज जनताका ध्येय केवल पूंजी या अर्थ रह गया है। अतः सुख या शान्ति चाहने वाले मनुष्यको अपने जीवनका मान दण्ड या लक्ष्य बिन्दु बदलना होगा। उसे इन कुप्रवृत्तियोंको दूर करना है अपने जीवनमें सभी अंगोंको सुव्यवस्थित बनानेके लिए यह आवश्यक है कि मानव सबसे पहले मानव बनें, उनमें जो अमानवीय गुण पाये जाते हैं उनका परित्याग करें। दूसरे शब्दोंमें यह सर्वथा अपने आपको ही सुधारें।

—आचार्य श्री तुलसी

जल, चक्र और दण्ड आदिसे घटका निर्माण करता है ? अथवा परा अपरा प्रकृतियोंका उद्भव भी भगवान्से ही हुआ है ? यदि पहली बात मानी जाय तो पूर्वोक्त 'एकं वा इदं विबभूव सर्वम्' इत्यादि वेद-वाक्योंका विरोध होता है, और—

'अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा'।
'मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिदस्ति धनञ्जय ! ॥'

गीताकी यह उक्ति भी सङ्गत नहीं होती। इसमें कहा गया है कि 'मुझसे ही सकल जगत्की उत्पत्ति होती है, मुझमें ही उसका लय भी होता है। हे अर्जुन ! मुझसे परे और कोई वस्तु नहीं है।' पृथिवी आदि भूत भी जगत् के ही अन्तर्गत हैं, इसलिए पहली बात ठीक नहीं। दूसरी बात ही ठीक है कि परा अपरा दोनों प्रकृतियोंका उद्भव भी भगवान्से ही हुआ है।

'एतस्माद् आत्मन आकाशः संभूतः, आकाशाद् वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः, ओषधिभ्योऽन्नम्, अन्नाद् रेतः, रेतसः प्रजाः प्रजायन्ते।'

'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तद् ब्रह्म तद् विजिज्ञासस्व।'

इन उपनिषद् वचनोंका अभिप्राय भी यही है कि एक आत्मा या ब्रह्मसे ही आकाशादिक्रमसे जगत्की उत्पत्ति होती है और उसीमें उसका लय भी होता है।

रसोऽहमप्सु कौन्तेय ! प्रभास्मि शशि-सूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥

इत्यादि आगेके श्लोकोंसे भी यही सिद्ध होता है कि यह विविध रूप और विविध नामात्मक जगत् एक ही तत्व का विस्तार है। एकने ही रस, प्रभा, प्रणव, शब्द और पौरुष आदि रूपसे अनेकता ग्रहण की है। आगे चलकर भगवान् कहते हैं—

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥

इसका तात्पर्य यही है कि अनेक जन्मोंके अन्तमें जिस पुरुष को यह ज्ञान हो जाता है कि 'सर्वंवासुदेवः' अर्थात् यह सब विविध नाम रूपात्मक जगत् वासुदेव परब्रह्म है, अथवा यों कहिये कि जिसको इस दृश्यमान अनेकतामें एकताका अनुभव हो जाता है वह मुझको—परब्रह्मको प्राप्त हो जाता है ब्रह्मस्वरूप होकर मुक्त हो जाता है, इस प्रकार का महात्मा संसार में दुर्लभ है।

इस श्लोकके 'ज्ञानवान् मां प्रपद्यते' इस वाक्यसे यह बात भी सिद्ध होगई कि अनेकतामें एकताके साक्षात्कारको 'ज्ञान' कहते हैं, और यही ज्ञान मुक्तिका हेतु है। गीताके अट्ठारहवें अध्यायके इस श्लोकसे भी उक्त बातका समर्थन होता है—

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु, तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम् ॥

इसका अर्थ है—जिसके द्वारा पृथक् पृथक् दृश्यमान सब पदार्थोंमें एक अखण्ड अविनाशी तत्वके दर्शन होते हैं वही सात्विक ज्ञान है। इस प्रकार गीताकी उक्तियोंसे ही ज्ञानका स्वरूप निश्चित होने पर यह भी सिद्ध हो जाता है कि 'भूमिरापोऽनलो वायुः' 'अहं सर्वस्य जगतः' इत्यादि श्लोकोंमें प्रतिपादित, एक तत्वमें अनेकताका अनुभव जिससे हो वह 'विज्ञान' है। सातवें अध्यायमें ही भगवान्ने ज्ञान-विज्ञानका स्वरूप बतानेकी प्रतिज्ञा की है, इसलिए उस अध्यायमें उनका (ज्ञान-विज्ञानका) स्वरूप अवश्य प्रतिपादित होना चाहिए। सातवें अध्यायके प्रारम्भ में एकका अनेक रूपमें प्रतीत होना और अन्तमें अनेकका एक रूपमें प्रतीत होना ही बताया गया है। इनमें से एक को जब भगवान्ने 'ज्ञान' कह दिया तो दूसरा पारिशेष्यात 'विज्ञान' है, यह मानना पड़ता है।

गीताके नवम अध्यायमें भी ज्ञान-विज्ञानकी चर्चा हुई है वहां भी—

'मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।'

इस श्लोक में 'विज्ञान' का और—

'तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय'

इसमें 'ज्ञान' का उपर्युक्त स्वरूप ही बताया गया है। गीतोक्त ज्ञान-विज्ञानका यही स्वरूप है इस विषयमें और भी अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं।

श्रीमद्भागवतके ११ वें स्कन्धके १९ वें अध्यायमें ज्ञान

विज्ञानका उपर्युक्त लक्षण ही बतलाया गया है। [illegible] है—

[illegible]

अभिप्राय [illegible] एकत्वका ज्ञान [illegible] ने 'त्रिगुणात्मका प्रकृति' से उत्पन्न पदार्थोंका कई प्रकार से वर्गीकरण किया है। किन्हींने कहा तत्त्व २४ हैं, किन्हींने कहा ११ हैं, किन्हींने कहा ५, किन्हींने ३। इन विभिन्न अनेक आचार्योंकी जितनी एकत्वका साक्षात्कार ही वही 'ज्ञान' है, यद्यपि 'विज्ञान' भी वही है, परन्तु इनमें प्रकार भिन्न है, वह प्रकार यह है कि प्रकृति ही अनेक त्रिगुणात्मक पदार्थोंकी उत्पत्ति स्थिति और प्रलयको देखना।

संक्षेपमें तात्पर्य यह हुआ—एकत्वमें अनेकताका अनुभव 'विज्ञान' है। अनेकत्वका उपयोग करने वाले सब शास्त्र 'विज्ञान शास्त्र' कहलाते हैं। इन्हें 'अपरा' या 'अज्ञ विद्या' भी कहते हैं। पाश्चात्योंका रसायन शास्त्र या 'केमिस्ट्री' 'अज्ञ-विद्या' के ही अन्तर्गत है। जिसमें एकत्वका ही मुख्य तया प्रतिपादन होता है वह दर्शन (ज्ञान) शास्त्र कहलाता है, 'परा विद्या', 'ब्रह्म विद्या', 'अध्यात्म विद्या' आदि उसके अनेक नाम हैं। पाश्चात्योंका प्राकृतिक शास्त्र या फिजिक्स इसी 'ब्रह्म विद्या' के अन्तर्गत हो जाता है। रसायन शास्त्र (केमिस्ट्री) या अज्ञ विद्यामें यौगिक पदार्थोंका ही प्रधान-तया निरूपण होता है, और प्राकृतिक शास्त्र (फिजिक्स) या ब्रह्मविद्यामें मौलिक पदार्थोंका। वैदिक परिभाषामें यौगिक पदार्थको 'अज्ञ' शब्दसे और मौलिक पदार्थको 'ब्रह्म' शब्दसे व्यवहृत किया गया है। इस विषयमें अधिक जिज्ञासा रखने वाले महानुभावोंको महर्षिकल्प स्वर्गीय विद्यावाचस्पति श्री मधुसूदन ओझाजीके 'ब्रह्म विज्ञान' आदि ग्रन्थोंका परिशीलन करना चाहिए।

इन्हीं दोनों (ज्ञान-विज्ञान) से सम्पन्न अध्यात्मकी पूर्णता है। ये ही दोनों वेदप्रतिपाद्य अर्थ [illegible] हैं।

[illegible]

[illegible] ज्ञान-विज्ञानमय है। [illegible] इसीलिए तो ईशोपनिषद्में कहा है—

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

यहाँ 'विद्या' शब्दका अर्थ है ज्ञान [illegible] है। अविद्याका अर्थ है विज्ञान, [illegible] जो इन दोनोंको साथ-साथ जानता है वह अविद्या (विज्ञान) से [illegible] विद्या (ज्ञान) से अमृत (मोक्ष) [illegible] ज्ञान-विज्ञानको [illegible] बतलायें।

★

श्रीसम्पूर्णानन्दजीकी पौराणिक देव-चरित्रचर्चा

[श्रीदीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत; विद्यावागीश; विद्याभूषण; विद्यानिधि]

'ब्राह्मण-सावधान' एक पुस्तिका उत्तर प्रदेशके भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्री सम्पूर्णानन्दजी महाशयने प्रकाशित की है, उनके प्रसिद्ध व्यक्तित्वके कारण उक्त पुस्तिकाके कई संस्करण भी निकल चुके—इसका तात्पर्य यह हुआ कि—आजकी शिक्षित जनताने उन्हें बहुत पसन्द किया है। हम 'श्री स्वाध्याय' में समय-समय पर अपना अभिमत उस पर दिखलाया करेंगे, कुछ पूर्व दिखाया भी जा चुका है। आज वहांकी देवचरित्र-चर्चाको विचारकी कोटि पर कसा जाता है, पाठक महोदय इधर अवधान देंगें।

आप लिखते हैं—'जिन लोगोंके ऊपर धर्मकी रक्षाका भार डाल दिया गया है, जो उसके स्वयं नियुक्त रक्षक हैं, उनके हाथों देवगणकी जो दुर्गति हुई है, उसे देखकर प्रत्येक सहृदय यही पूछ बैठेगा कि—इनसे वह लोग क्या बुरे हैं, जो इस धर्मके प्रत्यक्ष विरोधी हैं'।

श्री सम्पूर्णानन्दजीका यह आशय है कि—'वेदोंने तो देवताओंका चरित्र उत्तम अंकित किया था, पर पुराणोंने उसे विकृत कर दिया। उन पुराणोंका जो कि विरोध किया जाता है—यह ठीक है' परन्तु यह कहते हुए वे भूलमें हैं। वे मनुष्य चरित्रकी मर्यादाको देवताओंमें भी जोड़ना चाहते हैं। देवता मनुष्योंसे भिन्न योनि वाले हैं—यह भी वे स्वयं मानते हैं, आर्यसमाजियोंकी भांति वे देवयोनिके माननेसे नकार करने वाले नहीं—यह प्रसन्नताका अवसर है। तब योनिभेदमें समान मर्यादाएं नहीं होतीं—यह उन्हें भी स्मरण रखना चाहिये। तब जिस-जिस देवने जो-जो किया, पुराणने वैसेका वैसा उल्लेख कर दिया। इसमें वेदसंकेतानुसारी पुराणोंका थोड़ा भी अपराध नहीं। 'आत्मकथा' में श्री गांधीजी ने अपने कुछ (सभी नहीं) आरम्भिक दोष भी दिखलाये हैं, तो क्या उनकी 'आत्मकथा' को उनकी दुर्गति कराने वाली माना जायेगा ?

यह तो देवयोनि है, आप मनुष्य योनिको ही ले लीजिये, क्या इसके भी समान आचार व्यवहार हैं ? विलायतमें एक पुरुष दूसरेकी स्त्रीका हाथ पकड़कर नाचते हैं, नाचकी भूमि ऐसी चिकनी होती है कि—पांवके फिसलनेसे एक-दूसरेके ऊपर गिरनेकी आशंका रहती है। वे दोनों गिरते हुए एक दूसरेको थाम लेते हैं, परन्तु भारतमें यह व्यवहार उचित नहीं माना जाता। अब यही वृत्त ग्रन्थोंमें लिखा जाय, तो वहां कैसी व्यवस्था होगी ? एक विशुद्ध भारतीय इसे घृणा की दृष्टिसे देखेगा, अंग्रेजी दृष्टिकोण रखने वाला भारतीय इधर उपेक्षा करेगा। एक अंग्रेज इस व्यवहारको सर्वथा सभ्य कहेगा। जब यहां मानुष व्यवहारको भी समान दृष्टिकोणसे नहीं देखा जाता; तब देवचरित्रको मानुष दृष्टिकोणसे कैसे देखा जा सकता है ?

आगे आप लिखते हैं—"मैं गंवारोंकी, अशिक्षितोंकी बात नहीं करता, क्योंकि—इन बेचारोंका कोई दोष नहीं, इनको जैसी शिक्षा दी गई, वैसी इन्होंने ग्रहण की। यह तो उपदेष्टाओंको सोचना था—हम साधारण, कोमल-बुद्धि अधिकारियोंके सामने क्या शिक्षा रखें ?" इस पर उत्तर यह है कि—इतिहास-पुराण अनुकरणके लिए नहीं, किन्तु लोकचरित्रमात्रके प्रतिपादनार्थ हैं, उनमें कौन सा चरित्र अनुसर्तव्य है कौन नहीं—इसमें तो धर्मशास्त्रका आदेश ही द्रष्टव्य होता है, जैसे कि—'न्यायदर्शन' में कहा है—'यज्ञो मन्त्र-ब्राह्मणस्य, लोकवृत्तमितिहासपुराणस्य, लोकव्यवहार-व्यवस्थापनं धर्मशास्त्रस्य विषयः' (४।१।६२)

धर्मशास्त्र 'मनुस्मृति' में लिखा है—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ (२।१२)

यहां पर 'सदाचार' को तीसरा पद दिया गया है 'सताम् आचारः सदाचारः' परन्तु सत्पुरुषोंका आचार यदि वेदादिविरुद्ध हो तो वह आचरणीय नहीं होता। इस लि

मुख्य स्थान श्रुति फिर स्मृतिको दिया गया है। 'व्यास-स्मृति' में लिखा गया है--

श्रुति-स्मृति-पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते।
तत्र श्रौतं प्रमाणं तु द्वयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा ॥ (१।१४)

जिन पुराण-इतिहासोंमें देव आदियोंका चरित्र निरूपित किया गया है वहां यह भी सूचना है कि--इनके सब चरित्र अवलम्बनीय नहीं। 'विष्णु पुराण' में लिखा है—'न देवचरितं चरेत्'। चाणक्य-सूत्रों (६७) में भी यही कहा है। 'महाभारत' में भी कहा है---

"कारणाद् धर्ममन्विष्येद् न लोकाचरितं चरेत्।"
(शान्तिपर्व २६२।५३)

मनुस्मृतिमें भी कहा है—
'न लोकवृत्तं वर्तेत' (४।११)।

'आपस्तम्बधर्मसूत्र' में भी कहा है—
'दृष्टो धर्मव्यतिक्रमः साहसं च पूर्वेषाम्' (२।१३।७)
तेषां तेजोविशेषेण प्रत्यवायो न विद्यते' (२।१३।८)
'तद् अन्वीक्ष्य प्रयुञ्जानः सीदत्यवरः (२।१३।९)

श्रीमद्भागवत पुराणमें भी लिखा है—
'धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम्।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा'
(१०।३३।३०)

नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः
विनश्यत्याचरन् मौढ्याद् यथा रुद्रोऽब्धिजं विषम्
(३१)।

'गौतम धर्मसूत्र' में भी लिखा है—'दृष्टो धर्मव्यतिक्रमः साहसं च महताम्' (१।२) देवचरित्रके लिए 'महाभारत' में भी कहा है—

कृतस्य कर्मणस्तत्र भुज्यते यत् फलं दिवि।
न चान्यत् क्रियते कर्म मूलच्छेदेन भुज्यते।
सोत्र दोषो मम मतस्तस्यान्ते पतनं भवेत्' ॥
(३।२६१।२८-२९)

इह यत् क्रियते कर्म तत् परत्रोपभुज्यते।
कर्मभूमिरियं ब्रह्मन्! फलभूमिरसौ मता' (३५)

यहां पर श्री सातवलेकरने यह अर्थ किया है—'पुरुष स्वर्गमें जाकर कर्मोंका जो कुछ फल भोगता है, उससे और कुछ नहीं कर सकता। इससे कर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है। कर्म नष्ट होनेसे वह मनुष्य पुनः पृथ्वीमें गिरा दिया जाता है। यह (मनुष्य लोक) कर्मभूमि है और स्वर्गको फलभूमि कहते हैं।'

ऋग्वेदका एक मन्त्र है—

'उशन्ति घा ते अमृतास एतद् एकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य' (१०।१०।३)

इसका श्री सायणाचार्यने अर्थ लिखा है—

"ते-प्रसिद्धाः अमृतासः-प्रजापत्यादयो देवाः 'एतद्-ईदृशं-शास्त्रेण अगम्यत्वेन उक्तम्, त्यजसं-त्यज्यते परस्मै दीयते-इति त्यजसं-दुहितृ-भगिन्यादि स्त्रीजातम्, उशन्ति-कामयन्ते-एकस्यचित् सर्वजगतो मुख्यस्यापि प्रजापत्यादेः स्वदुहितृभगिन्यादिना सम्बन्धोऽस्तीति शेषः"।

इससे आक्षिप्त पौराणिक देवचरित्रचर्चा वेदका भाष्यही ठहरती है। शुक्लयजुर्वेदीय आह्निक सूत्रावलीमें हारीतका यह वचन दिया है—

अनुष्ठितं तु यद् देवैर्मुनिभिर्यदनुष्ठितम्।
नानुष्ठेयं मनुष्यैः, तदुक्तं कर्म समाचरेत्'।

इससे देवचरित्र मनुष्यसे अवलम्बनीय नहीं। तब पुराणमें लिखितमात्र होनेसे वह आचरणीय नहीं हो जाते, वा पुराण उस उल्लेखसे निन्दित नहीं हो जाते। 'स्मृति चन्द्रिका' के संस्कारकाण्ड विवाह प्रकरणमें कहा है—

अथवा भवतु अर्थवादानुसारेण प्रजापतिः स्वां दुहितरमगच्छदिति विधिः, किमायातमितरेषाम्? न च महद्भिरकार्यं कृतम् इति अन्येनापि कर्तव्यमित्यत्र प्रमाणमस्ति। नहि इन्द्रेण अहल्यादिपरदारगमनं कृतम्—इति अन्येनापि गन्तव्यम्। अत एव शङ्खलिखितौ—'सुरां पिबन्ति त्रिदशाः सा चापेया द्विजातिभिः। हरन्ति वित्तं यत् सिद्धास्तत्र सिद्धिर्न विद्यते'। वृद्धमनुरपि 'अनुष्ठितं तु यद् देवैर्मुनिभिर्यदनुष्ठितम्। नानुष्ठेयं मनुष्यैस्तदुक्तं कर्म समाचरेत्'

देवताओंके लिए 'योगदर्शन' विभूतिपादमें २६ सूत्र के व्यासभाष्यमें कहा है—[सर्वे देवाः] सङ्कल्पसिद्धा अणि-

माद्यैश्वर्योपपन्नाः, कल्पायुषः कामभोगिनः, उत्तमानुकूलाप्सरोभिः कृतपरिवाराः।'

यहाँ पर 'कामभोगिनः' का अर्थ 'तत्ववैशारदी' में 'मैथुनप्रियाः' और 'भास्वती' में 'कामविषयभोगिनः' यह किया है। इस प्रकार वेदमें भी देवताओंके लिए कहा है—'स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम्' (अथर्व० ४।३४।२) यहाँ पर देवताओंकी बहुत स्त्रियां कही गई हैं।

फलतः पुराण-इतिहासमें देवताओंके लिए जो-जो लिखा है, वह निर्मूल वा उनका निजकल्पित कुछ भी नहीं है, किन्तु वेद आदि आप्तशास्त्रोंके मूलसे है। वेदने स्पष्ट कहा है—

'कामः प्रथमो जज्ञे, नैनं देवा आपुः (प्रापुः) पितरो न मर्त्याः।' (अथर्व० ९।२।१९)

यहां पर कामको देवताओंसे भी अनतिक्रमणीय बताया गया है। जब कि—'अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्' (गीता ९।२०) 'कामकामाः' (९।२१) इत्यादि प्रमाणों द्वारा देवताओंकी प्रकृति ही ऐसी कही है, तब स्वाभाविक होनेसे उनकी वहां निन्दा कैसी? तथा पुराणोंमें आक्षेप कैसे?

यह अवश्य जानना चाहिये कि—पुराण- इतिहासादिमें जो-जो लिखा है, वह सब आचरणीय नहीं है। इतिहासमें श्री रामका छिपकर वालीको मारना भी लिखा है, वह वास्तविक होनेसे उसमें वैसा ही लिखा जाता है, परन्तु दृश्य काव्य नाटकमें जो रामचरित्र रखा जायगा, वह लोकाचरणीय दृष्टिकोणसे ही रखा जायगा।

आगे आप लिखते हैं--'निरङ्कुशा हि कवयः' प्रसिद्ध उक्ति है—कुछ दूर तक कविकेलिए सामान्य वचन ढीले किये जा सकते हैं, परन्तु कविको संयमसे काम लेना चाहिये-- जिस प्रकार इन कवियोंने लक्ष्मीसे वृद्ध पुरुषकी नवोढा भार्याके रूपमें छोटे-छोटे जमींदारों और सेठ-साहूकारोंके यहाँ अभिसार कराया है- उसे देखकर इन्हें जितना धिक्कारा जाय थोड़ा है।"

आनन्द महोदयने यहाँ आनन्द कर दिखाया है। अलंकार एक कवि-प्रिय रचना होती है, वह केवल बाह्य चमत्कारके लिए होती है। वस्तुतः उसका तात्पर्य देखना पड़ता है—शब्दार्थ नहीं। 'यत्परः शब्दः स शब्दार्थः' यह प्रसि न्याय है। वहाँ अभिसारमें वास्तविक तात्पर्य नहीं होता किसी प्रतिष्ठित नेताके मृत्यु दिवसपर यदि वृष्टि हो र हो, तो कोई कवि वर्णन कर बैठे कि—'आकाश भी ने वियोगमें अपने आँसू गिरा रहा है'। तब आप क्या क कि--यह कवि कैसा मूर्ख है! निराकार आकाशके मुख आंखें कहां? अचेतनका विलाप कैसे? आपने यहां भी ही किया है।

'देवोंकी छीछालेदर' शीर्षकसे आप लिखते हैं--'इन कहीं अधिक दोष उन लोगोंका है, जिन्होंने ऐसे ग्रन्थों निर्माण किया है, जिनमें धर्मका नाम लेकर देवोंकी निन्दा की गई है, और प्रायः उतने ही दोषी वे लोग हैं— जो इ ग्रन्थोंके आधार पर धर्मोपदेश करने बैठते हैं' इसे आ स्पष्ट करते हैं—'वेदोंके पीछे पुराणोंमें ही मुख्यशः देव च है, और पुराणोंमें ही देवोंकी छीछालेदर की गई है'।

इसमें पुराणोंका दोष नहीं है, जब कि—आप स्वयं मानते हैंकि--"पुराणोंको समझनेकेलिए बड़े धैर्यकी आवश्यकता है"। आप पुराणोंपर विचार नहीं करते, धैर्य नहीं करते बुद्धिको कष्ट नहीं देते, तभी आपके शब्दोंमें "पुराणोंके पढ़ते-पढ़ते क्रोध" आने लगता है। आपाततः देखने व विचारनेमें ऐसा सम्भव ही हुआ करता है।

आप लिखते हैं--"वैदिक देवोंमें प्रायः सबका पद गि गया है, जिस मर्यादाकी रक्षा हिरण्यकशिपु, वृत्र, महिषके प्रबल आक्रमणोंको झेलकर की गई थी, वह इन पुराणकर्ताओंकी लेखनीके आगे धूलमें मिल गई"। यह आपने नहीं लिखा कि--हिरण्यकशिपु आदिके नाश द्वारा मर्यादा की रक्षा पुराणोंने ही दिखलायी, या वेदने? यदि पुराणोंने, तो यह कैसे हो सकता है कि--पुराण ही अपनी बताई मर्यादाका नाश करावें। हिरण्यकशिपुने भगवद्भक्ति छुड़ाई थी, तो पुराणोंने भी क्या उसे छुड़ाया? कभी नहीं! पुराणोंने देव-पूजा अवश्य दिखाई है, परन्तु अङ्गपूजारूपसे, क्योंकि बिना अङ्गकी पूजाके अङ्गीकी पूजा हो ही नहीं सकती। अन्तिम पूजा पुराणोंने भी भगवान्‌की ही दिखलाई है। हिरण्यकशिपुकी तरह भगवान्‌के भक्तोंमें पुराणोंने कहीं अत्याचार नहीं कराया। वृत्र, महिष आदि, देवताओंके पीड़क थे, उस

मर्यादाको पुराणोंने कहीं नष्ट नहीं किया, प्रत्युत उन दैत्योंको दुष्परिणाम दिखाकर मर्यादाका स्थापन ही कराया है ॥

श्री सम्पूर्णानन्दजी फिर लिखते हैं—'अग्नि, यम, कुबेर, वरुण, बृहस्पति, अश्विद्वय, वायु, सूर्य छोटे-छोटे विभागोंके अधिष्ठाता रह गये' यह आपने नहीं बताया कि—वेदमें इन्हें कौन-कौन महान् अधिकार दिये हैं और पुराणमें कौनसे छोटे अधिकार दे दिये हैं। जैसे वेदमें अग्निको सब देवताओंकी हवि ग्रहण करनेके लिए मुख कहा है—'अग्निर्वै देवानां मुखम्' (शतपथ ३।७।४।१०) 'मुखत एव तद् देवान् प्रीणाति' (शाङ्खायन ब्रा० ३।६) वैसे ही पुराणोंमें भी अग्निको ही हव्यादिकर्म कहा है, और उसे पृथिवीस्थानी बताया है। जैसे वेदमें यमको पितृपति कहा गया है, उसे मृतकाधीश कहा गया गया है, जैसे कि—'यमो वैवस्वतो राजा-इत्याह, तस्य पितरो विशः' (शत० १३।४।३।६) 'यमराज्ञः पितॄन् गच्छ' (अथर्व० १८।२।४६) यमो राजा येषां तान् पितॄन्। 'दक्षिणा तिष्ठन् यमः' (ऋ० ४।३।२।२२) यहां पर वेदमें तो स्पष्ट पृथिवीकी दक्षिण दिशाका स्वामी यम बताया गया है, वैसे ही पुराणोंने भी।

जैसे वेद वरुणको 'यासां [अपां] राजा वरुणो याति मध्ये' (ऋ० ७।४९।३) जलोंका स्वामी कहा है, 'प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः' (अथर्व० ३।२७।३) यहां पश्चिम दिशाका स्वामी माना गया है, वैसे ही पुराणोंमें भी। वेदमें जैसे बृहस्पतिको 'ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपः' (अ० ३।२७।६) 'बृहस्पति-पुरोहिताः……सर्वे देवाः' (यजुः २०।११) 'पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ! बृहस्पतिम्' (गीता १०।२४) इस प्रकार देवगुरु कहा गया है, वैसे पुराणोंमें भी। जैसे वेदमें अश्विनोंको देवभिषक् (ऐ० ब्रा० १।४।१) कहा है, वैसे ही पुराणोंमें भी। जैसे वेदमें सूर्यकी उपासना है—वैसे पुराणोंमें भी। तब पुराणोंने देवताओंका पद क्या गिराया है—यह श्रीसम्पूर्णानन्दजीने स्पष्ट नहीं किया।

फिर आप लिखते हैं - 'अर्यमा, पूषा, नासत्य आदि सुन्दर नाम लुप्त हो गये' यह भी व्यर्थ है। पुराणोंमें भी यह नाम मिलते हैं। देखिये —श्रीमद्भागवत पुराण—

नासत्यौ दस्रौ नासत्यौ आश्विनावपि'

(४।३।११)

यहां पर अश्विनोंका नाम 'नासत्य' बताया गया है। 'चण्डांशुः पूषणं देवं, अथो नन्दीश्वरोऽग्रहीत' (४।१५।१०) यहां पूषा-भग आदिका नाम स्पष्ट है। 'अमर-कोष' वालने भी पुराणके ही आश्रयको लेकर उन-उन देवताओंके वे-वे नाम दिखलाये हैं। हां, यह अवश्य है कि—वेदमें गोबलीवर्द न्यायसे किसी देवके किसी नामको भिन्न कर दिया हो, और पुराणने उसमें संक्षेपका आदर करके—

कपोत [ऋषिः] अभिधानैः संयुज्य हविश्चोदयति तान्यपि एके समामनन्ति। भूयांसि तु समाम्नानात्। यत्तु संविज्ञानभूतं स्यात् प्राधान्यस्तुति, तत् समामने' (निरुक्त ७।१३।८-९-१०)

इस यास्कके संकेतको आदृत कर दिया हो, और वेदके संक्षेपको पुराणने कहीं ब्राह्मणकल्पित न्यायसे विस्तीर्ण कर दिया हो—यह अन्य बात है, परन्तु यह उपालम्भका विषय नहीं। प्रकार-भेद सर्वत्र हुआ ही करता है, तब 'सरस्वती' रह गई 'वाक्' उड़ गई यह उनका कथन व्यर्थ सिद्ध हुआ।

आगे आप लिखते हैं—'इन देवोंके लिए क्या रोया रोया जाय, सबसे बड़ी दुर्गति तो इन्द्रकी की गई है' यह कहकर फिर लिखते हैं। 'देवराज वह अब भी कहलाते हैं, परन्तु उनका स्थान वही है जो किसी बड़े साम्राज्यमें माण्डलिक राजाका होता है, अन्य देवगण उनके सामन्तमात्र हैं' यह भी कथन व्यर्थ है। जब इन्द्र पुराणोंमें स्पष्ट देवराज कहे गये हैं; तब उक्त उपालम्भ कैसा? मनुष्योंका राजा सब पुरुषोंका राजा कहा जाता है परन्तु 'विश! एष वोऽमी! राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां' राजा' (यजुः ९।४०) उस राजा का ब्राह्मणोंपर आधिपत्य नहीं माना जाता। तथापि उसे कहा जाता है 'नृप' ही, तथा 'जनराज' ही। उग्रसेन यदुवंशियोंके राजा थे, फिर भी श्रीकृष्णको श्रेष्ठ समझा जाता था। युधिष्ठिर राजा होते हुए भी श्रीकृष्णको ही उच्च माना जाता था। युधिष्ठिर राजा होते हुए भी श्रीकृष्णको ही उच्च माना करते थे। तब जबकि पुराणोंमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रसे अतिरिक्त सब देवों पर उसका आधिपत्य कहा जाता है, तब उस पर आक्षेप क्या? विष्णु, महादेव आदि पुराणोंमें वेदके

संकेतसे ही परमात्मस्थानीय माने गये हैं—इन्द्रके भी उत्पादक माने गये हैं, जैसे कि—'ऋग्वेदसंहिता' में कहा है—'अशत्रुं मां जनिता जजान' (१०।२८।६) यहां पर इन्द्रको प्रजापति द्वारा उत्पन्न कहा है। 'देवानामस्मि वासवः (इन्द्रः) (गीता १०।२२) यहां इन्द्रको भगवान् विष्णुकी विभूति माना गया है; तब इन्द्र विष्णुसे उत्तम कैसे हो सकते हैं। इस प्रकार विष्णु-रुद्र आदि साधारण देवकोटिमें गिने न जाकर महादेवकी कोटिमें अन्तर्भूत होते हैं। तब इन्द्र इन विशिष्ट देवताओंका अधिपति कैसे हो सकता है ? परमात्मा का नाम भी 'देव' कहा गया है, तब क्या आप देवराज इन्द्र को उस देवका भी अधिपति मानेंगे ! इन्द्र देवराज रहेंगे, रुद्र आदि महा-देव रहेंगे।

श्री सम्पूर्णानन्दजी लिखते हैं—"वेदोंमें कथा आई है कि—विष्णु, रुद्र, सूर्य, सबने मिलकर इन्द्रको अपना राजा चुना, वह इन सबसे पूज्य और बलवान् है" परन्तु आपने वह कथा ही नहीं दी, जिससे उस पर विचार किया जाता। राजाको निर्वाचित ब्राह्मण ही करता है, राज्याभिषेक भी उसका ब्राह्मण ही करता है। राजा ब्राह्मणसे बलवान् भी होता है, उच्चासन-स्थित होनेसे पूज्यतर भी होता है। फिर भी उसी ब्राह्मण पर राजाका आधिपत्य नहीं हुआ करता। इसलिए वे कहते हैं—'सोम एव नो राजा—इत्याहु-र्ब्राह्मणीः प्रजाः' (तैत्तिरीय २।१।१, बोधायनगृ १।१०।११) 'एष वो भरता राजा, सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां' राजा इत्याह। तस्मात् सोमराजानो ब्राह्मणाः' (तै० ब्रा० १।७।६।७) ईतियों (उपद्रवों) के निवारणार्थ राजा ब्राह्मणों की ही शरण लेता है। इस प्रकार इन्द्र-विष्णु आदिके संबंध में भी जानना चाहिये। इन्द्र देवराज है, फिर भी दैत्यविशेषों के मारनेके लिए वह विष्णुकी शरण जाता है।

फिर लिखते हैं—'शतपथ ब्राह्मण' के शब्दोंमें 'इन्द्रः सर्वा देवताः, इन्द्र-श्रेष्ठा देवाः' इन्द्र सर्व देवस्वरूप है, इन्द्र देवोंमें श्रेष्ठ है—कहा है'। इससे आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं। जैसे इन्द्रके लिए यह शब्द कहे हैं, वैसे ही अग्नि केलिए भी यही शब्द हैं—देखिये शतपथ 'अग्निर्वै सर्वा देवताः।'(३।७।१।१४) 'अग्निर्वै देवानां मुखम्' (३।७।४।१०) इस प्रकार गायके लिए भी कहा है—'वैश्वदेवी वै गौः' (अथर्व गोपथ ब्रा २।३।१९)। इस भाँति ब्राह्मणके लिए भी कहा है—'ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः' (तैत्ति ब्रा० १।४।४।२)। इस प्रकार विष्णुके लिए भी शतपथ (१४।१।१।५) में देखा जा सकता है। वेदमें तो 'प्राच्यां दिशि त्वमिन्द्रासि राजा' (अथर्व० ३।२८।३) 'इन्द्रः प्राङ् तिष्ठन्' (अ० ४।१४।२) इत्यादि स्थलमें इन्द्रको एक दिशाका शासक कहा है—सब दिशाओंका नहीं।

वस्तुतः वेदमें इन्द्रको स्वर्गलोकका ही अधिपति माना गया है, जैसे कि—'आयातु इन्द्रः स्वर्पतिः' (अथर्व० २०।९४।१) 'पतिर्दिवः' (साम० ऐन्द्रपर्व ४।५।३) इत्यादि। तब वह वहाँके देवताओंका स्वामी तो हो सकता है, परन्तु उच्च लोक विष्णुलोक, ब्रह्मलोक आदियोंका स्वामी वह कैसे हो सकता है ? विष्णुलोककी उच्चता वेदोंमें भी देखिये—'विष्णोर्यत् परमं पदं' (ऋ० १।२४।२१) 'तद् विष्णोः परमं पदम्' (ऋ० १।२२।२०) यहाँ विष्णुके लोकको परम पद माना गया है। 'व्रजत ब्रह्मलोकम्' (अथर्व० १९।७१।१) यहाँ पर ब्रह्मलोकका वर्णन है। महाभारतमें भी उक्त वैदिक सिद्धान्तका समर्थन किया गया है। जैसे कि—

ब्रह्मणः सदनादूर्ध्वं तद् विष्णोः परमं पदम्।
शुद्धं सनातनं ज्योतिः इदं ब्रह्मेति यद् विदुः'

तो एक छोटे राज्यका अधिपति इन्द्र विष्णु आदिका राजा कैसे हो सकता है ? उसका प्रायः मरुतों तथा अन्य देवताओं पर आधिपत्य माना गया है। जैसे—'इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः' (ऋ० २।४१।१५) 'आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः' (अ० २०।१२४।४) इत्यादि।

तैत्तिरीयोपनिषद् (ब्रह्मानन्द वल्ली) में

'ये शतं देवानामानन्दाः, स एक इन्द्रस्यानन्दः, ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः। ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः, स एकः प्रजापतेरानन्दः, स एको ब्रह्मण आनन्दः, (२।८)।

'बृहदारण्यक' में—

ये शतमाजानदेवानामानन्दाः, स एकः प्रजा-पतिलोके आनन्दः। एष ब्रह्मलोकः सम्राट्' (४।३।३३)।

इस प्रकार जब ब्रह्मलोककी इन्द्रलोकसे उत्तमता बताई गई है, तब इन्द्र ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्वामी भला कैसे हो सकते हैं ? प्रत्युत श्री यास्क तो वेदानुसार इन्द्रको मध्यम स्थानका अधिष्ठाता मानते हैं; उसे उत्तम (द्यु) लोकका स्वामी नहीं मानते । तो क्या आप निरुक्त कारमें भी वेद-विरुद्धताका यह दोष अर्पित करते हैं—या केवल पुराणोंमें ही ? ।

आगे आप लिखते हैं—'विष्णुको वेदोंमें कई जगह 'इन्द्र-सखा' कहा है' इससे आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं ? आपके अनुसार तो विष्णुको प्रजा दिखलाना चाहिये था ? सखा कैसे दिखलाया ? पर यहाँ तो 'इन्द्रका योग्य सखा, बता कर उच्च कहा गया है । तब वैसा कहते हुए पुराणको वेद-विरुद्ध कैसे कहा जा सकता है ? यदि सखा होनेसे विष्णुको अवर मानें, तो 'मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे' (ऋ० ११०।१।१—७) इत्यादि स्थलमें सखा होनेकेलिए बुलाये गये इन्द्रको भी इससे क्या अवर माना जावेगा ?

विष्णुकी महत्ता वेदमें भी देख लीजिये—

'न ते विष्णो जायमानो न जातो देव ! महिम्नः परमन्तमाप' (ऋ०७।९९।२)

यहां इन्द्र आदि विष्णुसे कम बताये गये हैं या नहीं ? तभी तो 'शतपथ' में कहा गया है—'तद् विष्णुः प्रथमः प्राप, देवानां श्रेष्ठोऽभवत् । तस्माद् आहुः—विष्णुर्वै देवानां श्रेष्ठः' (श०१४।१।१।५) ऋग्वेदमें विष्णुकी उच्चता देखिये—'यः पूर्व्याय वेधसे (विविधजगत्कर्त्रे) नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे' (ऋ० १।१५६।२) 'मारुतस्य वेधसः' (४) मरुत्संघातस्य स्रष्टुर्विष्णोः—यह उसका अर्थ है । 'सखिवान् (इन्द्रादि सहायकोंसे मिला हुआ) प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् (वृद्धसे भी वृद्धतर) त्वेषं हि अस्य स्थविरस्य नाम' (ऋ० ७।१००।३) यहां पर 'विष्णुको वृद्धतर दिखलाया गया है । 'विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि । यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधा उरुगायः' (ऋ० १।१५४।१) यहांपर विष्णुकी बड़ी महिमा दिखलाई गई है । पुराणमें भी इसी प्रकार कहा है—'विष्णोर्नु वीर्यगणनां कतमोऽर्हतीह यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि । चस्कम्भ यः स्वरभसा स्खलता त्रिपृष्ठं यस्मात् त्रिसाम्यसदनादुरु कम्पयानम्' (२।७।४०)

फिर कहते हैं—"विष्णुका एक नाम है 'इन्द्रावरज' इन्द्रके पीछे जन्मा हुआ, इन्द्रका छोटा भाई" । इससे श्री सम्पूर्णानन्दजी क्या सिद्ध करना चाहते हैं ? यह कहना चाहिये कि—'इन्द्रावरज' यह विष्णुका नाम वेदोक्त है या पुराणोक्त ? यदि वेदोक्त, तो उसका उद्धरण दीजिये । यदि पुराणोक्त है, तो आप पुराणमें दोष कैसे लगाते हैं ? पुराणने तो आपके अनुसार भी विष्णुको इन्द्रसे अवर बता दिया ।

वस्तुतः आप यहाँ जान नहीं सके । विष्णुके जो अवतार हैं, वे अदिति-सन्तान 'आदित्य' (देव) कहे जाते हैं । वामन आदि रूपमें विष्णुने अपना जन्म इन्द्रसे पीछे लिया, इससे विष्णुको इन्द्रावरज, वा उपेन्द्र कहा है उसके वामनावतारको स्मरण करा रहा है, लघुत्वको नहीं । उक्त नामको साक्षात् विष्णुका माना जावे; तो उस समय उसका विग्रह 'इन्द्रः अवरजो यस्य' ऐसा बहुव्रीहिका होगा—यह 'अमरकोष' की सुधा व्याख्यामें देखा जा सकता है ।

आगे आप लिखते हैं—'परन्तु इन्द्र आजकल इतने छोटे हो गये कि—उनको गरुड़ और हनुमान्‌के बराबर भी आसन मिलना कठिन है" यह भी उपालम्भयोग्य बात नहीं है । देवता बहुत होते हैं, परन्तु रुचिवैचित्र्यवश अथवा देश-कालके कारण कई भेद हो जाया करते हैं—ऐसा स्वाभाविक है । आजसे ५०-६० वर्ष पूर्व रुद्र-पूजा अतिशयसे प्रचलित थी, श्रीकृष्णके मन्दिर न्यून थे । परन्तु श्रीकृष्ण इस देशकालमें युगानुसारी ही सिद्ध हुए हैं । उनके मंदिर बहुत संख्यामें बनते चले जा रहे हैं । महादेवपर आर्यसमाजने आक्रमण किया, उससे घृणा कराई, आप लोगोंने उसे अनार्यदेव प्रसिद्ध किया, अब पुरुषोंकी रुचि भी कुछ परिवर्तित हो गई । श्रीकृष्ण जेलखानेमें उत्पन्न हुए, अन्यायी राजा कंसका उन्होंने विरोध किया—इस युगकी अनुरूपतासे उनकी उपासना बढ़ गई । आजकल श्रीगांधीजीने 'रामराज्य' की बहुत प्रशस्ति की, अतः आजकल रामभक्ति फिर बढ़ने लगी है । फलतः देशकालमें इस प्रकारके परिवर्तन हो जाया करते हैं । इसमें उपालम्भ क्या ? कई श्रीगांधीजीको बड़ा मानते हैं,

श्रीकृष्णपञ्चाशिका

[प्रणेता—महामहाध्यापक पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर]

धन्यवाद है तुमको भगवन् कृष्ण यशोदालाल ।
जगमें कहीं न पाई मैंने तेरी और मिसाल ॥
तेरीसी गोविप्र भक्तिका किसमें पूरा भास ।
तव सद्दत्त विज्ञान शौर्यका किसमें महान् प्रकाश ॥
त्रिभुवन मोहक वंशीस्वर तव अनुपम गीताज्ञान ।
'मामेकं शरणं व्रज' कहकर दूर किया अज्ञान ॥
तव मुख निःसृत गीताको पढ़ बुध हो जाते मग्न ।
वेदराशि वेदान्त सभी गीताके विन हैं नग्न ॥
आर्त गजेन्द्र, द्रुपद पुत्रीने ग्रहण किया तव नाम ।
तत्क्षण आकर दर्शन देकर सिद्ध किये सब काम ॥
तब अनुकम्पा बिन हिरणाकुश दुर्योधन गए हार ।
तुमको भजकर अजरामर हुए ध्रुव प्रह्लादकुमार ॥
भक्तोंके तुम अती निकट हो दुष्टोंसे अति दूर ।
जिसने तुमको कभी न जाना उसके शिर पर धूर ॥
दुर्वासाने अम्बरीष पर जब छोड़ी अपनी कृत्या ।
भक्त जान तूने रक्षा की दूर हुई उसकी हत्या ॥
कुछ कहते धनहीन जघन्य, कुछ कहते गुणहीन ।
तव कीर्तन विन नर जवन्य है, कहते शास्त्र प्रवीन ॥
कस्तूरीका तिलकभालमें कौस्तुभ वक्षः स्थल में ।
नवमौक्तिक नासाग्र भागमें बेणू है करतल में ॥
करमें कंकण अतीव शोभित सब तनुमें हरिचंदन ।
मुक्तावली कण्ठमें राजत, सदैव तव यदुनन्दन ॥
तव गुण गण वर्णनमें जिसकी सदैव रसना सोती,
तव चरणोंमें जिसकी प्रीति नहीं कभी भी होती ।
तव लीला सुननेमें जिसके श्रवण नहीं सादर ।
उस पुरुषाधमका करते हैं कभी न सज्जन आदर ॥
पाणिग्रहसे ललित जो तन्त्री सुवंश जाता ।
नाथ आपने कहां तजी क्या वंशी नहीं रुक्मिणी माता ॥
तनुकाया त्वदतीव प्रिया, वहुभाववती मननीता ।
हरती है सबके मनको क्या राधा नहिं भगवद्गीता ॥

कई श्रीनेहरूजीको, कई श्रीराधाकृष्णन्‌को, कई श्रीसम्पूर्णानंद जी को योग्य मानते हैं—इसमें विरोध क्या ?

इधर गरुड विष्णुका वाहन है—'आत्मा एव एषां रथो भवति, आत्मा अश्वः, आत्मा आयुधम्' (७।४।१५) इत्यादि निरुक्तके कथनानुसार गरुड भी विष्णुका आत्मा ही है । इसलिए भगवद्विभूतिके अवसर पर भी कहा है—'वैनतेयश्च पक्षिणाम्' (गीता १०।३०) । राजाका दूत भी राजाकी भांति प्रतिष्ठा प्राप्त करता है । इसलिए विष्णुका भक्त भी उसके आत्मा-स्वरूप वाहनको भी इन्द्रकी अपेक्षा ऊंचा ही जानेगा । जो जिसका प्रिय वा श्रद्धेय होता है, उसका सभी कुछ प्रिय वा श्रद्धेय हो जाता है । पुरुष तो अपने श्रद्धास्पदके पांवके जूतेको भी श्रद्धेय मानकर उनका उल्लंघन नहीं करता, बल्कि उनको छूता है वा नमस्कार करता है । वह उसके दूत वा उसके वाहनका सम्मान क्यों न करे ? हनुमान् रुद्रका अवतार है—और रुद्र कहे जाते हैं—महादेव, तब उनका अवतार भी उनके भक्त की दृष्टिमें इन्द्रसे श्रेष्ठ हो—यह स्वाभाविक है । 'भक्त्या त्वनन्यया शक्यः' (गीता ११।५४) अनन्य भक्ति ही लाभदायक हुआ करती है । उस विष्णुका भक्त विष्णुकी वस्तुओं को अपनी जानता हुआ उनको अन्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट माने, यह स्वाभाविक है । इधर भगवान् श्रीकृष्णने गोवर्धनकी पूजा कराई थी—और इन्द्रदेवकी पूजा रुकवा दी थी, तब 'यद्यदाचरति श्रेष्ठः' (गीता ३।२१) इस प्रकार इन्द्रकी पूजा अमुख्य हो गई हो—इसमें आश्चर्यका कोई अवसर नहीं ।

आगे 'ब्राह्मण, सावधान' में श्री सम्पूर्णानंदजीने देवताओंका नैतिक पतन दिखलाया है—इस पर अग्रिम लेखमें विचार होगा ।

★

नृत्यकलाकी चरमा सीमा शुद्ध प्रेमकी शिक्षा ।
रास द्वारा की थी तुमने ब्रह्मचर्यकी रक्षा ॥

मृद्भक्षण भ्रमसे माताने खुलवाया तब वक्त्र द्वार ।
स्थावर जङ्गम जगको उसमें देख हुआ आश्चर्य अपार ॥

गौरी व्रतमें गोपीगणने यमुनामें किया नग्न स्नान ।
वस्त्रहरण करके तब तूने दिया विलक्षण उनको ज्ञान ॥

स्तन्यपन करते हुए तुमको एक बार गई माता छोड़ ।
हैयङ्गव सब खाकर तूने दध्यमत्र दिया तत्क्षण फोड़ ॥

यशुदाने जब आकर देखा कृष्णचन्द्र यह तेरा काम ।
रज्जूसे ओखलमें बांधन लगी न्यून होता रहा दाम ॥

सभी गोपियां हास्यान्वित थीं माता विस्मित हुईअपार ।
परिश्रांत माताको देख तुम स्वयं बद्ध हुए करुणागार ॥

एक दिवस सब कार्य व्यग्र थे यमुलार्जुन संधिमें जाय ।
भूपर पतित किया दोनोंको तूने उनके मध्यमें जाय ॥

ये दोनों ही धनद पुत्र थे मुनिनायक नारदसे शप्त ।
दर्शन देकर तूने अपने किया वृक्षयोनीसे मुक्त ॥

दुष्ट कंसको ज्ञात हुआ जब तब नाशक हो गया उत्पन्न ।
सभी नौकरोंको आज्ञा दी बच्चोंको कर दो उत्सन्न ॥

दुष्ट पूतनाने आकर जब तुझको दिया विषाक्त स्तन ।
मातृतुल्य उद्धार किया उसका भी तूने सूनू बन ॥

तृणावर्त नामक दानव जब चक्र वात रूपी बनकर ।
चला तुम्हें लेकर नभतलमें गोकुलसे सहसा हरकर ॥

भूरि भारसे पीड़ित होकर मरा जानकर निजको ।
साथ गिरा व्यसु होकर नभसे छोड़ा उसने तुमको ॥

गोपगोपियाँ विस्मित होकर बोली तुझे देख सानंद ।
दुष्ट हुआ मृत स्वीय पापसे बचा साधु बालक हे नंद ॥

गोपसुतोंके साथ कदाचित् वत्सोंको तू चरा रहा था ।
एक असुर तव मारणार्थ वत्सोंमें वत्स बन आय रहा था ॥

पैर पकड़ कर तूने उसको भ्रामित करके पटका ऐसा ।
गतजीवन वह गिरा धरा पर हुई देवकृत सुमवर्षा ॥

एक बार तुम मित्र सहित जल थाने वत्सोंको ह्रदमें ।
गए वकासुरने तुमको वहां ग्रसित किया होकर मदमें ॥

तुमने उसके तालु फाड़कर बाहर आ दोनों कर से ।
शकल द्वय मुखके कर उसके फेंक दिया फिर सुम वर्षे ॥

कालिन्दीको कालिय दूषित देखा जब तूने श्रीमान् ।
चढ कदम्ब पर कूद पडे जिस ह्रदमें था वह सर्प महान् ॥

देख सर्पने पीतवसन एक दिव्य पुरुषको निज ह्रदमें ।
क्रीड़ा करते अपने फणसे छन्न किया होकर मदमें ॥

हाहाकार मचा सबमें जो गोपी गोप वहाँ पर थे ।
नन्दादिकको पता लगा तत्क्षण आए जो घर पर थे ॥

सबको ही देखा जब तुमने अपने हित रोदन करते ।
पद प्रहारसे भग्न किया उसके फणको नर्तन करते ॥

मृत समान हो कालिय बोला कृष्ण रक्ष करुणा सिंधो ।
तूने कहा त्याग कृष्णाको शीघ्र जलधिमें जा बन्धो ॥

पाकर तव आज्ञाको वह तब सपरिवार गया उदधि ओर ।
गोपी गोपोंको लेकर तुम भी गए तट वृन्दावन ओर ॥

गोकुलमें एक दिन नन्दादिक, दुग्ध चौल करके एकत्र ।
वर्षायज्ञ लगे करने तब बोले आकर तुम भी तत्र ॥

तात, कौन होगा यह यज्ञ, जिसका यह सारा सामान ।
नंद बोले हे कृष्ण, इन्द्र इससे प्रसन्न होंगे भगवान् ॥

तुमने कहा तात, सब यह इन्द्रार्थ व्यर्थ है करना यज्ञ ।
तृण जल छायासे जो रक्षक, गोवर्धन, उसका हो यज्ञ ॥

'एवमस्तु' कहकर तब सबने किया महोत्सव गोवर्धन ।
हो प्रविष्ट तब तूने उसमें बड़े-बड़े साधे साधन ॥

मखका भङ्ग देख तब मघवा व्रजमें वर्षा मूसलधार ।
सात दिनों तक खड़े रहे तुम अंगुलि पर गोवर्धन धार ॥

नहीं बाल बाँका हुआ व्रजका इन्द्र गिरा चरणोंमें आय ।
'समर्थको नहिं दोष' सत्य है जो चाहे वह ही हो जाय ॥

ऐसे ही अद्भुत कृत्योंसे तुमको सबने ईश्वर माना ।
तुझ सदृश महापुरुषोंसे यह भारत भू है स्वर्ग समाना ॥

कृष्ण, तुम्हींने कुवलय मारा, शंखचूड़ चाणूर ।
दुष्ट कंस केशीभी मारे जो थे निर्दय क्रूर ॥

इन सभी उक्त असुरोंका यदि होता न कहीं तू संहारी ।
विदलित हो जाती आर्य धरा होता प्रतिगृह अन्याय भारी ।

हो रहा अन्याय अब भी न्यायका कहिं भी न लेश ।
अन्न वस्त्र महार्घतासे परम दुःखित है स्वदेश ॥

यदि नहीं दोगे हमें अब कृष्ण अपना कुछ सहारा ।
आजके इतिहासमें बदनाम होगा देश हमारा ॥

श्रीकृष्ण, तुम्हीं जैसे प्रेमी रुक्मिणीसी मंगलमय मूर्ति ।
फिर भी आवें इस भारतमें करनेको दोनोंकी पूर्ति ॥

वेद व्यास मुनि तव गुण गाकर हुए जगत् नभ सूर ।
सूरदास भी तव वर्णनसे घर-घरमें मशहूर ॥

तुलालग्न जातक

[श्री अम्बालाल गोविन्दरामजी दवे बी. ए.]

राशि-तुला: चर: द्विपद: शीर्षोदय: विषम, स्वामी शुक्र । तुला-राशि, चक्रकी सातवीं राशि है, और तीसरी केन्द्र राशि है । इसकी मुख्यता इसीसे स्पष्ट है कि भचक में इसकी स्थिति ठीक मेष राशिके सामने होती है, और वैसे ही इसके गुण भी होते हैं । जहां मेष लग्न वाले रण क्षेत्रके नेता होते हैं, और कर्क लग्न वाले विचार-क्षेत्र में नेता होते है ।

तुला-लग्न वालोंका डील-डौल अधिक नहीं होता, किन्तु बड़ा ही सुगठित और आकर्षक होता है । यदि कुण्डलीमें शुक्र अच्छा हुआ तो वे अतीव सुन्दर होते हैं । बच्चोंसे उन्हें विशेष आकर्षण होता है और वे बड़े ही खुश दिल होते हैं । सुन्दर वस्तुओंका उन्हें शौक होता है, और सुन्दर दृश्य देखनेके लिये भ्रमण करना पसन्द करते हैं । शुक्रकी निर्बलता में ये गुण भी कम हो जाते हैं ।

'तुला' का अर्थ है तकड़ी या तराजू, इससे स्पष्ट है कि वे प्रत्येक कार्यको नाप तोल कर करते हैं । अतः उनके कार्य कभी गलत नहीं होते । दूसरेका चित्त न दुःखे, इसका उन्हें बेहद ख्याल रहता है । इसी गुणके बल पर वे सर्व-प्रिय बन जाते हैं । अपने विरोधीसे भी बातचीत करते समय वे अतिशय शान्तिसे काम लेते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि वे उसका हृदय नहीं दुखाना चाहते और उसके विरोधीके प्रति अति संवेदनशील हैं, किंतु फिर भी उसके विरोधमें सभी कुछ कह देते हैं, और विपक्षकी सभी बातोंका काट कर देते हैं । अपना बचाव वे अकाट्य दलीलोंसे करते हैं । उनके आरोपोंमें एक सुन्दरता होती है, और उनके प्रहार शत्रुको बेबस कर देते हैं, किंतु ये सब होते हुए भी कटुता का वातावरण नहीं आ पाता । वे नैतिकताकी शिला पर इतने सधे हुए खड़े रहते हैं कि उनका गिरना असम्भव होता है । उनके विरोधी तब उनसे इस प्रकार टकराते हैं जैसे आँधी पहाड़से टकराती है ।

उन्हें जब नेता बननेका अवकाश मिलता है अपने अनुयायियोंको नैतिकताकी ओर ले जाते हैं, नैतिकतासे ऊँचा उठना उनका मुख्य लक्ष्य हो जाता है किंतु जितना इस लक्ष्यके वे समीप आते हैं उन्हें क्षेत्रोंमें भी सफलता मिलती जाती है । संसारके कुछ उच्च कोटिके विचारक और महात्मा इसी लग्नमें हुए हैं ।

झगड़े-फिसाद, लड़ाई दंगे और कटुताके वातावरण जब मानवताके समुद्रमें भारी तूफान मच जाता है, और ऊँची लहरें आने लगती हैं, तब वे (उस समुद्र पर) छिड़कनेका कार्य करते हैं, और शीघ्र ही लहरें दब जाती और वातावरण शान्त हो जाता है । उनका व्यक्तित्व शीतल छायाका काम करता है और उसकी ठण्डकमें मनुष्य अपनी खोई बुद्धि फिरसे पा लेता है । इस भाँति लड़ाई झगड़े फैसले करनेके कार्यमें वे अपनी निराली दक्षता रखते हैं । अपने शत्रु और मित्र दोनोंको एक साथ गले लगा सकते हैं । उनकी आंखमें सहानुभूति होती है, वाणीमें संवेदना होती है और व्यवहारमें भावुकता होती है । उनके गुणों पर उनके अनुयायी सर्वदा न्योछावर रहते हैं । झगड़ा शान्त करानेके समय वे दोनों पक्षोंकी त्रुटियों पर प्रकाश डालते हैं और उन्हें फटकारते भी इस प्रकार हैं कि किसीको बुरा नहीं लगता और वे सब अपनी गलतीको महसूस करने लगते हैं । इसके पश्चात् वे सच्चाईको सामने रखते हैं और फिर भी अपना कोई विशेष महत्व नहीं दर्शाते । इसी भाँति फिरसे शान्ति और मित्र भावको स्थापित करनेमें वे अत्य-धिक सफल होते हैं ।

यदि शुक्र निर्बल हुआ तो उनकी दलील करने की क्षमता अति निर्बल होती है । वे जिसकी दलील सुनते हैं उसी की बात ठीक मान लेते हैं । फिर एकान्त उनके मननमें विरोधी तर्क आने लगते हैं, जो पहले विश्वासों

का उन्मूलन करने लगते हैं । उनकी यह स्थिति अति दय-नीय होती है, क्योंकि वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते, और सब कुछ तराजू में तोलते ही रह जाते हैं । ऐसे मनुष्य कभी क्रियाशील नहीं होते, और आत्मनिर्भरता तो उनमें आने ही नहीं पाती । उनमें बच्चोंकी बेबसी होती है, और किसी भी कामको करनेमें घबड़ाने लगते हैं ।

तुला-लग्न वाले दार्शनिक और आध्यात्मिक क्षेत्रोंमें बड़ी उन्नति कर सकते हैं । शुक्रकी प्रबलतामें बड़े स्निग्ध और शांतिप्रिय होते हैं । उनकी बुद्धि अति सूक्ष्म हो जाती है और अपने तोलने वाले स्वभावकी सहायतासे वे भी तथ्यों का महत्व और उनकी वास्तविकता जान जाते हैं । कभी-कभी वे संसार छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लेते हैं । संन्यासी वर्गमें अधिकतर तुलालग्न वाले ही मिलेंगे । वे निःसन्देह सन्त स्वभावके होते हैं । जीवनमरणकी गुत्थियोंको वे बुद्धि द्वारा सुलझानेका प्रयत्न न कर या तो आत्मोन्नतिका स्वयं कोई मार्ग निकाल लेते हैं, या किसी अन्यके दिखाये मार्ग पर चलना स्वीकार कर लेते हैं । जीवनभर बैठे २ किसी गुत्थीको सुलझाते ही नहीं रहते—ठीक मीन लग्न वालों की भांति ।

उनका दृष्टिकोण अति विशाल होता है । एक समानता के भावमें सर्वदा बहते हैं । सब धर्मोंमें वे समानता और एकता देखते हैं, फिर पृथक्-पृथक् मनुष्य वर्गोंकी तो बात ही क्या शुक्र उन्हें एक विभूतिका भान कराता रहता है और इसी भावमें उनकी महानता छिपी रहती है । उनमें अतिशय भावुकता भी होती है, किंतु उच्चकोटिका काव्य ही, जिसमें दार्शनिक या आध्यात्मिक झलक आती हो, उन्हें अत्यधिक प्रभावित कर सकता है । वैसे सामान्यतया वे साहित्य-प्रेमी होते हैं ।

तुलालग्नके पुरुष सुन्दर होते हैं । किंतु यदि शुक्र प्रबल हुआ और चन्द्रमा समराशिमें स्थित हुआ तो तुला-लग्नकी स्त्रियां अतीव सुन्दरी होती हैं । सुन्दरतामें अन्य लग्न वाली स्त्रियां तुला-लग्न वाली स्त्रियोंको किंचित् नहीं पा सकती हैं । शुक्र स्वयं स्त्री-ग्रह है और फिर सभी स्त्रियोचित गुणोंका निरूपक होता है ।

संक्षेपमें तुला-लग्न वाले, बड़े ही शान्तिप्रिय, मनस्वी, नेता, सन्त, सर्वप्रिय, प्यारी और संवेदनशील होते हैं ।

सूर्य एकादशेश होनेसे अशुभ होता है चन्द्रमा दशमेश होनेसे शुभ होता है मङ्गल सप्तमेश और द्वितीयेश होनेसे शुभ होता है । बुध द्वादशेश और नवमेश होनेसे सम होता है । बृहस्पति तृतीयेश और षष्ठेश होनेसे अशुभ होता है । शुक्र अष्टमेश किंतु लग्नेश होनेसे शुभ होता है । शनि चतुर्थेश और पंचमेश होनेसे शुभ होता है ।

उदाहरणके लिए महात्मा गांधी और नैपोलियन बोना-पार्टकी कुण्डलियां दी जाती हैं ।

महात्मा गांधी

नैपोलियन बोनापार्ट

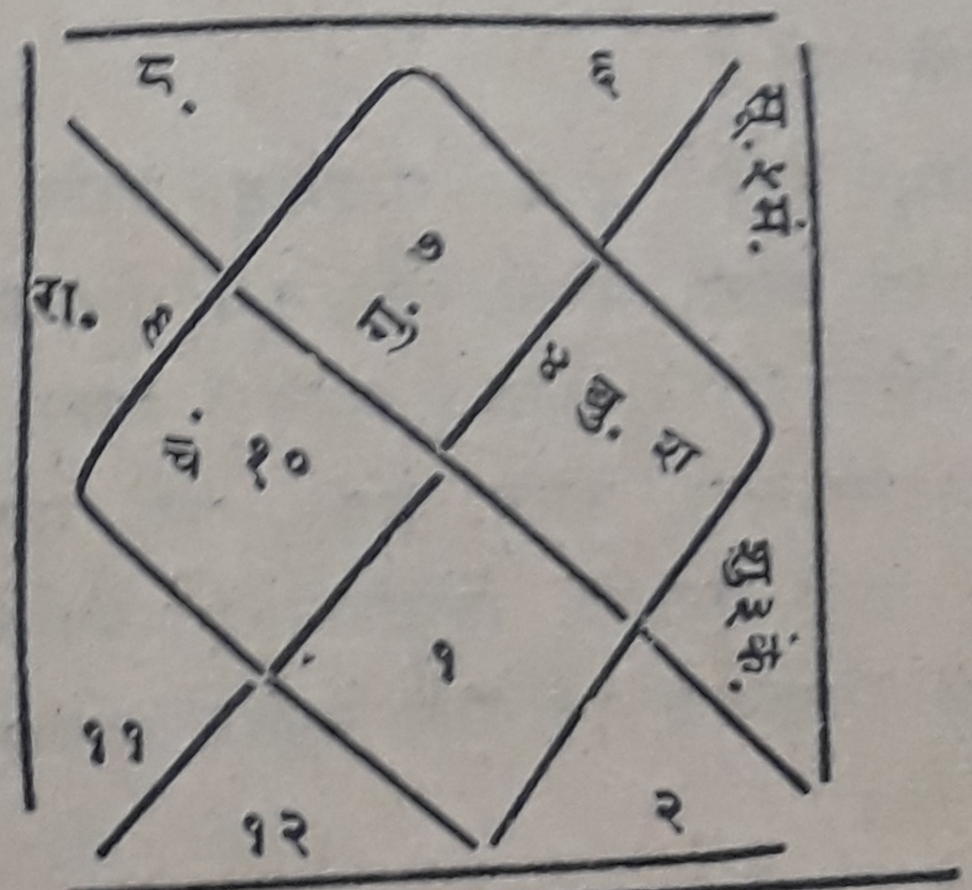

जैसा विचार तुम करोगे वैसे ही होगे ।

× × × +

विचारका जीवन पर बड़ा आकर्षक प्रभाव पड़ता है । जो जैसा विचार वाला है, उसे वैसा ही पाओगे । संसारमें जो ऊंच नीच तुम देखते हो उन्हें किसीने बनाया नहीं वरन् इनके विचारोंने ही ऐसा मतभेद उत्पन्न कर रखा है ।

का उन्मूलन करने लगते हैं । उनकी यह स्थिति अति दयतीय होती है, क्योंकि वे किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सकते, और सब कुछ तराजू में तोलते ही रह जाते हैं । ऐसे मनुष्य कभी क्रियाशील नहीं होते, और आत्मनिर्भरता तो उनमें आने ही नहीं पाती । उनमें बच्चोंकी बेवसी होती है, और किभी भी कामको करनेमें घबड़ाने लगते हैं ।

तुला-लग्न वाले दार्शनिक और आध्यात्मिक क्षेत्रोंमें बड़ी उन्नति कर सकते हैं । शुक्रकी प्रबलतामें बड़े स्निग्ध और शांतिप्रिय होते हैं । उनकी बुद्धि अति सूक्ष्म हो जाती है और अपने तोलने वाले स्वभावकी सहायतासे वे भी तथ्यों का महत्व और उनकी वास्तविकता जान जाते हैं । कभी-कभी वे संसार छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लेते हैं । संन्यासी वर्गमें अधिकतर तुलालग्न वाले ही मिलेंगे । वे निःसन्देह सन्त स्वभावके होते हैं । जीवनमरणकी गुत्थियोंको वे बुद्धि द्वारा सुलझानेका प्रयत्न न कर या तो आत्मोन्नतिका स्वयं कोई मार्ग निकाल लेते हैं, या किसी अन्यके दिखाये मार्ग पर चलना स्वीकार कर लेते हैं । जीवनभर बैठे २ किसी गुत्थीको सुलझाते ही नहीं रहते—ठीक मीन लग्न वालों की भांति ।

उनका दृष्टिकोण अति विशाल होता है । एक समानता के भावमें सर्वदा बहते हैं । सब धर्मोंमें वे समानता और एकता देखते हैं, फिर पृथक्-पृथक् मनुष्य वर्गोंकी तो बात ही क्या शुक्र उन्हें एक विभूतिका भान कराता रहता है और इसी भावमें उनकी महानता छिपी रहती है । उनमें अतिशय भावुकता भी होती है, किंतु उच्चकोटिका काव्य ही, जिसमें दार्शनिक वा आध्यात्मिक झलक आती हो, उन्हें अत्यधिक प्रभावित कर सकता है । वैसे सामान्यतया वे साहित्य-प्रेमी होते हैं ।

तुलालग्नके पुरुष सुन्दर होते हैं । किंतु यदि शुक्र प्रबल हुआ और चन्द्रमा समराशिमें स्थित हुआ तो तुला-लग्नकी स्त्रियां अतीव सुन्दरी होती हैं । सुन्दरतामें अन्य लग्न वाली स्त्रियां तुला-लग्न वाली स्त्रियोंको किंचित् नहीं पा सकती हैं । शुक्र स्वयं स्त्री-ग्रह है और फिर सभी स्त्रियोचित गुणोंका निरूपक होता है ।

संक्षेपमें तुला-लग्न वाले, बड़े ही शान्तिप्रिय, मनस्वी, नेता, सन्त, सर्वप्रिय, व्यापारी और संवेदनशील होते हैं ।

सूर्य एकादशेश होनेसे अशुभ होता है चन्द्रमा दशमेश होनेसे शुभ होता है मङ्गल सप्तमेश और द्वितीयेश होनेसे शुभ होता है । बुध द्वादशेश और नवमेश होनेसे सम होता है । बृहस्पति तृतीयेश और षष्ठेश होनेसे अशुभ होता है । शुक्र अष्टमेश किंतु लग्नेश होनेसे शुभ होता है । शनि चतुर्थेश और पंचमेश होनेसे शुभ होता है ।

उदाहरणके लिए महात्मा गांधी और नैपोलियन बोनापार्टकी कुण्डलियां दी जाती हैं ।

महात्मा गांधी

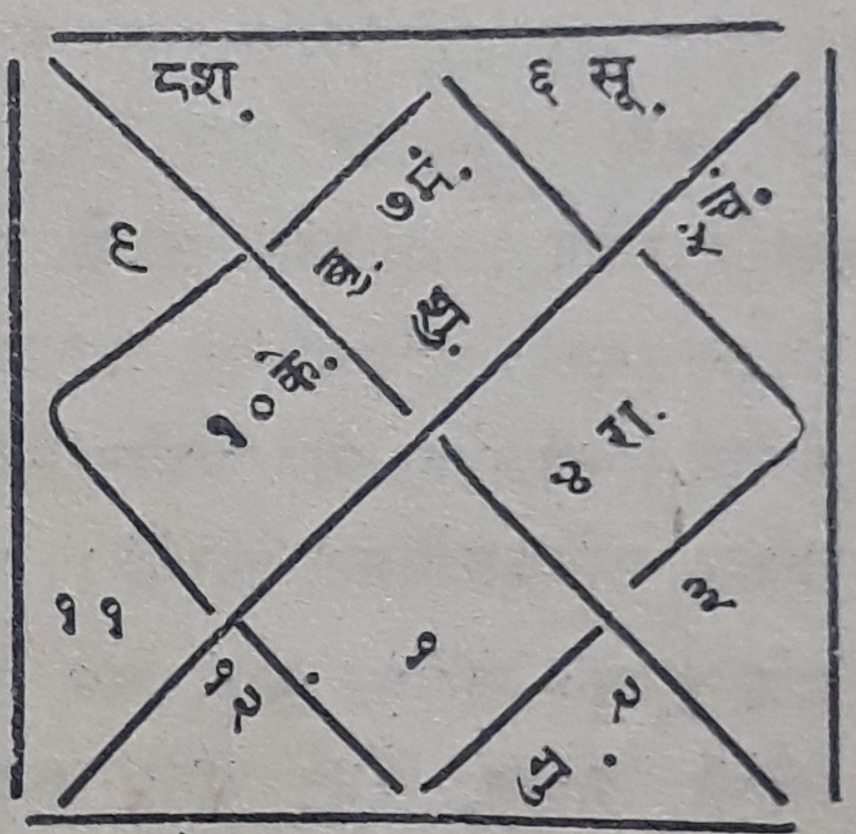

नैपोलियन बोनापार्ट

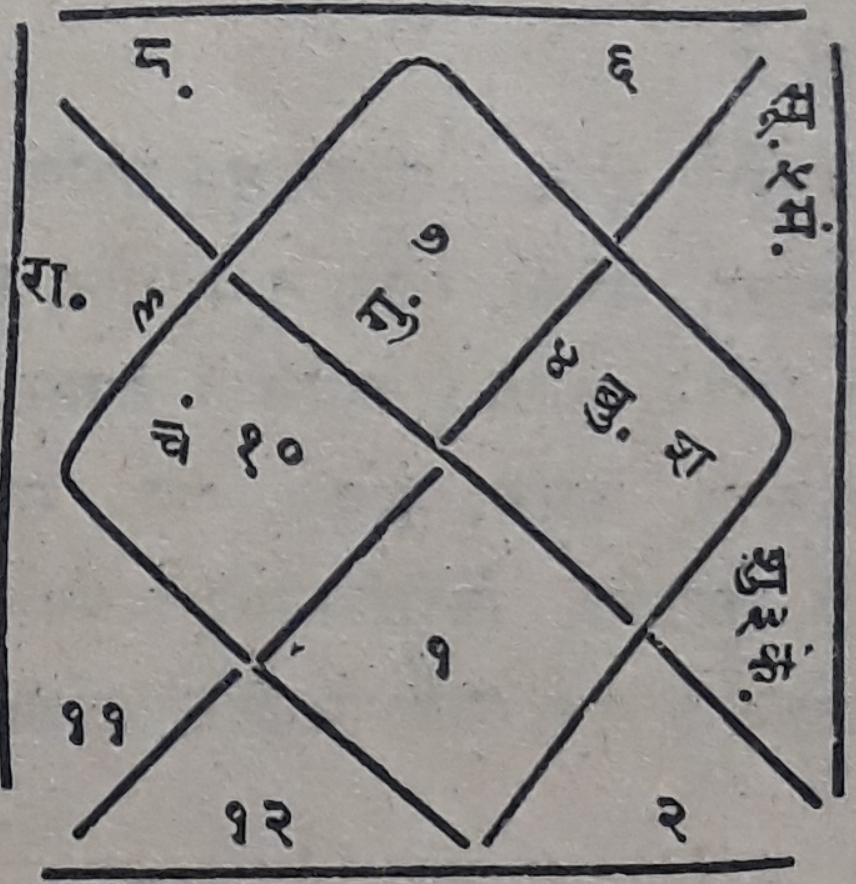

जैसा विचार तुम करोगे वैसे ही होगे ।

× × × +

विचारका जीवन पर बड़ा आकर्षक प्रभाव पड़ता है । जो जैसा विचार वाला है, उसे वैसा ही पाओगे । संसारमें जो ऊंच नीच तुम देखते हो उन्हें किसीने बनाया नहीं वरन् इनके विचारोंने ही ऐसा मतभेद उत्पन्न कर रखा है ।

व्यापार-चन्द्रिका

[लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्तजी शर्मा ज्योतिर्विद्]

अर्घका (महर्घ-समर्घका) विचार आदि आचार्योंने जो किया है शास्त्रों द्वारा दर्शाये गए मार्गसे मैं यहां विशेष रूप से निरूपण करता हूं । मुनियोंने जो-जो राशि जिन-जिन द्रव्योंकी अधिनायिका कही हैं उनको शुभाशुभ फलके लिए (आगम) ज्योतिष शास्त्रसे यहां लिखता हूँ ।

मेष राशिके द्रव्य—वस्त्र, अज, अजा पशु, कम्बल, ऊन, पशमीना, शाल, कुतुप (बकरेके रोमके बने कम्बल, घी, व तैल रखने वाले कुपे) मसूर, लाल गेहूं, राल, जौ स्थल जन्य औषधि, ताँबा, सोना, लाल सरसों, सर्व प्रकारके गोंद, लाल चन्दन इनकी अधिनायिका मेष राशि मानी जाती है । अर्वाचीन मतसे लोहा और मशीनरी व आयरन शेयरभी मेष राशिके अधिकारमें माने जाते हैं ।

वृष राशिके द्रव्य—लवण, फूल, यव, सफेद गेहूं, शाली धान्य, चीनी, महिष, बैल, सूती वस्त्र, सरसों, दुग्ध, घृत इत्यादि । अर्वाचीन मतसे वृषके अधिकारमें रुई भी मानी जाती है ।

मिथुन राशिके द्रव्य—शरदृऋतुमें उत्पन्न होने वाली वस्तु (ज्वार, बाजरा, मक्की, ग्वार, मूंग, सोंठ, माष, मूंग-फली, तोरिया आदि) धान्य (चावल) कपास, बिनौला, जूट, बारदाना, लता, कमल, कुंकुम, जड़, मूल, केशर, कस्तूरी, हल्दी, जमीकंद, विदारीकंदादि । अर्वाचीन मतसे रेल्वे, पुस्तक प्रकाशन, पत्र आदि मिथुनके अधिकारमें माने जाते हैं ॥८॥

कर्क राशिके द्रव्य—कंद, मूल, पत्रज, फल, केला, मोचरस, कोद्रव (कोदों) दूब, तेजफल, दालचीनी, सर्व प्रकारके त्वक्-प्राय किरानेका सामान और चांदी पारा आदि कर्कके अधिकारमें हैं ।

सिंह राशिके द्रव्य—सर्व प्रकारके रस, तुष धान्य (भूसी वाले अन्न) चने, सिंह, बाघाम्बर, मृग, मृगचर्म, गुड़, रक्त पदार्थादि । अर्वाचीन मतसे सोनेको सिंह रा[शि] अधिकारमें माना गया है ।

कन्या राशिके द्रव्य—सफेद गेहूं, मूंग, मोठ, कुल[थी] ग्वार, मटर, अरहर, अलसी, हरा उड़द आदि तथा कन्या[के] नाम वाली खाँड, शक्करादि समस्त वस्तुयें ! अर्वाचीन म[त] से कपासकी कृषि मजदूरी आदि व्यवसाय करने वाले कन्या[] धिकारमें माने जाते हैं ।

तुला राशिके द्रव्य—जौ, गेहूं, माष, चने, म[] नारियल, रुई, रेशम शालि (चावल) सरसों इत्यादि अर्वाचीन मतसे गेहूँ, चना, चावल और सर्व प्रकारके [] पदार्थ तथा रुई व रुईकी कीमतों पर तुला राशि शास[न] करती है !

वृश्चिक राशिके द्रव्य—अजाविका (बकरा-बक[री] भेड़) ईखादि, रसीले पदार्थ, गुड़, शक्कर सब प्रकार[के] मीठा, लोहा, अलसी, एरंडा, तिल, समस्त काली वस्तु[यें] चपड़ा, सुगन्धित द्रव्य इत्र आदि । अर्वाचीन मतसे काल[ी] हल्दीको वृश्चिक राशिके अधिकारमें माना गया है ।

धनु राशिके द्रव्य—धान्य, तिल, मूल, लव[ण] आलू, तुरङ्ग (अश्व) वस्त्र, सब क्षार रसके पदार्थ, स[ब] प्रकारके शस्त्र, पट, पाट, श्वेत अन्न, रबड़ इत्यादि । अर्वाचीन मतसे समुद्रमें होने वाले पदार्थ धनुराशिके अधिकार[में] माने जाते हैं ।

मकर राशिके द्रव्य—ईख, सोना, लोहा, विवि[ध] गुल्म, लता, पत्र, फल कन्द, वृक्षादि । अर्वाचीन मत[से] कोयला, जस्ता, टीन, कांसा तांबा, शीशादि मकरके अधि[] कारमें हैं !

कुम्भ राशिके द्रव्य—फल, पुष्प, रत्न, विचित्र [] वाले पदार्थ, जलसे उत्पन्न होने वाली वस्तुयें, शंख, सी[प] आदि तथा पंसारीका सामान और नकली सिलक व काल[]

उड़द, तिल, तैल लोहादि । अर्वाचीन मतसे विद्युत्-सम्बन्धि सामान डिफर्ड शेयर कुम्भके अधिकारमें हैं ।

मीन राशिके द्रव्य—कपालसे उत्पन्न मणि-रत्न अर्थात् गजमुक्ता, गोरोचनादि, जलसे उत्पन्न हीरा आदि, द्रव्य अर्थात् घी-तैल इत्यादि. बहुत रूप वाले पदार्थ, मछलियोंसे उत्पन्न वस्तु । अर्वाचीन मतसे मछली और लड़ाईका सामान मीनके अधिकारमें माने जाते हैं । संसारमें असंख्य पदार्थ हैं; इस राश्यधिकारसे भिन्न जो पदार्थ हैं उनका आदि अक्षर जिस राशिके अधिकारमें होवे, उसकी वह ही राशि जाननी चाहिए ।

राशिस्थ ग्रहोंका व्यापार पर प्रभाव—

जिस राशिसे ४,११,१०,७,२,९,५ भावमें गुरु होवे और जिस राशिसे २,५,११,१०,८ भावमें बुध हो उस राशिके द्रव्योंकी वृद्धि होती है । शुक्र जिस राशिसे केन्द्र योग या षड् सप्तम योग करता हो उस राशिकी वस्तुओं की हानि करता है (उनको महँगी करता है) अन्य स्थानोंमें शुक्र हो तो उस राशिके द्रव्योंकी वृद्धि करता है । पापग्रह जिस राशिसे ३,६,१०,११ स्थानोंमें होवें उस राशिके द्रव्योंकी वृद्धि करते हैं, इन स्थानोंके अतिरिक्त दूसरे स्थानों में क्रूर ग्रह हों । तो उस राशिके द्रव्योंकी हानि करते हैं ! जिस राशिके पीड़ा स्थान में (१,२,४,५,७,८,९,१२ स्थान में) क्रूर ग्रह (सूर्य, क्षीण चन्द्र, मंगल, पापग्रह युक्त बुध, शनि, राहु, केतु, क्रूर ग्रह माने जाते हैं) बलवान् स्थित हों उन राशियोंके द्रव्य महंगे और दुर्लभ हो जाते हैं । बृहस्पति आदिके जो पीछे शुभ कहे हैं उनको छोड़ ग्रह राशिके और स्थानोंमें बैठे हों तो गोचर पीड़ा होती है, जिस राशिको गोचर पीड़ा हो और बलवान् शुभ ग्रह देखते हों तो उसके द्रव्योंकी हानि नहीं होती; जिसको गोचर पीड़ा हो और बलवान् क्रूर ग्रह देखते हों तो उस राशिके द्रव्योंकी हानि और महर्घता होती है । लग्नसे उपचय स्थानोंमें (३,६,१०,११) पड़े हुए क्रूरग्रह वस्तुओंका तोल बढ़ाते हैं और सौम्यग्रह (पूर्णचंद्र, शुभ युक्त बुध, गुरु, शुक्र) वस्तुओंका मूल्य बढ़ाते हैं । इसका ग्रह गति राश्यनुसार बुद्धि-बलसे विचार कर व्यापार करना चाहिए ।

सूर्यके द्रव्य—मोती, मणि; सोना, तांबा, रेशम, अस्त्र, चर्म, तुष धान्य, (भूसी वाले अनाज) वृक्ष, कटुवस्तु मात्र, अग्नि उत्पन्न करने वाली वस्तुयें, विष, बीज, सर्व प्रकारके कोष धान्य, सरसों लोहित वस्तुयें, स्नेह, रस और हर प्रकारके गंधोंका स्वामी सूर्य है ।

चन्द्रमाके द्रव्य—शहत, फूल, फल, पानीमें उत्पन्न होने वाली वस्तु मात्र, चावल, यव, गेहूं, रस, मोती, ईख, शंख, अण्डज वस्तु, चांदी, सफेद वस्त्र, लवण आदिका अधिपति चन्द्रमा है ।

मंगलके द्रव्य—लाल रंगके फल और फूल, गुड़, मद्य, तीक्ष्ण पदार्थ पारा, मनशिल, मसरी, तांबा, लाल रंग की धातु व वस्तु, शस्त्र, मूंगा, अजा (बकरा) आदिका स्वामी मंगल है ।

बुधके द्रव्य—मूंगी, ज्वार, मटर, अरहर, द्विदल (दाल) मात्र अन्न, वनस्पति, हरितवस्तु, स्नेह बीज (तैल निकालने के बीज) तीखी वस्तु, सुगन्ध, हरित वस्त्र, पक्षी, हरे रंगकी मणियां आदिका स्वामी बुध है ।

बृहस्पतिके द्रव्य—हल्दी, जटामांसी, तगर, मोम, पीले रंगकी वस्तुयें, सैन्धा नमक, वल्कल से उत्पन्न होने वाली वस्तुयें, सरसों, गेहूं, जव ईख, घोड़ा, कपूर, गाय आदिका अधिपति बृहस्पति है ।

शुक्रके द्रव्य—रेशमी वस्त्र, कंबल, पत्रोर्ण [धोया हुआ रेशमी वस्त्र] वस्त्र, मणि, वज्र, आभूषण, स्नेह, मिश्रित अन्न, विचित्र वस्तु, चांदी, जलज वस्तु, स्फटिक, त्रिफला, दालचीनी, चोव चीनी, मघा, लोध पठानी, जायफल, अगर, वच आदि किरणोंकी वस्तुयें और रुईका अधिपति शुक्र है ।

शनैश्चरके द्रव्य—कड़वी, तीखी वस्तुमात्र, महिषी, गधा, करभ, (ऊंटका बच्चा) चने, मटर, कंगू, कोदा, तिल, माष, वात कारक वस्तुयें, ऊन, चर्मज वस्तु, नील, लवण, काले रंग की वस्तुमात्रका स्वामी शनैश्चर है ।

राहु-केतुके द्रव्य—सिक्का, शीला, लोहा, कुधान्य, नीलवस्तु, गोमेद, हड्डी, मज्जा (वसा चर्वी आदि) कोदा, कंगू, तिल, माष, बकरा, ऊंट, सूअर, गधा आदिके अधिपति राहु और केतु हैं ।

विशेष शास्त्र द्वारा ग्रहोंका शुभाशुभत्व निरूपण—

वस्तुकी राशि-लग्नसे त्रिकोण (नवम-पंचम स्थान) के स्वामी सभी ग्रह (भले ही वह सामान्य शास्त्रके द्वारा शुभ हों वा पाप) शुभ फल देते हैं । ३,६,११ वें के स्वामी ग्रह पापफल-कारक होते हैं । जो पापग्रह ३,६,११ वें स्थानके स्वामी हों तो वह शुभ फल नहीं देते । इन्हीं स्थानोंके अधिपति शुभग्रह हों तो वह अपने शुभ स्वभावका सामान्य फल देते हैं ।

जो शुभग्रह केन्द्र अर्थात् ४,७,१० वें स्थानके स्वामी हों तो वह शुभफल नहीं देते। पूर्वोक्त स्थानोंमें ५ वें से ९ वाँ तृतीयसे षष्ठ, षष्ठसे ११ वां, चतुर्थसे सप्तम और सप्तम से दशम स्थान बलवान् हैं । त्रिकोणेशसे त्रिषडायपति पाप ग्रह पापी हैं । त्रिषडायपति पापग्रहसे केन्द्रेश शुभ ग्रह अधिक पापी हैं। केन्द्रेश शुभग्रहसे त्रिषडायपति पापग्रह शुभ हैं और त्रिषडायपति पापग्रहसे त्रिकोणेश अधिक शुभ हैं ।

वस्तुकी राशि लग्नसे १२ वें और दूसरे स्थानके स्वामी जिस भावमें हों उसके स्वामीके सदृश शुभ वा अशुभ होंगे जिस भावेशके साथ हों वह जैसे शुभ वा अशुभ हों, वैसे होते हैं। अथवा वह किसी स्थानके स्वामी हों और उस कारणसे जैसे शुभ वा अशुभ हों वैसे ही होते हैं । ग्रह दो स्थानोंके स्वामी होनेसे भिन्न-भिन्न फल देने वाले होते हैं, वैसे वह व्ययेश और द्वितीयेश नहीं होते । यदि यह व्ययेश और द्वितीयेश न तो किसी अन्य स्थानके स्वामी हों और न ही किसी ग्रहके साथ हों किन्तु द्वादश और द्वितीय भावमें ही स्थित हों तो न शुभ और न अशुभ केवल सम फलदायक होते हैं ।

राहु-केतु जिस भावमें स्थित हों अथवा जिस भावेशके साथ हों बलवान् होनेसे उन-उन फलोंको मुख्य रूपसे देते हैं ।

बलाबल निर्णय—वस्तु राशिमें जो ग्रह विराजमान हो वही तात्कालिक स्वामी जानना चाहिए, यदि वस्तु राशि ग्रहहीन हो तो निसर्गेश ही अधिपति समझना चाहिए, उसी के बलवान् होनेसे वस्तु-राशिको बलवान् समझना चाहिए। सौम्य स्वामी करके युत, दृष्ट हो और केन्द्रोंमें शुभग्रह हो तो वस्तु राशि लग्न बलवान् होता है, इससे विपरीत बर्जित ही समझना चाहिए। यदि लग्न (वस्तु-राशि) [illegible] हो तो समर्घ और निर्बल हो तो महर्घ जानना चाहिए। [illegible] विधिसे निश्चिन्त दत्त चित्त होकर विचारोंसे फल [illegible] सोलह आने ठीक आता है ।

लग्न (वस्तु-राशि) और लग्नपति तथा लाभ [illegible] लाभाधिप यदि बलवान हों तो क्रय और विक्रय [illegible] चाहिए, यदि मिश्र हो तो सम और यदि शून्य [illegible] महर्घ हो ।

जो ग्रह प्रतिदिन उदयके समय निर्मल किरणों [illegible] युक्त बड़ा और अपने स्वभावमें स्थित हो, निर्घात, [illegible] धूली, और ग्रह युद्ध करके हत न हो अपनी राशि व [illegible] उच्चराशिमें प्राप्त हो शुभ ग्रहों करके देखा हो तो [illegible] जिनका स्वामी कहा है उनको कल्याण करने वाला [illegible] समर्घ करता है तथा पूर्वोपदिष्ट फलकारक होता है। विपरीतावस्थामें हो तो उलटा फल-कारक होता है।

क्रय-विक्रय विचार—वस्तु लग्नपति क्रेता ([illegible] वाला) होता है यदि लग्न बलवान् हो तो अतिशय [illegible] वस्तुका विक्रय करना चाहिए, जब लाभ राशि और [illegible]श्वर बलवान् हो तो वस्तुका विक्रय करना चाहिए, मतिमान् ऐसा करते हैं वह सर्वदा सुखी रहते हैं ।

वस्तु लग्नपति यदि लग्नको देखे तो वस्तु ग्रहण [illegible] चाहिए, यदि लग्नपतिकी दृष्टि लग्नकी न हो तो [illegible] कदापि ग्रहण नहीं करनी चाहिए, जितना समय वस्तु [illegible] बलवान् रहे उतना समय वस्तुओंका समर्घ और [illegible] समय निर्बल रहे उतना समय महर्घ जानना चाहिए [illegible] वस्तु राशि शुभ ग्रह और स्वामीसे युत-दृष्ट हो [illegible] बलवान् होती है ।

वस्तु लग्नपति यदि बलवान् हो तो समर्घता, [illegible] निर्बल हो तो महर्घता होवे । यदि धनेश बलवान [illegible] महर्घ और वह धनेश यदि निर्बल हो तो समर्घ [illegible] चाहिए ।

यदि लग्नेश और सप्तमेशका इत्थशाल हो तो [illegible] खरीद बेच करना अच्छा होता है और जो मित्र दृष्टिसे [illegible]

का इत्थशाल हो तथा लग्नेश सप्तमेश मकर राशि गत हों तो अन्य पुरुष द्वारा खरीद बेंच शुभ होता है ! यदि लग्नेश और सप्तमेश दोनों आपसमें मित्र हों तो मित्रके साथ खरीद बेंच शुभ होती है । यदि चतुर्थेश और लग्नेश मित्र दृष्टिसे युक्त हों तो बेचनेमें मित्रके साथ सांझा धन-दायक होता है इसी प्रकार चतुर्थेश सप्तमेश मित्र दृष्टिसे युक्त हों तो खरीदने वाले मित्रसे सांझा सुख-दायक होता है । यदि लग्नेश सातवें हो तो खरीदने वाला नियत वस्तुको मांगता है और जो सप्तमेश लग्नमें हो तो बेचने वाला नियत वस्तुकी याचना करता है और जो लग्नमें शुभग्रह हो तो बेचने वाला अमृत के समान मीठा बोलने वाला है । यदि सातवें स्थानमें शुभग्रह हों तो खरीदने वाला—मीठी वाणी वाला है । यदि जब कभी चन्द्रमा और ग्रहका इत्थशाल हो तो उसी कालमें खरीद करें और जब उन दोनोंका ईसराफ योग हो तो बेचें । जिस ग्रहके साथ चन्द्रमाका ईसराफ योग हो वह ग्रह सूर्यके साथ अस्तंगत हो तो अन्यके वास्ते वस्तुको छोड़कर उस वस्तुका बेचने वाला दैवयोगसे नाशको प्राप्त हो जाता है ।

मित्र क्षेत्रमें स्वगृहमें उच्चमें चन्द्रमाके सबल होने पर वस्तुकी वृद्धि होती है, शत्रु और नीच राशि गत होनेसे वस्तुका क्षय होता है । मित्र, स्वगृह, उच्चादिमें होनेसे वस्तुको ग्रहण करना चाहिए, शत्रु व नीच क्षेत्रमें जानेसे राशि वस्तुका विक्रय करना चाहिए । नीच स्वमार्गस्थ, विवर, पराजित ग्रहमें धान्य (वस्तु) के भावोंमें महर्घता होती है ऐसा चण्डेश्वरका मत है ।

ग्रहोंकी पृथ्वीसे दूरस्थ निकटस्थकी समीक्षा—

ज्योतिष शास्त्रका यह अटल सिद्धान्त है कि जब खगोल वृत्तमें भ्रमण करते हुए शुभग्रह पृथ्वीके निकट आते हैं तब सर्वदा शुभफल प्रकट करते हैं और पाप ग्रह पृथ्वीसे जितनी दूर जाते हैं उतना ही अधिक शुभ फल देते हैं । कर्क वृत्त और मकर वृत्त नामके १२ राशियोंके दो ऐसे विभाग हैं जिनमें ग्रहके आनेसे पृथ्वीके समीप और दूरस्थ होनेका ज्ञान होता है । उत्तर क्रान्ति वृत्तमें जब सूर्यदेव मेष राशिमें प्रवेश करते हैं तबसे कर्क संक्रमण पर्यन्त पृथ्वीके उत्तर गोलार्द्धमें गरमी निरन्तर बढ़ती रहती है, इसका कारण यही है कि उक्त समयमें पृथ्वी सूर्यदेवके समीप जानेकी गतिमें रहती है और सूर्य भगवान्‌की उष्ण किरणें भूपृष्ठ पर समानान्तरसे सीधी पड़ती हैं । कर्क वृत्तसे मकर वृत्त तक जब सूर्य नारायण विचरते हैं, तब पृथ्वीसे दूर जाते हैं अतः क्रमशः शीत बढ़ने लगता है इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहका पृथ्वीसे सुदूर एवं समीपस्थ अन्तर जानना चाहिए । हमारे यहां सूर्य-बुध-शुक्र इन तीनों ग्रहोंसे व्यापार बाजारका विशेष निर्णय होता है । बुध-शुक्र पृथ्वीके बहुत समीप हैं, अतः उनका प्रभाव भूमण्डल पर शीघ्र होता है । मंगल-गुरु-शनिकी जब जब अच्छी किरणें इन ग्रहोंको मिलती हैं तब बाजारोंमें उन्नति दिखाई देती है, इन ग्रहों पर जब भौमादि बड़े ग्रहोंकी बुरी किरणें पड़ती हैं तब बाजारोंमें हलचल और भूमण्डल पर नानाविध आतङ्क उत्पन्न होते हैं ।

ज्ञातव्य बातें—व्यापारिक हलचलोंके जानने योग्य मुख्य बातोंको सर्वप्रथम हृदयङ्गम करना अत्यावश्यक है । यथा—(१) राशि द्रव्योंका ज्ञान (२) ग्रह द्रव्योंका ज्ञान (३) राशिस्थ ग्रहोंका व्यापार पर प्रभाव (४) विशेष शास्त्र द्वारा ग्रहोंका शुभाशुभत्व (५) बलाबल निर्णय (६) क्रय-विक्रय विचारके निर्दिष्ट स्थानोंको भली प्रकार हृदयङ्गम करना (७) ग्रहोंका पृथ्वीसे दूरस्थ निकटस्थका ज्ञान और उनका फल । इन सातों विषयोंको हमने परिश्रमपूर्वक संज्ञा-ध्यायमें रखा है जिनका पूर्ण ज्ञान होनेसे हर व्यक्ति आने वाले वार्षिक, मासिक पाक्षिक, साप्ताहिक, अर्ध साप्ताहिक, दैनिक संसारकी वस्तु मात्रकी व्यापारिक हलचलोंका पहिले ज्ञान प्राप्त कर सकता है । जिनके विस्तारको आगे क्रमपूर्वक दिया जावेगा ।

इन सब बातोंके प्रथम ध्यान देने योग्य यह बात मुख्य है कि व्यापारिक फल विवेचनके लिए पञ्चांग कैसा हो और कौनसा हो ? इस बारेमें हमारे पूर्वाचार्योंने एक स्वरसे वेध सिद्ध पंचांगोंके ग्रहण करनेका आदेश दिया है अतः व्यापारिक फल विवेचनके लिए वेध सिद्ध पंचाङ्गको ही काममें लाना चाहिए, हमारे उत्तर भारतमें श्री विश्वविजय पंचाङ्ग शुद्ध वेध सिद्ध प्रणाली द्वारा देहलीसे प्रकाशित होता है अतः इसीको काममें लाना चाहिए । [क्रमशः]

★

तैल और तैल बीजोंकी तेजी-मंदी पद्धति

[अरंडा, अलसी, सरसों, मूंगफली और सब प्रकारके तैलके लिए]

[लेखक—श्रीमनुभाई शाह]

तैल और तैलबीज एरण्डा अलसी सरसों मूंगफली आदि शुक्र और तुला राशिसे चलते हैं। इसलिए पहिले तुला राशिका लग्न लेकर एक कुण्डली बनाइये और नवम्बर मासका ग्रहयोग निरयन पद्धति अनुसार २३.११ अयनांशासे लीजिये।

सूर्य—तुलामें, ता. १६ नवम्बरसे वृश्चिकमें।

मङ्गल—कन्यामें।

बुध—वृश्चिकमें, ता. ४ से वक्री, ता. ७ अस्त, ता. १४ तुलामें, ता. २० उदय, ता. २८ मार्गी।

गुरु—मिथुनमें वक्री, ता. ३० वृषभमें वक्री।

शुक्र—कन्यामें, ता. ६ तुलामें, ता. ३० वृश्चिकमें।

शनि—तुलामें अस्त, ता. ९ उदय।

अब दूसरी एक तुला लग्नकी कुण्डली लेकर उसमें चन्द्र जिस तारीखको जिस राशिमें आता है यह निम्न प्रकार से लिखिये।

ता. १, २ सिंह राशिमें लिखिये। इस तरह ता. ३, ४ कन्यामें, ता. ५, ६, ७ तुलामें, ता. ८, ९ वृश्चिकमें, ता. १०, ११ धनुमें, ता. १२, १३, १४ मकरमें, ता. १४, १५ १६ कुम्भमें, ता. १७, १८ मीनमें, ता. १९, २० मेषमें, ता. २१, २२ वृषभमें, ता. २३, २४ मिथुनमें, ता. २५, २६ कर्कमें, २७, २८, २९ सिंहमें और ता. ३० कन्यामें लिखिये।

उपर्युक्त प्रकारसे दोनों ही कुण्डली तैयार बनाकर अब तैल और तैलबीज बाजार किस तरह चलता है यह ज्योतिष शास्त्रके आधारसे देखिये।

यहाँ कुण्डलीसे केन्द्र त्रिकोण राशिके स्वामी और केन्द्र त्रिकोणमें आया हुआ चन्द्र (७, १०, ११, १, ३ ४ राशि) तेजी कारक और बाकीके राशिके मालिक और चन्द्र मन्दी कारक हैं यह मान लीजिये।

अब तारीखवार तेजी मंदी कैसी होती है यह नि[म्न] प्रकारसे दोनों कुण्डली साथ रखकर देखिये।

ता. १, २ सिंहका मंदी कारक चन्द्र, सिंहका स्वा[मी] सूर्य केन्द्रमें, उस पर वक्री निर्बल गुरुकी दृष्टि, 'मंदी'।

ता ३, ४ कन्याका मंदीकारक चन्द्र, इसमें शुक्र औ[र] मंगल, 'अच्छी तेजी'।

ता. ५, ६, ७ तुलाका तेजीकारक चन्द्र, इसमें के[न्द्र] त्रिकोणाधिपति शनि अस्त, और सूर्य, शुक्र, वक्री नि[र्बल] गुरुकी दृष्टि, 'तेजी'।

ता. ८, ९ वृश्चिकका मंदीकारक चंद्र, इसमें वक्री अ[स्त] बुध, मालिक वारमें, 'मंदी'।

ता. १०, ११ धनुका मंदीकारक चंद्र, उसका स्वा[मी] त्रिकोणमें वक्री, निर्बल धनुमें शनि मंगलकी दृष्टि, मं[गल] शनिके विरोधमें ज्योतिष शास्त्रके आधारसे उलट चा[ल] चलता है। इसलिए 'मंदी'।

ता. १२, १३, १४ मकरका तेजो कारक चंद्र स्वा[मी] लग्नमें उदयका, इस पर वक्री निर्बल गुरुकी दृष्टि, 'अ[च्छी] तेजी'।

ता. १४, १५, १६ कुम्भका तेजीकारक चंद्र, स्वा[मी] लग्नमें उदयका शनि और चंद्र पर वक्री निर्बल गुरुकी दृ[ष्टि] 'अच्छी तेजी चालू'।

ता. १७, १८ मीनका मंदीकारक चंद्र, स्वामी त्रि[...] कोणमें निर्बल वक्री, मंगलकी चंद्र पर दृष्टि, 'अच्छी ते[जी]'।

ता. १९, २० मेषका तेजीकारक चंद्र, स्वामी [...] अपने वरसे आठमें, मेषके चंद्र पर शनि शुक्र और [...] तेजीकारक दृष्टि, मंगल उलठ चालसे 'मंदी'।

ता. २१, २२ वृषभका मंदीकारक चंद्र, स्वामी [...] 'तेजी'।

ता. २३, २४ मिथुनका तेजीकारक चंद्र इसमें वक्री निर्बल गुरु अन्तिम अंशमें, स्वामी लग्नमें, 'तेजी'।

ता. २५, २६ कर्कका तेजीकारक चंद्र, दशम स्थान, इसमें शनिकी दृष्टि, 'अच्छी तेजी'।

ता. २७, २८, २९ सिंहका मंदीकारक चंद्र, स्वामी दूसरे स्थानमें, 'मंदी'।

ता. ३० कन्याका मंदीकारक चंद्र, इसमें मंगल, स्वामी लग्नमें, 'अच्छी तेजी'।

उपरोक्त पद्धति अनुसार तैल और तैलबीजोंकी आगाही तेजी मंदी नीचे लिखे अनुसार तैयार होती है।

तेजी : ३, ४, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, २५, २६

तेजी : ५, ६, ७, २१, २२, २३, २४

मंदी : १, २, ८, ९, १०, ११, २०, २७, २८, २९

अच्छी मंदी : × × ×

सूचना : १ ता. २२ अक्टूबरसे मंगल कन्या राशिका होता है और गुरु वक्री निर्बल है और लग्नेश शुक्र ६ नवम्बरसे लग्नमें आता है यह तैल और तैलबीजों एरण्डा सरसों अलसी मूंगफली आदिके बाजारमें अच्छी तेजीका—खेलाका—सूचन करता है। इसलिए खरीद कर बेचना, पर बेचकर लेनेका धंधा नहीं करना।

२ ता. मंदीका तारीखमें चाहे बाजार मंदीमें जाय या नहीं तो भी खरीदना और 'अच्छी तेजी' या 'तेजी' की तारीखोंमें बेचनेसे लाभ मिलता है।

'स्पेशियल चान्स' नीचे लिखे अनुसार बताया जाता है।

खरीदो : ता. २०, २१, २४, २५ अक्टूबर

बेचो : ता. ३ नवम्बरसे किसी भी 'तेजी' और 'अच्छी तेजी' के दिनोंमें।

अटल सिद्धान्त

[लेखक—श्रीकृष्णदत्तजी शर्मा ज्योतिर्विद्]

वस्तु कोई भी हो (गुवार-मटरा, सरसों, अरहर, उड़द आदि) यह सिद्धान्त सब पर एक सा लागू होता देखा जाता है। जब मार्केट मन्दा व तेजीकी जनरल लाईन बना चुका हो और हर आठ दिनके भीतर ऊंचा या नीचा भाव बन रहा हो; यदि फिर आठ दिनके भीतर ऊंचा या निचला भाव बनना बन्द हो जावे तो नवमें दिन खुलते बाजार मंदा या तेजीके उलट डबल सौदा कर लें अवश्य लाभ प्राप्त होगा। जैसे जनरल तेजीकी लाईन चल रही हो (गुवार, मटरा, सरसों, अरहर, उड़द आदि पर) मार्केटमें आठ दिनके भीतर ऊंचा भाव बनता जाय, जा रहा हो और जब तक ऊंचा भाव बनता जाय, जा रहा हो और जब तक ऊंचा भाव बनना बन्द न हो जाय खरीदका काम चालू रखना चाहिए, उदाहरणतः प्रति सोमवारको ऊंचे नीचे भावोंको कापी पर स्मरणार्थ लिखते जावें और यदि आने वाले सोमवार को ऊंचा भाव न टूट सके और निचला भाव बन जाय तो मंगलवारको बेचका काम करना ही लाभ कारक है। किन्तु यदि उस दिन ऊंचे भावसे मार्केट ऊपर चली जाय तो ऊंचे भावसे मार्केट ऊपर जाते ही खरीदमें बैठना ही श्रेयस्कर है।

परन्तु साथ ही यह स्मरण रखना परमावश्यक है कि चलती लाईनमें जिस दिन नीचेसे नीचे या ऊंचेसे ऊंचे भाव बनें उसी दिन आगामी सप्ताह आठ दिनके उपरान्त मार्केट ऊंचेसे ऊंचा या निचलेसे निचला भाव दो दिन लगातार बढ़ कर या घट कर बन्द हो जाय तो तीसरे दिन उसी ओर की भाव क्रास करते ही वस्तु (गुवार-मटर-सरसों, अरहर, उड़द) की खरीद या बेचमें बैठना चाहिए; दश दिन तक शीघ्र लाभ प्राप्त हो सकता है।

स्मरण रहे यदि इस सिद्धान्तके साथ अनुभूत योग (ग्रह योगादि) का मिलान हो जावे तो सोनेमें सुगन्ध ही समझो, शत प्रतिशत सत्य ही सिद्ध होगा ।

उदाहरणार्थः—ता० २० मई १९५३ बुधवारके दिन गुवारका ऊंचा भाव देहलीमें ११॥-)॥ बना आगामी सप्ताह ता० २७ मईको वह ऊंचा भाव नहीं कटा अतः अगले दिन २८ मईको ऊंचे भावमें बेचने वालोंको लाभ प्राप्त हुआ और वह भाव ऊंचा अगस्त तक देखनेको भी नहीं मिला । अतः ज्योतिर्विदोंसे और व्यापारी बन्धुओंसे निवेदन है कि इस सिद्धान्तकी परीक्षा करके लाभ उठावें ।

दूसरा उदाहरणः—ता० २ अप्रैल सन् १९५३ ई० बृहस्पतिवारके दिन—मटराका ऊंचा भाव देहली में उत्तर भारत एक्सचेंजका ११॥≋)= नीचा भाव ११≋)= ग्वार वैशाखका भाव ऊंचा १२)॥। नीचा ११॥-)। आगामी सप्ताह ता० ६ अप्रैलको मटर ऊंचा १२॥)। नीचा १२≋)॥= ग्वार ऊंचा १२।) नीचा १२=)। सिद्धान्तके अनुसार आगामी प्रातः खुलते बाजार शुक्रवारको खरीद करनी चाहिए थी और वह शत-प्रतिशत ठीक उतरी गुरुवारको ग्वार खुला १२।)। और वहीं नीचा भाव रह गया ता० २७ अप्रैलको ऊंचा ग्वार १४।) मटरा १४॥)। बस स्मरण रहे आगामी सप्ताहके उसी दिनका जो निचला भाव हो वह हानिकी लिमिट रख कर सौदा करने वाले सदा ही लाभ उठाते हैं दूसरी बात तारीख २७ को ऊंचा भाव क्यों रुक गया? इसमें यह बात है कि २९ अप्रैलको १७.६ पर बुध-शुक्रकी युति हो रही थी जिसका प्रभाव तारीख २८ अप्रैल खुलते बाजार परसे पड़ रहा था। उस युतिने उस तेजीको रोककर मंदा चालू किया जो ग्वारमें ॥) का तथा मटरामें ॥=) का आया । (क्रमशः)

अनुभूत योग

[लेखक—श्री बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया गणकचूड़ामणि]

(१) शुक्र या मंगल २।१२ भावमें हों तो कर्णरोग करते हैं, अर्थात् जातकके कान बहते हैं ।

(२) मंगल कर्मेश होकर लग्नेशसे सम्बन्ध करता हो तो जातक जूआ खेलने वाला होता है ।

(३) कर्मेश यदि मंगलके क्षेत्रमें स्थित होकर लग्नेशसे सम्बंध करता हो तो जातक जूआ खेलने वाला होता है ।

(४) अष्टमेश, मंगलके क्षेत्र (१।८ राशि) में या मंगल के साथ स्थित होकर लग्नेशसे सम्बन्ध करता हो तो सट्टे-बाज होता है ।

(५) राज्येश यदि अमात्यकारक ग्रह, या अमात्यकारक स्थित राशिके स्वामीसे युत या दृष्ट हो तो राजकी नौकरीमें जातक प्रधानत्व पदको पाता है ।

(६) आत्मकारक लग्न या तत्वारूढ़ लग्नसे या इनके सप्तम स्थानसे यदि ३।६ दोनों भावोंमें पापग्रह हों तो जातक सेनाधीश होता है ।

(७) आत्मकारक ग्रह यदि अमात्यकारक ग्रहसे युत हो तो जातक सेनाधीश तथा तीव्र बुद्धि होता है ।

(८) जन्मकाल क्षीण चन्द्रमा यदि ५ या ९ वें भावमें होता है तो वह जातक स्वाभिमानी होता है ।

(९) जिसका जन्म अपररात्र (कृष्णा ८ से १४ तक) में हो और चन्द्रमा यदि मंगलसे अधिक अंशों पर होकर बुधकी ओर जाता हो तो जातक असत्य बोलने वाला होता है ।

(१०) मंगल यदि बुधसे सम्बन्ध करता हो तो जातक कपट रखने वाला होता है ।

(११) सम्पूर्ण ग्रह ७।५। ।४।८।३।१० दृष्टियोंके अतिरिक्त महर्षि पाराशर तथा जैमिनि कथनानुसार चरराशि स्थित, स्थिरराशिस्थित ग्रहोंको, तथा स्थिरराशिस्थित, चरराशिस्थित ग्रहोंको पार्श्व (२।१२) स्थित ग्रहोंको छोड़कर और द्विस्वभावस्थित ग्रह, द्विस्वभावराशिस्थित ग्रहोंको पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं । फलित ज्योतिषमें इन दृष्टियोंका भी पूर्ण प्रभाव तथा सम्बन्ध होता है इसलिए फलितके विचारमें तथा योगायोग इन दृष्टियोंका भी विचार रखना अत्यावश्यक है ।

अनुभूत योग माला

[लेखक—राजगुरु ज्योतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राज ज्योतिषी]

[ग्रीष्माङ्क से आगे]

१. जब बृहस्पति कर्क राशिमें हो, और शुक्र चतुर्थ-स्थानमें हो तब राजयोग होता है।

२. जब बृहस्पति कर्क राशिमें हो और शुक्र दशम-स्थानमें हो, तब राजयोग होता है।

३. जब बृहस्पति धनुर्धर राशिमें हो और शुक्र चतुर्थ-स्थानमें हो तब राजयोग होता है।

४. जब बृहस्पति धनुर्धर राशिमें हो और शुक्र दशम-स्थानमें हो तब राजयोग होता है।

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने,
यदा चश्मखोरा जमी वासमाने।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा,
हुआ बालका बादशाही करेगा।
(खेट कौतुक)

उपपत्तिः—शुक्र प्रभावशाली रजोगुणात्मक शुभग्रह है। वह ऐश्वर्यका अधिष्ठाता भी है।

भृगुः सुखी कान्त वपुः सुलोचनः (बृहज्जातक)

यदि वह चतुर्थ-स्थानमें हो तो राज्य-स्थानमें उसकी पूर्ण दृष्टि होनेसे राज्य-सुख होता है। यदि वह दशम-स्थानमें हो तो राज्य स्थानके साथ उसका योग-सम्बन्ध होनेसे राज्य-सुख होता है। परन्तु केवल रजोगुण वाला व्यक्ति विषयोंमें अधिक आसक्त होनेसे न्याय-पूर्वक राज्य-पालनमें असमर्थ होता है। इसलिए ज्ञानके अधिष्ठाता न्याय-प्रिय सत्व गुणात्मक प्रभावशाली शुभ वह बृहस्पतिका बल-दायक राशिमें होना आवश्यक है। कर्क राशि बृहस्पतिकी उच्च राशि है। धनुर्धर राशि मूल त्रिकोण और स्वगृह है। इन राशियोंमें बृहस्पतिके होनेसे राज-कार्य न्याय-पूर्वक उत्तम रीतिसे हो सकता है। जो जहां अधिक काल तक रहता है, वहां उसका अधिक प्रभाव होता है। बृहस्पति एक राशिमें शुक्रकी अपेक्षा बहुत अधिक समय तक रहता है। इसलिए इन योगोंमें बृहस्पतिका राशि-बल और शुक्रका स्थान-बल लिया गयाहै।

इस लेखका सार रूप खेट कौतुकके पद्यके पूर्वार्धसे सहित स्वनिर्मित श्लोकार्धः—

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने,
यदा चश्मखोरा जमी वासमाने।
इति प्रोच्यते यत् सितः खे सुखे वा,
सहायत्वतो राज्यदो ज्ञानदस्य॥

रुई, अरैराडा, तैलबीज, तैल, चांदी और सोनेकी तेजी मंदी

[लेखक—श्रीमनुभाई एस. शाह कमर्शियल एस्ट्रालाजर]

(क) जिन दिनोंमें बाजार तेजीमें जाने वाला हो वे दिन 'अच्छी तेजी और 'तेजी' के सामने बताये गये हैं।' और जिन दिनों बाजार मंदीमें जाने वाला हो वे दिन 'मंदी' और 'अच्छी मंदी' के सामने बताये गये हैं। भविष्यकी तारीखों की तेजी मंदी कोई भी दिनके भावके सम्बन्धमें समझनी चाहिये।

(ख) बाजारको गौरसे देखते रहिये। वह दिन व दिन लम्बे समयकी तेजी या मंदीमें चलता है उसे निश्चित कर लीजिये।

(१) जो बाजारमें लम्बे समयकी तेजी चलती हो तो पहले लेकर बेचिये। (लम्बे समयकी तेजी चलती हो तो पहले मत बेचिये।)

(२) जो बाजारमें लम्बे समयकी मंदी चलती हो तो पहले बेचकर खरीदिये। (लम्बे समयकी मंदी चलती हो तो पहले मत खरीदिये।)

अक्टोबर सन् १९५३, रूई बाजार
नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये]

अच्छी तेजी ४, ५, ९, १०, ११, १२, १३, १८, १९,
२९, ३०, ३१

तेजी १, २, ३, ६, ७, ८, २२, २३, २४, २५, २६,
२७, २८

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये। [मत बेचिये]

अच्छी मंदी : १४, १५, १६, १७, २१

मंदी : २०

स्पेशियल चान्स : रूई :

खरीदिये : २०, २१ अक्टूबर

बेचिये : सितम्बरकी आखिर तक।

नवम्बर १९५३ : एरण्डा, तैलबीज और तैल

इस सारे मासमें खरीद कर बेचिये [मंदीमें मत रहना]

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये।]

अच्छी तेजी : ३, ४, १२, १३, १४, १५, १६, १७,
१८, २५, २६, ३०

तेजी : ५, ६, ७, २१, २२, २३, २४

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये। [मत बेचिये।]

मंदी : १, २, ८, ९, १०, ११, १९, २०, २७, २८, २९

अच्छी मंदी : × × ×

स्पेशियल चान्स : तैलबीज और तैल

खरीदिये : २०, २१, २४, २५ अक्टूबर

बेचिये : ऊपर बताये हुए कोई भी 'अच्छी तेजी' और 'तेजी' के दिनोंमें।

दिसम्बर १९५३ : चान्दी

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये।]

अच्छी तेजी : १, २, ३, ४, ५

तेजी : ६, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १७, २२,
२३, २४, २५, २६, ३१

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये। [मत बेचिये।]

मंदी : × ×

अच्छी मंदी : ७, ८, १४, १५, १८, १९, २०, २१,
२२, ३०

स्पेशियल चान्स : चान्दी

बेचिये : १६, १७ दिसम्बर।

खरीदिये : १८ से २२ दिसम्बर तक।

दिसम्बर १९५३ : सोना

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये।]

अच्छी तेजी : १, २, ३, ४, ५, ६, १६, १७

तेजी : ९, १०, ११, १२, १३, २२, २३, २४,
२६, ३१

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये। [मत बेचिये।]

मंदी : २०, २१, २२, २७, २८, २९

अच्छी मंदी : ७, ८, १४, १५, १८, १९, ३०

स्पेशियल चान्स : सोना

बेचिये : १६, १७ दिसम्बर

खरीदिये : १८ से २२ दिसम्बर तक

जनवरी १९५४ : एरण्डा, तैलबीज और तैल

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये।]

अच्छी तेजी : १२, १३, १४

तेजी : ६, ७, ८, ९, १०, ११, २१, २२, २३,
२५, २६, २७, २८, ३१

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये। [मत बेचिये।]

मंदी : १, २, ३, १९, २० २९, ३०

अच्छी मंदी : ४, ५, १४, १५, १६, १७, १८

स्पेशियल चान्स : एरण्डा, तैलबीज और तैल

बेचिये : १२, १३, १४ जनवरी १९५४

खरीदिये : १८ जनवरी तक १९५४

नोट—१४, १५, १६ जनवरी १९५४ पर विशेष बाजारमें मंदीकी क्राईसिस भी आ जाय और बाजार बंद भी पड़ जाय। यह क्राईसिस २९ जनवरी तक रह सकती है।

(ग) जब आप खरीदनेकी इच्छा रखें तो मंदीकी तारीखोंमें ही खरीदना चाहिए।

(घ) जब आप बेचनेकी इच्छा रखें तो तेजीकी तारीखों में ही बेचना चाहिए।

(च) याद रखिये कि बाजारमें जब लम्बे समयसे तेजी चलती हो तब आगाहीमें बताये मुजिब 'अच्छी मंदी' की या मंदीकी तारीखोंमें कभी थोड़ी मंदी हो तो भी खरीदिये और बाजारमें जब लंबे समयकी मंदी चलती हो तो आगाही

व्यापारिक अनुभूत जनरल योग

गुवार-मटरा पर

[श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिर्विद्]

(१) ता. १७ अक्टूबरसे लेकर २३ अक्टूबर तक ग्वार-मटरामें तेजी चलेगी।

(२) ता. २३ अक्टूबरसे लेकर २८ अक्टूबर तक ग्वार-मटरा हर ऊंचे भावमें बेचते जाएं क्योंकि २३ नवम्बर तक अच्छी मंदी आ जावेगी। २) २॥) प्रतिमनकी मंदी की सम्भावना है अधिक भी आ सकती है। हर तेजीके उछालेमें बेचना ही चांस है। मंदीका यह स्वर्ण चांस है।

(३) ता. २३ नवम्बरसे लेकर ९ दिसम्बरके दोपहर तक हर घटे भावमें खरीदारी करना ही चांस है, क्योंकि इन १५-१६ दिनमें ही ग्वार-मटरा पर २) २॥) प्रतिमनकी तेजीका स्वर्ण चांस है योग अनुभवसिद्ध परीक्षित है।

(४) ता. ९ दिसम्बरके दोपहरसे गुवार-मटराका बाजार बदलेगा और ऐसा बदलेगा जो स्मरण रहेगा, इसका प्रभाव ता. १२ दिसम्बर तक ही समझो। स्मरण रहे यह मंदी खेलनेका है मंदी वालों! चेतो।

(५) ता. १४ दिसम्बरसे लेकर ता. २३ दिसम्बर तक बाजारका रुख तेजीकी ओर ही रहेगा, मार्केटका रुख देखकर सौदा करनेकी राय है।

(६) ता. २४ दिसम्बरसे लेकर ४ जनवरी तक मंदेकी लाईन है।

(७) ता. ५ जनवरीसे लेकर १४ जनवरी तक तेजीका वातावरण रहेगा। परन्तु तारीख ७ को मंदा आवे। स्मरण रखने वाली यह बात है कि २३ नवम्बर तक जो ग्वार-मटर के निचले भाव बन जावेंगे-वह फिर १४ जनवरी तक देखने को भी नहीं मिलेंगे अतः व्यापारी बन्धुओंको चाहिए कि २३ नवम्बरके उपरान्त हर घटे भावमें खरीदारीका काम ही करना चाहिए। विशेष विवरणके लिए हमारी स्पैशल रिपोर्ट पाक्षिक-साप्ताहिक वा दैनिक हर वस्तुकी, मंदे-तेजी लगानेके अनुभव सिद्ध परीक्षित दिन, श्री स्वाध्याय सदन द्वारा २५) भेजकर एक वस्तुकी एक मासकी मंगवा सकतेहैं।

×

में बतायी हुई 'अच्छी तेजी' और 'तेजी' की तारीखोंमें कभी कम तेजी हो तो भी बेचिये।

(छ) आपको व्यापार 'तेजी मंदी' या 'मंदी तेजी' की तारीखोंके अनुसन्धानमें पूरा करना चाहिये। उसका ख्याल रखिये। चाहे बाजारकी चाल आपको अनुकूल हो या प्रतिकूल।

(ज) एक ही तारीख दो जगह पर बताई गई हो तो बाजार दो पहर तक बदल जायगा ऐसा समझ लेना। जो बाजार तेजीमेंसे मंदीमें जा रहा हो तो पहले मंदी और पीछे तेजी होगी ऐसा समझना। और मंदीमेंसे तेजीमें जा रहा हो तो पहले तेजी और पीछे मंदी होगी ऐसे समझ लेना।

—

शरीर जलसे पवित्र होता है और बुद्धि ज्ञानसे, इसी प्रकार आत्मा सत्यसे पवित्र होती है।

× × × ×

संसारमें वस्तुओंका संग्रह उतना ही करो जितने दिन तुम्हें जीना है।

धर्मके मुख्य ३ अंग हैं दया दान और शुचि। यदि तुम्हें लोक और परलोकमें सुख तथा शान्ति पाना है तो इसे सर्वदा अपनाओ।

× × × ×

संसारमें सबसे बड़ा पाप असत्य है अतः उसे त्याग दो और सबसे बड़ा पुण्य सत्य है अतः सर्वदा उसे अपनानेकी चेष्टा करो।

× × × ×

बड़ोंका आदर उनकी आज्ञापालन और सेवासे आत्मा को शक्ति मिलती है। यदि तुम आत्मशक्ति चाहते हो तो उनकी उपेक्षा कभी न करो।

× × × ×

"प्रत्येक मन्वन्तरके युगोंमें मनुष्यायुःकी भिन्नता"

[ले०—श्रीपं०चिमनलालजी शर्मा ज्योतिषी गणितमार्तण्ड]

ब्रह्माके एक दिनमें चतुर्दश मनु और पंचदश संधियें व्यतीत होती हैं। चारों युग इकहत्तर बार व्यतीत हों तब एक मनुके वर्ष होते हैं। मनुके आद्यान्तमें एक संधि होती है, संधिके वर्षोंका प्रमाण सत्ययुग तुल्य होता है। इस वर्ष तक कल्पारम्भसे ६ मनु और सात संधियें गत हो चुकी हैं और सातवें मनुकी सत्ताईस चतुर्युगियाँ भी व्यतीत हो चुकी हैं अठाइसवें सत्ययुग त्रेता द्वापर भी गत होकर कलियुग के ५०५४ वर्ष भी व्यतीत हो चुके हैं अर्थात् कल्पारम्भको हुए एक अरब सतानवें करोड़ उनतीस लाख उनञ्चास हजार चौवन (१९७२९४९०५४) वर्ष हो चुके हैं। सृष्ट्यारम्भको हुए एक अरब पचानवें करोड़ अठावन लाख पचासी हजार चौवन (१९५५८८५०५४) वर्ष हो चुके हैं।

जनसमुदायमें विशेषतया यह धारणा देखी जाती है कि सत्ययुगमें मनुष्योंकी आयु अधिक होती है और त्रेतादि में न्यून होती है इस धारणामें सत्यासत्य विद्यमान है, क्योंकि प्रत्येक मनुके सत्य त्रेतादि युगोंमें मनुष्योंकी आयु में भिन्नता है। वह मन्वन्तर भी है जिसके आद्ययुगमें एक लाख वर्ष मनुष्यकी आयु लिखी है और वह मनु भी है जिसके सत्ययुगमें चार सौ वर्ष नरकी आयु मानी है। इसी प्रकार त्रेता द्वापरमें भी। कलियुगमें मनुष्योंकी आयु मनुभेदसे पचहत्तर वर्षसे अढ़ाई हजार (७५—२५००) वर्ष तक लिखी है। कितने विद्वानोंके मनमें यह धारणा देखी गई है कि प्रत्येक कल्पमें षष्ठ मनुतक मनुष्योत्पत्तिका अभाव था, सातवें मनुमें मनुष्यसृष्टिका होना लिखते हैं, यह धारणा उनकी अनार्ष है आर्ष ग्रंथोंमें प्रत्येक कल्पके प्रथम मनुमें मनुष्योंकी उत्पत्ति मानी है। वराह नृसिंह मत्स्य कूर्म परशुरामादि अवतारोंकी उत्पत्ति भी मन्वन्तर भेदसे है, पूर्वोक्त भावोंकी पुष्टिके लिए आर्ष वचन लिखे जाते हैं ताकि पाठकोंको सन्देहोत्पत्ति न हो सके। प्रथम स्वायंभुव मनुमें वाराह अवतार हुए, द्वितीय स्वारोचिषमें नृसिंहावतार, चतुर्थ-तामस मनुमें मत्स्यावतार, पंचम रैवतमनुमें कूर्मावतार, षष्ठ चाक्षुष मनुमें परशुरामावतार, सातवें (वर्तमान) वैवस्वत मनुमें वामन, श्रीराम, श्रीकृष्ण, कल्की अवतार। प्रमाण यथा—'स्वायंभुवमनोर्मध्ये वाराहोऽभूत्स वै भुवि" "स्वारोचिषमनोरन्ते नृसिंहोऽभूत्स वै भुवि" "तामसान्तेऽभवन् मत्स्यः स वै भुवि सनातनः" "रैवतान्तेऽभवत्कूर्मः स वै भुवि सनातनः" "चाक्षुषान्ते जामदग्न्योऽभवद्रामः स वै भुवि" "वैवस्वतमनोरादौ वामनोऽभूत्स वै भुवि" "वैवस्वतमनोर्मध्ये रामो दाशरथिर्भुवि" "वैवस्वतमनोर्मध्ये कृष्णोऽभूद्भुवि स प्रभुः" इति भविष्य पुराणे ॥

प्रत्येक मनुके चारों युगोंमें मनुष्योंकी आयु भिन्न भिन्न लिखी है यथा—

"स्वायंभुवान्तरे यद्वै जातं जातं चतुर्युगम्।
तस्मिंश्चतुर्युगे सर्वे नृणामायुर्हरे श्रृणु ॥
लक्षाब्दं वै सत्ययुगे त्रेतायामयुताब्दकम्।
द्वापरे च सहस्राब्दं कलौ आयुश्शताब्दकम्।
स्वारोचिषेन्तरे देव जातं जातं चतुर्युगम्।
श्रृणु तत्र नृणामायुस्सत्येऽशीति सहस्रकम् ॥
त्रेतायांच तदर्द्धाब्दं द्वापरे तु तदर्द्धकम्।
कलौ द्विकसहस्राब्दं नृणामायुः प्रकीर्त्तितम् ॥
औतमस्यान्तरे चैव सत्ये षष्टिसहस्रकम्।
त्रेतायां च तदर्द्धाब्दं द्वापरे तु तदर्द्धकम् ॥
कलौ सार्द्ध सहस्राब्दं नृणामायुः प्रकीर्त्तितम्।
तामसान्तरके चैव षट् त्रिंशाब्दसहस्रकम् ॥
रैवतान्तरके चैव सत्ये त्रिंशत्सहस्रकम्।
त्रेतायां च तदर्द्धाब्दं द्वापरे च तदर्द्धकम् ॥
कलौ चाष्टशताब्दायुर्नृणां वेदैः प्रकीर्तितम्।
चाक्षुषान्तरके चैव सत्ये तुर्यसहस्रकम् ॥
त्रेतायां त्रिसहस्राब्दं द्वापरे द्विसहस्रकम्।

कलौ सहस्रवर्षान्तं नृणामायुः प्रकीर्त्तितम् ॥
वैवस्वतेऽन्तरे चैव सत्ये तुर्यसहस्रकम् ।
त्रेतायां त्रिशताब्दं च द्वापरे द्विशताब्दकम् ॥
कलौ शताब्दकं प्रोक्तमायुर्वेदैस्तथा नृणाम् ।
सावर्णिके ऽन्तरे देव नृणां विंशत्सहस्रकम् ॥
आयुः सत्ये तदर्द्धं तु त्रेतायां च प्रकीर्त्तितम् ।
द्वापरे च तदर्द्धाब्दं तदर्द्धाब्दं तु वै कलौ ॥
ब्रह्मसावर्णिके चैव सत्ये दश सहस्रकम् ।
त्रेतायां च तदर्द्धाब्दं द्वापरे तु तदर्धकम् ॥
कलौ चैव तदर्द्धाब्दं नृणामायुः प्रकीर्तितम् ।
दक्षसावर्णिके चैव तथाब्दायुश्चतुर्युगे ॥
रुद्रसावर्णिके चैव सत्ये चाष्टसहस्रकम् ।
त्रेतायां च तदर्धाब्दं द्वापरे च तदर्धकम् ॥
कलौ तदर्धकं ज्ञेयं नृणामायुः पुरातनम् ।
धर्मसावर्णिके चैव तथाब्दायुश्चतुर्युगे ॥
भौम मन्वन्तरे चैव सत्ये तुर्यसहस्रकम् ॥
त्रेतायां त्रिसहस्राब्दं द्वापरे च तदर्धकम् ॥
कलौ तदर्धकं ज्ञेयं नरायुश्चार्षसम्मतम् ।
भौतमन्वन्तरे चैव सत्ये तुर्यसहस्रकम् ॥
त्रेतायां त्रिशताब्दं च द्वापरे तु तदर्धकम् ।
तदर्द्धकं कलौ घोरे नृणामायुः प्रकीर्तितम् ।"
इति भविष्यपुराणे ।

सुगमताके लिए चक्र स्पष्ट लिखा जाता हैं ।

मनु,	मनुष्यायु सत्ययुग,	मनुष्यायु त्रेता०,	मनुष्यायुःद्वापर,	मनुष्यायुकलि
१ स्वायम्भुव,	१००००० वर्ष,	१०००० वर्ष	१००० वर्ष,	१००
२ स्वारोचिष,	८००००,	४००००,	२००००,	२०००
३ औत्तम,	६००००,	३००००,	१५०००,	१५००,
४ तामस,	३६०००,	१८०००,	९०००,	१०००,
५ रैवत,	३००००,	१५०००,	७५००,	८००,
६ चाक्षुष,	४०००,	३०००,	२०००,	१०००,
७ वैवस्वत,	४००,	३००,	२००,	१००,
८ सावर्णिक,	२००००,	१००००,	५०००,	२५००,
९ ब्रह्मसावर्णिक	१००००,	५०००,	२५००,	१२५०,
१० दक्ष सावर्णिक,	१००००,	५०००,	२५००,	१२५०,
११ रुद्र ,,	८०००,	४०००,	२०००,	१०००,
१२ धर्म ,,	८०००,	४०००,	२०००,	१०००,
१३ भौम ,,	४०००,	३०००,	१५००,	७५०,
१४ भौत ,,	४००,	३००,	१५०,	७५,

प्रत्येक मन्वन्तरमें सप्तर्षि भी पृथक् होते हैं यथा—
"मन्वन्तरेषु सर्वेषु सप्त सप्त महर्षयः ।
कृत्वा धर्म व्यवस्थानं प्रयांति परमं पदम् ॥"
(मत्स्य पुराणे)

वर्तमान वैवस्वत मनुमें यह सप्त महर्षि हैं यथा—
वसिष्ठः काश्यपोऽथात्रिर्जमदग्निः स गौतमः ।
विश्वामित्र भारद्वाजो मुनयः सप्त सांप्रतम्"

पद्म पुराण, मत्स्य पुराण महाभारतादिमें भी उपरोक्त भावके पोषक प्रमाण लिखे हैं ॥

मार्कण्डेय पुराणमें एक कथा लिखी है—ऋतवाक् मुनि के पुत्र उत्पन्न हुआ जातकर्मादि संस्कार किये, शुभ लक्षण नहीं हुए, माता कष्टसे युक्त रही, आप भी कष्टी रहा । पुत्र-चरणसे दुःखी होकर पिताने ऋषियोंसे पूछा क्या कारण है ? मुनियोंने कहा कि रेवती नक्षत्रमें जन्म होनेसे बुरा है ।

पाश्चात्य ज्योतिष

संसारमें प्रायः दो प्रकारके व्यापारी हैं। उनमें प्रथमवर्ग के जो व्यापारी हैं, वे यद्यपि जिन वस्तुओंका व्यापार करते हैं, उनकी पैदावार, खर्च तथा स्वदेश-परदेश-परिस्थिति, यातायात आदि विषयोंका गम्भीर अध्ययन करके ही काम करते हैं। तथापि समय समय पर असम्भाव्य घटनावश बाजारके भावोंमें ऐसे ऐसे उलट फेर हो जाते हैं कि जिनका ध्यान पहिले नहीं होता। इस लिए उनको भविष्यज्ञान आवश्यक है।

और द्वितीयवर्गके वे व्यापारी हैं, जो कि प्रायः प्रमुख व्यापारियोंके अनुसार अथवा इधर उधरकी खबरें, आदिके आधार पर करते हैं और भविष्यके लिए भविष्यज्ञान अत्यन्त ही आवश्यक है। और भविष्यज्ञानका साधन एकमात्र ज्यौतिष ही है, यह सर्वसाधारणको विदित है।

यद्यपि ज्यौतिष शास्त्र महान् गम्भीर तथ्य है, उसके अनुसार सर्वतोभावेन विचार करना बड़ा दुरूह है, और अत्यन्त परिश्रमसाध्य भी है। और आजकलकी व्यापारिक स्थिति प्राचीन कालकी स्थितिसे सर्वथा विलक्षण है, अतः क्षण क्षणमें होने वाली व्यापारिक घटा बढ़ीका प्राचीन रीतियोंसे विचार करना असम्भव है। किन्तु जिस तरह वैद्य और डाक्टर लोग नये नये अविष्कार पर आविष्कार करके साम्प्रतमें उत्पन्न होने वाली नई नई व्याधियों पर विजय प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार हमें भी प्राचीन आचार्योंकी रीति के आधार पर वर्तमान समयकी व्यापारिक परिस्थिति के अनुकूल व्यवस्थाका अविष्कार कर लेना चाहिए, और उसे समय समय पर होने वाली घटनाओंसे मिलान करके निश्चित कर लेना चाहिए।

यद्यपि व्यापार नाम किसी वस्तुके खरीदने और बेचने का है, किन्तु आज कल बहुत समयसे वस्तुके लेन देनके विना भी एक प्रकारका व्यापार होता है, जिसे फाटका कहते हैं। और जिस वस्तुका सट्टा या फाटका होता है, उसका

ऋतवाक् ऋषिने रेवती नक्षत्रको शाप देकर आकाश मंडल से गिरा दिया। प्रमुचि मुनिकी एक कन्या थी उसका विवाह होने लगा तो कन्याने कहा रेवती नक्षत्रमें हो, पिता कहता है और विवाहके नक्षत्र हैं उनमें विवाह कर लो परन्तु कन्या नहीं मानी, फिर पिताने ऋतवाक् ऋषिने जो रेवतीको शाप दिया था वह कहा। तब कन्या पिता को कहती है यदि ऋतवाक् ऋषि शाप दे सकता है तो क्या आप वर नहीं दे सकते। प्रमुचिके वरसे रेवती आकाशमें गई और फिर कन्या का विवाह रेवती नक्षत्रमें हुआ यह कथा पांचवें मन्वन्तर की है इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि पांचवें मन्वन्तरमें भी मनुष्य सृष्टि थी।

प्रत्येक मन्वन्तरमें इन्द्र सप्तर्षि आदि भी पृथक् पृथक् नामके होते हैं। पुराण महाभारतादिमें जो जो चरित्रादि अवतारों मुनियों और राजादिके लिखे हैं उसको समझनेके लिए यह लेख विशेष लाभप्रद रहेगा और जिन विद्वानों की यह धारणा है कि मनुष्य सृष्टि सप्तम वैवस्वत मनुमें ही उत्पन्न हुई है उससे प्रथम षष्ठ मनु तक मनुष्य सृष्टि संसार में नहीं थी उनका भ्रम भी दूर हो जाता है। सारांश यह है कि मनुष्य सृष्टि "यथा पूर्वमकल्पयत्" वेद वचनानुसार प्रथम स्वायम्भुव मनुमें ही हुई है॥

—

प्रभाव उस वस्तुके तैयारी भावके ऊपर भी पड़े विना नहीं रहता अतः प्रायः प्रत्येक व्यापारीको होने वाली व्यापारिक घटा-बढ़ीका भविष्य जानना आवश्यक है, और तभी वह सफलता पा सकता है।

इस प्रकार संक्षेपमें व्यापारिक भविष्य ज्ञानकी आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त करके आपसे यह भी अनुरोध करते हैं कि जिस तरह व्यापारिक भविष्य जानना आवश्यक है, उसी प्रकार, प्रत्युत उससे भी अधिक आवश्यकता अपने भविष्यके सम्बन्धमें भी ज्ञान प्राप्त करनेकी है। अधिक सम्भव है कि आज कलकी शिक्षासे शिक्षित नवीन विचार वाले महानुभाव हमारी इन बातोंको हास्यास्पद समझें, किन्तु हम उन्हें बलात् मनानेके लिए बाध्य नहीं करते। केवल इतना अवश्य निवेदन करते हैं कि 'हाथ कंगनको आरसी क्या' आप इसमें लिखे योगोंका मिलान करके देखिये, पीछे मतामत स्थिर करियेगा।

किसी भी वस्तुकी तेजी और मन्दी देखनेके लिए भारतीय आचार्योंने अनन्त प्रकार बताये हैं। वे रीतियां सर्वसाधारणके लिए समझनेमें प्रायः कठिन और विस्तृत हैं, तथा विना ज्यौतिष विषयक ज्ञानके उनको समझना प्रायः सम्भव नहीं है। इस लिए हम आपके सामने पाश्चात्य विज्ञानकी सरल प्राणाली रख रहे हैं, जिसे प्रायः एक सप्ताहमात्र परिशीलन करके ही यदि भाग्य अनुकूल हुआ तो आशानुरूप लाभ उठा सकेंगे।

प्रथम आपको निम्नलिखित चिन्होंके नाम और स्वरूप याद कर लेना चाहिए।

आपको यह जान लेना चाहिये कि पाश्चात्य प्रणाली में मेष आदि बारह राशियां (House) सूर्य आदि दश ग्रह (स्वामी) तथा इन ग्रहोंकी परस्पर दृष्टि—(एस्पेक्ट) प्रायः तेरह प्रकार की होती हैं।

यथा:—१२ राशियां—

सं०	भारतीय—	अंग्रेजी नाम—
१	मेष	एरियस
२	वृष	टारस
३	मिथुन	जैमिनी
४	कर्क	कैन्सर
५	सिंह	लीयो
६	कन्या	विर्गो
७	तुला	लाइब्रा
८	वृश्चिक	स्कारपीयो
९	धनु	सेजिटेरियस
१०	मकर	कैपरिकार्न
११	कुम्भ	एक्वरियस
१२	मीन	पिस्सेज

अब इसी प्रकार ग्रहों के नाम आदि नीचे लिखे जाते हैं—

सं०	ग्रहनाम (भार०)	अंग्रेजी नाम।
१	सूर्य	सन्
२	चन्द्रमा	मून
३	बुध	मर्करी
४	शुक्र	व्हीनस
५	मंगल	मार्स
६	वृहस्पति	जुपीटर
७	शनि	शटर्न
८	इन्द्र	हर्षल यूरेनस
९	वरुण	नेपच्यून
१०	यम	प्लूटो

ऊपर लिखे अनुसार आपने जान लिया है कि यूरोपीय ज्यौतिषमें और भारतीय ज्यौ० में राशि दोनोंमें समान हैं, और यूरो० ज्यो० में राहु तथा केतुग्रह को नहीं माना है' तथा यूरेनस और नेपच्यून ये दो ग्रह विशेष माने गये हैं। कुछ वर्षोंसे प्लूटो नामका १० वां ग्रह भी माना जाता है।

संख्या	नाम	अन्तरांश
–१	श्रेष्ठ, परलल	१,
–२	श्रेष्ठ, कन्जक्सन	०'
३	श्रेष्ठ, सेमी सिक्सटाइल	३०'
४	१, सेमी क्विण्टल	३६'
५	नेष्ट, सेमी स्क्वायर	४५'

–६	श्रेष्ठ, सिक्स टाइल	६०
७	सा, श्रेष्ठ क्विण्टल	७२'
–८	नेष्ट स्क्वायर	९०'
–९	श्रेष्ठ, ट्राइन	१२०'
१०	नेष्ट, सस्कीक्वड्रेट	१३५'
११	सा, श्रेष्ठ, वाई क्विण्टल	१४४'
१२	नेष्ट क्विंकंक	१५०'
१३	नेष्ट अपोजिशन	१८०'

ऊपर १३ योग दिखाये गये हैं, इनमें से परलल, कञ्जंक्सन, सिक्सटाइल, स्क्वायर, ट्राइन और अपोजीसन इन छः योगों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। क्योंकि ये छः योग ही वास्तविक दृष्टि सम्बन्धसे सम्बन्धित हैं, और इन योगोंका प्रभाव भी विशेष देखनेमें आता है। अर्थात् भारतीय ज्यौतिष सिद्धान्तके अनुसार ग्रहों के जो दृष्टि योग कहे हैं, उनके समान ही ये योग हैं। जैसे किः—

१—कञ्जक्सन—जब दो ग्रह किसी भी एक राशि में समान अंश पर हों तो 'कञ्जक्शन' योग होता है यह योग हमारे भारतीय ज्यौतिषमें 'ग्रहयुति' नामसे कहा गया है।

२—परलल—जब दो ग्रह परस्पर सक्षम होकर एक उत्तरायण और दूसरा दक्षिणायन हो तब 'परलल' योग होता है। इस योगका भा० ज्यौ० में सप्तम (पूर्ण) दृष्टिमें अन्तर्भाव है।

३—सिक्सटाइल किसी एक ग्रहसे दूसरा ग्रह ६० अंश की दूरी पर हों तब 'सिक्सटाइल' योग होता है। यह तृतीय (एक पाद) दृष्टिके अन्तर्गत है।

४—स्क्वायर—किसी एक ग्रहसे दूसरा ग्रह ९० अंश की दूरी पर हो तो 'स्क्वायर' नामक योग होता है इसका अन्तर्भाव (४-१०) चतुर्थ दशम दृष्टिमें होता है।

५—ट्राइन—किसी एक ग्रहसे दूसरा ग्रह १२० अंश की दूरी पर हो तो 'ट्राइन' योग होता है। इस योगमें और नवम पञ्चम (५-९) दृष्टि में कोई भेद नहीं है।

६—अपोजिसन—दो ग्रह परस्पर १८०' अंश... दूरी पर हो तो 'अपोजिसन' योग होता है सप्तम दृष्टि और इसमें कोई भेद नहीं है।

इन उपर्युक्त छः योगोंमें जो भारतीय ज्यौतिष सिद्धान्तके अनुसार दृष्टि सम्बन्ध दिखाया है, सो इतना कि... है कि—पाश्चात्य सिद्धान्तमें तो केवल मात्र कथित अंशों... दूरीका नाम ही योग है उससे एक अंश भी न्यून या अधिक होनेसे उसका नाम योग ही नहीं रहता है। और भारतीय ज्यौतिष सिद्धान्तके अनुसार कुछ अंशोंके कम या अधिक होनेसे दृष्टिके बलमें ही न्यूनाधिक होता है, किन्तु दृष्टि सम्बन्ध रूप योग तो बना ही रहता है। परन्तु योगों... पूर्णता तो भारतीय ज्यौतिष सिद्धान्तमें भी ठीक उतने ही अँशों पर मानी गई है। अतः सिद्धान्तमें नामभेदसे एक ही रूप है।

इनके अतिरिक्त सेमी सिक्सटाइल, सेमी क्विन्टल सेमी स्क्वायर, क्विण्टल सस्की क्वड्रेट, वाई क्विण्टल और क्विंक नामके सात योग और बताये गये हैं। इनमें सेमी सिक्सटाइल सेमी क्विण्टल और सेमी स्क्वायर तो सिक्सटाइल, क्विण्टल, और एस्क्वायर के अर्द्ध भाग रूप हैं। और वाई क्विण्टल योग केवल मात्र क्विण्टलका ही द्विगुण रूप है। किन्तु क्विण्टल- सस्की क्वड्रेट और क्विंकंक ये तीन स्वतन्त्र योग हैं।

इनमें क्विकंक योग जो कि १५०' अंश पर होता है वह तो प्रायः अपने छठे स्थानसें पड़ता है, और छठे स्थान में ग्रह दृष्टिका सर्वथा अभाव है इसलिए यह योग उपेक्षा योग्य है। और शेष योग राशिके या तो प्रायः मध्यभागमें पड़ते हैं, या दृष्टि हीन स्थानसे पड़ते हैं, अतः उपेक्षा ही योग्य हैं। इस लिए इन सात योगोंको छोड़कर ऊपर लिखे हुए छः योगोंका ही फलाफल लिखेंगे। प्रथम राशि और ग्रहोंके स्वभाव आदि लिखते हैं।

तत्व—	राशि—
अग्नि—	मेष, सिंह, धनुः।
पृथ्वी—	वृष, कन्या, मकर
वायु—	मिथुन, तुला, कुम्भ,

जल—कर्क, वृश्चिक, मीन ।

शर—मान—(मध्यम मान)

उत्तर (नार्थ) राशि स्वामी दक्षिण (साऊथ)

चन्द्र—५।१७———————४——— —५।१२

मंगल—६।३१————————१।८————६।४७

बुध—७।०— — ——३।६————————७।०

गुरु— १।४०———————६।१२———–१।३८

शुक्र– ६।२————————२।७—————— —८।५५

शनि—२।५२———————१०।११—— – २।५२

यूरेनस—२।५२—————१०।११—————२।५२

नेपच्यून—६।१२—————६।१२·—·——१।४०

प्लूटो·——१।८————————१।८—————६।४७

ग्रह——　　　　　स्वामित्वः—

सूर्य—लाइफ और सोना खनिज

चन्द्र—उपज, दिमाग और चान्दी ।

बुध—गेहूं, चना, खाद्य पदार्थ ।

शुक्र—सुन्दरता, प्रेम, कपड़ा, जूट, सूती, रुई ।

मंगल—युद्ध, प्राकृतिक, आयरन, स्टील, मैशीनरी

गुरु—टीन रबर सोना ।

शनि– दुर्भाग्य, मृत्यु, ताम्बा ।

यूरेनस—इलेट्रिक का सामान ।

नेपच्यून—चाय, शराब गांजा भांग ।

राहु—प्रकृति जूवा मद्य ।

राशि—स्वामित्व ।

मेष—आयरन, स्टील, मैशीनरी ।

वृष—मुद्रा, धनसम्बधी, कपड़ा जूट, सूत,

मिथुन—कागज, प्रकाशन ।

कर्क—चांदी चाय ।

सिंह—सोना धातु ।

कन्या—रूई की पैदावार वस्त्र ।

तुला—खाद्य गेहूं, चना. चावल ।

वृश्चिक—औषध, तेल, सुपारी, सरसों, रुई ।

धनु—बीमा, सामुद्रिक, व्यापार ।

मकर—गन्तव्य स्थान, ताम्बा ।

कुम्भ—इलेट्रिक, सामान ।

मीन—मछली, शराब ।

ऐस्पेक्ट

दो ग्रहोंके मध्यमकी आंशिक दूरीका नाम ऐस्पेक्ट है ।

१—कँन्जक्सन (युति) जब दो ग्रह एक राशिमें समान अंश पर हों ।

२—परलल—जब दो ग्रह समसप्तम होकर उत्तरायण और दक्षिणायन हों ।

सिक्सटाइल—दो ग्रह ६०' अंश की दूरी पर हों । (तृतीय दृष्टि)

४—स्क्वायर——एक से दूसरा ग्रह ९०' अंशकी दूरी पर हो । (४ दृष्टि)

५—ट्राईन—एकसे दूसरा ग्रह १२०' अश पर हो । (५ दृष्टि)

६—अपोजिसन एकसे दूसरा ग्रह १८०' अंश पर हो । (७ म दृष्टि)

१…सब ग्रह सप्तम स्थानको पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं ।

पृ०—शनि ३-१०। गुरु ९-५। मंगल ४-८ पूर्ण दृष्टि देखते हैं ।

★

"आर्य-जाति के लक्षण"

जिस मनुष्य-जातिमें रजोवीर्य शुद्धि मूलक जाति-भेदका सिद्धान्त, सतीत्वधर्ममूलक स्त्री जाति की पवित्रता, प्रवृत्ति-मूलक ब्रह्मचर्य एवं गृहस्थाश्रम और निवृत्तिमूलक वानप्रस्थ एवं संन्यास-आश्रम ऐसे धर्मके लक्षण पाए जाते हों, वही मनुष्य जाति आर्य जाति कहलाती है ।

"ब्रह्मचर्य"

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत ।

ब्रह्मचर्यका प्रधान अङ्ग वीर्यरक्षा है । 'मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दु धारणात्' अर्थात् बिन्दुको रक्षा ही जीवन एवं बिन्दुका पतनही मृत्यु है ।' भगवान् शङ्कर कहते हैं, बिन्दु (वीर्य) सुरक्षित रखनेसे त्रिभुवनमें कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो सिद्ध न हो सके । ब्रह्मचर्यके प्रसादसे मनुष्य ईश्वर तुल्य हो जाता है, मेरी जो महिमा आप देखते हैं, ब्रह्मचर्य की ही है ।

चांदी सोनेका त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[ले०—राजवैद्य डा० अमरदत्तमिश्र एच.एम.डी.एस, कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर]

Bullion forecast

All respeonsibtlities Lie on actors

श्रीस्वाध्यायके ग्रीष्मांकमें जो लेख पाठकोंकी दृष्टिमें होगा, उससे पाठकोंको अनुभूति हुई होगी कि ज्योतिष शास्त्र एक बड़ा भारी विज्ञान है जिसके द्वारा हम अपने आपको एवं राष्ट्रको कई आपत्तियोंसे बचा सकते हैं एवं आर्थिक दृष्टिकोणसे उन्नत कर सकते हैं। यदि हम उसकी सम्यक् परिधिमें हों तो, आज विदेशोंमें इस विज्ञानका अन्वेषण हो रहा है किन्तु भारतमें नहीं और न वहांकी उपयुक्तता हमारे लिए हितकर हो सकती है, हमारी राष्ट्रीय सरकारका कर्तव्य है कि मानव जगत्की उन्नतिके मूलभूत विज्ञानके लिए इसे अपनाकर अन्य देशोंके समान यहां भी ज्योतिष (Astrology & Astronomy) शास्त्र का राजकीय वेधशाला द्वारा अनुसंधान हो जिसके द्वारा भारतीय गणतंत्र राज्यको ईश्वरीयदत्त प्रकाशमें अग्रसर होने का सुअवसर मिले। भारत और भारतीय एवं आर्य संस्कृति कर्मनिष्ठ सत्ता पर आधारित है कर्म करने वाले ही धर्म (Duty) का पालन कर सकते हैं अन्य नहीं; अतः प्रजा-तन्त्र राज्योंका कर्त्तव्य है कि तत्तद्देशीय प्रजातन्त्रकी आधारशिला आर्य संस्कृतिका उत्थान करना ही भारतकी उन्नति है। अतः इस गणतंत्र राज्यके संवाहक गणोंको स्वतः ही ईश्वरीय प्रेरणा मिले ताकि वे आर्य संस्कृतिके उत्थानमें अपना पूर्ण कर्तव्य निभावें। विषयान्तर चला गया था, अब पाठकोंकी सेवामें अपने विचार उपस्थित करता हूं इनसे आप अपना हित साधन करते-करते श्रीस्वाध्यायकी हार्दिक सेवार्थ प्रत्येक पाठक ग्राहकसंख्या बढ़ावें जिससे हमारा यह वैज्ञानिक पत्र श्रीस्वाध्याय आपके लिए भावी संदेशवृत्त निरन्तर भेजता रहे। आशा है पाठक मेरे विचारों से अवश्य ही सहमत होंगे।

नवम्बरकी ग्रहस्थिति पर चांदी सोनेका व्यापार भविष्य

सूर्य वृश्चिक Scorpioमें २२ तक है २३को धनमें प्रवेश करेगा। Bullish तेजी कारक है हर्शल कर्कमें है और वक्री है (in canees With Retrograde Motion) Bullish तेजी कारक है शनि वृश्चिक (Scorpio) में हैं और इसी में ही रहेगा—Bullish तेजी कारक है। गुरु मिथुन (Gemini) में हैं वक्री भी है। Fluetuations with Bullish घटाबढ़ी तेजी सह शुक्र तुला (Libra) में हैं ता० ११ तक पुनः यह भी वृश्चिकमें प्रवेश करता है। First Beavish then Bullish पहिले मंदीकारक पुनः तेजी कारक होता है—

बुध धनुः (Sagittarius) Double bodied Sign) द्विस्वभाव घटबढ़कारी है यह ६ तक रहेगा और ७ को वृश्चिक Scorpio में प्रवेश करता है और ६ को अस्त भी होता है—शनि ६ को पूर्वोदय होगा एवं बुध भी २० को पूर्वोदय होगा। उपरोक्त ग्रह योग इस मासमें तेजी कारक हैं। २२ से बाजारमें परिवर्तन होगा और पहिले ७ से बाजार तेजीमें बदलेगा। पुनः ६ को भी बाजार एक दम बदलेगा सम्भव है २४ घंटे पूर्व ही बदल जावे यहां अच्छा परिवर्तन होना है। विशेष जानकारी के लिये हमारी Speial Report श्रीस्वाध्याय द्वारा हमसे मंगावें जिसके लिए आपको ३५) रु० मनीआर्डरसे भेजना पड़ेगा, जिसमें दैनिक तेजी मंदी पूर्ण विवरण सह आपको मिलेगी और उसके आधार पर यदि ध्यानपूर्वक काम किया तो अवश्य ही धनकी प्राप्ति निश्चित है।

दिसम्बर के ग्रहयोग और चांदी सोने का भविष्य

सूर्य धनुमें Sagittariu २२ तक रहेगा पुनः मकर Copricorn में प्रवेश करता है पूर्वमें घटबढ़ फिर तेजी। हर्शल कर्क Cancer में है यह Bullish तेजी कारक है घट बढ़ के साथ।

मंगल २० तक तुला में रहेगा Bearish मंदी पुनः

श्चिक Scorpio में जाता है Bullish तेजी कारक बुध १० तक वृश्चिकमें रहेगा पुनः Sagittarius धनुमें जाता है Bullish & Bearish तेजी मन्दी गुरु मिथुन में है "Gemini with Retrograde Motion" Bullish तेजी घटा बढ़ीके साथ शुक्र वृश्चिकमें है ५ तक फिर धनुमें प्रवेश करता है Bullish & Bearish तेजी फिर मन्दी घट बढ़ सह शनि वृश्चिकमें हैं यह विशेष तेजी कारक है Havoc Bnllish विशेष तेजी कारक हैं बुध २३ को अस्त होता है पूर्व Bullish तेजी कारक है।

उपरोक्त ग्रह गतिसे प्रतीत होता है कि बाजारमें विशेष घटाबढ़ी होगी। प्रारम्भमें घट बढ़ चलेगी पुनः बाजार ७ को बदलेगा यहाँ विशेष घटबढ़ की सम्भावना है। इसके बाद बाजार २३से फिर बदलेगा तेजी में। शनि सायन वृश्चिक राशि में तेजी कारक है यह बाजारको नीचे जानेसे रोकेगा। गुरु सायन मिथुनमें है यह भी चांदी सोनेमें घट-बढ़ के साथ तेजी करेगा यदि गुरु मंदी लाता भी है तो (Exeept Bullish) चाँदी सोनेको छोड़कर दूसरे पदार्थोंमें मन्दी करता है अतः ग्रहोंके आधारसे यह मास भी बड़ा परिवर्तनकारी है।

जनवरी १९५४ के ग्रहयोग तथा चांदी सोनेका व्यापार भविष्य

सूर्य मकरमें है Copricrn पुनः सायन कुम्भ Aguarrius में प्रवेश करता है Bullish & thin Bearish पहिले तेजी पीछे मन्दी।

शनि Seorpio में है Bullish Siorn तेजी कारक है।

गुरु मिथुन Gemini में है Bullish for Bullion चांदी सोनेके लिये तेजी कारक है।

शुक्र धनुमें है फिर मकर Capricern में प्रवेश करेगा Bearish & Bullish मंदी-तेजी बुध धनुमें Sagittorius है फिर मकरमें चला जाता है Bearish & Bullish Sigos मंगल वृश्चिक Scorpio में है Bullish Speciolly for Bullion शुक्र २ को पूर्वास्त होता है (Bearish Specially.

इस माहमें ३ ग्रह फलवती (Bullish तेजी) राशियोंमें हैं ३ ग्रह द्विस्वभाव राशियोंमें हैं अतः उक्त आधार इस माहमें घटाबढ़ीके साथ तेजी लावेगा और मंगल सूर्यका फलवती (Bullish Sirns तेजी कारक राशियां) राशियोंमें होना सोनेको तेज करेगा। इस मासमें शुक्र पूर्वास्त हो रहा है यह ४।६ टकेकी चांदी मार्केटमें प्रथम सप्ताहमें ही मन्दी लावेगा।

कल अवश्य देख सकते हैं!

वायदा और हाज़िर बाज़ारोंमें कभी कभी आदमीकी सारी गिनती, सारी आशायें एक रातमें चूर-चूर हो
जाती हैं। कभी कभी एक चीज़की कीमत बढ़ती है तो दूसरी चीज़ की कीमत घटती है। यह सब कैसे होता है इसका
जवाब तो ज्योतिषशास्त्र ही दे सकता है। उसके अभ्यास से कल जरूर देख सकते हैं।
यदि आप हाज़िर या वायदे का व्यापार करते हैं—तो हमारी सलाह लीजिए, आपको लक्ष्मी के दर्शन होंगे।
हर एक प्रकारके शेयर्स, धातुओं, चांदी, सोना, एरण्डा, रूई, कपड़ा, लौंग, कालीमिर्च, बारदाना, अलसी, सरसों, गेहूँ
चावल, आदि अनाज और कठोल मुंगफली, सब प्रकार के तेल, गुड़ खाण्ड, हल्दी, सन आदि किसी भी वस्तु की आगे
चाहे किसी भी मासकी पन्द्रह दिन की रुख (मन्दी तेजी) बिना मूल्य की मंगवाईये और हमारे ज्ञानकी जांच करें।
नोट—जो सज्जन श्रीस्वाध्याय का एक नया ग्राहक बनाकर ४।) भिजवा देंगे उसको आगामी तीनमास
तक किसी वस्तुकी अनुभूत सही आगाही या स्पेशियल चांस व रिपोर्ट बिना मूल्य फ्री भेजा जावेगा। लिफाफेमें चार
आनेके टिकट और श्रीस्वाध्याय सम्पादककी ओरसे नया ग्राहक बना देनेका प्रमाण पत्र आना आवश्यक है।
गुजराती भाषामें मेरी दो पुस्तकें छप चुकी हैं—'रू बाजारनी पाराशरी' और शेयर चिन्तामणि हर एकका
१।)६ पोस्टेज माफ।
पता—मनुभाई शाह मु० पो० नारगोल वाया उमरगाम जिला थाना वेस्टर्न रेलवे

'कश्मीरके भविष्यपर शनिका कुप्रभाव'

[ले० श्री पं० गेंदनलाल जी शास्त्री-ज्योतिषाचार्य]

श्रीस्वाध्यायके पाठकोंको स्मरण होगा—संवत् २००८ स्वाध्यायके ग्रीष्मांकमें—४७-४८ पृष्ठों पर-'नैपालं-कीर-काश्मीरं गृंजनं खुरसानकम् । माथुरं म्लेच्छदेशाश्च खशं केदारमण्डलम् ॥१॥ हिमाश्रयाश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्त-राश्रिताः, इत्यादि शास्त्रीय-परामर्शानुसार—अगस्त १९५१ ई० से नवम्बर १९५४ ई० तक—काश्मीर और म्लेच्छदेश-(पाकिस्तानादि) में आतंकयुक्त-अशान्तिमय बातायरण रहने और जमींदारी उन्मूलन होनेकी स्पष्ट घोषणा हमने की थी, जो कि अबतक अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रही है।

भविष्यमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें पारस्परिक-व्यव-हार कैसे रहेंगे, तथा काश्मीरकी समस्या कबतक डामाडोल रहेगी, इन दोनों प्रश्नोंके सम्बन्धमें जनतासे विशेष प्रेरित होनेपर शास्त्रीय-परामर्श दे रहा हूँ ! पाठकजन ध्यानसे पढ़ेंगे।

जून १९५४ ई० से अक्टूबर १९५६ ई० तक विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों पर शनैश्चरचार होगा ! अतएव—

ऐन्द्राग्नाख्ये त्रैगर्त-चीन-कौतूल-कुंकुमं लाक्षा ।
सस्यान्यथ मांजिष्ठं कौसुम्भञ्च क्षयं याति ॥१॥
मैचे (कुलूत) तंकण-खश-काश्मीराः समन्त्रिचक्रचराः ।
उपतापं यान्ति च घाण्टिका विभेदञ्च मित्राणाम् ॥२॥
कुंकुमम् (काश्मीरमित्यर्थः)

इस शास्त्रीय-विवेचनानुसार—अक्टूबर १९५६ ई० तक काश्मीर की समस्या डावाँडोल बनी रहेगी । वहांका मन्त्रिमण्डल और जनसमूह विशेषोपताप का अनुभव करता रहेगा। मन्त्रिवर्गमें साश्चर्य-विशेष-परितंन होनेके अवसर बनेंगे। राष्ट्के कर्णधारों (प्रधानमन्त्रियों) द्वारा विशेष प्रयत्न करने पर भी चाण्डाल-चौकड़ी (यवनादिवर्ग) अनेक वितण्डावाद उपस्थित करके न्याययुक्त-काश्मीरी समझौतेको खटाईमें डालने और धन, जनकी हानि पहुंचानेका पूर्ण प्रयत्न करेगी। अक्टूबर ५६ ई० तक काश्मीरकी जनता राजनीतिके कुचक्रोंसे आहत होकर त्राहि-त्राहि करती ही रहेगी।

काश्मीरकी मिथुन राशि है। ३० जनवरी १९५४ ई० से ३० जौलाई १९५५ ई० तक मिथुन राशि पर केतुका होगा। काश्मीरके केन्द्रस्थान—(सैण्टर-सप्तमभाव) में स्थित म्लेच्छग्रह राहु काश्मीरकी राशि पर स्थित यवनग्रह केतुको पूर्ण दृष्टिसे देखेगा । मन्त्रणास्थान—(पञ्चमभावगत तुला राशि) पर स्थित होकर—चाण्डालग्रह शनैश्चरका राहु और केतुके साथ दृष्टिसम्बन्ध रहेगा। इस प्रकार ये तीनों ही महाग्रह सन्निकट भविष्यमें काश्मीरपर कुदृष्टिपात करेंगे।

"अन्त्यजानां शनिः स्यात्" "म्लेच्छेषु केतुश्च तमः—कलिंगे" इस शास्त्रीय-परामर्शानुसार ३० जनवरी ५४ ई० से लगभग ३० जौलाई ५५ ई० तक म्लेच्छदेश—(पाकि-स्तानादि] में उत्पन्न हुआ यवनजातीय—[मुसलमान] कोई प्रधान नेता अन्यदेशीय चाण्डालजातीय दो व्यक्ति-विशेषों [प्रधाननेताओं] के परामर्शसे षड्यंत्र रचकर, कुटिलचाल चलकर, काश्मीर को पाकिस्तानमें मिला देने अथवा स्वसत्ता रखनेका भरसक प्रयत्न तथा दुःसाहस भी करें तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

सौभाग्यका विषय यह है कि अप्रैल १९५४ ई० से अप्रैल १९५५, १९५६, १९५७ ई० तक काश्मीरकी राशि से राज्यभावस्थ मीन राशिका स्वामी बलवान् गुरु-[देव-मन्त्री] काश्मीरके चन्द्रलग्न, कुटुम्ब और पराक्रम स्थानोंपर स्थित होकर, काश्मीरके भाग्य, बुद्धि, शत्रु, दुर्ग और राज्यस्थानोंको पूर्ण दृष्टिसे देखेगा। अतएव कोई द्विजाति [ब्राह्मणादि] प्रधाननेता स्वविशेष प्रज्ञासे विपत्तियों की कुटिल चालोंको अच्छी तरहसे समझकर, काश्मीरके भाग्य और बुद्धि—[मतदान] के बल पर कुटिलचक्रचारी चाण्डालचौकड़ी को नीचा दिखाकर, काश्मीरकी समस्याको न्याययुक्त हल करनेमें रामबाण तथा इन्द्रमन्त्री—[वाचस्पति] जैसा कार्य

करके काश्मीरकी जनताको पूर्ण सन्तोष पहुंचानेके लिए भरसक प्रयत्न करता हुआ, वहां का आदर्श-पुरुष बन जायगा ।

विपक्षिवर्ग वर्षाती मेंढकोंकी भांतिसे टर्राता हुआ गुलामकण्ठ होकर स्तब्ध रह जायगा ।

ध्यान रहे कि—किसी ग्रहसे पराजित होता हुआ अथवा किसी अन्य विशेषोत्पात को लेता हुआ-किसी देशका ग्रह आकाशमें सहसा दिखाई देता है, तो उस देशके लिए कहे गये फल।देशमें भी परिवर्तन देखनेमें आता है । काश्मीरके लिए शनि, गुरु और बुध येही तीन ग्रह विशेष विचारणीय हैं ।

भविष्यमें भी हिन्दुस्तान और पाकिस्तानका पारस्परिक व्यवहार "येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः" इस उक्तिको चरितार्थ करता हुआ-देवदानव जैसा रहेगा । विशेष परामर्श अग्रिमांक में दिया जायगा ।

—

भारतीय नारी जीवन

[लेखकः—राजगुरु श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री]

ऋषि मुनियोंने संसारके हितके लिए जो भी आविष्कार किये हैं वे उनके तपो-बल वा उपासनाकी स्फुरणा है जिसे हम भगवन्निर्देश कह सकते हैं । तपस्या, तथा मंत्र-सिद्धि के लिए जैसे अन्तरंग साधन मनोनिग्रह, इन्द्रिय-विजय, प्रायश्चित्तादि हैं, इसी प्रकार तपकी सिद्धि और मंत्र-संपत्ति के लिए सिद्ध पीठ, सिद्ध-स्थान, हिमगिरि-गह्वरादि प्रमुख साधन हैं । विन्ध्याचल भगवतीका ऐतिहासिक सिद्ध-पीठ है । यहां पर 'नन्द-गोप गृहे जाता' भगवती तीन रूपोंमें प्रत्यक्ष हुई । यही बिन्दुके तीन विमर्ष इच्छा, क्रिया तथा ज्ञान रेखा-त्रयात्मक त्रिकोण संसारका आदि कारण हैं: जो महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीके रूपमें साधकोंके लिए उपासनाकी निधि हैं । इस स्थान पर महाविद्याका निर्देश संसार की रक्षा, आनन्द, सदैश्वर्यके लिए स्त्री-जातिमें महाविद्या विकासरूपी शिक्षा दीक्षाका संस्कार अविलम्ब कराना संसारकी शान्ति-स्थापनका स्रोत बताया गया है ।

इस स्त्री-जातिके द्वारा ही अखिल मानव संसारको सुख शान्ति और परमानन्द प्राप्त होगा । स्त्री समाजके अन्दर जो स्वाभाविक बल-रूपी चण्डिकाकी रश्मियां हैं उनका विकास यथार्थ शिक्षा दीक्षा तथा साधन द्वारा करा देना बुद्धिमत्ता है ।

विद्या, धन और बल संसारकी सुख शान्तिके साधन हैं । मनुष्य शरीर होते हुए भी मनुष्यताका विकाश विद्या से ही होता है । विद्या ही मनुष्यता-प्राप्तिका एकमात्र साधन है । विद्यासे ही ज्ञान-नेत्र का प्रकाश होता है । विद्या ही कर्तव्य अकर्तव्यका अन्तर कर सकती है । शिक्षित जनता संसारको सुख पहुंचाती है । मनुष्य-जन्मका ध्येय है सर्वानन्द को प्राप्त करना सर्व प्राणीमात्रमें अपनी आत्माको देखना, सबके सुख-दुःख समझना । यही शिक्षित जनताका आदर्श है ।

वर्तमान शिक्षा, बल एवं विभवकी पराकाष्ठा, संसारमें पारस्परिक वैमनस्य, द्रोह, उपद्रव आदिसे विश्वके लिए बिनाशकारिणी ही प्रमाणित हुई । इस प्रकारकी शिक्षा, विद्या, बल वा विभव जो कि जनध्वंसकारी सिद्ध हो गये हैं उनसे बचना तथा विशुद्ध शिक्षा, यथार्थ बल वा विभवको प्राप्त करना ही जनताका ध्येय होना चाहिये ।

आर्य-संस्कृति विद्या-विकासके सम्बन्धमें हमें यह बताती है कि विद्याके साथ दैवी बल भी आवश्यक है जो कि सदाचार वा उपासनासे संबंध रखता है । इन साधनोंसे ही विहीन शिक्षित संसार, यथार्थ शिक्षित-मण्डल नहीं बना सकता ।

हमको शिव-शक्त्यात्मक (स्त्री-पुरुषात्मक) संसारमें

इस शिक्षाका प्रचार किस प्रकार करना चाहिये। हम देखते हैं कि सारा सारा साहित्य वा सारा शब्दमय प्रपंच शिव-शक्त्यात्मक अक्षरोंसे बना हुआ है जिसमें भी शक्तिके (स्वर वर्णोंके) बिना शिवाक्षरों (व्यंजन वर्णों) का उच्चारण तक नहीं हो सकता अर्थात् शक्ति (स्त्री) के अक्षरोंके बिना शिवाक्षर (पुरुषाक्षर) मृतप्राय हैं। इसी प्रकार मानव-शरीर नव-धातु वा नव-चक्रोंके संयोगसे बनता है जिसमें पाँच शिव-युवती अर्थात् स्त्री-तत्त्वके हैं और चार श्रीकण्ठ अर्थात् पुरुष-तत्त्वके हैं जिससे पता चलता है जगत्के निर्माणमें शक्ति-तत्त्व पुरुष-तत्त्वसे अधिक है। इसी तरह सांसारिक जीवनमें योग तथा क्षेम दो पारिभाषिक (टेक्निकल) शब्द आते हैं जिनमें भी क्षेम सत्ता अर्थात् रक्षा करनेकी सत्ता स्त्री-जातिमें ही होती है। इसलिए सोम-प्रधान अमृत अर्थात् जीवन-रक्षाकी शक्ति स्त्रियोंमें ही है।

अतः सबसे पहले स्त्री-जातिमें ही यथार्थ बल, विनय तथा विद्याका विकास करनेकी चेष्टा करना कल्याणका मार्ग है तथा साथ ही साथ भारतीय आर्य-संस्कृतिके अनुसार पुरुषोंमें भी न केवल विद्याका प्रचार अपितु विकास भी करना आवश्यक है।

व्यावहारिक शिक्षा

स्त्री शिक्षाके लिए 'महाविद्या-मन्दिर' होना चाहिये। इसमें प्रधानतया तीन वर्ग होंगे। महा-काली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती।

प्रथमवर्ग—महाकाली-वर्ग। इस वर्गमें वीर-कुमारियों को सब प्रकारकी सैनिक शिक्षा न्यायानुकूल जिन अस्त्र-शस्त्रोंका व्यवहार कर सकते हैं उनका निर्माण वा प्रयोग तथा कूटास्त्र वा अणुयास्त्रका भी निर्माण वा प्रयोग करना प्रधानतया सिखाया जाना चाहिए।

इस वर्गकी पाठ्य पुस्तक वीर, रौद्र, भयानक, वा वीभत्स रस प्रधान होंगी। इस वर्गमें अवान्तर श्रेणियाँ शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा आदि भी होंगी। इन श्रेणियोंमें यथाक्रम धनुर्वेद, कृषि वा वाणिज्य, पशुपालन वा पशुरक्षा, यान-निर्माण वा यान संचालन, शिल्प वा विज्ञान आदि ऐसे साधनोंकी शिक्षा दी जायेगी जिन साधनोंसे [illegible] भोजन वस्त्रका स्वयं प्रबन्ध कर सकें। इस वर्गकी [illegible] कायें सैनिक विभागोंमें प्रविष्ट हो सकेंगी।

सैनिक विभागोंमें ये तीन महत्त्व वर्ग भी होंगे। [illegible] वर्ग, शाकिनी वर्ग, तथा डाकिनी वर्ग जिनके [illegible] दुर्ग रक्षिणी, सर्व संहारिणी, सर्व विद्राविणी, [illegible] कर्षिणी, सर्व संमोहिनी आदि वर्ग होंगे। किन [illegible] कौन रखी जायगी यह सामुद्रिक शास्त्र, [illegible] ओज शास्त्रके निर्णय पर है। महाकाली वर्गकी [illegible] उनकी शिक्षाके साथ चरित्रका [illegible] भी [illegible] जायगा ताकि कुमारी जीवनसे ही उनमें आत्म रक्षा, [illegible] सम्मान वा आत्म-बलकी जागृति हो।

दूसरा वर्ग महालक्ष्मी वर्ग—इसमें महाकाली [illegible] स्नातिका, तथा वीर पत्नियोंका स्थान होगा। इस [illegible] युद्ध विद्या, व्यूह रचना, शस्त्र प्रयोग, तमञ्चे, वेद, [illegible] नाटक, साहित्य, धर्म शास्त्र, न्याय शास्त्र, अर्थशास्त्र, [illegible] विज्ञान, गृहकार्य, रसायन शास्त्र, शस्त्र चिकित्सा, [illegible] विधान आदिकी शिक्षा दी जायेगी।

इस वर्गकी पाठ्य-पुस्तक शृंगार, वा हास्य-रस प्रधान [illegible] इस वर्गमें अवान्तर श्रेणियाँ गृहलक्ष्मी राज्य-लक्ष्मी, [illegible] मंगला वा सर्व-सौभाग्य ये चार होंगी। इन श्रेणियोंमें [illegible] अर्थ-शास्त्र, काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन-शास्त्र, [illegible] रसायन तथा शिल्प-शास्त्र आदिकी शिक्षा दी जायेगी। [illegible] वर्गकी स्नातिकाएं प्रबन्ध-विभागमें भी प्रविष्ट हो सकें [illegible] जिन्होंने महाकाली वर्गकी सैनिक-शिक्षा पूर्णतया प्राप्त कर ली हो।

तीसरा वर्ग-महासरस्वती वर्ग—इसमें महालक्ष्मी [illegible] की स्नातिका तथा वीर माताओंका स्थान होगा इस वर्ग [illegible] उपासना शास्त्र, दर्शन शास्त्र, वेदान्त शास्त्र, [illegible] सम्पूर्ण आयुर्वेद, गृहकला, पुराण, इतिहास आदि [illegible] जायेंगे।

इस वर्गकी पाठ्य-पुस्तक शान्त वा करुणा-रस प्रधान होंगी।

इस महाविद्या शिविरके तीनों वर्गोंमें छात्राओंको उनके वर्गकी अधिष्ठात्री देवीका और देवताओंके गुणकर्मानुसार विकास होनेका भी कारण बताया जावेगा, जिससे दैवी शक्ति के विकाशके साथ उनमें शौर्य, वीर्य तथा धृतिका भी विकास होता जाय ।

कोई जातिभेद नहीं

इस महाविद्या शिविरमें जाति-भेद नहीं रहेगा । प्राचीन आर्य संस्कृतिने स्त्री-मात्रको देवीका रूप बताया है । भारत वर्ष स्त्री स्वरूपको देवीका रूप मानता है । इस स्वरूपकी रक्षा वा प्रतिष्ठा मनुष्यताका आदर करने वालेका प्रथम कर्तव्य होना चाहिये ।

मातृजातिके अपमानसे नरक प्राप्ति

स्त्रियोंको अपमानित वा लज्जित करनेसे देश तथा जाति का विनाश होता है । इसलिए मनुष्यताका अभिमान रखने वाली जनता स्त्रियोंके आदर और रक्षाके निमित्त किसी साधनको नहीं छोड़ सकती । जबकि सारा मानव संसार स्त्रियोंके सम्मान वा गौरवमें ही देश वा जातिका सौभाग्य मानता है । "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" । विशेषतः आर्य संस्कृति तो स्त्री जातिकी रक्षा और मर्यादा को स्थिर रखना ही अपना प्रधान धर्म समझती है अतः सर्वप्रथम स्त्री जातिमें यथार्थ शिक्षाका प्रचार होना आवश्यक है ।

वर्तमान शिक्षासे जो दोष आये हैं उनसे सतर्क रहते हुए देवियोंको ग्राम २ नगर २ जाति २ में यथार्थ शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे वे अपने सम्मान मर्यादा अपने धर्मकी स्वयं रक्षा कर सकें तथा वीर सन्तान उत्पन्न कर सकें । ऐसा करनेसे ही देशमें पुनः शान्ति आ सकेगी अन्यथा नहीं ।

जिस वर्गमें जो शिक्षा पावेंगी उन्हें उस वर्गके धार्मिक सिद्धान्तके अनुसार उस वर्गके देवताके आयुधका पूजन तथा धारण करना होगा । अतः एक दल खड्गधारिणीका शक्ति के असली स्वरूपमें होना अत्यावश्यक है जो देश जातिकी असुरोंसे रक्षा कर सके । यही आर्योंका प्राचीन आदर्श है तथा भारतीय जीवनकी सार्थकता है ।

—

श्री मानस-विचार

[ले०—आचार्य श्री पं० यशोदानन्दन जी गील साहित्यरत्न]

कविकुमुदकलाधर श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीने रामचरितमानसको आदर्श धर्म-शास्त्रके रूपमें प्रादुर्भूत किया है, अतएव प्रत्येक विषयका प्रतिपादन 'नानापुराण-निगमागम सम्मत' सारभूत ही है । आजकल जो शंका विद्वन्मण्डलीमें रामायणके बालकाण्ड दोहा ३२३ के बाद की चौपाई ।

"जनक वाम दिसि सोह सुनयना ।
हिमगिरि संग बनी जनु मयना ।"

पर चल रही है, यह शंका वस्तुतः आश्चर्यपूर्ण ही है कि—विवाहकालमें सीताकी माताको विदेहराजके वामांक भागमें न बैठकर दक्षिणांगमें ही विराजना चाहिए यही शास्त्र सम्मत वैदिक पद्धति है । प्रमाणस्वरूप शास्त्रकी आज्ञा इस प्रकार है:—

व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सहभोजते ।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ।।१।।
विच्छिन्न वह्नि संधाने कन्यादाने वरार्चने ।
नवोढा प्रवेशने पत्नी दक्षिणे स्वयमुत्तरे ।।२।।

आदि बहुतसे प्रमाण हैं । अब हमें यह विचारना है कि कविशिरोमणि श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीने यहां पर वामभागमें क्यों बैठाया है ? इस हेतु ही हमें शास्त्र में कहाँ २ धर्मपत्नीका वामभागमें क्यों बैठने की आज्ञा मिली है इसे भी देखना पड़ेगा । वहां शास्त्रोंमें विवेचना

इस प्रकार की है :—

वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे ।
वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी ॥१॥
धर्मप्रवृत्तौ आशीर्वादाभिषेके पादक्षालने ।
प्रयाणे भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत् ॥२॥
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पादशोधने ।
रथारोहण काले च ऋतुकाले सदा भवेत् ॥३॥
सर्वेषु धर्मकार्य्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा ।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः ॥४॥
शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु ।
वामे ह्युपविशेत्पत्नी व्याघ्रस्य वचनं यथा ॥५॥
मार्जने चाभिषेके च कन्यापुत्रविवाहके ।
आशीर्वचनकाले च पत्नी स्यादुत्तरे सदा ॥६॥

अब हमें रामायण में शंका पैदा करने वाली चौपाई पर ध्यान करना पड़ेगा कि यहां पर क्या प्रसंग है ।

जनक पाट महिषी जग जानी ।
सिय मातु किमि जाय बखानी ॥
सुजस सुकृत सुख सुन्दरताई ।
सब समेटि विधि रची बनाई ॥
समउ जानि मुनि वरन्ह बुलाईं ।
सुनत सुआसिनि सादर ल्याईं ।
जनक वाम दिसि सोह सुनयना ॥
हिमिगिरि संग वनी जनु मयना ॥
कनक कलस मनि को पर रूरे ।
सुचि सुगंध मंगल जल पूरे ॥
निजकर रायं मुदित अरुरानी ।
धरे रामके आगे आनी ॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी ।
गगन सुमन झरि अवसरु जानी ॥
वर विलोकि दंपति अनुरागे ।
पाय पुनीत पखारन लागे ॥

यहाँ जनकराज प्रथम विवाह मण्डपमें आये हुए आनंद कन्द श्री राघवेन्द्र रामचन्द्रजीका पैर ही धो रहे हैं । अतएव इस समय सिय मातृका विदेहराजके वामभागमें शोभित होना सर्वथा ही ठीक है । क्योंकि गोस्वामीजी विवाह विधिकी शुद्ध पद्धतिको ग्रहण करनेके लिए ही पहले जनकनन्दनीके मण्डपमें आनेकी सारी लौकिक, तथा वैदिक विधि पूजन प्रक्रियाको दोनों कुल गुरु, सूर्य्य और वेदों द्वारा ही सम्पादन करा दिया है । अतएव सारी प्रक्रियाको सांगोपांग न लिख "संक्षिप्त सारार्थं विलास रूप" से वर्णन कर रहे हैं । यहां पर जिस समय पग पखारना हुआ उस समयकी वास्तविक स्थिति यथोचित वर्णन लिखे गये हैं । इसके बाद ही कन्यादान हुआ है इसका वर्णन आगे छन्दों में संक्षिप्त रूपसे कर गये हैं । इसलिए उनका कोई अभिमत जनकरानीका विदेहराजके कन्यादान समय वामांक अथवा दक्षिणांकका नहीं प्रमाणित होता है । इसी प्रकार पद प्रक्षालनका विधान हमें अध्यात्म रामायण भी बालकाण्डान्तर्गत षष्ठ सर्गमें श्लोक ४६ से ५१ तक है, परन्तु जानकीकी माताका विदेहराजके किसी भी विशेष अंगभागी होनेका प्रमाण नहीं दिया गया है । परन्तु गोस्वामीजीने रामचरितमानसमें पग पखारनेमें वामांक लिखते हुए अपने "नाना पुराण निगमागम सम्मत" वाक्यको चरितार्थ कर दिया है ।

उपरोक्त दक्षिणांग तथा वामांग निर्देशक श्लोकोंके अन्तिम श्लोकको पढ़ कर यह शंका हो जावे कि 'कन्यादान में तथा कन्या पुत्र विवाहमें जो क्रमशः दक्षिण और वामांक विधान पत्नीका है उससे दोनों पक्षमें बैठनेका समर्थन है ।' तो मैं इस विषय पर इतनी ही कह देना चाहता हूँ कि— "वहु व्यापकः सामान्यः, अल्पव्यापको विशेषः" को तथा पूर्व तथा पर का विचार रखते, ये श्लोक 'लघ्वाश्वलायन स्मृतिके ही दोनों सोलहवें अध्यायके क्रमशः ४ और ३ के है । अतएव विवाह सम्बन्धी अन्य कार्योंमें वामभाग तथा कन्यादान कालमें दक्षिण भागमें ही दाताकी धर्मपत्नीको रहना चाहिए । यही इस श्लोकद्वयकी आज्ञा है । और लोक सम्मत पद्धति भी यही बहुमतसे होती है ।

—

भाग्यफल

[श्री पं० नेमिचन्द्र जी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

प्रत्येक व्यक्ति अपनी भवितव्यता जाननेके लिए उत्सुक रहता है। अनादि कालसे भविष्यमें घटित होने वाली शुभाशुभ घटनाओंको ज्ञात कर मानव उनके अनिष्ट फलसे बचनेके लिए प्रयत्न करता आ रहा है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति दुःख प्राप्त करना नहीं चाहता है। मानवकी इसी प्रवृत्तिने ज्योतिष शास्त्रको जन्म दिया है। धनी-निर्धन, शिक्षित, अशिक्षित, सभ्य, असभ्य, प्रभृति सभी व्यक्ति अपनी उन्नति-अवनति, जीवनका ह्रास-विकास, सुख-दुःख आदिके विषयमें चिन्तित रहते हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि उन्हें किस समय शान्ति और सुखकी प्राप्ति होगी, उनके जीवनमें ऐसा कौनसा अवसर आयगा जब वे भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति कर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपने इसी भाग्य रहस्यका निर्णय ज्योतिष शास्त्र द्वारा करना चाहते हैं। क्योंकि ज्योतिष शास्त्र प्रत्येक व्यक्तिके भाग्य अदृष्ट (जन्म-जन्मान्तरोंके-संचित कर्म) को व्यक्त करता है।

भारतीय दर्शनका सिद्धान्त है कि यह आत्मा अमर है, तथा इसके साथ अनादि कालसे कर्मोंका प्रवाह चला आ रहा है इस कर्म-प्रवाहके कारण ही आत्मा अशुद्ध हो गया है जिससे शरीर एवं इन्द्रियोंका ग्रहण हुआ है। शरीर एवं इन्द्रियोंकी क्रियाओंके कारण नवीन कर्मोंका ग्रहण होता है, इस प्रकार संसारकी भ्रमण परिपाटी चलती रहती है। ज्योतिष संचित कर्मों द्वारा मिलने वाले इष्टानिष्ट फलोंको बतलाता है। इस शास्त्रका प्रधान उद्देश्य यही है कि व्यक्ति अपने घटित होने वाले फलको जान कर विपरीत उद्योग करके प्रतिकूल फलको परिवर्तित अनुकूल फलमें करे। जहां उद्योग निर्बल पड़ता है और अदृष्ट प्रबल वहां फल जैसेका तैसा ही मिलता है, किन्तु जहां उद्योग प्रबल और अदृष्ट निर्बल होता है वहां फल इधर-उधर भी हो जाता है। पर आयु कर्ममें परिवर्तन नहीं होता है, अल्पायु योगोंको छोड़ पूर्णायु का योग जैसा है उसका फल भी वैसा ही होगा। अतएव ज्योतिष शास्त्र लौकिक उन्नतिको व्यक्त करनेके साथ-साथ आत्मिक विकास करनेमें भी प्रेरक है।

जिन व्यक्तियोंके पास जन्मपत्र नहीं है और न जिन्हें अपना उत्पत्ति-समय ही ज्ञात है, उन्हें अपना भाग्यफल अवगत करनेमें अनेक कठिनाइयाँ थीं। इस प्रस्तुत भाग्यफलमें प्रत्येक व्यक्तिके जन्म मासके अनुसार फलादेश प्राचीन अर्वाचीन, प्रामाणिक ज्योतिष ग्रन्थोंके आधार से लिखा जा रहा है। पाठक अपने जन्म महीनेके अनुसार अपने शुभा-शुभ फलको ज्ञात कर सकेंगे। यह उत्पत्तिके मासका फल जीवन की प्रायः समस्त घटनाओंको यथार्थ रूपमें व्यक्त करेगा, क्योंकि प्राणी जिस समय जन्म ग्रहण करता है उस समयके सौर-जगत्के वातावरणका प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। दूसरे शब्दोंमें यों कहा जा सकता है कि उत्पत्ति कालीन सौर-जगत्की स्थिति प्राणीके अदृष्टको प्रकट करती है। मास फल स्थूल होते हुए भी जिन व्यक्तियोंके पास जन्मपत्र नहीं है, उनके लिए अत्यन्त कार्यकारी सिद्ध होगा।

वैशाख मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति बड़े ही परोपकारी, साहसी, मिलनसार और उद्योगी होते हैं। ये काम करनेमें दिन, रात संलग्न रहते हैं। ये केवल बैठे-बैठे ख्याली पुलाव नहीं पकाते, बल्कि बहादुरीके कामोंमें भी समयको व्यतीत करते हैं। आगे अपने भविष्यको उज्ज्वल बनानेकी इनकी प्रबल इच्छा रहती है और इस इच्छाकी पूर्तिके लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। कठिनाइयों और खतरोंका सामना करते हुए वे आगे बढ़ते हैं, प्रत्येक कामके करनेमें उनका मन अधिक लगता है। इस मासमें उत्पन्न व्यक्तियोंके जीवन मार्गमें नाना प्रकारकी बाधाएँ आती हैं। कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि कार्यमें सफलता नहीं मिलेगी,

किन्तु इनकी इच्छा शक्ति इतनी अधिक प्रबल होती है जिससे अन्तमें जाकर सफलता ही मिलती है। इनकी शारीरिक और मानसिक शक्ति अधिक बलिष्ठ होती है, चापलूसी करने वाले व्यक्तियोंसे इन्हें घृणा होती है। इनका स्वभाव कुछ रूखा और अक्खड़ होता है। कृष्ण पक्षमें उत्पन्न हुए व्यक्तिका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा भी होता है परन्तु शुक्र पक्षमें जन्मे हुए व्यक्तिका स्वभाव स्नेही होता है, यह अपने परिवारके साथ तो स्नेह रखता ही है पर अन्य लोगोंके साथ भी स्नेहका व्यवहार करता है। पंचमी, ७ मी, ८ मी और १३ को उत्पन्न हुए व्यक्ति विशेष महत्वाकांक्षी होते हैं। ये सब कार्योंमें अपनी ही प्रधानता रखना चाहते हैं, कभी-कभी इनकी यह हरकत इन्हें कष्टदायक भी हो जाती है।

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति वैद्य, डाक्टर, सैनिक, साधारण व्यापारी, कम्पाउण्डर, मंत्री, मुंशी, मुख्तार, नाविक, और असफल शिक्षक होते हैं। अधिकतर इस मास के उत्पन्न हुए व्यक्ति डाक्टरी विद्यामें पूर्ण सफल होते हैं। यों तो व्यापार करते हैं किन्तु अर्थ-संचयकी प्रवृत्ति कम रहती है; जिससे सफल व्यापारी नहीं हो सकते हैं। कृषक भी इस महीने वाले सफल नहीं होते हैं, यद्यपि जीतोड़ श्रम करते हैं, पर कृषिका मर्म न जाननेके कारण उसमें सिद्धहस्त नहीं हो सकते। इन व्यक्तियों में धन उपार्जन की योग्यता अच्छी रहती है तथा अच्छे कार्योंमें मुक्तहस्त से धन व्यय करना भी खूब जानते हैं, इनके हाथ सदा खुले रहते हैं, यही कारण है कि इनके पास धन एकत्रित नहीं हो पाता। ये व्यक्ति इतने हेकड़ होते हैं कि कठिन से कठिन कार्यमें बिना परिणाम सोचे कूद पड़ते हैं। शुक्रपक्षमें उत्पन्न हुए व्यक्ति अधिक वीर और साहसी होते हैं। कृष्णपक्षमें उत्पन्न व्यक्ति प्रायः उच्चशिक्षित या अर्द्ध शिक्षित अवश्य होते हैं। शुक्रपक्षकी ३, ४, ५, ८, १४, १५ तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षित और अवशेष तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्ति अशिक्षित या अर्द्ध शिक्षित होते हैं। यदि भाग्यवश शुक्र पक्षकी प्रतिपदाको किसी व्यक्तिका जन्म रविवारको हो तो यह व्यक्ति अपने जीवनमें बड़े ऊंचे कार्य करने वाला होता है। विदेश यात्रा भी वह अवश्य करता है यों तो साधारणतः इस महीनेमें उत्पन्न हुए सभी व्यक्ति यात्रायें भी होते हैं। कृष्ण-पक्ष की १, २, ६, ८, १०, १४ और ३० इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षा प्रेमी होते हैं। अवशेष इस पक्षकी तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्ति अर्द्ध-शिक्षित या अशिक्षित होते हैं। यदि कदाचित् भाग्य से इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षित हो भी गये तो भी वे पूर्ण शिक्षित नहीं हो सकते। इसका प्रधान हेतु यह है कि उपर्युक्त कृष्ण-पक्षकी तिथियाँ अज्ञान द्योतक हैं, इसलिये पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कर लेने पर भी वास्तविक ज्ञान का आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

आर्थिक स्थिति—इस मास वाले व्यक्तियोंकी आर्थिक स्थिति तीन प्रकारकी संभव है, भोजन वस्त्रसे रहित, मध्यम स्थिति और कहींसे प्राप्त अन्योपार्जित विपुल सम्पत्तिके अधिकारी। इस महीनेके आरम्भिक चार दिनोंमें उत्पन्न हुए व्यक्ति प्रायः खर्च अधिक करनेके कारण कभी-कभी भोजन वस्त्रके लिए भी विध्वस्त हो जाते हैं। कृष्ण पक्षकी पंचमी से अष्टमी तक इन चार दिनोंमें एवँ शुक्र-पक्षकी सप्तमीसे लेकर एकादशी तक इन चार दिनोंमें इस प्रकार इन ८ दिनों में उत्पन्न हुए व्यक्ति मध्यम परिस्थितिके होते हैं। इनके पास भी अर्थ अधिक संचित नहीं रहता है। कृष्ण पक्षकी नवमी से लेकर त्रयोदशी तक और शुक्र पक्षकी द्वादशी, त्रयोदशी इन दो तिथियों में उत्पन्न व्यक्तियोंको अन्योपार्जित वित्त मिलता है। चाहे यह पैत्रिक सम्पत्तिके रूपमें हो, चाहे कहीं अन्य स्थान से मिले, किन्तु इन तिथियोंके व्यक्तियोंके पास अवश्य कुछ धन रहता है। साधारणतः इस मासके लोग बहुत कम धनी होते हैं, हां अपने पुरुषार्थके द्वारा यश खूब कमाते हैं। और चैन तथा आरामका जीवन व्यतीत करते हैं।

विवाह—इस मासमें उत्पन्न होने वाले व्यक्तियोंके विवाह प्रायः विलम्बसे होते हैं। साधारणतः २० वर्षकी आयुसे लेकर २८ वर्षकी आयु तक विवाह अवश्य हो जाता है। इस मासमें उत्पन्न होने वाले व्यक्तियोंमें एक विशेषता यह रहती है कि वे एकांकी जीवन बितानेसे घबड़ाते हैं। अतः इन्हें किसी आश्रयकी आवश्यकता रहती है। यद्यपि

नका स्वभाव मित्रता करनेके योग्य नहीं होता, फिर भी जिससे इनकी मित्रता हो जाती है उसका साथ अन्त तक देते हैं। स्वाधीन प्रवृत्तिके होनेके कारण प्रायः मिलना जुलना कम पसन्द करते हैं। कृष्ण पक्षकी दशमी से लेकर शुक्ल पक्षकी अष्टमी तक उत्पन्न हुए व्यक्तियोंमें गुप्त प्रेम भी देखा जाता है। इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंकी तीन शादियां हो जाती हैं। पूर्णिमाको जिनका जन्म होता है वे प्रायः, एक उप-पत्नी रखते हैं। २१ वर्ष से लेकर २८ वर्ष तककी आयुका समय इस मासके व्यक्तियोंके लिए बहुत सावधानीका होता है। प्रायः इस समय दुष्ट वृत्तियों का जन्म होता है। वैशाख मासमें कृष्ण-पक्षकी १, ३, ८, १० ११ इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए पुरुष हस्त मैथुन रोग के शिकार हो सकते हैं। इस महीनेकी ये तिथियां अप्राकृतिक मैथुनेच्छा को उत्पन्न करने वाली हैं। प्रेमका महत्व इस महीनेके व्यक्ति नहीं जानते।

शारीरिक स्वास्थ्य—प्रायः शरीर स्वास्थ्य अच्छारहता है, सर्दी, गर्मी ये सहन नहीं कर सकते। रक्त-चाप का रोग इस मास वाले व्यक्तियोंको होता है। इस मासके कुछ व्यक्ति आकस्मिक घटनाओंके शिकार भी होते हैं जैसे—आगे से जलना, पानीमें डूबना अस्त्र से छिन्न होना इत्यादि। सोना कम से कम ७ घंटे इस मास वाले व्यक्तियों को आवश्यक होता है। कब्ज रोग प्रायः सभीको रहता है, कमर दर्द और सिरदर्दकी बीमारी भी कभी-कभी होती है। कफजन्य व्याधियां अधिक हुआ करती हैं। दही और कटहल बहुत हानिकारक होते हैं। दूध और गेहूँ की रोटी विशेष लाभ-दायक होती है। जन्म से ३, ५, ६, ८, १०, ११, १४. २१, २४, ३५, ३७, ३८ और ४२ से लेकर ४८ वर्षतक की आयुका समय कष्टका होता है। इस मास वाले व्यक्तियों का अकालमरण बहुत कम होता है। कार्तिक, माघ और चैत्र ये तीन महीने इनके लिए कष्टदायक होते हैं। कृष्ण-पक्षके जन्म वालोंके लिए अगहन और मघा कष्टकर बताये हैं। इनके लिए वैशाख और ज्येष्ठ ये दो महीने प्रायः अधिक सुखदायक होते हैं। गर्मीके दिनोंमें लू भी जल्दी लगती है। मेष राशिके सूर्यके ७ वें अंशमें जन्म लेने वाले (वैशाख-शुक्ल ५, २) तिथियोंमें जन्मे व्यक्ति प्रायः लू लगने से मृत्युको प्राप्त होते हैं।

चरित्रकी निर्बलता और दृढ़ता—वैशाख मासमें उत्पन्न होने वाले व्यक्ति प्रायः नैतिक होते हैं। ईमानदारी, इनका विशेष गुण होता है, एक बार जिस बात को कह देते हैं जान जाने पर भी उससे नकार नहीं करते हैं, व्यावहारिक झूठके अतिरिक्त सफेद झूठ नहीं बोलते हैं। धर्म-भीरु प्रायः होते हैं। बड़े पुरुषोंका सम्मान करना एवं उनका आदेश मानना इनका प्रधान कर्तव्य होता है, हृदयके स्वच्छ होते हैं, हां कृष्ण पक्षके व्यक्ति कुछ कुटिल और गम्भीर स्वभाव होनेके कारण अपने मनकी बात को छिपाने वाले होते हैं। लैङ्गिक शैथिल्य प्रायः शुक्ल-पक्षके व्यक्तियोंमें अधिक होता है। कृष्ण-पक्षकी प्रतिपदा तक उत्पन्न हुए व्यक्ति पेटके कपटी और लैङ्गिक आचरणके शुद्ध होते हैं। इनकी बात का पता लगाना बड़ी टेढ़ी खीर होती है। २८ वर्ष से लेकर ३३ वर्ष की आयु तक किसी अपराधमें इस मास वाले व्यक्ति जेल भी जाते हैं, नैतिक आचरण साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियोंका अच्छा होता है।

अच्छा और बुरा समय—२१ वर्षकी आयु से लेकर २८ वर्षकी आयु तकका समय परिवर्तनशील होता है, इस समय अपने स्थानको छोड़ कर अन्यत्र जाना पड़ता है। ३५ वर्षकी आयुमें सुख मिलता है, २२ से लेकर ३५ वर्ष तक की आयुमें भाग्योदय होता है, इस समयमें जीवन पूर्ण विकासको प्राप्त होता है। ५ वां वर्ष, ७ वां वर्ष, ११ वां वर्ष, ३४ वां वर्ष कष्टकारक है। इस समय व्यक्तिके ऊपर शारीरिक कष्ट आते हैं। १५ वां, २२ वां, ३१ वां, और ४८ वां वर्ष आर्थिक दृष्टि से कष्टदायक है, ५५ वां ५६ वां ५८ वां वर्ष सुखदायक है, इस समय घरमें उत्सव आदि मांगलिक कार्य होते हैं। ७५ वर्षकी आयु तक इस मास वाले जीवित रहते हैं। २८ वर्षकी आयु से लेकर ३५ वर्ष की आयु तक का समय जीवन के लिए स्वर्ण अवसर होता है, इस समय पुरुषार्थी व्यक्ति अधिक से अधिक उन्नति कर सकता है। आषाढ़, भादों, अगहन, और पौष महीने सर्वदा अच्छे रहते हैं। इन महीनोंमें प्रत्येक कार्य सफल हो सकता

है। मँगलका दिन इस मास वाले व्यक्तियोंको अधिक सफलता देने वाला होता है। गहरे चमकदार रंग की वस्तुएं अधिक सुखदायक होती है। हीरा की अंगूठी पहनने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम हो जाता है।

संख्या--इस मास वाले, व्यक्तियों को ८, ३ और १ का अंक अच्छा होता है। अर्थात् रेश या फाटका लगाने वालोंकी इन अंकों पर दाव लगानेसे लाभ होता है। जिन संख्याओं का जोड़ ९ होता है वे संख्याएं भी सुखकर होती हैं जैसे ६+३, ४+५, ८+१, ७+२ अर्थात् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, की संख्या अपनी योगवाली संख्याके साथ शुभ फल देने वाली होती हैं।

जीवन का सामान्य पर्यालोचन—माता पिताका सुख इस मास वाले व्यक्तियों को प्रायः अच्छा रहता है। भाइयों की संख्या अधिक से अधिक ६ तक हो सकती है। परन्तु कृष्णपक्षके व्यक्तियों के दो भाई से अधिक प्रायः नहीं होते। सन्तान इस मास वालों को खूब उत्पन्न होती है।

भाई और माँ का सुख कम होता है, मांकी अपेक्षा इस मास वाले पितासे अधिक प्रेम करते हैं और चाचा तथा चाचीसे सदा भयभीत रहते हैं। चचेरे भाइयोंका सुख भी कम होता है। जीवन प्रायः इस महीने वालोंका सुखमय व्यतीत होता है। मूर्ख व्यक्ति कम ही इस मासमें उत्पन्न होते हैं। जो मूर्ख भी रह जाते हैं वे भी अपने व्यवसायमें खूब प्रवीण होते हैं, जीवनका मध्यभाग अधिक सुखकर होता है। स्त्रियोंके प्रति आकर्षण अधिक होता है। वैशाख मासके व्यक्ति जीवनमें कठोरताकी अग्निमें सदा तपा करता है। अपने साहसी और अक्खड़ स्वभावके कारण ये किसीसे डरते नहीं; कठिनसे कठिन और खतरनाक कार्योंमें भी ये साहस नहीं खोते हैं। इस मासका पूर्ण प्रभाव शुक्ल पक्ष की तृतीया से दिखाई पड़ता है। प्रायः वैशाख मासके सभी व्यक्ति किसी न किसी बातमें ख्याति प्राप्त करते हैं।

वैशाख मासमें उत्पन्न होने वाली कन्याओंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न होने वाली नारियाँ विशेष कामुक प्रवृत्तिकी होती हैं। ये घर गृहस्थीके कार्योंमें खूब निपुण होती हैं। भोजन बनानेमें इन्हें अधिक दिलचस्पी होती है। शिक्षा के दस्तकारी में इनकी अच्छी प्रगति होती है, पति से प्रेम रखती हैं, स्वभाव रूखा और लड़ाकू होता है, घर के लोग प्रायः रुष्टसे रहते हैं। विवाह १८ वर्ष के पहले ही हो जाता है। कृष्णपक्षमें उत्पन्न हुई नारियोंका चरित्र प्रायः शिथिल होता है। लैङ्गिक भावनायें अधिक तीक्ष्ण होती हैं। इस मासकी नारियों में यह एक विशेषता होती है कि ये रूखे स्वभावकी होने पर भी मेल-जोल अधिक रखती हैं। सौभाग्य अच्छा होता है, सन्तान अधिक संख्या में उत्पन्न होती है। मध्य अवस्थामें आकस्मिक रोग या किसी अन्य बात का आक्रमण होता है जिससे मृत्यु होते-होते बचती है। इस महीनेमें उत्पन्न हुई नारियोंको शिक्षित और सुन्दर पति मिलता है। इनका जीवन सर्वदा सुखमय बीतता है। विलासिता और फैशन इन्हें अधिक प्रिय होती है। आमोद-प्रमोद अधिक पसन्द करती हैं। इस मास वाली नारियों को प्रथम सन्तान १६, १८ और २७ वर्षकी आयुमें उत्पन्न होती है।

जिनका जन्म रविवार और शनिवारको दोपहरके बाद होता है उन्हें ५ पुत्र और इन्हीं दिनोंको दोपहरके पहले होता है उन्हें ५ कन्याएं होती हैं। सोमवार और बुधवार को दोपहरके पहले जन्म ग्रहण करने वाली इस मासकी नारियों को ३ पुत्र और दोपहरके पश्चात् जन्म लेनेवाली नारियोंको ४ पुत्र और ३ कन्याएं होती हैं। मंगल और गुरुवार को जन्मी देवियों को साधारण सन्तान सुख और शुक्रवार को जन्मी देवियों को सन्तान सुखका अभाव होता है। आर्थिक दृष्टि से इस मासकी जन्मी देवियां साधारणतः सुखी होती हैं; सैंकड़ेमें से पचास को अर्थजन्य कष्टका अनुभव करना पड़ता है। यों तो इनका विवाह सम्बन्ध प्रायः अच्छे घरोंमें होता है तथा पति भी पढ़े लिखे मिलते हैं; जिससे भौतिक आवश्यकताकी पूर्तिमें कुछ बाधा नहीं आती है, फिर भी अर्थसंचय करनेमें ये सर्वथा असमर्थ रहती हैं।

ज्येष्ठ मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंका फलादेश आगामी 'हेमन्ताङ्क' में प्रकाशित होगा।

★

सत्य और स्वप्न का विश्लेषण

[श्री रमानन्द सारस्वत शास्त्री साहित्यरत्न]

सत्य बनता स्वप्न भी है, स्वप्न बनता सत्य भी।
कौन कह सकता न होगा प्राप्त हमको प्राप्य भी॥
वृन्तमें खिलते सुमनको मन्द मलयानिल हिलाती।
माधवी मकरन्द भरकर स्नेहसे मिल-मिल मिलाती॥
किंतु युग-युग रह न पाती उस सुमनकी मुस्कराहट।
दे गया कोई उसे है ग्रीष्मकी भी साथ आहट॥
विश्वमें पर सूखती कब पुष्पकी मुस्कान रेखा।
और किसने विश्वमें है ग्रीष्मका अवसान देखा॥
युग-युगोंसे चल रहे हैं साथ ही तम औ उजाले।
रिक्त होकर पूर्ण होते, पूर्ण बनते रिक्त प्याले॥
काम क्या अवसादका फिर किस लिए उल्लास लाएं।
चिर चिरन्तन वस्तुको हम चिर चिरन्तन ही बनाएं॥
शून्यमें होंगी लिखी कितनी न जाने भावनाएं।
विश्वमें युग-युग जनोंने क्या न की हों कामनाएं॥

कौन कह सकता उन्हें अवशेष जिनके मौन तारे।
कर रहे संकेत कबसे दे रहे कितने इशारे॥
पास किसके रह सका है इन सभीका स्पष्ट लेखा।
स्वप्न बनते सत्यको, है कौन वह जिसने न देखा॥
हम बढ़ें पथमें निरन्तर स्वप्न बनते हों भले ही।
जन्म लेकर बन गये हैं जबकि हम भी स्वप्न-राही॥
साधनामें बढ़ गये तो स्वप्न होगा सत्य सारा॥
सत्यके इस पार होगा स्वप्नका पहला किनारा॥
फिर न कहनेको बचेगा स्वप्न क्या है सत्य क्या है?
आश क्या है हास क्या है औ' निराशोच्छ्वास क्या है?
दूर होकर भी निकटताका हमें तब भान होगा।
चिर प्रतीक्षितसे हृदयमें चिर-मिलनका ज्ञान होगा!!!

★

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

[ले०—ज्यो० भू० दै० र० श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा]

(१) पहला सप्ताह—

आश्विन शुक्ला ६ शनिवार ता० १७ अक्टूबरसे २२ अक्टूबर तक सोना तेज, चाँदी मंदी, परन्तु मन्दीके रुब्बे में नफा लेना अच्छा है। ता० १७।१६ को तेजी ता० २१को २-३ बजे तेजी २२को मंदी।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता० २३ अक्टूबरसे ३-४ नवम्बर तक तेजीका ध्यान रखो। स्पेशल रिपोर्ट ३०-३० खंडीमें चांदीमें ३) ४) बढ़ेगा; घटबढ़से मत घबरायें। ता० ३ से रुई मंदी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० ५ से १४ नवम्बर तक उत्पाति योग बनता है। शनिका उदय उत्पात करेगा। ता० ७-८ तेजी ता० १०-११ बहुत घटबढ़। यहाँ रुई और आयरन शेयर अवश्य मंदे काली वस्तु मंदी। चांदी ता० १२को जैसी तेजी मंदी बने वैसी ता० २० तक रहेगी, यह जनरल ध्यान दें!

(४) चौथा सप्ताह—

ता० १५से २० नवम्बर तक तेजी हो वहां बेचो, ता० १८।१६ को मंदीका अच्छा धड़ाका होगा २) ३) रुपयों का। ता० १६को तेजी, १७ को मंदी।

(५) पांचवां सप्ताह—

ता० २१से ३० नवम्बर तक एकतरफा बाजार नहीं रहेगा, ३ दिन घटेगा, ३ दिन बढ़ेगा। पहले रुई चांदी

घटेगी फिर ३ दिन बढ़ेगी। ता० २३को २ बजेसे मंदी। ता० ३०को एकतरफी तेजी हो चाहे मंदी एकतरफी होगी।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १ दिसम्बरसे ६ तक एकतरफी तेजी होगी. ता० २ से २) ३) रुपया तेजी होगी। ता० ३-४-५ इन ३ दिनों में दो दिन अवश्य तेजी। रुईमें मंदी होके तेजी होगी। रुई बेचो फिर खरीदो, ता० ४ को बजार तेजीमें खुलके मंदा होगा। ता० १ दिसम्बरसे ६ तक भूकम्प होगा।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० ७ से १४ दिसम्बर तक रुई तेज, सोना-चांदी मंदा। ता० ७-८ में चांदी मंदी—रुई तेज। ता० १०-११ घटबढ़। ता० १२-१४ तेजी–ता० १४को अच्छी तेजी मंदी होगी। एकतरफी बजारका पीछा करना अच्छा है।

(८) आठवां सप्ताह—ता० १५ दिसम्बरसे २० तक २) २।) की चाँदीमें तेजी। रुई १०) १५) तेज। ता० १५-१६-१८-१९ अवश्य तेजी।

(९) नौवां सप्ताह—

ता० २१ से २७ दिसम्बर तक घटबढ़से मंदी होगी। ता० २१-२२-२३ में कुछ पहले तेजी होगी, घटबढ़से ता० २३ की तेजीमें बेचो। ता० २४-२५-२६ प्रायः मंदी होगी। ता० २८ से ३१ तक २) २।) की अवश्य तेजी होगी। ता० ३१को एकतरफा लगाना अच्छा है।

(१०) दशवां सप्ताह—

ता० १ जनवरी सन् ४४ से ६ जनवरी तक घटबढ़ रहेगी। जनरल ध्यान तेजीका रखो। घटे भाव खरीदो। ता० २-४में अवश्य तेजी। ता० ५ को मंदी, ता० ६ को तेजी।

(११) ग्यारहवां सप्ताह—

ता० ६ से १४ जनवरी तक तेजी। रुई अवश्य तेज। चांदीमें ता० ७-८ को घटबढ़ दोतरफा लगावें। ता० ९ को मंदी हो। चाहे तेजी, अच्छी होगी। हमारा ध्यान मंदीका है। ता० १० से १४ तक तेजी। ता० ११-१२-१४ जनवरी तेजी। आगे सर्वज्ञ ईश्वर हैं।

—

भविष्यवाणीका चमत्कार

आगामी इन ३ मासमें (कार्तिकसे पौष तक) ग्वार मटरमें भारी तेजी मन्दीका जबर्दस्त तूफान निकलेगा इसके अतिरिक्त चांदी, सरसों, रुई, अरंडा आदिके व्यापारमें भारी इकतरफा लाइनोंके चाँस आवेंगे। यदि आप इन चांसोंसे लाभ उठाना चाहते हैं तो शीघ्र ही चेतें। फीस १ वस्तुकी १ मासकी तेजी-मन्दी (दैनिक तथा जनरल लाइन टाइम व टकेवार) जाननेके लिए ११) शीघ्र ही मनिआर्डर द्वारा भेजिए।

पता—

श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्,

पो० कोसी कलां (मथुरा)

हिन्दी का एकमात्र बौद्ध मासिक पत्र

संस्कृति का अग्रदूत **धर्मदूत** ज्ञान का प्रदीप

सम्पादक—त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित

यदि आप को उन भगवान् बुद्धकी अमृतवाणी सुननी हो जिन्होंने कि समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति और सभ्यताका अमर डंका पीटा था; यदि आपको लंका, बर्मा, स्याम, नैपाल तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया, यूरोप, अमेरिका आदिके अपने बौद्ध बन्धुओंसे परिचय प्राप्त करना हो, और यदि आपको अपने जीवनको सुधारते हुए शान्ति एवं विश्व बन्धुत्वकी ओर अग्रसर होना हो तो अवश्य "धर्मदूत" पढ़िए। इससे आपको बौद्ध संस्कृति, साहित्य, धर्म कला, इतिहास, पुरातत्व आदि का परिचय मिलेगा तथा गणतन्त्र भारतके उत्थानकी शक्ति प्राप्त होगी।

वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति ।=)

विज्ञापन दरके लिए लिखिए।

पता—व्यवस्थापक 'धर्मदूत' सारनाथ, बनारस

व्यापारिक तेजीमंदी

[लेखक—श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्]

कार्तिक मास

इस मास ५ शु० तथा ५ शनिवार होनेसे विशेष घटा-बढ़ी होगी। ग्वार मटर ता० २८ से ३० अक्टूबर तक मंदे होंगे। फिर ता० ३१ अक्टूबरको कुछ तेजी आके ता० ५ नवम्बर तक रुख मंदीका रहेगा। ता० ६-७ नवम्बर तेज। ता० १२ नवम्बरसे ता० १६ नवम्बर तक कोई लाइन निकलेगी। शेयर ता० २४-३० अक्तूबर तथा ता० २-३ नवम्बर इन तारीखोंमें तेज होंगे। सरसोंके व्यापारके लिए ता० १० नवम्बरसे सावधान रहनेका समय आवेगा। ता० २४ से ३० अक्तूबर तक चाँदीके भावोंमें तेजी आवेगी अथवा भावोंमें रस्साकशी भी रहना सम्भव है। अन्नादि पदार्थ इस मास विशेषकर ता० ३० अक्तूबरके आसपाससे मंदीकी तरफ अपना झुकाव करेंगे।

मगसिर मास

इस मास ५ शनि व ५ रविवार हैं तथा वदिपक्षमें तिथिवृद्धि हो रही है अतः प्रजाको पीड़ा तथा किन्हीं राष्ट्रों में मतभेद और युद्धकी आशंका होनेका वातावरण बनेगा। अन्नादि पदार्थ विशेषकर तेजही रहेंगे। परन्तु वदिपक्षके बजाय सुदिपक्षमें अधिक तेजी होगी। रुई कपास आदिकी भी सुदिपक्षमें अवश्य तेजी होगी। गुड़, खांड, शक्कर भी साधारण तौर पर तेज रहें या भाव साधारण घटाबढ़ीमें पड़े रहेंगे। चाँदीमें भारी उथल-पुथल होगी। व्यापारी चक्करमें पड़ जावेंगे। एक बार चाँदीके भावोंमें अवश्य ही तेजी या मंदीका तूफान आवेगा। ग्वार मटरमें दो-दो रु० मनके लगभग दो तीन बार इकतरफा लाइनें निकलेंगी सरसों ता० ७ से १५ दिसम्बर तक तेज होगी। ता० १० दिसम्बरके बाद ठंड अधिक पड़ेगी।

पौष मास

इस मास प्रत्येक वस्तुके भावोंमें भारी घटाबढ़ी होगी। अन्नादि पदार्थ इस मास विशेष तेजीका रंग दिखावें—ऐसा होना सम्भव प्रतीत होता है। चाँदीके भावोंमें कई बार उलटफेर होगा। बहुत सावधान रहनेका समय है। रुईमें इस मास भी जोरदार तेजी आना सम्भव है। वदि पक्षमें तिथि ५-६-७ को शुक्र शनि व रविवार क्रमसे आए हैं और अन्य योगायोगके देखते हुए इस मास युद्धका भीषण वाता-वरण बनेगा। २-३ मास पहिले या पीछे किसी राष्ट्रका पतन अथवा किसी बड़े नेताकी मृत्यु होनेका योग बनता है। लोहा इस मास सुदि पक्षसे अवश्य तेज होगा। ग्वार मटर में इस मास ३) रु० मनके लगभग लाइन निकलेगी।

—

वेदान्तका अधिकारी कौन है ?

उत्तर—वेदान्तका अधिकारी वहो ही सकता है—अति ज्ञानी अथवा अति अज्ञानी न हो। अति ज्ञानी वह है—जिसे अपरोक्षज्ञान हो चुका हो—उसे उपदेश देना सम्भव नहीं। और अति अज्ञानी वह है जो "अहं" या "मैं" शब्द शरीरमें लगाता है, वह वेदान्तका अधिकारी नहीं है। बस केवल बीच वालेको जिसे परोक्ष-ज्ञान हो चुका हो—उसी मुक्ति मार्गके पथिकको वेदान्त पर अधि-कार है।

सूचना

ज्योतिष सम्बन्धी विचार व तीन मास का व्यापारिक भविष्य जाननेके लिये त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के वार्षिक ग्राहक बनिये।

चांदी के अचूक चान्स

[ले० पञ्चाङ्गकर्ता श्री पं० रतिराम जी शर्मा शास्त्री]

अक्तूबर १९५३ ई०

ता० १७को तुला की संक्रान्तिका प्रवेश और तिथि दशमीका क्षय और शुभ योगका क्षय, और ता० २०को स्वातिके १ चरण पर शनि देवका प्रवेश होना इत्यादि योगों से चांदीमें १) व १॥) की तेजी पाई जाती है।

ता० २१को हस्तका शुक्र, कन्याका मंगल, ता० २२ में वृश्चिकका बुध है अतः भाव घटाबढ़ीमें रहेगा। परन्तु गेहूँ पर तेजी आयेगी।

ता० २३ अक्तूबरको रवि शनि युति तेजीकारक है। ता० २३ में स्वातिका रवि और ता० २४में कृतिका व्यतीपात योगका क्षय होनेसे तेजी। ता० २६ अनुराधाका बुध ता० ३१ को चित्राका शुक्र होनेसे मंदेका झटका अवश्य आयेगा।

नवम्बर १९५३ ई०

ता० ३-४-५-६ में चंद्र मंगल युति चन्द्रनेपच्यून युति चन्द्र शनि युति, बक्री बुध, चन्द्र शुक्र युति हस्तका-मंगल विशाखाका रवि और तुलाका शुक्र इत्यादियोंसे घटाबढ़ीसे तेजी ही अधिक रहेगी। ता० ७ को चन्द्र बुध युति शुक्रनेपच्यून युति ता० ८ में चन्द्र दर्शन तेजीकारक हैं।

ता० १० को शनिदेवका उदय होगा सो रुईमें १० रुपयेका मंदा अवश्य आयेगा। ता० ११-१२ में विशाखाका बुध स्वातिका शुक्र मंदीकारक है। ता० १३ व १४ में शुक्र शनिकी युति और रवि बुधकी युति तेजी कारक है। ता० १६ वृश्चिककी संक्रान्ति अनुराधाका रवि तिथिका क्षय पूर्वमें बुधका उदय तेजीकारक है। ता० २२ मार्गी बुध विशाखाका शुक्र मंदेका झटका लगायेगा। ता० २७ उत्तराषाढ़ायां राहु पुनर्वसौ केतु चित्राका मंगल होनेसे तेजी कारक है।

दिसम्बर १९५३ ई०

ता० १ चन्द्र मंगल युति, चन्द्रनेपच्यून युति, चन्द्र शनि युति इत्यादि योगोंसे तेजी पाई जाती है। चन्द्र बुध युति चन्द्र शुक्र युति भी तेजीकारक है। ता० ७ को अनुराधाका बुध, ता० ८ को चन्द्र दर्शन घटाबढ़ीसे रुख तेज। ता० ९ तुलाका मंगल तिथिका वा स्वाति का मंगल इत्यादि योगोंसे घटाबढ़ीसे रुख तेज। यह पक्ष तेजीकारक है घटाबढ़ीसे। ता० २१से २९ तक पूर्वमें बुधका अस्त धनु व मूलका शुक्र धनु मूलका बुध पूर्वाषाढाका रवि इत्यादि योगोंसे रुख मन्दा रहेगा। ता० ३० को चन्द्र शनि युति चन्द्र मंगल युति होनेसे तेजीकारक है।

जनवरी १९५४ ई०

ता० २ शनि मंगल युति, पूर्वमें शुक्रका अस्त ता० ३ पूर्वाषाढका शुक्र, ता० ४ बुध शुक्र युति, चन्द्र शुक्र युति, चन्द्र बुध युति, ता० ६ में चन्द्र दर्शन होनेसे घटाबढ़ीसे रुख मन्दा पाया जाता है। और यहां पर प्रमाणसे २) व ३) रुपए का मन्दा होगा। और ता० ७ से ११ तक तेजी। ता० १२ से १७ तक चांदी में मन्दा अवश्य आयेगा॥

नोट—उपर्युक्त चांसोंका प्रयोग व्यापारीगण सावधानीसे करें। विशेषके लिये पत्रव्यवहार करें।

अचूक चांस

ता० ४ से १८ नवम्बर १९५३ तक गुवार मटरमें १॥) मनका मन्दा आवेगा और चांदीमें १०) १५) की मन्दी आनेका परीचित योग है। ता० २७ फरवरीसे १३ मार्च १९५४ तक गुवार मटरमें १॥) मनकी तेजी और चांदीमें १०) १५) की तेजीका अचूक चांस है। और आगे ईश्वरकी लीला वही जाने।—पं० गेंदामल आशाराम

चांदी के अचूक चान्स

[ले० पञ्चाङ्गकर्ता श्री पं० रतिराम जी शर्मा शास्त्री]

अक्तूबर १९५३ ई०

ता० १७को तुला की संक्रान्तिका प्रवेश और तिथि दशमीका क्षय और शुभ योगका क्षय, और ता० २०को स्वातिके १ चरण पर शनि देवका प्रवेश होना इत्यादि योगों से चांदीमें १) व १॥) की तेजी पाई जाती है ।

ता० २१को हस्तका शुक्र, कन्याका मंगल, ता० २२ में वृश्चिकका बुध है अतः भाव घटाबढ़ीमें रहेगा । परन्तु गेहूँ पर तेजी आयेगी ।

ता० २३ अक्तूबरको रवि शनि युति तेजीकारक है । ता० २३ में स्वातिका रवि और ता० २४में कृतिका व्यतीपात योगका क्षय होनेसे तेजी । ता० २६ अनुराधाका बुध ता० ३१ को चित्राका शुक्र होनेसे मंदेका झटका अवश्य आयेगा ।

नवम्बर १९५३ ई०

ता० ३-४-५-६ में चंद्र मंगल युति चन्द्रनेपच्यून युति चन्द्र शनि युति, वक्री बुध, चन्द्र शुक्र युति हस्तका-मंगल विशाखाका रवि और तुलाका शुक्र इत्यादियोंसे घटाबढ़ीसे तेजी ही अधिक रहेगी । ता० ७ को चन्द्र बुध युति शुक्रनेपच्यून युति ता० ८ में चन्द्र दर्शन तेजीकारक हैं ।

ता० १० को शनिदेवका उदय होगा सो रुईमें १० रुपयेका मंदा अवश्य आयेगा । ता० ११-१२ में विशाखाका बुध स्वातिका शुक्र मंदीकारक है । ता० १३ व १४ में शुक्र शनिकी युति और रवि बुधकी युति तेजी कारक है । ता० १६ वृश्चिककी संक्रान्ति अनुराधाका रवि तिथिका क्षय पूर्वमें बुधका उदय तेजीकारक है । ता० २२ मार्गी बुध विशाखाका शुक्र मंदेका झटका लगायेगा । ता० २७ उत्तराषाढायां राहु पुनर्वसौ केतु चित्राका मंगल होनेसे तेजी कारक है ।

दिसम्बर १९५३ ई०

ता० १ चन्द्र मंगल युति, चन्द्रनेपच्यून युति, चन्द्र शनि युति इत्यादि योगोंसे तेजी पाई जाती है । चन्द्र बुध युति चन्द्र शुक्र युति भी तेजीकारक है । ता० ७ को अनुराधाका बुध, ता० ८ को चन्द्र दर्शन घटाबढ़ीसे रुख तेज । ता० ९ तुलाका मंगल तिथिका वा स्वाति का मंगल इत्यादि योगोंसे घटाबढ़ीसे रुख तेज । यह पक्ष तेजीकारक है घटाबढ़ीसे । ता० २१से २९ तक पूर्वमें बुधका अस्त धनु व मूलका शुक्र धनु मूलका बुध पूर्वाषाढाका रवि इत्यादि योगोंसे रुख मन्दा रहेगा । ता० ३० को चन्द्र शनि युति चन्द्र मंगल युति होनेसे तेजीकारक है ।

जनवरी १९५४ ई०

ता० २ शनि मंगल युति, पूर्वमें शुक्रका अस्त ता० ३ पूर्वाषाढका शुक्र, ता० ४ बुध शुक्र युति, चन्द्र शुक्र युति, चन्द्र बुध युति, ता० ६ में चन्द्र दर्शन होनेसे घटाबढीसे रुख मन्दा पाया जाता है । और यहां पर प्रमाणसे २) व ३) रुपए का मन्दा होगा । और ता० ७ से ११ तक तेजी । ता० १२ से १७ तक चांदी में मन्दा अवश्य आयेगा ॥

नोट—उपर्युक्त चांसोंका प्रयोग व्यापारीगण सावधानीसे करें । विशेषके लिये पत्रव्यवहार करें ।

अचूक चांस

ता० ४ से १८ नवम्बर १९५३ तक गुवार मटरमें १॥) मनका मन्दा आवेगा और चांदीमें १०) १५) की मन्दी आनेका परीक्षित योग है । ता० २७ फरवरीसे १३ मार्च १९५४ तक गुवार मटरमें १॥) मनकी तेजी और चांदीमें १०) १५) की तेजीका अचूक चांस है । और आगे ईश्वरकी लीला वही जाने ।—पं० गैंदामल आशाराम

परब्रह्म श्रीकृष्ण की प्यारी—

गौमाताका वध होते रहना क्या उचित है ?

[लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी]

भक्त श्री रामशरणदास जी पिलखुवाके सुप्रसिद्ध रईस जमींदार एवं भगवद्भक्त महानुभाव हैं।
[भक्त श्री रामशरणदास जी पिलखुवाके सुप्रसिद्ध रईस जमींदार एवं भगवद्भक्त महानुभाव हैं ।
जमींदारी जैसी क्षण भंगुर सम्पत्ति तो आपकी समाप्त हो चुकी है परन्तु अभी तक वास्तविक कल्याणका-
रिणी चिर स्थाई सम्पत्ति (भगवद्भक्ति सदाचार, धर्म सेवा आदि) की अक्षयनिधि आपके पास विद्यमान
है। भारतीय पुरातन संस्कृतिका प्रचार और धर्मसेवा ही आपके जीवनका चरमलक्ष्य है। गौब्राह्मण साधु
महात्मा और गुणीजनोंमें आपकी अटूट श्रद्धा है। अपने तथा अन्य साधु सन्त महात्माओंके धार्मिक
सद्विचारोंको लेखबद्ध करके आप साहित्यसेवा भी करते रहते हैं। 'कल्याण' 'गीताधर्म' 'सन्मार्ग',
आदि पत्रोंके पाठक आपके लेखोंसे भलीभांति परिचित ही हैं। 'श्रीस्वाध्याय' को भी एक उच्च कोटि
का धार्मिक, सांस्कृतिक पत्र मानकर आप विशेष आदरकी दृष्टि से देखते हैं और अब आपने निश्चय
किया है कि 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्कमें अपने लेख और महात्माओंके सदुपदेश जीवनचरितादि बरा-
बर भेजते रहेंगे। आगामी 'हेमन्ताङ्क' में आपके दो लेख (१ राणा शिवा के हिन्दू अब तू जाग !
जाग !! जाग !!! और २—'रामायण पढ़ो पर कैसे पढ़ो ?') प्रकाशित होंगे। आपके लेख पाठकोंकी
भारतीय संस्कृति सदाचार और ऐहलौकिक पारलौकिक उन्नतिकी ओर ले जानेमें सहायक सिद्ध होंगे।
—सम्पादक]

पहिले सभी गौको साक्षात् पतितपावनी जगमाता मोक्षदायिका जानते थे मानते थे। प्रत्येक सनातन धर्मी हिन्दूका यह दृढ़ विश्वास था कि गौ में ३३ करोड़ देवी देवताओंका वास है गोसेवा परम धर्म है, गोदर्शन महान् पुण्योंका फल है, गोरक्षार्थ प्राण देनेसे मोक्ष होता है। मृत्युके समयमें गोदान देनेसे भवसागर पार हो जाते हैं। इसी दृढ़ विश्वासके कारण पहिले लाखों मनुष्य गोरक्षाके लिए हंसते हंसते प्राण तक दे दिया करते थे और गो रक्षार्थ धन माल, भाई बन्धु, पिता पुत्र सबको स्वाहा करनेमें भी गौरव अनुभव किया करते थे। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र ही नहीं घोर जंगली, नट, कन्जर, सिपासी, भील जो महामूर्ख माने जाते हैं वह भी भले ही घोर मांसाहारी थे पर वह भी सर पर चोटी, बेटी और गोमाताकी रक्षा करने से नहीं चूकते थे। आजकलके इन अंग्रेजी पढ़े लिखे बी० ए० एम० ए० नेताओंसे जो हिन्दू घरोंमें जन्म लेकर

भी होटलोंमें मांस खा रहे हैं, गोभक्तोंको अपना भाई बता रहे हैं. उन्हें बेटियां ब्याह रहे हैं और अपने हाथों चोटी कटा रहे हैं और जो लाखों करोड़ों गायोंको काटकाट कर गोमांस कोरिया हंगरी सप्लाई कर रहे हैं और डालर कमा रहे हैं और बड़े गर्व के साथ नाक भौं सिकोड़कर कहते हैं कि गोवध बन्द नहीं होने देंगे। बूढ़े लँगड़े लूले गाय बैल देशके लिए भार हैं आदि २ जो चाहे बक रहे हैं। इनसे तो मेरे यह घोर जंगली नट कन्जर ही लाख दर्जे अच्छे हैं और सभ्य हैं जिन्हें गौ पूज्या है माता है यह ध्यान ज्ञान, मान अभिमान तो है जिन्हें इतना भी ज्ञान, ध्यान, नहीं कि गोवध जारी रहा तो सारा देशका देश रसातलको चला जायगा। हमारा लोक पर-लोक दोनों बिगड़ जायगा। सारी आजादीका मजा बर-बादीके रूपमें परिणत हो जायगा, सारा समाज ही निर्जीव मुर्दा बन जायगा। सारा देश बीमारियोंका अड्डा

बन जायगा। उस समय यह तुनक मिजाजी और गोवध बन्द नहीं होने देंगे मूर्खतापूर्ण शब्द और चाय, डिब्बेका विलायती अपवित्र दूध, कोकोजम घी कुछ भी काम नहीं देगा। हाय! हाय! इस मूर्खताका भी भला कुछ ठिकाना है कि गोवध बराबर जारी रखकर सारे देश को खड्डेमें डालनेमें और अपना लोकपरलोक बिगाड़ने में भी आनन्दका अनुभव हो रहा है। जिन पूज्या गौमाता की भारतके प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू नाक भौं सिकोड़ कर घृणा कर गर्वके साथ कहते हैं कि—"मैं गोवध बन्द नहीं होने दूंगा और बूढ़े लंगड़े लूले गाय बैल देशके लिए भार हैं उनसे बीमारी फैलती है, यह व्यर्थ ही खड़े खड़े खाते हैं।

जिन गायों को म० गांधीने हलोंमें जोतनेको लिखा मालूम है कि उन गायोंकी क्या महत्ता है? वेदशास्त्र उनके सम्बन्धमें क्या कहता है? और अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक साक्षात् जगन्नियन्ता परब्रह्म परमात्मा भगवान् उन्हें क्या समझता है? वेदमें जिसकी प्रशंसाके लिए लाखों मन्त्र भरे पड़े हों। ऋषि महर्षि सर्वस्व त्यागने पर भी अपने हाथों जिन गायोंकी सेवा करते हों, सारे देवी देवता जिसमें वास करनेमें अपने को भाग्यशाली समझते हों। अरे नहीं नहीं जिन पर विपत्ति देखकर निराकार ब्रह्म साकार होकर रक्षाके लिए आता हो और जिसे अपनी पूज्या स्मरणीया इष्टदेवी मान नंगे पांवों जंगल जंगल चराता हो, जिसकी पूजा करता हो, आरती उतारता हो, जिसकी धूलीमें स्वयं ब्रह्म लोट पोट होता हो और अपना नाम गोपाल कन्हैया रखाता हो, इससे बढ़कर गौमाताकी महिमा और क्या होगी। ब्रह्म श्रीकृष्णकी प्यारी इष्टदेव गैया मैयाको देशके लिए भार समझना और उसी गैया मैयाकी बोटी बोटी काटकर उसका मांस कोरिया हंगरीको भेज कर डालर कमाकर उस रुपयेसे गुलछर्रे उड़ाकर मूछों पर ताव देना और इस प्रकार हिन्दुओंके जले हृदय पर नमक छिड़कनेका कार्य करना और गोभक्षकोंको गले लगाना क्या इसी पापके बल पर देशोन्नतिकी डींगें मारी जा रही हैं! क्या इसीके बल पर देशमें सुख शान्ति लानेके स्वप्न देखे जा रहे हैं? क्या ऐसा करके ही देश को स्वर्ग बनानेकी सोच रहे हैं? नहीं नहीं ऐसा घोर जघन्य पाप करके सुख शान्ति नहीं वरन ऐसा घोर पतन हो गया है और होगा कि यह गोहत्याका पाप और गोहत्यारों का साथ सारे विश्वको लेकर गड़क ही जायगा। गोहत्याको बराबर जारी रखना पापके घड़ेको भरना है जो ऐसा लेकर डूबेगा कोई नाम लेवा पानी देवा भी नहीं मिलेगा।

ब्रह्म श्रीकृष्णकी इष्टदेव गोमाता को मुखसे एक अपशब्द कहना भी जहां नरककी सैर कराता है, भूलसे एक छड़ी मार देना भी जहां देवी देवताओंको कुपित करता है। एक गोरक्त की बूंद गिरना भी जहां सारे गांवको ले डूबता है, स्वप्नमें भी जहाँ गोमाताका अनशन आत्मा का पतन सूचित करना है। गोहत्या सुनना देखना भी जहां पितरोंको नरककी ओर ढकेलता है। गोभक्षकों का मुंह देखनेसे भी जहां पातक लगता है। गौ की झूंठी शपथ या सौगन्ध खानेसे भी जहां नरकका भय बना रहता है उसी गैया मैया की बोटी बोटी काटकर विदेशमें भेजकर रुपया कमाकर हम सुखी रह सकेंगे, हमारा देश सुखी होगा, उन्नति करेगा कोरी कल्पना है। यह कोरा पागलों का प्रलाप है और सारे देशको धधकती अग्निमें झोंककर सदाके लिए राख का ढेर बना देनेका एक मात्र कार्य है और कुछ नहीं। विष (जहर) पीकर अमर होने की सोचना पागलपन नहीं तो क्या है? अरे कहो गोब्राह्मणों से बैर मोल लेकर गोब्राह्मणोंको सताकर भी किसी ने आज तक सुख पाया है? नहीं पाया, नहीं पाया, नहीं पाया; और न पायेंगे? जब पूज्य गौ ब्राह्मणोंको सताकर दस सर और बीस भुजा वाला रावण भी धूली में मिल गया, सोने की लंका राख हो गई और उसका नाम लेवा पानी देवा भी कोई नहीं रहा। जब गोब्राह्मणोंको सताने वाले हिरण्यकशिपु, वेन, कंस भी नहीं रहे। औरङ्गजेब, मोहम्मदगौरी भी जब दुर्दशा को प्राप्त हुए तब भला तुम भुनगोंकी किनमें गिनती है।

अरे कन्हैयाकी प्यारी गैया गैयाको मत सताओ, मत तड़पाओ, बोटी बोटी काटकर विदेशोंको मत भेजो। भारतकी नाक मत कटाओ, अपनी राक्षसी हरकतोंसे बाज आ जाओ इसीमें भलाई है। दिनरात अहिंसा अहिंसाकी रट लगाते लगाने वाले लोगों, अहिंसाकी डींग मारने वाले लोगो दया करो इन निरपराध गायों पर बन्दरों पर, मोरों पर इन्हें भी परमात्माने बनाया है। इन्हें सताकर तुम तीन कालमें भी सुख नहीं पा सकोगे ? सारे देशको अण्डे मांस मछलीसे पाटकर सबको मांसाहारी बनाकर करोड़ों बन्दर, मोर, गायोंको मौतके घाट उतारकर तुम्हारी अहिंसाका अच्छा खासा भण्डाभोड़ हो गया है और तुम्हारा असली रूप भी जनताके सामने आ गया हैं। दया करो दया करो इन निरपराध गायों पर दया करो, मानवता के नाते दया करो, अहिंसा अहिंसा चिल्लाते हो इस नाते दया करो, गायका घी दूध दही मक्खन मलाई उड़ाते हो इस नाते दया करो, देश रसातलको चला जायगा, इस नाते दया करो। आगामी सन्तान निर्जीव मुर्दा बन जायेगी, कायर, नपुंसक हिजड़ी बन जायेगी इस नाते दया करो। भारतकी आन वान, शान, मान, धूलमें मिल जायेगी। इस नाते दया करो। अरे क्या बिल्कुल ही बज्रका हृदय है ? अरे कुछ तो सोचो नरकका भय करो बच नहीं सकोगे, गोमाता का अपराध तुम्हें लेकर डूबेगा इसमें तनिक भी सन्देह मत करो। अरे धर्मप्राण भारतमें जन्म लिया, हिन्दू घरानेमें पैदा हुए फिर भी लाखों गायों को मरवा मरवा कर खून की नदियां बहा रहे हो, बोटियां कटवा कटवाकर कोरिया अंग्रेजोंको खानेको भेज रहे हो, और देहली में बैठे प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति, एम० एल० ए० बने गाने, बजाने, डांस देखने, दावतें उड़ाने, खेल देखने. विदेशियोंकी दावतें करनेमें मस्त हो रहे हो तुम्हें तनिकभी लज्जा नहीं आती ? शर्म नहीं आती ? परमात्मा श्रीकृष्णकी पूज्या गोमाताको मरवाकर परमात्मासे बैर मोल लेकर तुम भले ही कुछ दिन और खुशी मना लो पर याद रखो अन्तिम परिणाम ऐसा महान् भयंकर होगा कि जिसे स्मरण करते ही रोमांच खड़े हो जाते हैं। अरे पूज्या गोमाताको सताकर अपने पैरों पर आप अपने हाथों कुल्हाड़ा मत मारो। अपने ही हाथों अपनी कबर मत खोदो, अपने हाथों अपना सत्यानाश मत करो। अपने हाथों अपना लोकपरलोक मत बिगाड़ो। अपने हाथों अपने लिए नरक का दरवाजा मत खोलो। प्रभुके दरबार में न्याय है अन्याय नहीं, देर है अन्धेर नहीं; वहां पर एक चींटीकी भी फरियाद सुनी जाती है फिर गोमाताकी पुकार नहीं सुनी जावेगी और उसके सताने वालोंको धूलीमें नहीं मिलाया जायगा यह कैसे हो सकता है ?

'तुलसी आह गरीबकी कभी न खाली जाय।'

आज तुम वेद शास्त्रको ठुकराकर, ऋषि महर्षियोंको पागल बतलाकर गोमाताके साथ जो खिलवाड़ कर रहे हो कोई उन्हें लंगड़ी लूली अपाहज बतलाकर कसाईको सौंपनेकी सलाह देता है, कोई १४ वर्षसे पहलेकी नहीं कटनी चाहिए। बादकी मारनेमें काटनेमें कोई हानि नहीं—बकता है, कोई बेकार गायों से बीमारी फैलती है बतलाता है तो कोई गोमांस भेजने से विदेशोंसे रुपया मिलता है इसका लोभ दिखाता है। कोई गायके चमड़ेसे बढ़िया २ जूते बनते हैं, सूटकेस बनते हैं, वह बनने बन्द हो जायेंगे कहता है तो कोईगायों को हलोंमें जोतनेको कहता है तो कोई नसल सुधारके नाम पर हालैण्ड अमेरिकाके सांडोंका वीर्य मंगाकर गायों के नली द्वारा घुसेड़कर नसल सुधारनेकी ससाह देता है यह जगन्माताके साथ तुम्हारा खिलवाड़ तुम्हारा बेड़ा गरक करके रहेगा। यह पूज्या प्रातः स्मरणीय अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक श्रीकृष्ण ब्रह्म की पूज्या इष्टदेवी हैं इनके सम्बन्ध में स्वप्नमें भी भूलसे भी ऐसी घोर पाप पूर्ण बातें कहना, सोचना भी महान् घोर जघन्य पाप है इससे बढ़कर कोई दूसरा पाप नहीं और इस पाप के फल स्वरूप घोरातिघोर नरककी यातनाओंसे बचाने वाला कोई साधन नहीं। आज तुमने गाय को पशु से भी बदतर मान लिया है जो सेवा करना तो दूर कभी उसे खाने की बातें करते हो तो कभी बोटी बोटी काट कर रुपया कमानेकी सोचते

सम्पूर्ण सट्टे मार्केटोंके अचूक चांस

ता. १७ अक्टूबर से ता. १६ जनवरी १९५४ तक

[ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य प्रो० श्री गणेश दैवज्ञ]

१. ता. १७ अक्टूबरको मध्याह्न १ बजेसे चांदी ३) ३॥) रुई ३०) ३५) अलसी १॥) २) शेयर ॥) ॥।) गुवार ॥=) मटरा १) तक संपूर्ण वस्तु मंदी चलेगी। यह मंदी ता. १९ को साकायंल तक रहेगी।

(२) ता. २१ अक्टूबरको सायं ३ बजेसे चांदी २) २॥) सुवर्ण ॥) ॥।) अलसी, सरसों मूंगफली, काकड़ा, बारदाना १॥) २) गुवार शेयर मटर ॥) ॥।) मंदा हो जायेगा। ता. २४ तक मंदी चलेगी।

(३) ता. २९ अक्टूबरको प्रातःसे चांदी ३) ४) सुवर्ण शेयर गुवार मटर ॥।) १) अलसी सरसों मूंगफली पाट बारदाना १॥) २) रुई डिफर्ड शेयर, कालीमिर्च इत्यादि संपूर्ण पदार्थोंमें तेजी करता है। ता. ३१ तक तेजी चलेगी। दिनके १ बजे करीब नफा खालेना।

(४) ता. ३ नवंबरको फिर तेजी संपूर्ण पदार्थोंमें आयेगी और ता. ५ को सायं तक रहेगी।

(५) ता. १३ नवंबर प्रातः से मंदी चांदी ३॥) ४) सुवर्ण, शेयर, सिल्क, रेशम, गुवार मटर १) १।) अलसी सरसों मूंगफली बारदाना २) २॥) रुई डिफर्ड कालीमिर्च सीसा आदि वस्तुओंमें मंदी ता. १५ को सायंकाल तक रहेगी।

(६) ता. १६ नवंबर से २१ नवंबर तक चांदी ५) ७) सुवर्ण शेयर गुवार, मटर, सिल्क, सूत, सण, १।) १॥) बारदाना, पाट, कुष्टा, सरसों मूंगफली अलसी, रुई, मिर्च, इत्यादि संपूर्ण वस्तुओंमें मंदी चलेगी।

नोट—ता. १२ नवंबरको सायंकाल बन्द होते बाजार मालका बेचाण करो और ता. २१ नवंबरको माल पोते को यह अच्छी मंदी का चाँस हैं।

(७) ता. २६ नवंबर मध्याह्न १ बजे तेजी खेलो यहां से ता. २८ को सायं ३ बजे तक संपूर्ण बाजारोंमें तेजी चलेगी, आंकड़ा चोकस नहीं।

(८) ता. ३० नवंबरको प्रातःसे ता. १ दिसम्बरको सायं काल तक सर्व सट्टे मार्केट अच्छे तेज रहेंगे। आंकड़ा जाननेके लिए व्यापार रुख खरीदें।

(९) ता. १० दिसम्बरको प्रातःसे ता. १२ को सायं काल तक चांदी २॥) ३) सुवर्ण शेयर, सिल्क, सूत, सण, ऐरंडा, गुवार, मटर, ॥।) १) अलसी, सरसों, मूंगफली, बारदाना रुई डिफर्ड काली मिर्च आदि सपूर्ण पदार्थ मंदे रहेंगे।

(१०) ता. १४ दिसम्बर मध्यान्ह २ बजेसे ता. १६ को सायं ४ बजे तक संपूर्ण बाजारोंमें अच्छी मंदी आयेगी।

(११) ता. २३ दिसम्बरसे ता. २ जनवरी तक बाजार अच्छे तेज चलेंगे चांदी ७) ८) सुवर्ण शेयर सीसा, सूत, सण, गुवार, मटर १॥) २) अलसी, सरसों, मूंगफली, बारदाना, पाट, २॥) ३) रुई डिफर्ड काली मिर्च १००) १२०) टका तेजी पकड़ लेगा।

हो कभी खाल उधेड़नेकी तो कभी गायोंके नली घुसेड़ने की, तो कभी हलोंमें जोत जोत कर मार डालने की। अरे तुमने तो कसाइयोंको भी मात कर दिया है और सारे देश को घोरहिंसक मांसाहारी बनानेका निश्चय कर लिया है। हिंदुओं, होशमें आओ गोमाताकी विपत्ति अब नहीं देखनी प्रतिज्ञा करो और गोरक्षाके लिए प्राणपणसे लग जाना इसी में तुम्हारा हित है।

बोलो गोमाताकी जय

—

त्रैमासिक व्यापार-रुख

रुई, सरसों, अलसी, बारदानाकी तेजी मंदी

[ज्योतिषाचार्य श्री गणेश विद्यासागर विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञ]

ता. १७ को आये उछाले उपरोक्त चारों वस्तुएं, (रुई, सरसों, अलसी, बारदाना) बेच दो और धीरे धीरे मंदी की तरफ इनका रुख चलता रहेगा, बेच कर लेना चाहिये। ता० २६ अक्टूबर तक बाजारोंमें मंदी चलेगी। ता० ३० से ता० ३ नवम्बर तक भाव पड़े रहेंगे। ता० ४ नवम्बर से उपरोक्त वस्तुओंमें तेजी चालू हो जायेगी और ता० २१ नवम्बर तक अच्छी मंदी चलेगी, यहां मालको लेकर ही बेचना चाहिए। ता० २२ नवम्बर से २८ नवम्बर तक मंदी खेलना। ता० २९ नवम्बर से फिर तेजी चलेगी, रुईमें तो तेजी चलेगी। परन्तु अलसीमें भारी तेजी आ जायेगी, यह तेजी १२ दिसम्बर तक चलेगी। ता० १३ दिसम्बर से फिर बाजारोंमें मंदीका जोर अधिक आयेगा, ता. ३ जनवरी तक मंदी अधिक आयेगी। ता० ४ जनवरी १९५४ से बाजार दोनों तरफ चलेंगे। परन्तु मंदी वाली पार्टीका योग अधिक रहेगा। ता० १७ जनवरी से फिर तेजी चालू हो जायेगी। यह तेजी बहुत दिन तक रहेगी। इसका विवरण आगामी 'हेमन्ताङ्क' में देंगे वहीं देखना।

नोट—यहाँ पर एक योग ऐसा भी आता है जो ता० २५ को बाजारमें मंदीका झटका देगा। परन्तु यह मंदी टिकाऊ नहीं रहेगी। फिर भी इस समयका ध्यान रखते हुए होशियारीसे व्यापार करें करावें। यदि मंदी आये भी तो मामूली समझना यह चांस हाथसे नहीं जाना चाहिए।

(१२) ता. ६ जनवरी १९५४ से ता. ८ जनवरी तक बाजार मंदीमें चलेंगे चांदी २) २॥) इसी पैमानेसे अन्य वस्तु समझो।

(१३) ता० १० जनवरी मध्यान्ह १ बजेसे ता. १३ जनवरी मध्यान्ह ३ बजे तक बाजार मंदे रहेंगे, चांदी ३) ३॥) गुवार, मटर, शेयर, सुवर्ण ॥) १) रुई अलसी, सरसों बारदाना, पाटमें भी अच्छी मंदी रहेगी।

सूचना—यह १३ चाँस आपको अचूक दिये गये हैं इन चाँसों पर आप व्यापार करें अवश्य लाभ होगा। हमारा निशाना खाली नहीं जायगा। यह याद रखना।

—

गुवार—मटर—चणा—धान्य की तेजी मंदी

ता० १४ से फिर मंदीका झटका लगेगा ता० १९ तक। ता० २० से फिर तेजी एक लाईन पकड़ेगी। और ता० २३ तक तेजी चलेगी। ता० २५ से बाजार दोनों तरफ मामूली घटा बढ़ी करता रहेगा, यह हालत ता० २७ तक रहेगी। नफा घटे भाव खरीदने वालोंको मिलेगा।

ता० २८ अक्टूबरको अच्छी तेजी रहेगी। ता० ३० अक्टूबरको अचानक मंदी आ जायेगी यह मंदी ता० ३ नवंबर तक रहेगी ता० ४ नवम्बर से तेजी खोलना चालू कर दो, ता० ७ से अच्छी मंदी चल पड़ेगी। ता० १४ से और भी मंदीकी लाईन पकड़ लें, यह मंदी ता. १९ तक रहेगी, ता० २० से तेजी चालू होगी, और ता. २४ तक रहेगी, ता. २५ से ४ दिसम्बर तक बाजार दोनों तरफ मामूली घटा बढ़ीमें चलते रहेंगे। ता. ५ दिसम्बरसे मंदी चालू हो जायेगी। तथा ता० ८ से भारी मंदी चल पड़ेगी, यह मंदी ता. १६ दिसम्बर तक रहेगी। ता. १७ से ता २५ दिसम्बर तक तेजी खेलना। ता. २६ दिसम्बरसे ता. १३ जनवरी १९५४ तक मंदी चलेगी। ता. १४ जनवरी से फिर तेजी चालू हो जाये। शेष फिर अगले अंकमें।

—

त्रैमासिक व्यापार विमर्श

[लेखक—श्री पं० बिहारीलाल जी शर्मा दैवज्ञभूषण]

आश्विन शुक्ला १३ मंगलवार

ता० २० अक्टूबर दिन के १ बजे से ३॥ दिन में।

तिथि त्रयोदशी मंगलवारको बुलियन मार्केटमें सोना चांदीकी तेजो मंदी सही पड़े। दिनाङ्क २१ बुधवारको रुईकी तेजी-मंदी सही पड़ना जानिये। पूर्णिमा गुरुवारको वायदा कर होगा। बहुत दिनोंके बाद बड़ी घटा-बढ़ीका समय आयाहै। अतएव क्लेरिंग भरनेकी ताकत हो तो खुला सौदा करें, अन्यथा तेजी-मंदी (नजराना) लगवा कर पेटामें लेवा-बेचीकी तारुणी सुधारते रहें।

कार्तिक कृष्णा १ शुक्रवार

ता० २३ अक्टूबर शामके ७ बजे से ३३ दिनमें

तारीख २३ शुक्रवारको शेयर बाजारमें बदलाव होगा और काटन मार्केटमें कमेटी क्लेरिंग छापेगी। यही समय सोना-चांदीके वायदा बदली और क्लेरिंग पड़नेका है। जिधर की हवा चलती हुई मालूम दे, उधर ही रुखका सौदा कर लीजिये।

कार्तिक कृष्णा ६ मंगलवार

ता. २७ अक्टूबर प्रातः ४ बजे से ३३ दिनमें

दिनांक २७ मंगलवारको एरण्डाकी तेजी-मंदी सही पड़े। प्रथममें जिन-जिन जिनसोंकी क्लेरिंग छपी है उनके चालणका भुगतान होने जा रहा है। ठहरे हुए बाजार और टिके हुए भावोंमें बहुत से व्यापारी नजराना खा लिया करते हैं। आपको जैसा उचित लगे, वैसा करें।

कार्तिक कृष्णा ८ शुक्रवार

शुक्रवार ता. ३० अक्टूबर दिनके १२ बजे से ३३ दिनमें

तारीख ३० शुक्रवारको रुईकी क्लेरिंग छपेगी। प्रथम की छपी क्लेरिंगोंका लेन देन होने जा रहा है। जब कोई खुलासा ही नहीं मिल रहा है, तो व्यापारकी सलाह देवें क्या। मार्केटके टोनको देख कर किसी वस्तुका सौदा कर लीजिए।

कार्तिक कृष्णा ११ सोमवार

ता. २ नवम्बर दिनके ६ बजे से ३॥ दिनमें

तिथि त्रयोदशी बुधवारको खानगीमें सोना चांदीकी तेजी-मंदी सही पड़ने जा रही है। प्रथममें छपी गई क्लेरिंग भुक्रान त्यौहारकी वजह से सम्भवतः दो दिन पीछे भी हो। स्थिर चलते बाजारोंमें थोड़ी घटा-बढ़ीका संकेत मिला है। अतः एक उछालेमें बेचते मंदीके रिएक्शनमें खरीदें, इसी तरह घटे भावोंमें डबल खरीद उछले भावोंमें नफा पकानेमें रहें।

कार्तिक कृष्णा ३० शुक्रवार

ता. ६ नवम्बर प्रातः ४ बजे से ३॥ दिनमें

सूर्य विशाखा पर आया, शुक्रनेपच्यूनकी युति, बुध पश्चिममें अस्त होने जा रहा है। जब कि शनि पूर्वमें उदय होनेकी तैयारीमें हैं? द्वितीया रविवारको ३० मुहूर्ती-उत्तर श्टंगोन्नतिमें चन्द्र दर्शन देगा। परिणाम व्यापारी और कार्तिकीय विक्रम सम्बत् २०१० प्रवेशके साथ २ ही आकाश में भी रंग-राग बदलते हैं। अतएव वस्तुओंके भावमें भरपूर घटा-बढ़ीका समय है। टाटा स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें २०) ३०) टके, रुई रेटमें १०) १५) एरण्डाके मूल्यमें ४) ५) चांदीके भावमें २) ३) और सोनाकी कीमतमें १॥) टकेका चढ़ाव उतार चलते-नितान्तमें तेजीका असर चलना पाया जाता है। बहुत वर्षों बाद ऐसा प्रसंग आया है कि दीपावली के दिन शेयरका बदला तथा रुईकी क्लेरिंग छपने जा रही है। बहुत दिनों बाद तेजीकी सूचना मिली है। अतएव बदस्तूर वस्तु खरीदकर संतोषके नफे से सौदाको सुलटते रहें। अगर तो तेजी लगवाकर व्यापार करें। चान्स पक्का और परीक्षित है।

कार्तिक शुक्ला ३ सोमवार

ता. ६ नवम्बर दिनके १० बजे से ३॥ दिनमें

दिनांक १० मंगलवारको एरण्डाकी तेजी मंदी सही ले। इसी अवसर पर सोना-चांदीकी क्लेरिंग छपे। रुई व शेयर बाजारमें बलणाका भुगतान होने जा रहा है। जब चलती हुई तेजीको धक्का लगनेका संकेत मिला है तो प्रत्येक उछालेमें वस्तु बेचिये या मंदी लगवाकर व्यापार करें करावें।

कार्तिक शुक्ला ६ गुरुवार

ता. १२ नबम्बर शाम ६ बजे से ३॥ दिनमें

आकाश मण्डलमें स्थिरता नहीं है और ग्रहोंमें घुड़दौड़ सी लग रही है। अतएव जिन्सोंमें टाटा स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ४७) ५०) रुई रेट में १०) १२) एरण्डाके भावमें ४) ६) चांदी की प्राईस में ३) ४) और सोनेके मूल्यमें २) २॥) टकेका चक्कर पड़ जाना प्रतीत होता है। इसमें कोई अन्देशा जैसी बात नहीं है। जब स्थाई और यायि दोनों तरफके संयमोंमें संकेत वटा-बढ़ीका मिला है तो बिना हिचकिचाहटके नजराणा लगाकर सौदा करें-करावें। अगर क्लेरिंग भरनेकी हिम्मत हो तो खुली लेवा बेची करके तत्काल में ही धन कमाईये। फाटक लगानेका वक्त है।

कार्तिक शुक्ला १० सोमवार

ता. १६ नवम्बर ५ बजे प्रातः से ३॥ दिनमें

यहां इकतर्फा तेजीकी राय मिली है अतएव घटे हुए भावकी वस्तु खरीदकर उछालेमें नफा पूर्वक बेचते बार २ तारुणी सुधारियेगा। वायदा बाजारोंमें तेजीकी हवा प्रतीत होती है।

कार्तिक शुक्ला १३ गुरुवार

ता. १६ नवम्बर दिनके ६ बजे से ३॥ दिनमें

वस्तुतः ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ३०) ४०) रूई रेटमें १५) २०) एरण्डाकी कीमतमें ४) ६) टकोंका चढ़ाव उतार होना पाया जाता है। चान्स परीक्षित और पक्का है। तिथि चतुर्दशी अपितु त्रयाह-पूर्णिमा शुक्रवारको शेयर बाजारमें बदला होगा। तथा रूईकी क्लेरिंग छपे। इसी दिन चांदी-सोनेका मासिक वायदा कर होगा। दोनों तरफ बाजारकी रफ्तार चलेगी और वस्तुका भाव घटेगा तो किसी का बढेगा। ऐसी स्थितिमें मार्केटका टोन देखकर माल कमानेका रास्ता निकाल लीजिये।

मार्गशीर्ष कृष्णा २ रविवार

ता. २२ नवम्बर शामको ६ बजेसे ३॥ दिनमें

दिनांक २४ मंगलवारको एरण्डीकी तेजी-मंदी सही पड़े। प्रथममें छापी गई क्लेरिंगोंका लेन-देन होने जा रहा है। चांदी सोनाका नये पुराने सौदोंका बदला होते क्लेरिंग का समय है। स्थाई मंदीमें जब तेजी के प्रसंग आये हैं तो उछालेमें बेचान करें। मंदी लगाए और रिएक्शनमें बार २ सौदाको सुलटते रहें।

मार्गशीर्ष कृष्णा ५ बुधवार

ता. २५ नवम्वर रातके ११ बजे से ३॥ दिनमें

यायि तथा स्थाई दोनों तरफकी सूचना मंहगाईकी मिली है। अतएव ऐसे अवसरमें प्रायः खरीद करना या तेजी लगाना उचित पाया जाता है। सौदा किये बाद बेपरवाह न रहते उछालेमें नफा पकानेमें रहें।

मार्गशीर्ष कृष्णा ६ रविवार

ता. २६ नवम्बर प्रातः ८ बजे से ३॥ दिनमें

छः छः ग्रहोंकी तीरंदाजी देखते विदित होता है कि चलते हुए स्थाई मंदी योगोंमें तत्काल तेजीके उछाले आकर भाव जहांके तहां मालूम देंगे। अतएव रूईके मूल्यमें ८) १०), ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें १५) २०), एरण्डा के प्राइसमें ४) चांदीके भावमें २) और सोनाके भावमें १) टकेका उछाला आकर तुरन्त मंदीका रिएक्शन आये। बराबर सूचित करते आ रहे हैं कि स्थाई मंदीमें यहां बार-बा तेजीके उछाले आयेंगे और यहां पर भी यही बात है। वस्तुतः मार्केटकी रफ्तार परख कर व्यापार कर लोजिये।

मार्गशीर्ष कृष्णा ११ बुधवार

ता. २ दिसम्बर दिनके २ बजे से ३॥ दिन में

खास तेजी दिखाई नहीं पड़ती। ऐसे अवसर पर समझदार सौदागर बेचाणका व्यापार किया करता है। अगर तो

मंदी लगाकर गलियोंमें माल कमा लिया करता है। आप भी दांव लगाइये।

मार्गशीर्ष कृष्णा १४ शनिवार

ता. ५ दिसम्बर प्रातः ८ बजे से ३॥ दिनमें

यहां फिर घटा-बढ़ीका प्रसंग उपस्थित हुआ है। इतएव वस्तु चाहे खरीदें या बेचें। भाव जरूर मिलेगा। अगर तो नजराणा लगा कर पेटेमें लेवा-बेची करें।

मार्गशीर्ष शुक्ला ३ बुधवार

ता. ९ दिसम्बर प्रातःकाल ४ बजे से ३॥ दिनमें

प्रसंग इकतर्फा तेजीका आया है अतएव आप फवती वस्तुको खरीदकर उछालेमें नफा पकानेमें रहें। हमारे संकेत को परिपूर्ण समझ करके ही सौदा करें।

मार्गशीर्ष शुक्ला ६ शनिवार

ता. १२ दिसम्बर दिनके ६ बजे से ३॥ दिनमें

बहुत समय बाद सात २ ग्रहोंमें तीरन्दाजी होने जा रही है। अतएव वस्तुओंमें ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भाव ३०) ४०) रूई रेटमें १५) २०) एरण्डाके मूल्यमें ४) ६) चांदीकी कीमतमें ३) ४) तथा सोनामें २) २॥) टकोंका चढ़ाव-उतार होना पाया जाता है। समय सावधानीसे बर्तने का है। समय पुख्ता घटा-बढ़ीका आया है अतएव गरीब व्यापारी फाटककी गली लगायें। श्रीमंत चाहें खरीदें या बेचें। भाव दोनों तरफ जरूर मिलेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ला १० मंगलवार

ता० १५ दिसम्बर दिन के ४ बजे से ३॥ दिन में

तीनों ग्रहोंकी तारतम्यता देखते हरएक वायदा बाजार में मन्दीकी हवा चले खासकर रूई रेटमें ५) ७) चांदी की कीमत में २) ३) के टके घटे। जब संकेत सस्ताईका मिले है तो बादस्तूर बेचान बोल दीजिए सब और सन्तोषके थोड़े नफेमें ही व्यापार सुलटाते रहें।

मार्गशीर्ष शुक्ला १२ गुरुवार

ता० १८ दिसम्बर रात्रि के ११ बजे से ३॥ दिनमें

श० ने शु० मं० और राहु ने बाणयुद्ध ठाना है। अतएव स्थाई योगोंमें चलती हुई मन्दीको धक्का लगते अनायास तेजी आना पाया जाता है। अतएव रूई, सोना, चाँदी, एरंडा और ताता स्टील डिफर्ड शेयर के भावों में प्रायः तेजीका असर रहे। संख्याका निर्णय नहीं है। चलती हुई मन्दीमें जब तेजीका इशारा मिल रहा है तो बिना किसी संकोचके वस्तु खरीदिए। अगर तो तेजी लगा कर बार बार सुधारते रहिए।

पौष कृष्णा २ मंगलवार

ता० २२ दिसम्बर प्रातः ६ बजे से ३॥ दिन में

सायन गणित अनुसार उत्तरायण प्रवृत्ति होने जा रही है। जब जब बुध उदय अस्त होता है तब तब रूई : चांदी आदिके भावोंमें जरूर घटा बढ़ी हुआ ही करती है। और यहां पर भी होगी। ह० सू० के० लु० लु० तथा सूर्य बुधके बाण चल रहे हैं। छः छः ग्रहोंका संघर्ष देखते तेजी की तमन्ना अधिक चले ऐसा लगता है। अतएव वस्तुओं में ताता स्टील डिफर्ड शेयर के भाव में २०) ३०) रूई रेट में १०) १५) एरण्डा के भाव ३) ४) चांदी की प्राइस में २) ३) सोना के भाव में १) १॥) टका की घट बढ़ चलते नितान्त में बढ़ना पाया जाता है। हम दुविधा की सलाह नहीं दे रहे हैं किन्तु प्रसङ्ग ही ऐसे बने हैं कि भाव दोनों तरफ चलेंगे। अतएव आप चाहे वस्तु खरीदें या बेचें। भाव अवश्य मिलेंगे। अगर तो चाहे नजराना लगाकर व्यापार चलाइये।

पौष कृष्णा ५ शुक्रवार

ता० २५ दिसम्बर दिन के १२ बजे से ७ दिनमें

जब समय घटा बढ़ी का है तो एकांगी सलाह बतावें ही क्या? यही कि नजराना लगा कर पेटे में लेना बेचना, बेचना लेना करते रहिये।

पौष कृष्णा १२ शुक्रवार

ता० १ जनवरी प्रातः ४ से ३॥ दिनमें

स्थायी योग मंदीके तथा स्थायी योग तेजीके जुटे हैं। समय दोनों ओरकी घटा बढ़ी के हैं अतएव वस्तु चाहे खरीदें या बेचें। अगर तो नजराना लगा कर व्यापार करें। भाव अवश्य मिलें।

पौष कृष्णा १४ सोमवार

ता० ४ जनवरी प्रातः ८ बजे से ३॥ दिन में

पूर्वोक्त योगों का असर चपल है। शुक्र पूर्वाषाढ़ा आया, अमावस्या मंगलवार व्याघात योगमें पड़ना शुक्ल पक्षकी प्रारम्भिक तिथिका क्षय होना। प्रतिपदानंतर द्वितीया बुधवारको ४५ मुहूर्त उत्तर शृङ्गोन्नति चन्द्र दर्शन देगा। ईसामसी १९५४ का बैठता वर्ष महान मन्दी कर सूचक बन रहा है। संयोगोंका सारांश देखते प्रत्येक मुद्दालेमें वस्तु बेच कर या मन्दी लगाकर व्यापार कीजिए। चांस परीक्षित तथा पक्का है।

पौष शुक्ला ६ रविवार

ता० १० जनवरी रात १० बजे से ३॥ दिनमें

गुरु बुध और शुक्रने तीरन्दाजी की है। वर्ष भर में यह पहला ही मौका है कि एक साथ तीन तीन शुभग्रहोंने इस अवसर पर खिलवाड़ की है। अतएव ताता स्टील डिफर्ड शेयर के भाव में ४०) ५०) टके, रूई रेट में १५) २०) रुपए, एरण्डा के मूल्य ४) ६) टके, चांदी की कीमत में २) ३) रुपए और सोना के भाव में १॥) २) टके घटना प्रतीत होता है।

पौष शुक्ला १० गुरुवार

ता० १४ जनवरी प्रातः ४ बजेसे ३॥ दिनमें

समय घटा बढ़ीका तो है ही फिर भी हमारा ख्याल मन्दीका है। अतएव उछालमें बेचें, या मन्दी लगवा कर व्यापार करें, साथ ही मार्केटके टोनका भी ध्यान रखें।

—×—

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

आश्विन शुक्ला ११ रविवार ता० १८	अक्टूबर	पाशाङ्कुशा एकादशी व्रत स्मार्तानां
,, ११ सोमवार ता० १९	,,	एकादशी व्रत वैष्णवोंका
,, १३ मंगलवार ता० २०	,,	भौम प्रदोषव्रत
,, १५ गुरुवार ता० २२	,,	सत्यव्रत शरत् १५
कार्तिक कृष्ण ३ रविवार ता० २५	अक्टूबर	श्रीगणेश ४ करवाचौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ७।५८
८ गुरुवार ता० २९	,,	अहोई अष्टमी गुरुपुष्यामृत
११ सोमवार ता० २	नवम्बर	रमा एकादशीव्रत
१३ बुधवार ता० ४	,,	प्रदोषव्रत धन १३ श्री धन्वन्तरि जयन्ती
१४ गुरुवार ता० ५	,,	रूप १४ श्री हनुमज्जन्म दिन नरकहरा १४
३० शुक्रवार ता० ६	,,	दीपमाला श्री महालक्ष्मी पूजन
कार्तिक शुक्ला १ शनिवारं ता० ७	नवम्बर	गोवर्धनपूजन अन्नकूट वष्टिकावर्षण (रस्साकशी)
२ रविवार ता० ८	,,	चन्द्रदर्शन यम २ भाई दूज दघातकलम—पूजन बलराज
८ शनिवार ता० १४	,:	गोपाष्टमी
९ रविवार ता० १५	,,	कूष्माण्डा अक्षया ९ परिक्रमा नवमी
१० सोमवार ता० १६	,,	वृश्चिक सँक्रान्ति पुण्यकाल मु० १५
११ मंगलवार ता० १७	,,	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत भीष्म पंचकारम्भ।

१२ बुधवार ता० १८ ,, प्रदोष व्रत चातुर्मास्यव्रत समाप्ति
१३ गुरुवार ता० १९ ,, वैकुण्ठ १४ धात्री (आमला) भोजन
१४ शुक्रवार ता० २० ,, सत्यव्रत टुकरी १५ कार्तिक स्नान भीष्मपंचक समाप्ति
पुष्कर यात्रा श्री नानक जयन्ती।

मार्गशीर्ष कृष्ण ४ मंगलवार ता० २४ श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ७।४३
८ शनिवार ता० २८ ,, श्री महाकाल भैरव जयन्ती
११ बुधवार तारीख २ दिसम्बर उत्पन्ना एकादशी व्रत
१२ गुरुवार ता० ३ ,, प्रदोष व्रत
३० रविवार ता० ६ ,, अमावास्या
मार्गशीर्ष शुक्ल २ मंगलवार तारीख ८ दिसम्बर चन्द्र दर्शन
६ शनिवार ता० १२ ,, स्कन्दषष्ठी चम्पा ६ ललिता ६
९ मंगलवार ता० १५ ,, धनुः संक्रान्ति पुण्यकाल मु० ३०
११ बुधवार ता० १६ ,, मोक्षदा एकादशी व्रत श्रीगीता जयन्ती
१३ शुक्रवार ता० १८ ,, प्रदोषव्रत
१५ रविवार ता० २० ,, सत्यव्रत श्रीदत्त जयन्ती
पौष कृष्ण ३ बुधवार २३ दिसम्बर श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।२९
११ गुरुवार ता० ३१ ,, सफला एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए
११ शुक्रवार ता० १ जनवरी एकादशी व्रत वैष्णव सम्प्रदायका
१२ शनिवार ता० २ ,, शनि प्रदोषव्रत
३० मंगलवार ता० ५ ,, अमावस्या
पौष शुक्ल १ बुधवार ता० ६ ,, चन्द्रदर्शन
७ सोमवार ता० ११ ,, जन्मदिन श्री गुरुगोविन्दसिंह जी
८ मंगलवार ता० १२ ,, श्रीदुर्गाष्टमी लोहड़ी उत्सव पंजाब देशमें
९ बुधवार ता० १३ ,, मकरमें सूर्य मु० १५
१० गुरुवार ता० १४ ,, मकर संक्रान्ति पुण्यकाल दिन भर

त्रैमासिक भविष्य प्रकाश

तीन मासकी साप्ताहिक तेजीमंदी

[ले०—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

पहिला सप्ताह ता. १७ से २३ अक्टूबर तक—

चांदी, सोनेमें ता. १७ के २ बजे से मंदीका झटका आवेगा। ता. १७ से १६ तक २) २॥) मंदी होकर ता. १६ के २ से ता. २१ के २ तक पुनः २) २॥) तेजी आकर ता० २२ से २४ तक ३) ४) की मंदी होगी। इस सप्ताहमें कमसे डबल दो चांस लौट फेरके होंगे। व्यापारी सोच समझ कर लाभ उठावें। इस सप्ताहमें रुई, गुवार, मटर, अरहर, मसूर, अलसी, सरसों, टाटा डिफर्ड आयरन, हलदीके भावों में तेजी जानेके योग है, सावधान, घटे भावोंमें खरीदना न भूलें।

दूसरा सप्ताह ता. २४ से ३१ अक्टूबर तक—

ता. २४ को स्टें. टा. २ बजे चाँदी, सोना, गुवार, अलसी, एरण्डा, मटरा खरीदो ता. २८ तक लाभ हो जायगा। रंग लाल, गर्म कपड़ा, किराना, लाल मिर्च, घृत, चना, गेहूं, सरसों, तिल, तैलके भाव मंदे रहेंगे। यह मंदी ता. ३० तक रहेगी, यहाँ घटे भावोंमें खरीदनेकी राय है। डिफर्ड, बम्बई आयरनके भावोंमें ता. २६ से सुधार होगा, घटे भावोंमें खरीदें। खास चाँस इस सप्ताहमें गली लगाकर व्यापार करने का है।

तीसरा सप्ताह ता. १ से ७ नवम्बर तक—

इस सप्ताहमें विदेशी खबरों पर चांदी, सोना, रुईके भावोंमें अचानक तेजीकी धारणा होगी, सोना, २) २॥) चांदी ४) ५) रुई १०) १५) की तेजीमें चलेंगे। ता. २ को २॥ बजे खरीदनेकी राय है। सावधान ३॥ दिनके भीतर ही मुनाफा लेकर बराबर कर दें, बाजार दो तरफा रुखमें चलेगा बम्बईकी पार्टी रस्साकसी करेगी। अलसी, अरण्डा, तेल शक्कर, घृत, शेयरोंके भाव मंदे रहेंगे।

चौथा सप्ताह ता० ८ से १५ नवम्बर तक—

इस सप्ताहमें बुधका अस्त, शनिका उदय, मंदीका तूफान लावेगा। चांदी, सोना, रुई, गन्ना, तिलहन, दालों के बाजारोंमें मंदीकी प्रतिक्रिया होगी। व्यापारी ध्यान देवें, आये हुए मुनाफेको लेकर घाटेसे बचा जाय। ता. ६ को बेचो इकतरफा मंदीकी गली लगावें, ता. २० को बराबर लाभ होगा, ता. १६।१७ के बाजार पर ध्यान रखें यदि विदेशी खबरों पर तेजीका रुख पलट जाय तो व्यापार ता० १६।१७ को सम्हाल कर लाइन पकड़ लेवें।

पांचवा सप्ताह ता० १६ से २३ नवम्बर तक—

इस सप्ताहमें वृश्चिक पर सूर्य बुधका उदय सर्व वस्तुओं के व्यापारमें तेजी करेगा। ता. १६ के १॥ बजे स्टे. टा. चांदी, सोना, रुई, गुवार, मटर, अलसी, अरण्डा खरीदो। ता० २१ के ४ बजे तक लाभ हो जायगा। सावधान ता० २० के मंदीके रियेक्शनपर ध्यान रखना चाहिए। डिफर्ड, काली मिर्च, आयरनके भावोंका सुधार होगा। इकतरफा तेजीकी ओर ही चलेंगे। इस तेजीके चांसकी व्यापारी केवल नजरानेकी गली लगा कर ही लाभ उठावें। ता० १६।१८।२०। २३ को २४ घण्टेकी तेजी भी लाभ दे सकती है।

छठा सप्ताह ता० २४ से ३० नवम्बर तक—

इस सप्ताहमें मंदीका रियेक्शन ता. २५।२६ में आवेगा। पहिले ता. २४ को स्टे. टा. २ बजे बेच कर ता. २६ के ४ बजे तक डबल खरीदो। ता. ३० तक लाभ हो जायगा। यह तेजी रुई, चांदी, सोनेके भावोंमें ही सीमित रहेगी, अनाज, तिलहन, शेयर, किरानेके भावोंमें मंदीका जोर रहेगा। दिसम्बरमें तेजी आवेगी, इसलिए हलदी, धनिया, सरसों, अलसी, अरण्डा घटे भावोंमें संग्रह करना ही लाभप्रद

रहेगा। विशेष लाभ उन्हीं व्यापारियों को होगा, जो चाँदी, रूईकी तेजी ता० १६ नवम्बरको ता० ३० तक १५ दिनकी अवधिकी लगाकर सबसे बैठ जायेंगे।

सातवां सप्ताह ता० १ से ७ दिसम्बर तक—

इस सप्ताहमें शेयर गल्ला, दालोंके पदार्थ, तिलहनोंके अतिरिक्त कपड़ा, रुई, सूत, चांदी, सोना, पीतल सभी पदार्थोंमें इकतरफा तेजीका वातावरण रहेगा। घटे भावोंमें ता० १ दिसम्बरको खुलते बाजार खरीदो। ता० ७ तक इकतरफा लाभ हो जावेगा। २४ घंटे की तेजी मंदी लगानेके लिये मुख्य ता० १।३।५।६ समझें। इन तारीखोंमें क्रमसे गली लगावें जैसा कि ता० १ को २ बजे बम्बई रेडियोकी तेजी लगाई यह आपको लाभकारी रहेगा।

आठवां सप्ताह ता. ८ से १५ दिसम्बर तक—

इस सप्ताहमें विदेशी खबरोंसे मंदीका योग बन रहा है। चांदी, सोना, अलसी, अरएडाके भावोंमें अचानक मंदी आनेकी सूचक है। यह मंदी तिलहन, शेयर, चांदी, सोना, धातु, कपड़ेके व्यापारमें आवेगी। ता० ८ को स्टे. टा. २॥ बजे बेच कर ता. १४ तक लाभ उठावें। ता० १५ से कुछ तेजीके योग बन रहे हैं बाजार को देख कर कार्य करें। गुवार, मटर, अलसी, सरसों, के भावोंमें तेजीका वातावरण रहेगा। हर घटे भाव ता. ८ को ४ बजे तक खरीद करना चाहिए। आठ दिनमें मिलता हुआ मुनाफा छोड़ना नहीं। हल्दी धनियां, तेल, तिल, काली मिर्च, सोडा, शेयर, तारामीरा, तोरीयां, तिलहनोंके भावमें पर्याप्त तेजी रहेगी। घटे भाव खरीद करके सप्ताहके भीतर नफा लेना ही श्रेय है।

नौवां सप्ताह ता. १६ से २३ दिसम्बर तक—

इस सप्ताहमें अचानक मंदीके योग बन रहे हैं। सटोरियोंकी बिकवाली से ता० १७ से २१ तक सोनेमें २) चांदी ५) की मंदी आकर ता. २१ के २॥ बजे से तेजी आ जायगी। इस दो तरफा घट-बढ़में व्यापारी सावधानी से नफा उठावें, जरा सी गलतीमें आया हुआ मुनाफा हाथ से निकल जाना साधारण बात होगी। यह मंदी सिर्फ चांदी सोना, सरसों, अलसी, अरंडा, गुवार, मटरके वायदेमें आवेगी बाकी सब वस्तुके व्यापार तेजीमें रहेंगे।

दशवां सप्ताह ता. २४ से ३१ दिसम्बर तक—

इस सप्ताहमें इकतरफा तेजीके योग बन रहे हैं। ता० २४ को १॥ बजेसे २॥ तक चांदी, सोना, रुई, अलसी, मटर, गुवार खरीदो, सप्ताहके अन्त तक लाभ हो जायेगा। शेयर आयरन, डिफर्ड, कालीमिर्च, तिलहनोंके भाव मंदे रहेंगे। गुवार, मटर, अरहर, अलसी, सरसों, में ता० २४ को मंदी का झटका रहेगा। इस मंदीमें माल पोते करना चतुर सटोरियोंका काम होगा।

ग्यारहवां सप्ताह ता. १ से ७ जनवरी १९५४ तक—

इस सप्ताह में इकतरफा तेजीके योग बन रहे हैं। ता. १ को १ बजे से २ बजे तक चांदी. सोना, रुई खरीदो। ता. ६ तक इक तरफासे लाभ हो जायगा। डिफर्ड, आयरन कालीमिर्च, सोड़ा, पारा, किराना, मटर, गुवार, अलसी अरएडा के भाव तेजीमें रहेंगे। घटे भाव ता. १ व २ को खरीदो सप्ताहके अन्त तक मन माना लाभ हो जायगा।

सूचना—जनवरीमें अनिश्चित तेजी मंदी चलेगी, खरीदमें चलने वाले व्यापारी लाभ उठायेंगे, बाकी सब देखते रह जायेंगे। गली लगाकर व्यापार करना चाहिए।

बारहवां सप्ताह ता. ८ से १४ जनवरी तक—

इस सप्ताहमें बाजारोंकी गति स्टेडी हो जायेगी तेजी-मंदी के नजराने सही पड़ने से १) घटा १) बढ़ा समान गतिसे चांदी, सोना, रुईके बाजारोंमें चलती हुई तेजी थम जायगी इस स्टेडी बाजारोंमें फरवरी वायदोंकी इकतरफा मंदी लगाना व्यापारियोंके लाभका सुवर्ण अवसर होगा व्यापारी नोट करें।

लेखकों से प्रार्थना

प्राणाचार्यका 'कामविज्ञानांक' नवम्बर में प्रकाशित होगा उसके लिए अपना विवेचनपूर्ण लेख और चित्र भेजिए। विषय सूची मंगाइए। उत्तम लेखों पर पारिश्रमिक भी दिया जाता है

प्राणाचार्य भवन लिमिटेड विजयगढ़ जिला अलीगढ़

सम्पादकीय विचार—

प्रगति या लिप्सा वृद्धि

बहुत परिश्रम, त्याग और तपस्याके पश्चात् भारत-वर्ष स्वतन्त्र हुआ, और स्वतन्त्रता प्राप्तिके अनन्तर बहुजन निर्वाचित राष्ट्रिय महा सभा (कांग्रेस) के हाथों देशका शासनसूत्र संचालित होने लगा। कुछ समय पूर्व जहाँ विदेशी लोगोंका आधिपत्य था, जिस इन्द्र-प्रस्थके लाल-किलेकी ओर भारतीय-जन सहमी-सी दृष्टिसे देखा करते थे, वहाँ आज एकमात्र भारतीयों का अधिकार है, यह देख किसे गर्वानुभव न होगा? स्वतन्त्रताके साथ ही विभाजनके फलस्वरूप अनेकों समस्याएं जैसे पुनर्वासव्यवस्था, विभिन्न राज्योंका एकीकरण प्रभृति उपस्थित हुई, एवं गणतन्त्रात्मक 'लोकराज्य' की स्थापना की गई और बहुत सी आर्थिक सामाजिक समुन्नति योजनाएँ बनी जो अभी चालू हैं और इस प्रकार अल्पकालमें सत्ता-रूढ़ दल द्वारा यावच्छक्य कार्य हुआ और हो रहा है। यह एक निर्विवाद बात है कि किसी भी व्यक्तिकी, उसके कार्योंकी आलोचना करना सरल होता है, किन्तु उसी प्रकारकी परिस्थितियोंमें उससे उत्तम कार्य कर सकना उतना ही कठिन होता है। आज जिधर भी देखें नयी-नयी योजनाएँ और नये नये प्रकार सर्वत्र दृष्टिगोचर होने लगते हैं। कहीं किसी विकास योजनाका उद्घाटन हो रहा है तो कहीं किसी नये कल या कारखानोंका प्रसार किया जा रहा है। तत्व यह है कि सब ओरसे ऐसा अनुभव होने लगा है कि हम बढ़ रहे हैं किसी एक दिशा में। इस समय देशमें न विद्वानोंकी कमी है न कार्यकर्त्ताओंकी, फिर क्यों न ऐसा हो? यह चित्रका एक पृष्ठ है। अब यदि इसके द्वितीय भागकी ओर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि अरे, यह तो नितान्त वाग्जाल मात्र है। क्योंकि इतने सब प्रयत्नोंके पश्चात् इतनी योजनाओं के चालू होते हुए भी जन साधारणकी स्थिति वही है जो स्वतन्त्रता प्राप्तिके पूर्व थी। प्रत्युत किन्हीं अंशोंमें उससे न्यून भी। यदि और भी गम्भीरताके साथ सोचें तो ज्ञात होता है कि जितना व्यापक असन्तोष अब है उतना सम्भवतः पहले नहीं था। स्वतन्त्रतासे पूर्व सभी राजे महाराजे और क्या पूंजीपति एवं श्रमजीवी किसान सभीके सामने एक लक्ष्य और एक ही ध्येय था केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति। यद्यपि सभी वर्गोंके विभिन्न दृष्टिकोण और आशाएँ थीं, किन्तु स्वातन्त्र्य प्राप्तिमें मतैक्य स्वाभाविक था ही, पर स्वतन्त्रताके बाद अब सबमें एक व्यापक असन्तोष और क्षोभ ही बढ़ा है। स्वयं कांग्रेसमें भी अन्तर्द्वन्द्व चल रहा है और चिरकालसे शोषित तथा दुःखी जनसाधारण पठित अथवा अपठित सभी त्रस्त और व्याकुल हैं। आजका श्रमिक और आजका कृषक अब भी अपनेको उतना ही पीड़ित और व्यथित अनुभव करता है जितना कि पहले करता था। बेकारी और बेरोजगारीका अभिशाप दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। उत्कोच (रिश्वत) और भ्रष्टा-चार, स्वार्थपरायणता और लिप्सा इतनी मात्रामें बढ़ रही है जिसे शब्दोंमें अङ्कित करना कठिन है। देशमें नैतिक स्तर इतना निम्न हो गया है कि साधारण निर्वाहकी वस्तुएँ घी दूध, तेल, मसाले, औषधियां आदि सभी वस्तुओंका शुद्ध मिलना परम कठिन है। ऐसी स्थितिमें हमें गम्भीरता के साथ सोचना चाहिए कि क्या यह मार्ग जिस पर हम चले जा रहे हैं, वास्तवमें प्रगतिका है भी या नहीं और वर्तमानकी इस समस्यात्मक स्थिति उत्पन्न होनेका मूल कारण क्या है? हम संक्षेपसे नीचे इसी विषय पर कुछ विचार करेंगे।

वास्तवमें हमारी अपनी सम्मतिके अनुसार इस समय

सम्पादकीय विचार—

प्रगति या लिप्सा वृद्धि

बहुत परिश्रम, त्याग और तपस्याके पश्चात् भारत-वर्ष स्वतन्त्र हुआ, और स्वतन्त्रता प्राप्तिके अनन्तर बहुजन निर्वाचित राष्ट्रिय महा सभा (कांग्रेस) के हाथों देशका शासनसूत्र संचालित होने लगा। कुछ समय पूर्व जहाँ विदेशी लोगोंका आधिपत्य था, जिस इन्द्र-प्रस्थ के लाल-किलेकी ओर भारतीय-जन सहमी-सी दृष्टिसे देखा करते थे, वहाँ आज एकमात्र भारतीयों का अधिकार है, यह देख किसे गर्वानुभव न होगा? स्वतन्त्रताके साथ ही विभाजनके फलस्वरूप अनेकों समस्याएं जैसे पुनर्वासव्यवस्था, विभिन्न राज्योंका एकीकरण प्रभृति उपस्थित हुईं, एवं गणतन्त्रात्मक 'लोकराज्य' की स्थापना की गई और बहुत सी आर्थिक सामाजिक समुन्नति योजनाएँ बनी जो अभी चालू हैं और इस प्रकार अल्पकालमें सत्ता-रूढ़ दल द्वारा यावच्छक्य कार्य हुआ और हो रहा है। यह एक निर्विवाद बात है कि किसी भी व्यक्तिकी, उसके कार्योंकी आलोचना करना सरल होता है, किन्तु उसी प्रकारकी परिस्थितियोंमें उससे उत्तम कार्य कर सकना उतना ही कठिन होता है। आज जिधर भी देखें नयी-नयी योजनाएँ और नये नये प्रकार सर्वत्र दृष्टिगोचर होने लगते हैं। कहीं किसी विकास योजनाका उद्घाटन हो रहा है तो कहीं किसी नये कल या कारखानोंका प्रसार किया जा रहा है। तत्व यह है कि सब ओरसे ऐसा अनुभव होने लगा है कि हम बढ़ रहे हैं किसी एक दिशा में। इस समय देशमें न विद्वानोंकी कमी है न कार्यकर्त्ताओंकी, फिर क्यों न ऐसा हो? यह चित्रका एक पृष्ठ है। अब यदि इसके द्वितीय भागकी ओर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि अरे, यह तो नितान्त वाग्जाल मात्र है। क्योंकि इतने सब प्रयत्नोंके पश्चात् इतनी योजनाओं के चालू होते हुए भी जन साधारणकी स्थिति वही है जो स्वतन्त्रता प्राप्तिके पूर्व थी। प्रत्युत किन्हीं अंशोंमें उससे न्यून भी। यदि और भी गम्भीरताके साथ सोचें तो ज्ञात होता है कि जितना व्यापक असन्तोष अब है उतना सम्भवतः पहले नहीं था। स्वतन्त्रतासे पूर्व सभी राजे महाराजे और क्या पूंजीपति एवं श्रमजीवी किसान सभीके सामने एक लक्ष्य और एक ही ध्येय था केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति। यद्यपि सभी वर्गोंके विभिन्न दृष्टिकोण और आशाएँ थीं, किन्तु स्वातन्त्र्य प्राप्तिमें मतैक्य स्वाभाविक था ही, पर स्वतन्त्रताके बाद अब सबमें एक व्यापक असन्तोष और क्षोभ ही बढ़ा है। स्वयं कांग्रेसमें भी अन्तर्द्वन्द्व चल रहा है और चिरकालसे शोषित तथा दुःखी जनसाधा-रण पठित अथवा अपठित सभी त्रस्त और व्याकुल हैं। आजका श्रमिक और आजका कृषक अब भी अपनेको उतना ही पीड़ित और व्यथित अनुभव करता है जितना कि पहले करता था। बेकारी और बेरोजगारीका अभिशाप दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। उत्कोच (रिश्वत) और भ्रष्टा-चार, स्वार्थपरायणता और लिप्सा इतनी मात्रामें बढ़ रही है जिसे शब्दोंमें अङ्कित करना कठिन है। देशमें नैतिक स्तर इतना निम्न हो गया है कि साधारण निर्वाहकी वस्तुएँ घी दूध, तेल, मसाले, औषधियां आदि सभी वस्तुओंका शुद्ध मिलना परम कठिन है। ऐसी स्थितिमें हमें गम्भीरता के साथ सोचना चाहिए कि क्या यह मार्ग जिस पर हम चले जा रहे हैं, वास्तवमें प्रगतिका है भी या नहीं और वर्तमानकी इस समस्यात्मक स्थिति उत्पन्न होनेका मूल कारण क्या है? हम संक्षेपसे नीचे इसी विषय पर कुछ विचार करेंगे।

वास्तवमें हमारी अपनी सम्मतिके अनुसार इस समय

एक संघर्षात्मक काल चल रहा है। और वह संघर्ष पूञ्जीपतियों और श्रमिकों या सामन्तों और कृषकोंका न होकर मूल रूपमें भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृतिका है। भारतवर्ष धर्मप्रधान देश है। यहां भौतिक समुन्नतिकी सदैवसे उपेक्षा रही है और अध्यात्मकी ओर स्वाभाविक लोक प्रवृत्ति रही है। उदारता और विश्वबन्धुत्व एवं लोककल्याणके भाव यहाँके संस्कारोंमें अनुस्यूत रहे हैं और यही परम-पावन शिक्षा प्राचीन कालसे भारतीय लोगोंको बचपनसे मिलती रही है। जब-जब इस प्रकारकी शिक्षाका ह्रास होने लगा है, देशका पतन हुआ और जब-जब ऐसी उदात्त प्राणवती शिक्षा बढ़ी है राष्ट्र वर्चस्वी होने लगा है। आज जब हम सोचते हैं तो हमें लगता है हम भारतीयतासे दूर होते जा रहे हैं। एक विचित्र प्रकारकी संस्कृति और सभ्यता जिसमें मूलतः न तो अपनापन ही है और न परायापन ही उसे बरबस अपनाते जा रहे हैं। यही कारण है जो हम उन्नतिकी ओर जाना चाहते हुए भी उस व्यक्तिकी भांति लगते हैं जो लक्ष्यसे विरुद्ध दिशाकी ओर मुँह कर चलते हुए भी लक्ष्य पाना चाहता हो। भले ही ये विचार कुछ लोगोंको रूढ़िवादी प्रतीत हों, किन्तु तथ्य यह है कि स्वतन्त्रता प्राप्तिसे पूर्व कोई निश्चित योजना या पद्धति लोगोंकी दृष्टिसें थी ही नहीं। और सौभाग्य या दुर्भाग्य से जिन लोगोंके हाथोंमें शासनतन्त्र आया वे भारतीय होते हुए भी उस वातावरण और परिस्थितिसे दूर रहे जो कि भारतीय संस्कृतिके अनुरूप हो। इस न्यूनताको अनुभव करते हुए ही महामति महात्मा गांधीने अपना जीवन एवं रहन-सहन तदनुकूल बनाना आरम्भ किया था, जिसे अन्त तक उन्होंने निभाया। यदि उन्हें राजनीतिकी उलझनोंमें न फँसना पड़ता तथा भारतमें ही उनकी सम्पूर्ण प्रारम्भसे अन्त तक शिक्षा दीक्षा हुई होती तो निश्चय ही और भी अलौकिक महापुरुष हो जाते और अबसे भी अधिक उनका लोकोत्तरशायी प्रभाव विश्वको 'भारतमय' बना देता। किन्तु 'बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा' आज गांधीजीका नामोच्चार एक स्वार्थपूर्तिका साधन बनता जा रहा है और उस पवित्रात्माकी ओटमें क्या-क्या कृत्य किये जा रहे हैं यह कौन नहीं जानता, अस्तु। इस समय यदि कर वृद्धिसे कहीं विषमता है तो कहीं बेरोजगारीसे। इसके साथ ही स्वार्थपरायणता और क्षुद्र मनोवृत्तिके कारण एक ऐसा वर्ग विशेष भी बन रहा है जो तथा कथित शोषित और शोषकके मध्यमें प्रच्छन्न रूपसे घुनकी भांति लग रहा है और यदि समय रहते उसका उपचार न हुआ तो मानव शरीरमें स्थित यक्ष्माकी भांति वह समाजको स्वल्प कालमें शुष्क और जर्जर बना सकता है। आज स्वतन्त्रता प्राप्तिके छः वर्ष पश्चात् भी वैसी ही शिक्षा पद्धति है जो पहले थी। सभी विवेकी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि राष्ट्रकी आत्मा शिक्षा है और शिक्षा पुस्तकीय न होकर संस्कारवती होनी चाहिए। ये विशाल संख्यामें प्रति वर्ष खुलने वाले शिक्षणालय और यह परम्परा नितान्त अभारतीय है और न ऐसा वातावरण ही बनाया जा रहा है जिसमें ऐसे संस्कार लोगों में जागृत हों। चरित्रका आज कोई महत्व नहीं रह गया है ऐसा प्रतीत होता है। जहाँ भी देखें कामुकता और उच्छृंखलताको बढ़ाने वाली वृत्तियां पनपती सी लगती हैं। इन सबका मूल कारण जैसा कि हमने पूर्व निवेदन किया है भारतीय संस्कृति और एक विचित्र संस्कृतिका संघर्ष ही है। आज आवश्यकता है हम अपने स्वरूप को पहिचाने और जरा गम्भीरतासे सोचें कि जिसे हम 'प्रगति' समझ रहे हैं वह वास्तवमें क्या 'प्रगति' ही है, 'विगति' तो नहीं। साध्य साधन और साधक में एकरूपताका भाव जब तक नहीं आ पाता सिद्धि दूर ही रहती है। इस समय भारतमें सर्वत्र 'प्रगति' शब्द सुनाई देता है और नेताओं (महापुरुषों) दानियों, शूरवीरों और दक्ष पुरुषोंकी भी भरमार दिखलाई दे रही है। सभी प्रकारसे भूदान, श्रमदान, बुद्धिदान, सम्पत्तिदान, व्यसनदान, तथा कूपदान आदि दानोंकी भी भरमार हो रही है। चन्दादान तो चिरकालसे चल ही रहा है, फिर भी यदि देशकी दशाको देखें तो एक कविका यह श्लोक हठात् स्मरण हो आता है—

विश्रामिन्ननगरे महान् वसति कः ? तालद्रुमाणां वनम्
को दाता ? रजको ददाति वसनं प्रातर्गृहीत्वा निशि।
को दक्षः ? परवित्तदारहरणे सर्वेऽपि दक्षा जना-
स्त्वं किं जीवसि ? भो सखे विषकृमिन्यायेन जीवाम्यहम्।

अर्थात् किसी नगरमें एक महानुभाव रहते थे, उस नगरकी अवस्था बड़ी ही शोच्य थी। एक बार उनके किसी मित्रने उनसे कुशल क्षेम और नगरकी व्यवस्था के विषयमें प्रश्न किया तो उन्होंने बड़े ही सुन्दर ढंगसे व्यङ्ग्यमें उसका उत्तर इस प्रकार दिया कि—

'प्रश्न—इस नगरमें बड़ा कौन है ? उत्तर मिला ताड़ के वृक्ष। फिर पूछा कि दानी कौन है ? तो मित्रने उत्तर दिया धोबी, जो नित्य प्रातःकाल कपड़े ले जाता है और सायं वापस लाकर दे जाता है। व्यथित होकर मित्रने फिर पूछा कि तो क्या यहाँ कोई चतुर नहीं है ? तो उत्तर मिला कि हां, दूसरेके धन और स्त्रीका अपहरण करनेमें सभी चतुर लोग यहाँ रहते हैं। इस उत्तरसे मित्र बड़ा खिन्न हुआ और उसने पुनः पूछा— तो ऐसी स्थितिमें आप यहां जीते कैसे हैं ? तो उत्तर मिला जैसे विष (जहर) में कोई कीड़ा। अर्थात् विषमें कीड़ेका जीवन क्या जीवन हो सकता है, अर्थात् 'म्रियमाणदशा।'

यही स्थिति वास्तवमें आजके लोकतन्त्रकी है। क्योंकि यहां भी श्लोकोक्तिके अनुसार बड़े बस ताड़के पेड़ ही हैं। अर्थात सभी क्षेत्रों में उच्छृंखलता है, सब लोगस्वयं नेता और महान् अपने लिए समझते जा रहे हैं। सिपाही बनना किसीको इष्ट नहीं सेनापति सब बनना चाहते हैं। और दानी तो बस धोबी जैसे ही हैं जो लेते हैं अर्थात् ब्लैक मार्केट आदिसे मुनाफा कमाने वाले ही दानी बन जाते हैं। और दक्षता तो बस पूछिये ही मत—श्लोकमें बतलाया माप दण्ड ही पर्याप्त है— ऐसी स्थितिमें भला सोचिए म्रियमाणसे नहीं तो क्या स्वस्थ दिखलाई दें। बस पाठक इसी व्याख्यामें सन्तोष करें और इङ्गितसे ही वस्तु स्थितिका अनुभव करें एवं विचार करें कि क्या वास्तवमें यही 'प्रगति' है। अथवा 'लिप्सा वृद्धि' और इस सबका परिणाम यदि समय रहते हम लोग सचेत नहीं हुए तो क्या हो सकेगा, यह भी मननीय है। हमारी कामना है परामबा श्रीजगदम्बा राष्ट्रिय पुरुषोंको सुबुद्धि प्रदान करे जिससे वे अपने विस्मृत आत्मगौरवको पुनः पहचानें और तदनुरूप अपना जीवन बनाएँ।

★

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

काश्मीरमें नवयुगारम्भ

विगत अगस्त मासमें काश्मीरके इतिहासमें एक नवीन युगका आरम्भ हुआ। 'शेरे-काश्मीर' शेख अब्दुल्लाको बन्दी बनाकर उनके सहयोगी बख्शी गुलाम मुहम्मदको वहांके 'सदर-ए-रियासत' युवराज कर्णसिंहने प्रधानमन्त्री पद पर अभिषिक्त किया। यह एक ऐसी घटना है जो सिद्ध कर देती है कि कितना भी प्रभावशाली कोई नेता क्यों न हो, यदि वह जनताकी भावनाके विरुद्ध कार्य करता है तो जनतामें वह शक्ति निहित है कि उसे अपदस्थ भी किया जा सकता है। इसीलिये भर्तृहरिने कहा है "सेवा धर्मः परम गहनो योगिनामप्यगम्यः" वास्तव में जन सेवक या जननायक बन जाना और उसका पूर्ण रूपमें निर्वाह करना कोई सुगम कार्य नहीं है। लोकमतकी प्रचण्ड ज्वालामें व्यक्तिको अपना 'व्यक्तित्व' एवं सभी सुख होम करके ही लोकप्रिय बनना पड़ता है। इसी कारण मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामने एक आदर्श नृपतित्व मर्यादा स्थापनके हेतु सब प्रकारसे पवित्र होते हुए भी प्रातः-स्मरणीया जगज्जननी श्रीसीताजीका परित्याग किया था। इसीलिये हम उनके पावन 'राम-राज्य' का बारम्बार स्मरण किया करते हैं क्योंकि उनका चरित्र सर्वथा निष्कलङ्क और वास्तव में 'आदर्श-राजा' का उत्तम उदाहरण है। काश्मीर की इस घटनासे एक पाठ पढ़ा जा सकता है और आचरण सुधारा जा सकता है कि यह स्थिति जिस व्यक्तिके जीवनमें आ जाय वह तो मरेसे भी गया बीता है क्योंकि—

"संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते"

जिस व्यक्तिकी पहले जिस क्षेत्रमें महत्ता स्थापित

हो चुकी हो उसी क्षेत्रमें यदि उसका अपयश होने लगे तो वह मृत्युसे भी बढ़कर है। आशा है, इससे सभी शिक्षा ग्रहण करेंगे और काश्मीरके लोग इसी प्रकार सदैव जागरूक रहेंगे जिससे उनके 'स्वत्वों' का फिर किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा हनन न किया जा सके।

डा० लंकासुन्दरम्‌ने ठीक कहा है कि "यदि ठीक समय पर शेख अब्दुल्लाको युवराज कर्णसिंह पदच्युत न करते और उनको बन्दी बनानेका साहस नहीं करते तो प्रधानमंत्री की काश्मीर नीति जहाँकी तहाँ धरी रह जाती।" यथार्थ सत्य तो यह है कि प्रधानमंत्रीकी नीतिने तो काश्मीर खो ही दिया था। यदि आज कश्मीर भारतके साथ है और उसका तार-डाक-फोन भारत सरकारके नियंत्रणमें आ गया है तो इसका श्रेय भारतके खाद्य व कृषिमन्त्री श्री किदवई के नीति कौशलको है। बख्शी गुलाम मुहम्मदने किसानों की शिकायतें दूर कर अन्न समाहरण रोक कर और शिक्षा निःशुल्क कर अपनी नयी सरकारके अनुकूल वातावरण उत्पन्न कर दिया है। नेशनल कांफ्रेंसने नयी गवर्नमेण्टका समर्थन करने और उसको सब तरहसे सहयोग देनेका वचन दिया है। इसके साथ भारत-काश्मीर सम्बन्धका नया अध्याय आरम्भ हुआ है, यह मंगलजनक हो, यही सबकी इच्छा है।

नया आन्ध्र राज्य

१ अक्टूबरसे नया आन्ध्र-राज्य अस्तित्वमें आ गया है। इसका जन्म जिन परिस्थितियोंमें हुआ उसको कठोर प्रसव वेदनाके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? श्री रामलूके आत्मोत्सर्ग और बलिदानके बाद आंध्र राज्यके अन्दर जो भयंकर उपद्रव हुए फिर बेलारी जिलेको लेकर कन्नड भाषा-भाषी एवं तेलगू भाषा-भाषियोंके बीच जो तनाव उत्पन्न हुआ, मद्रास नगरके वास्ते आंध्र और तामिलोंके मध्य जो उग्र विवाद हुआ वह आज इतिहासका विषय हो गया है। आंध्र-मंत्रि-मण्डल बनानेके लिए कांग्रेसने जो कड़ी शर्तें लगाईं हैं आंध्र प्रादेशिक कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री संजीवन राव रेड्डीका यह आग्रह कि कांग्रेसी ही आंध्रका प्रथम मुख्य सचिव हो सकता है और श्री टी. प्रकाशमका ८४ वर्षकी आयुमें मुख्य सचिव होनेके लिए प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी तकका त्याग करनेके लिए उद्यत होना और प्रो. रंगाका अपने सहयोगका शेक्सपीयरके 'वेनिस का व्यापारी' नाटकके यहूदीके समान मूल्य मांगना न केवल भारतीय संस्कृतिकी ही दृष्टिसे लज्जा जनक था, अपितु राजनीतिक संघर्षकी दृष्टिसे भी खेद-जनक था। भारतीय इतिहासका यह एक खेद जनक अध्याय है।

'निराला' का सम्मान

कलकत्ता महानगरीने युग-प्रवर्तक महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का सम्मान कर एक अनुपम उदाहरण अन्य नगरोंके सामने रखा है। 'निराला' हिन्दीका एक विद्रोही कवि है। 'विश्व-भारती' के उपकुलपति आचार्य क्षितिमोहन सेनका यह कथन सर्वथा ठीक है कि—

'पुराने संत कवियोंके समान उनमें व्यक्तित्व परुष भाव से व्यक्त करनेकी तेजस्विता है। यही 'निराला' का प्रधान आकर्षण है। साहित्यमें सामाजिक चेतनामें सर्वत्र एक प्रकारकी मुक्ति, रूढ़ियोंके बन्धनसे मुक्तिकी वे अभिव्यक्ति करते आये हैं। उनकी अनुभूति तीव्र और आवेग वेगवान् है। यह स्वच्छन्दता उनके नामको सार्थक करती है। वस्तुतः 'निराला' के समान स्वच्छन्दता-प्रेमी कवि हिन्दी में दूसरा नहीं है।

सभाकी नीति

दक्षिणमें हिन्दीका प्रचार करने वाली और राष्ट्र-भाषा हिन्दीको भारतीय संस्कृतिका प्रतीक बनानेमें प्रयत्नशील 'हैदराबादराज्य-हिन्दीप्रचार सभा' ने अपनी भाषा सम्बन्धी नीति एक प्रस्तावमें इस प्रकार निश्चितकी है—

'यह अधिवेशन भाषा-विषयक अपनी नीति की घोषणा करता है—

(क) यह सम्मेलन प्रादेशिक भाषाओंके सम्पूर्ण विकास का समर्थन करता है।

(ख) प्रादेशिक-शासन व्यवहारमें प्रादेशिक भाषाके उपयोग का आग्रह करता है।

(ग) शिक्षाके प्रत्येक स्तर पर प्रादेशिक भाषाके ही माध्यमका आग्रह करता है।

(घ) भारतके प्रत्येक नागरिकके लिए राष्ट्रभाषाका ज्ञान आवश्यक है—इसलिए माध्यमिक शिक्षाके स्तरसे हिन्दी भाषाका शिक्षण अनिवार्य हो।

(ङ) अन्तः प्रादेशीय सम्बन्धोंमें हिन्दी के ही प्रयोगका आग्रह करता है।

(च) हिन्दी भाषी जनताके लिए किसी एक प्रादेशिक भाषाका ज्ञान आवश्यक है।

समझौता और सामयिक दृष्टि एवं विचारसे यह प्रस्ताव भले ही उचित जंचे पर यह सदोष है और उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता। प्रत्येक नागरिक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करेगा, यह प्रस्तावमें मान लिया गया है, अन्यथा यह मानते हुए कि प्रत्येक नागरिकको हिन्दीका ज्ञान आवश्यक है' यह नहीं कहा जा सकता कि माध्यमिक शिक्षामें हिन्दी अनिवार्य हो। हिन्दीको वस्तुतः राष्ट्र-भाषा बनाना है तो उच्च-शिक्षाका माध्यम आजकी अंग्रेजीकी जगह हिन्दी को बनाना होगा। हाई-कोर्टोंका सारा कार्य हिन्दीमें होना चाहिए। अन्यथा सुप्रीम कोर्टको अपना काम चलानेके लिए अनुवादकोंकी एक बड़ी पल्टन रखनी होगी और फिर भी प्रामाणिकता का झगड़ा बना रहेगा। समझौता अच्छी वस्तु है पर आदर्श और लक्ष्यके साथ सामयिक उद्देश्यकी सिद्धिके लिए समझौता करना उचित नहीं कहा जा सकता।

दो विश्व-विद्यालय बन्द

प्रयाग और लखनऊ विश्वविद्यालयोंके बन्द करने और छात्रोंको भूख हड़ताल करनेकी आवश्यकता पड़ी, यह हमारी शिक्षा-प्रणाली पर एक कड़ी टिप्पणी और भारी लांछन है। छात्र उच्छृंखल हैं अनुशासन हीन हैं पठन-पाठनमें ध्यान नहीं देते यह तथ्यों पर आरोप करना सरल है किन्तु विचारनेकी बात तो यह है कि छात्रोंके इस विकृत चरित्रके लिए उत्तरदायी कौन है? क्या छात्रोंको कभी शिक्षणालयोंमें 'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव' और 'आचार्य देवो भव' की शिक्षा दी गई? क्या आजके अध्यापक, उपाध्याय, आचार्य और शिक्षक कह सकते हैं कि उन्होंने अपने शिष्योंको तीन रात्रियां अपने उदरमें रखा है—

'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं
कृणुते गर्भअन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति
तं जात द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः।'

आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक अज्ञान ये तीन रात्रियां हैं और इनको आचार्य दूर करता है। क्या आजके हमारे शिक्षक यह कार्य करते हैं? पर क्या आजकी इस अवस्थाके लिए शिक्षक ही दोषी हैं? यदि हमारे शिक्षणालयोंमें सांस्कृतिक वातावरण नहीं, यदि सरस्वती पूजाके लिए श्रद्धा और भक्ति नहीं, ज्ञान प्राप्त करनेके लिए साधना का अभाव है तो इसके लिए हमारा समाज कम दोषी नहीं है। आज गुरुपूजाका भाव न छात्रोंके हृदयोंमें रहा है और न उनके माता पिताके हृदयमें। शिक्षकको आज सेवक माना जाता है। हमारे समाजमें आज धनकी पूजा है, ज्ञान का मान नहीं। पूंजी अभिमान करती है कि वह ज्ञानको खरीद सकती है। जब तक पूंजी यह गर्व कर सकती है उस समय तक ज्ञान यदि अपनेको तिरस्कृत और अनादृत अनुभव करे तो क्या आश्चर्य! इस अवस्थामें यदि विश्व-विद्यालयके अधिकारी छात्रोंको अनुशासनकी शिक्षा देनेके लिए विश्वविद्यालयके द्वार बन्द करना उचित समझें तो क्या आश्चर्य।

अशान्तिकी ओर

कोरिया-शान्ति-सन्धिकी ओर अभी तक कुछ प्रगति नहीं हुई। शान्ति सन्धि तैयार करनेके लिए संयुक्तराष्ट्र आम सभा द्वारा नियुक्त पोलिटिकल कमेटीके साथ तीन

रिपब्लिक और उत्तरी कोरिया बात करनेको तैयार नहीं। चीन और रूस चाहते हैं कि शान्ति-सन्धि कांफ्रेंसमें भारत, बर्मा, हिन्देशिया और पाकिस्तानको भी सम्मिलित किया जाय। अमरीका इसके लिए उद्यत नहीं। उसका आग्रह है कि कोरिया रणक्षेत्रमें जिन राष्ट्रोंकी सेनायें लड़ी हैं उन्हींको केवल उसमें स्थान दिया जाय। इस कारण शीत-युद्ध पहले के समान चल रहा है।

पश्चिमी जर्मनीके अन्दर 'बुंडस्टाग' (पार्लमेण्ट) का चुनाव हुआ और ७७ वर्षीय जर्मन चांसलर डा. एडेनार और उनकी पार्टी क्रिश्चियन डेमाक्रेटिक यूनियनको आशातीत सफलता मिली। ४८७ स्थानोंमें से इस पार्टीको २४४ स्थान मिले। इससे वशिंगटन प्रसन्न है पेरिस परेशान है और मास्को चिन्तित है। लन्दनका कहना है कि फिर वही गलती दुहराई न जाय। लार्ड लिटनटनका कहना है कि पहले महायुद्धके बाद जो रियायतें वीयर-गवर्नमेंटको देने से मना किया गया वही बादमें हिटलरको दी गई। इसलिए डा० एडेनारकी विजयसे उत्पन्न स्थितिको ठीक तरह समझा जाय और उसकी मांग समय रहते पूरी की जाय। दूसरे हिटलरके उदयका भय फ्रांस और सोशलिस्टोंको सता रहा है। जर्मन सेनाका निर्माण अब रोकना सम्भव नहीं दीखता। फ्रांस इसकी संभावना मात्रसे भी भय-भीत है। डा० एडेनारको विजय उन्हीं तत्वोंकी सहायता एवं समर्थनसे मिली है जो कि हेर हिटलरके समर्थक थे। इसलिए यह धारणा निराधार नहीं कही जा सकती कि डा० एडेनारकी विजयने जर्मनीमें दूसरे हिटलरके उदय होनेका मार्ग प्रशस्त कर दिया है। डा० एडेनारका स्वर भी बदल गया है। वे अब संयुक्त जर्मनीकी बात नहीं कहते। अब वे कहने लगे हैं कि हमें पूर्वीय जर्मनीके १८० लाख जर्मनोंको दासतासे मुक्त करना है। डा० एडेनारकी स्थिति यह है कि संयुक्त जर्मनी बाह्य सहायतासे होगा। दोनों पक्षोंमें से यह जो देगा जर्मन सशस्त्र सेना उसके लिए लड़ेगी। प्रश्न यह है क्या संयुक्त जर्मनीकी स्थापनाके लिए रूस और अमरीका लड़ेंगे? फ्रांस भय-भीत है कि यूरोपियन प्रति-रक्षा-संघ और इसके अन्दर यूरोपियन सेनाके निर्माणके लिए किए गए पेरिस-करार अब अवश्य व्यवहारमें आयगा। यदि फ्रांस इसके लिए उद्यत न होगा तो अमरीका जर्मनीको स्वतंत्र रूप से सेना बनानेके लिए छोड़ देगा। दोनों ही दशाओंमें फ्रांस अपने लिए काल देखता है। अतः डा० एडेनारकी विजय ने शान्तिके अनुकूल वातावरण उत्पन्न नहीं किया अपितु युद्ध भीतिको और अधिक साकार रूपमें खड़ा कर दिया है।

एक अवाञ्छित घटना

अभी गत सितम्बर मासमें देवघरमें एक अवाञ्छित घटना संघटित हुई, जिसको लेकर प्रायः समस्त पत्र पत्रिकाओंने बहुत कुछ लिखा। वह घटना थी श्रीवैद्यनाथ धामके पण्डों द्वारा श्रीविनोबा भावेके दल पर आक्रमण किया जाना। जहां तक घटनाका प्रश्न है यह एक अवाञ्छित थी और बादमें बिहारके प्रधानमन्त्री श्री कृष्णसिंहके साथ हरिजन प्रवेश हो जानेसे मार्जन हो गया है। किन्तु इससे एक बात स्पष्ट होती है और वह यह है कि भारतीय संविधानमें प्रत्येक सम्प्रदाय या वर्गको धर्म पालनमें स्वातन्त्र्यका अधिकार देनेकी घोषणा होते हुए भी मन्दिरोंकी मर्यादा जो प्राचीन कालसे धर्मशास्त्रानुमोदित चली आ रही है और करोड़ों व्यक्ति अब भी जिसे मानते हैं—उसका शीघ्रसे शीघ्र उच्छेदन करने के लिए प्रयत्न पूरे जोरके साथ किया जा रहा है। जहां तक हमारा अनुभव है जिन मन्दिरोंमें हरिजन प्रवेश हो गया है उनमें भी नियमित रूपसे स्यात् ही कहीं हरिजन जाते हैं। उन्हें अपने ही कार्यसे अवकाश नहीं मिलता, तब उन्हें बलात् प्रवेश करा कर शास्त्रीय व्यवस्थाका विच्छेद क्यों किया जाय? जिस प्रकार हाथमें छोटी बड़ी पाँचों अंगुलियाँ होने पर ही हाथकी शोभा है उसी प्रकार चारों वर्णोंके अपने ही वर्णमें स्थित रहनेसे समाज की सम्यक् समुन्नति हो सकती है। यदि आप हाथकी पांचों उंगलियां समान करना चाहेंगे तो हाथ विकृत होगा और छोटीके स्थान पर बड़ीको या बड़ीके स्थान पर छोटीको रखना चाहेंगे तब भी हाथका सौन्दर्य नष्ट हो जायगा।

इसलिए यह आवश्यक है कि हाथकी पांचों अंगुलियों को अपने ही रूपमें स्थित रहने दें। हां, यह हो सकता है कि हाथकी किसी अंगुलीमें मैल या गन्दगी लग रही हो तो उसे धो पोंछ कर स्वच्छ बना लें। यही स्थिति चातुर्वर्ण्य और पंचम जातिकी है। सभी वर्णाश्रमियों को शास्त्रानुमोदित रीतिके अनुसार अपने अपने कर्मानुसार उन्नति एवं अर्थोपार्जन करते रहना चाहिए। इसमें सबका सामूहिक कल्याण है। पिछड़े लोगोंको भी जीवनोपयोगी साधन सुविधायें मिलनी ही चाहिए, क्योंकि वे भी समाजके उपयोगी एवं आवश्यक अङ्ग हैं। किन्तु, भावुकताके प्रवाहमें प्राचीन परम्परा और शास्त्र व्यवस्थाको विनष्ट करनेका यत्न तो शोभनीय नहीं कहा जा सकता। इस विषयमें श्रीस्वामी करपात्रीजीका वक्तव्य बहुत ही सुन्दर एवं ध्यान देने योग्य कि "......श्री भावे स्वयं विद्वान् हैं और मन्दिर प्रवेश आदिके विषयमें उन्हें पंडितोंसे व्यवस्था विषयक शास्त्रीय विचार करना चाहिए। ......।' वास्तवमें यह मार्ग अन्य सबसे उत्तम है और इससे जो निर्णय हो वही सर्वमान्य समझना चाहिए क्योंकि मन्दिरोंके आधार शास्त्र हैं, और मन्दिर सम्बन्धी व्यवस्थाका निर्णय भी शास्त्रों द्वारा ही हो सकता है। जो शास्त्रके प्रति श्रद्धावान् नहीं है उन्हें मन्दिरोंके प्रति श्रद्धा किस प्रकार हो सकती है। और जिन्हें मन्दिर के प्रति श्रद्धा ही नहीं वे मन्दिरों में फिर प्रवेश करते हैं तो यह एक मात्र दुराग्रह या अन्य किसी वर्ग विशेषको कष्ट पहुँचाना अथवा उपासना विषयक स्वातन्त्र्यका अपहरण करने जैसा ही हुआ, जो कि भारतीय संविधानके नितान्त प्रतिकूल है। क्या हम आशा करें कि श्री आचार्य विनोबा भावे इस विषय में पंडितोंसे परामर्श करनेके पश्चात् अपना मन्तव्य प्रकाशित करेंगे जिससे अन्य अवशिष्ट मन्दिरोंकी धार्मिक मर्यादा का इस प्रकार अतिक्रमण न हो सके और उनकी पावन प्राचीन परम्पराकी रक्षा हो सके।

त्रैमासिक वायदेके व्यापारमें भारी उलट फेर

व्यापारी नोट करें; तारीख १ अक्तूबर से ३१ जनवरी १९५४ तक चांदी, सोना, रुई, गुड़, सरसों, अलसी अरंडा कालीमिर्चोंके भावों में पर्याप्त तेजी मंदी होगी। व्यापार राशि तुला पर सू० बु०, कन्या पर शुक्र, मिथुन में गुरु, तथा दिसम्बरमें वृश्चिकके शुक्रके कारण वायदेके व्यापारकी काया पलट होगी। कब और कैसे किस योगसे बैंक नीतिके अनुसार किस माहमें किस तारीखको चांदी १३८) सोना ७०) बनेगा तथा किस योगसे बैंक मौन होकर स्थिर हो जायेगा? कब और कैसे किस माहमें किस तारीखको चांदी १६४) सोना ९०) तक सर्प मुखी चाल से ऊंचा जायगा? इस त्रैमासिक तेजी मंदीमें बड़ी २ फर्मे फेल हो जायेंगी, ऐसी भयानक घटा बढ़ी फरवरी १९५२में चली थी। ता० १६ अक्तूबर तक १५४) जाकर बाजार थमेगा लगावो नजराणा मंदी, हिम्मत वाले कमावेंगे बाकी देखते रह जायेंगे ३॥ दिन में ७) टकेकी इकतरफा मंदीका खेल खेलते जावें। किन्तु बलन भाग्यवानों को ही मिल सकेगी। इस प्रकारकी उथल पुथल अक्टूबर तथा नवम्बर में समझो। भाग्य और कर्त्तव्यका पूर्ण साधन द्वारा दैनिक टकेबार तथा इकतरफा तेजी मंदी अर्ध साप्ताहिक साप्ताहिक अमावस पूर्णिमाकी तेजी मन्दी सही पड़ने के जनरल चांस पाक्षिक, केवल पूर्णिमासे पूर्णिमा तकके नजराणे सही पड़ने की व्यवस्था सहित जनरल व दैनिकत्रैमासिक भविष्य प्रकाश यानी बाजार भविष्य रिपोर्ट प्रत्येक राशिवालेको वायदाके व्यापार करने विपणि मुहूर्त सहित शीघ्र आर्डर भेजकर १५॥=) की वी० पी० से तुरन्त मंगवा लें। याद रहे पहिले २५) से मासिक मिलती थी किन्तु अब की बार रियायती ता० १ अक्टूबरसे ३१ दिसम्बर तककी प्राप्त होगी कापी थोड़ी शेष है शीघ्रता करें आर्डर के साथ ॥=) के टिकट अवश्य भेजें बहुत शोधकर चांस तैयार किये हैं। इसके द्वारा मनमाना धन कमाइये

पता—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य मु० पो० मुरार (मध्यभारत)

इसलिए यह आवश्यक है कि हाथकी पांचों अंगुलियों को अपने ही रूपमें स्थित रहने दें। हां, यह हो सकता है कि हाथकी किसी अंगुलीमें मैल या गन्दगी लग रही हो तो उसे धो पोंछ कर स्वच्छ बना लें। यही स्थिति चातुर्वर्ण्य और पंचम जातिकी है। सभी वर्णाश्रमियों को शास्त्रानुमोदित रीतिके अनुसार अपने अपने कर्मानुसार उन्नति एवं अर्थोपार्जन करते रहना चाहिए। इसमें सबका सामूहिक कल्याण है। पिछड़े लोगोंको भी जीवनोपयोगी साधन सुविधायें मिलनी ही चाहिए, क्योंकि वे भी समाजके उपयोगी एवं आवश्यक अङ्ग हैं। किन्तु, भावुकताके प्रवाहमें प्राचीन परम्परा और शास्त्र व्यवस्थाको विनष्ट करनेका यत्न तो शोभनीय नहीं कहा जा सकता। इस विषयमें श्रीस्वामी करपात्रीजीका वक्तव्य बहुत ही सुन्दर एवं ध्यान देने योग्य कि "......श्री भावे स्वयं विद्वान् हैं और मन्दिर प्रवेश आदिके विषयमें उन्हें पंडितोंसे व्यवस्था विषयक शास्त्रीय विचार करना चाहिए। ...।' वास्तवमें यह मार्ग अन्य सबसे उत्तम है और इससे जो निर्णय हो वही सर्वमान्य समझना चाहिए क्योंकि मन्दिरोंके आधार शास्त्र हैं, और मन्दिर सम्बन्धी व्यवस्थाका निर्णय भी शास्त्रों द्वारा ही हो सकता है। जो शास्त्रके प्रति श्रद्धावान् नहीं है उन्हें मन्दिरोंके प्रति श्रद्धा किस प्रकार हो सकती है। और जिन्हें मन्दिर के प्रति श्रद्धा ही नहीं वे मन्दिरों में फिर प्रवेश करते हैं तो यह एक मात्र दुराग्रह या अन्य किसी वर्ग विशेषको कष्ट पहुँचाना अथवा उपासना विषयक स्वातन्त्र्यका अपहरण करने जैसा ही हुआ, जो कि भारतीय संविधानके नितान्त प्रतिकूल है। क्या हम आशा करें कि श्री आचार्य विनोबा भावे इस विषय में पंडितोंसे परामर्श करनेके पश्चात् अपना मन्तव्य प्रकाशित करेंगे जिससे अन्य अवशिष्ट मन्दिरोंकी धार्मिक मर्यादा का इस प्रकार अतिक्रमण न हो सके और उनकी पावन प्राचीन परम्पराकी रक्षा हो सके।

त्रैमासिक वायदेके व्यापारमें भारी उलट फेर

व्यापारी नोट करें; तारीख १ अक्तूबर से ३१ जनवरी १९५४ तक चांदी, सोना, रुई, गुड़, सरसों, अलसी अरंडा कालीमिर्चोंके भावों में पर्याप्त तेजी मंदी होगी। व्यापार राशि तुला पर सू० बु०, कन्या पर शुक्र, मिथुन में गुरु, तथा दिसम्बरमें वृश्चिकके शुक्रके कारण वायदेके व्यापारकी काया पलट होगी। कब और कैसे किस योगसे बैंक नीतिके अनुसार किस माहमें किस तारीखको चांदी १३८) सोना ७०) बनेगा तथा किस योगसे बैंक मौन होकर स्थिर हो जायेगा? कब और कैसे किस माहमें किस तारीखको चांदी १६४) सोना ९०) तक सर्प मुखी चाल से ऊंचा जायगा? इस त्रैमासिक तेजी मंदीमें बड़ी २ फर्में फेल हो जायेंगी, ऐसी भयानक घटा बढ़ी फरवरी १९५२में चली थी। ता० १६ अक्तूबर तक १५४) जाकर बाजार थमेगा लगावो नजराणा मंदी, हिम्मत वाले कमावेंगे बाकी देखते रह जायेंगे ३॥ दिन में ७) टकेकी इकतरफा मंदीका खेल खेलते जावें। किन्तु बलन भाग्यवानों को ही मिल सकेगी। इस प्रकारकी उथल पुथल अक्टूबर तथा नवम्बर में समझो। भाग्य और कर्त्तव्यका पूर्ण साधन द्वारा दैनिक टकेबार तथा इकतरफा तेजी मंदी अर्ध साप्ताहिक-साप्ताहिक अमावस पूर्णिमाकी तेजी मन्दी सही पड़ने के जनरल चांस पाक्षिक, केवल पूर्णिमासे पूर्णिमा तकके नजराणे सही पड़ने की व्यवस्था सहित जनरल व दैनिकत्रैमासिक भविष्य प्रकाश 'यानी बाजार भविष्य रिपोर्ट' प्रत्येक राशिवालेको वायदाके व्यापार करने विपणि मुहूर्त सहित शीघ्र आर्डर भेजकर १५॥=) की वी० पी० से तुरन्त मंगवा लें। याद रहे पहिले २५) से मासिक मिलती थी किन्तु अब की बार रियायती ता० १ अक्टूबरसे ३१ दिसम्बर तककी प्राप्त होगी कापी थोड़ी शेष है शीघ्रता करें आर्डर के साथ ॥=) के टिकट अवश्य भेजें बहुत शोधकर चांस तैयार किये हैं। इसके द्वारा मनमाना धन कमाइये

पता—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य मु० पो० मुरार (मध्यभारत)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

शनिमंगल युद्ध और राक्षसगणमें शुक्रास्तका संसार पर प्रभाव। भयानक दुर्घटना वा भूकम्पादि उत्पातकी सम्भावना। चण्डीगढ और आंध्र राज्यका उद्घाटन अमंगल समयमें

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

अनादिरेष भगवान् कालोऽनन्तोऽजरोऽमरः।
सर्वगत्वात्स्वतन्त्रत्वात्सर्वात्मत्वान्महेश्वरः ॥

वर्तमानकालके साम्राज्यमें 'दैवज्ञ-दृष्टि' जहाँ-जहाँ भी पहुँच सकी वहाँ-वहाँ सर्वत्र यही देखनेमें आया कि आसुरी शक्तिसे सम्पन्न लोग अधिक प्रबल हैं। भारतीय महर्षियों ने भोगवादको प्रधान मानने वाले शिश्नोदर-परायण सब लोगोंको असुर और मोक्षवाद प्रधान मानने वालोंको सुर कहा है। बाह्य दृष्टिमें जितने भी इस समय शासक पद पर आरूढ दिखाई दे रहे हैं उनमें मोक्षवादको आदर्श मानने वाला कोई भी नहीं दीखता। ऐसी स्थितिमें विजयिनी शक्ति कोई भी हो वह आसुरी ही रहेगी। आसुरी शक्तिसे सुख एवं शान्ति-समृद्धिकी आशा रखना बालूको पीड़ कर तैल पानेकी दुराशा मात्र है। प्रायः कोई भी संस्था आज मोक्षवाद प्रधान देखनेमें नहीं आती। कदाचित् कोई हुई भी तो उसका राष्ट्र संचालनमें कोई अधिकार नहीं माना जाता। उन जैसी संस्थाओंकी सैकड़ों प्रकारसे हँसी उड़ाई जाती है। इससे स्पष्ट कहना पड़ेगा कि संसार महाविनाशकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस विनाशसे रक्षा करने वाला तो धर्म ही है। किन्तु, आज धर्मका 'सभ्य जगत्' एवं धर्म-निरपेक्ष भारतमें कोई स्थान नहीं। आभासमात्र शान्तिके लिए जो प्रयत्न हो रहे हैं वे विपरीत हैं। पूर्वकी ओर चलकर पश्चिमके घर जानेके बराबर ही है। खगोलके तेजोमय ग्रह भी जो क्रूर हैं उन्हींका विजय घोष अधिकतर दिखाई देता है और भूगोलके तेजस्वी पिण्ड भी अधिकतर क्रूरकर्मा ही दिखाई देते हैं। अतः हमें मानना पड़ेगा कि संसार वास्तविक सुख शान्तिसे अभी बहुत दूर है।

वर्तमान विषम-परिस्थिति और भावी दूषित-ग्रहगतिको देखकर हमने देशके भविष्यके सम्बन्धमें एक बार महामहिम सुगृहीतनामधेय श्री १०८ आचार्यचरण अमृतवाग्भव जी महाराजसे प्रश्न किया तो उन्होंने एक श्लोकमें उत्तर दिया और कहा कि इस समय संसारकी बुद्धि विपरीत हो रही है; वह धर्मको अधर्म और अधर्मको धर्म समझ रहा है, यह विनाशका लक्षण है। इस स्थितिमें अभी देशका भविष्य कैसे उज्ज्वल कहा जाये। श्लोक निम्न है—

निदानं धर्माणां किमपि हृदि साक्षात्कृतवतां
पुरा कैश्चित्प्राप्यं कठिनतममासीदृषिपदम्।
इदानीं किं ब्रूयामहह ! वृषलानां खलु तति-
र्विनैवारूढास्ते श्रमकणमृषीणामृषभताम् ॥

सम्पूर्ण धर्मोंके अनिर्वचनीय आदि कारणका जिन महापुरुषोंने हृदयमें साक्षात्कार किया उन लोगोंमें भी किन्हीं-किन्हीको ही प्राचीनकालमें जो अत्यधिक कठिन ऋषि पद प्राप्त हो सकता था, परन्तु क्या कहूँ, आजकी स्थितिको देखकर बहुत खेद होता है कि वृषलोंकी पंक्तियोंकी पंक्तियां कण मात्र परिश्रमके बिना ही महर्षि पद पर चढ बैठी हैं। अस्तु।

आगे आने वाले क्रांति-कालका विवेचन हम 'श्री-स्वाध्याय' के इसी स्तम्भमें निरन्तर करते रहे हैं। गत वर्ष

इन्हीं दिनों हमने अपने वर्तमान वर्षके 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' में और 'श्रीस्वाध्याय' के गत १२ वें वर्षके 'वसन्ताङ्क' में भी वर्तमान वर्ष और भावी विश्वयुद्धके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डाला था। अब हम यहां इन तीन मासोंमें आने वाले विशेष ग्रह-योग और उनके शुभाशुभ परिणामका विवेचन कर रहे हैं।

मंगल शनि युद्धका प्रभाव

इन तीन मासोंमें विशेष महत्वका योग तुला राशि में मंगल नेपच्यून युद्ध (युति) और शनि-मंगलका युद्ध (युति) है। मार्गशीर्ष शुक्ला ६ शनिवार ता० १२ दिसम्बर १९५३ को मंगल नेपच्यूनकी युति और पौष कृष्ण १२ शनिवार ता० २ जनवरी १९५४ ई० को इन दोनों संहार-प्रिय शनि मंगल ग्रहोंकी अंशात्मक युति हो रही है। इस युतिके प्रभावसे संसारमें कोई भयानक दुर्घटना घटेगी। कर्क तुला वृश्चिक मीन राशि वाले व्यक्तियों, राष्ट्रों और वस्तुओं पर इस युतिका बुरा प्रभाव पड़ेगा। इन राशि वाले व्यापारियोंको बहुत सावधानीसे काम करना चाहिए। आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव अधिक होंगे। कहीं भयानक अग्निकांड यान-दुर्घटना भूकम्प वा विस्फोटसे धन जनकी क्षति होगी। प्रजामें असन्तोष, दुर्भिक्ष, सन्ताप, क्षोभ, बेरोजगारी, आर्थिक संकट, घरेलू झगड़े, साम्प्रदायिक संघर्ष और सेनासम्बन्धी उलटफेर अधिक होंगे। संसारके किसी प्रधान राजपुरुषकी मृत्यु होना भी सम्भव है। कर्क और मीनराशि वाले महापुरुषों वा राष्ट्रनायकोंको भयानक स्थितिका सामना करना पड़ेगा। किसी प्रदेशमें शीत अधिक पड़ने और कहीं कहीं वर्षाकी न्यूनता कहीं अधिक वर्षा हिमपात आंधी तूफान आदि से खेतीमें हानि होगी। छोटे बड़े राष्ट्रोंमें पारस्परिक कलह असन्तोष, युद्धभय और आतङ्क बढ़ेगा। राजस्थान, पंजाब, काश्मीर, बंगाल मद्रास और नेपाल पर शनिका कुप्रभाव है अतः इन प्रांतोंमें विशेष गड़बड़ और अशान्ति रहेगी। वहां अराजकता जैसी स्थिति बनेगी। बम्बई और दिल्ली के मन्त्रिमंडलमें गतिरोध उत्पन्न होगा। प्रायः समस्त भारत का राजनैतिक सामाजिक एवं धार्मिक वातावरण अशान्त रहेगा। पूंजीपति और श्रमजीवियोंमें संघर्ष छिड़ेगा। सर्वत्र हड़तालका रोग सांसर्गिक बीमारीकी भांति बढ़ेगा। भ्रष्टाचारी शासकोंके विरुद्ध जनमत उग्र होगा। यत्र तत्र सत्तारूढ़ दल दलबन्दियोंके दलदल में बुरी तरह फँस कर अपना तथा राष्ट्रका अकल्याण करेगा। पंजाब बंगाल राजस्थान मध्यभारत और मध्यप्रदेशकी सरकारके विरुद्ध विधानसभाओंमें अविश्वासका प्रस्ताव उपस्थित होगा। परिणामतः कुछ मन्त्रियोंको अपदस्थ होना पड़ेगा।

आस्ट्रिया, चीन, जापान, दक्षिण-भारत, ब्रह्मदेश, फ्रांस, इटली, रूमानिया, पूर्वोत्तरीय भारत, तिब्बत, नेपाल, बंगाल, अमेरिका, यूरोपके अग्निकोण और कास्पियन महासागर तथा ८४ रेखांशके पूर्वीय प्रदेशोंमें भूकम्प, हिमपात ज्वालामुखीस्फोट झंझावातादि भयानक प्राकृतिक प्रकोपसे हानि होगी। सांसर्गिक रोग और दुर्भिक्षका भय रहेगा। पश्चिमी योरोपमें कोई धूमकेतु दिखाई देगा। मार्गशीर्षसे [दिसम्बरसे] आगे काश्मीरमें शत्रु की ओरसे पुनः गड़बड़ी और अशान्ति फैलानेके प्रयत्नोंसे आगे भारत पाकिस्तानके सम्बन्ध फिर बिगड़ने लगेंगे। इस युद्धमें शनि बलवान् होकर विजयी हो रहा है अतः संसारमें अभी धूर्त्त कूटनीतिज्ञ अनार्य लोगोंकी स्वार्थपरता वा दुष्टतासे आर्य प्रकृतिके सज्जन लोग सताये जावेंगे। इस युद्ध वा क्रूरयुतियोंका प्रभाव दो वर्ष तक रहेगा और आगे सं० २०१३-१४ सन् १९५७-५८ में जब शनि वृश्चिक राशिमें रहेगा और मंगल राहुसे अशुभ सम्बन्ध बनायेगा तब युद्ध रक्तपातादि द्वारा भारत और विश्वमें महाविनाश उपस्थित होगा। यह हम गत वर्ष अपने पंचांग और श्रीस्वाध्यायमें भी स्पष्ट लिख चुके थे। भावी महाविनाशसे बचनेके लिए धर्मानुष्ठान, यज्ञ हवन शतचण्डी सहस्त्रचण्डी-प्रयोग, प्रतिदिन अपने इष्टदेव की आराधना एवं यथाशक्ति रामचरितमानस वा दुर्गासप्तशतीका पाठ परमकल्याणकारक है। धार्मिक सदाचारी दैवी बल सम्पन्न व्यक्ति भयंकर ज्वालाओंमें भी सुरक्षित रह सकते हैं। धर्मनिरपेक्ष रहकर ईश्वरीय सत्ता

या दैवीबलकी उपेक्षा करके अधर्मके आधार पर करोड़ों रुपये व्यय करके चाहे कितनी ही बड़ी-बड़ी योजनाओंके सुदृढ भवन (महल) खड़े कर दिये जावें, परन्तु जब तक जगन्नियन्ताकी परमाह्लादिनी शक्ति प्रकृति देवीका सहयोग नहीं मिलेगा तब तक वे सब निरर्थक हैं। करोड़ों रुपये और वर्षोंके व्ययसे निर्मित बड़ी-बड़ी योजनाएँ प्रकृति-प्रकोपसे एक क्षणमें धूलिसात् हो जाती हैं। अतः मानना पड़ेगा कि ईश्वरीय अनन्त शक्तिके सामने मानवकी सीमित शक्ति का कुछ भी मूल्य नहीं हैं। ये अभूतपूर्व प्रकृति प्रकोप या दैवी आपत्तियां क्यों आ रही हैं? इनका मूल कारण क्या हैं? और इनकी निवृत्तिका उपाय क्या है? इन सब बातोंका शास्त्रीय आधार पर विस्तृत विवेचन हम ४ वर्ष पूर्व 'श्रीस्वाध्याय' के ७ वें वर्षके ग्रीष्माङ्कमें कर चुके थे। किन्तु आज आसुरी भावापन्न संसार सदाचार और धर्म का उपदेश सुननेके लिए प्रस्तुत नहीं 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' होना स्वाभाविक ही है; अस्तु।

राक्षसगणमें शुक्रास्तोदयका प्रभाव

पौष कृष्ण १२ शनिवार ता० २ जनवरीको राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रास्त हो रहा है। यह आर्य (हिन्दू) देशोंमें विग्रह, संसारमें युद्धभय, अन्नका नाश, मारवाड़ मिश्र और सिन्धमें दुर्भिक्ष, समुद्रमें जहाजोंका नाश वा वायुयान दुर्घटना, विदेशी (अंग्रेज यवनादि) राष्ट्रोंमें विग्रह, पांचाल सौराष्ट्र और मालव देशमें कष्ट व जन नाश कारक है। यथा—

शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दुदेशेषु विग्रहः।
खर्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्न विग्रहः॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्।
यानपात्र विनाशोऽब्धौ फिरङ्गाणाञ्च विग्रहः॥
विराटदुरुढपाञ्चाल सौराष्ट्रेषु च रौरवम्।
तथा राज्यपरावर्तो मालवेषु जनक्षयः॥
जीर्ण दुर्गे भयं भङ्ग पत्तनेऽन्न महर्घता।
नव्य मुद्रा प्रकाशः स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः॥

आगे फाल्गुन कृष्ण ४ सोमवार ता० २२ फरवरी १९५४ ई० को राक्षसगणमें ही यह शुक्र उदय होगा। इसका परिणाम ६ मास तक राष्ट्रके लिए अनिष्टकर सिद्ध होगा। देशमें अशान्ति विग्रह पारस्परिक मतभेद और अनावृष्टि, भ्रष्टाचार, व्यभिचार बहुत बढ़ेगा। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात होंगे। दुर्भिक्ष अर्थसंकट और बेकारीसे श्रमिक वर्ग, बुद्धिजीवी तथा विद्यार्थी वर्गमें असन्तोष बढ़ कर भयंकर कांड होंगे। सौराष्ट्र, मालव, सिन्ध बंगाल, आसाम, नेपाल, बिहार, पंजाब और मध्य देशमें उत्पात विग्रह तथा राजा प्रजामें संघर्ष होगा। किसी व्यापारिक केन्द्रमें तीन दिन तक कारणविशेषसे व्यापार बन्द रहे और किसी श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु होना भी सम्भव है—

गुर्जरे मुद्गलभयं दुर्भिक्षं द्रव्यहीनता।
पञ्चवर्ण पट्टसूत्रं मूल्ये नापि च दुर्लभम्॥
श्रीफलं दुर्लभं मृत्युः श्रेष्ठ पुंसश्च कस्यचित्।
उत्पातादिषु देशेषु सिन्धुदेशेऽति विग्रहः॥
दिनत्रयमवाणिज्यं विग्रहो मालवादिके॥

मार्गशीर्षसे आगे अन्न धान्य वस्त्रादिमें महर्घता और कई देशोंमें दुर्भिक्ष तथा उत्पातोंके समाचार सुनाई देंगे। सुवर्ण चांदी जूट शेयर आदिका बाजार भी तेजीकी ओर रहेगा। मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षमें दशमी तिथि वृद्धि है और मार्ग० शुक्ल पौष शुक्ल माघ शुक्ल तथा फाल्गुन शुक्लपक्षमें बराबर तिथिक्षय हुआ है, यह राजा प्रजामें अशान्ति, युद्धभय, दुर्भिक्ष और छत्रभङ्ग कारक है—

मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते।
तदा युद्धाकुलापृथ्वी प्रजा क्रन्दन्ति नित्यशः॥
मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभङ्गं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥

मार्गशीर्ष मासमें पांच शनि और पांच रविवार तथा पौष मासमें ५ मंगलवार और पौष कृष्ण अमावस्याको भौमवारका होना भी संसारमें दुर्भिक्ष और अन्नादिकी मंहगाई तथा उत्पातका सूचक है। यथा—

पञ्चार्काः पञ्च वा भौमाः पञ्च वा मन्दवासराः।
दुर्भिक्षं भयमादेश्यं तदा शेषा शुभावहाः॥
अमावास्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे।
यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्य महर्घता॥

पंजाबकी राजधानीका उद्घाटन

पंजाबकी नई राजधानी चन्डीगढ़का उद्घाटन महोत्सव महामहिम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीके करकमलों द्वारा आश्विन कृष्णा अमावस्या बुधवार ता० ७ अक्टूबर १९५३ को सायं साढ़े चार बजे कुम्भ लग्नमें सम्पन्न हुआ। ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे कृष्णपक्षकी चतुर्दशी अमावस्या नष्ट चन्द्र होनेके कारण प्रत्येक शुभकार्यारम्भके लिए वर्जित की गई है। क्योंकि संसारकी आत्मा सूर्य और मन चन्द्रमा है। यह बात कपोलकल्पित नहीं, अपितु वेद प्रमाण सिद्ध है—

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' 'चन्द्रमामनसोऽजायत'

जिस कार्यके आरम्भमें मन क्षीण या विकृत हो तो उसकी पूर्णरूपेण सिद्धिमें शंका रहती है। मन ही सिद्धि असिद्धि एवं बन्ध मोक्षका कारण है—

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"

इसीलिए आर्यावर्तके आस्तिक सम्राटसे लेकर एक साधारण ग्रामीण जन तक अपने प्रत्येक मांगलीक कार्यारम्भ एवं यात्राके समय चन्द्रबलका अवश्य विचार करते हैं। अत्यावश्यकतामें भी नष्ट चन्द्रमामें मंगल कार्यका नषेध महर्षियोंने बतलाया है—

नष्टे चन्द्रे तथा शुक्रे नष्टे चैव बृहस्पतौ।
मङ्गलानि तथोद्वाहं त्वरितोऽपि न कारयेत्॥

प्रथम तो अमावस्या ही निषेध और फिर श्राद्धपक्ष (पितृ पक्ष) तो वैसे ही अमंगल सूचक। पंजाबमें जहां आश्विन कार्तिक मासमें विवाह हो जाते हैं वहां भी इन श्राद्धपक्षके १५ दिनोंमें तो विवाहादि मंगल कार्य नास्तिक लोग भी नहीं करते। फिर हमारी समझमें नहीं आया कि ऐसे अमंगल समयमें भारतके राष्ट्रपति द्वारा विश्वके एक नवीनतम नगर पंजाबकी राजधानीका उद्घाटन करानेमें उच्चाधिकारियोंने क्या मंगल सोचा?

स्वतन्त्रता प्राप्तिका दिन १५ अगस्त भी श्रावण कृष्ण अमावास्याको था। परन्तु वह समय तो हम लोगोंने जैसे तैसे करके अमावस्याके सूर्योदयसे पहले १४ की अर्धरात्रिमें गुरुपुष्यामृतयोग और स्थिरलग्नमें निश्चित करवा दिया था। उसीका परिणाम है कि अनेक आपत्तियां आने पर भी स्वतन्त्रता स्थिर रह सकी है। फिर भी नष्टचन्द्रमाका प्रभाव तो हुआ ही। अभी तक अधिकारी और प्रजाका मन शुद्ध नहीं है। दल-बन्दियाँ और असद्भावना तथा पारस्परिक मनोमालिन्य बढ़ता जा रहा है। एक वर्षके अन्दर ही गांधीजीका देहावसान हो गया था। यदि राजधानीका उद्घाटन अमावस्याको न करके एक दिन बाद ता. ८ अक्टूबरको प्रथम नवरात्रारम्भके शुभ समयमें कर दिया जाता तो कितना अच्छा था। जहां राजधानीका नाम चण्डीगढ़ रक्खा गया है वहां होना तो यह चाहिए था कि पहले शतचण्डी वा सहस्र-चण्डी करवा कर फिर राजधानीका उदघाटन होता या कमसे कम नवरात्रका शुभ समय तो लिया जाता। परन्तु होता वही है जो प्रकृति करवाना चाहती है, इसलिए किसीको भी दोष नहीं दिया जा सकता। शुभाशुभ समय और ग्रहगति केवल भावी घटनाओंको सूचन मात्र करती है। राजधानीके उद्घाटन समयकी ग्रह स्थिति निम्न है—

स्थिर लग्न है और लग्नेश शनि नवममें उच्चका है अतः राजधानीका अस्तित्व स्थिर रहेगा और आठ वर्षके बाद इसका गौरव बहुत बढ़ेगा तथा यह विश्वका एक नवीनतम सुन्दर नगर बनेगा इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु सूर्य चन्द्रमा दोनों अष्टम है और जन्मकाल से ५ वर्षतक चन्द्रमाकी दशा ही रहेगी, अतः आरम्भमें शासन-सूत्र सञ्चालकोंके सामने बड़ी विषम समस्या उत्पन्न होगी। वर्तमान मंत्रिमंडल इस चन्द्रदशामें समाप्त हो जावेगा। किसी बड़े उच्चाधिकारीकी मृत्यु होना भी सम्भव है। प्रथम वर्ष मुख्य मंत्रीके लिए बड़ा संघर्ष कारक रहेगा। चन्द्रमा मन है और प्रजा-सत्ता कारक भी, तथा सूर्य आत्मा और राजसत्ता कारक, ये दोनों अष्टम गये हैं अतः शास्य और शासक

(राजा प्रजा) दोनोंमें पारस्परिक स्नेह सद्भावना नहीं रहेगी। अधिकारारूढ़ पक्षमें भी मनोमालिन्य बढ़कर कटुता उत्पन्न होगी, एक दूसरे पर आक्षेपसे शासन शकटके चलने में गतिरोध उत्पन्न होगा। मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। प्रजामें आर्थिक संकट बढ़ेगा। साम्प्रदायिक संघर्ष होगा और पंजाबके पश्चिमोत्तरीय भागमें बड़ी विषम स्थिति उत्पन्न होगी। चन्द्र महादशा समाप्त होनेके बाद पंजाबका सीमा विस्तार होगा, उस समय पटियालाराज्य-संघ और हिमाचल पंजाबमें सम्मिलित हो जाना सम्भव है। नवम वर्षसे पंजाब और पंजाबकी राजधानीका गौरव विशेष रूपसे बढ़ने लगेगा।

आन्ध्र राज्यका उद्घाटन

आश्विन कृष्णा ९ गुरुवार ता० १ अक्टूबरको प्रातः ९ बजे तुला लग्नमें प्रधानामात्य श्री नेहरूजी द्वारा नये आन्ध्र-राज्यका उद्घाटन हुआ। इस दिन रिक्ता तिथि नवमी और गुरुवार होनेसे मृत्यु योग बन गया था। अमंगलकारक श्राद्ध पक्ष था ही। भाग्येश, लाभेश सूर्य बुध बारहवें और सुख भावमें राहु पड़ा है। इन सब योगोंको देखते हुए हम कह सकते हैं कि इस राज्यकी स्थापना भारतके लिए मंगलकर सिद्ध न होगी। और आन्ध्रके लिए भी यह शुभ चिह्न नहीं है, वहां आर्थिक संकट बढ़ेगा। नेताओंमें पारस्परिक संघर्ष होगा। आरम्भमें ही शत्रु स्थानाधिपति गुरुकी महादशा है अतः पड़ौसी प्रान्तोंसे संघर्ष बढ़ेगा। मंत्रि-मंडल भंग होगा। मुख्य मंत्री श्री टी. प्रकाशमके लिए आरम्भिक तीन वर्ष शुभ नहीं हैं; इस अवधिमें या तो वे अपदस्थ हो जावेंगे, या शरीरान्त होना भी सम्भव है। आन्ध्र और पंजाबकी कलुषित राजनीतिसे भारतके महामात्य श्री नेहरू जी विशेष चिन्तित होंगे। वैसे तो राजस्थान, काश्मीर, बंगाल, की समस्या भी उनके लिए कम चिन्ताकारक नहीं है। अब श्री नेहरूजीको राजयोगकारक मंगलकी महादशा इसी वर्ष १९५३ के नवम्बरमें समाप्त हो रही है। अतः राजनैतिक उत्थानका समय यहाँ पूरा हो जाता है। यह बात हमने आज से ८ वर्ष पूर्व सं० २००२ के 'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षाङ्क और अपने पंचांगमें भी स्पष्ट लिखी थी। तदनन्तर दो वर्ष पूर्व सं० २००८ सन् १९५१ ई० में जब श्री नेहरूजीने संसदमें ज्योतिर्विज्ञान पर प्रहार किया था उसका उत्तर देते हुए 'श्रीस्वाध्याय' के ११ वें वर्षके 'नववर्षाङ्क' पृष्ठ १०० पर जो कुछ हमने लिखा था उससे पुराने पाठक तो परिचित ही होंगे। नवीन पाठकोंकी जानकारीके लिए उस पृष्ठकी कुछ पंक्तियां हम यहां उद्धृत कर देते हैं। वे पंक्तियां निम्न हैं—

"........हां, अपने पाठकोंको हम यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि श्री नेहरूजी या किसी भी समाज या व्यक्तिके मानने या न माननेसे ज्योतिर्विज्ञानका कुछ भी नहीं बनता बिगड़ता। नेहरूजी चाहे भले ही न माने पर पाठकोंको स्मरण होगा कि हम 'श्रीस्वाध्याय' और अपने पंचांगमें सन् १९४६ से पहले और बादमें भी कई बार स्पष्ट लिख चुके हैं कि—'श्री नेहरूजी के जीवनमें सबसे अधिक महान् उत्कर्ष यश प्रतिष्ठा और राजयोग कारक मंगलकी महादशा है जो सन् १९४६ से प्रारम्भ होकर १९५३ ई० तक रहेगी। इसमें उत्तरोत्तर उनका उत्कर्ष बढ़ता जायगा।' तदनुसार जो हुआ वह पाठकोंके सामने ही है। अब इसी विज्ञानके आधार पर हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि मंगलकी महादशा समाप्त होने पर सन् १९५३ से आगे आजके समान श्री नेहरूजीकी लोकप्रियता और एकाधिपत्य स्थिर न रह सकेगा।... "

श्री नेहरूजी राष्ट्रकी एक असाधारण विभूति हैं, सैद्धान्तिक एवं धार्मिक विषयोंमें मतभेद होना दूसरी बात है, किन्तु उनके व्यक्तित्व और त्यागके सामने सबको नतमस्तक होना पड़ता है। हम सर्व-साधारणमें भय उत्पन्न करनेके लिए यह कुछ नहीं लिख रहे हैं। अपितु वस्तु स्थितिका दिग्दर्शन और ज्योतिर्विज्ञानकी सत्यता सिद्ध करनेके लिए लिखा है। उज्जैनके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यासने भी ता. २० सितम्बर के 'हिन्दुस्तान' में श्री नेहरूजीकी जन्म-कुण्डली दे कर प्रवेश होने वाले ६५ वें वर्ष और राहु महादशामें भय व्यक्त किया है, तथा ज्योतिर्विज्ञान-वेत्ताओंसे भी इस पर

विचार विमर्श करनेको लिखा है। हमारे विचारमें ता० १५ नवम्बर ५३ से प्रवेश होने वाला ६५ वां वर्ष श्री नेहरूजी के स्वास्थ्य एवं शरीरके लिए तो हानिप्रद नहीं है परन्तु इसमें विरोधी वातावरण बढ़ेगा और प्रशासनिक कठिनाइयां उग्ररूपमें उपस्थिति होंगी। अभी राहु महादशामें राहु का अन्तर २ वर्ष ८ मास १२ दिन तक रहेगा। यद्यपि राहु व्ययमें षष्ठेशसे दृष्ट होनेके कारण विरोधी भावना और कठिनाइयाँ अवश्य बढ़ाता है तथापि राहु उच्चका है, भाग्येश गुरुसे दृष्ट भी होनेके कारण यह राहु योगकारक भी बन गया है—

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेश संयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमौग्रहौ॥

इसलिए विरोधी वातावरण बढ़ने और लोकप्रियता न्यून होने पर भी यह अन्तर श्री नेहरूजी पार कर जावेंगे। आगे सन् १९५६ से प्रवेश होने वाला राहुमें गुरुका अन्तर श्री नेहरूजीके लिए हमें विशेष भयावह प्रतीत हो रहा है, क्योंकि गुरु भाग्येश होकर त्रिक् (शत्रु) स्थानमें केतुके साथ पड़ा है—

'यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिष्फे
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः।'

श्री नेहरूजीका जन्म लग्न और राशि कर्क है। पौष मास जनवरीमें तुला राशिमें शनि मंगलकी युति हो रही है वह श्री नेहरूजीके लिए अच्छी नहीं है, अतः जनवरीसे जून तक श्री नेहरूजीको अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें विशेष सावधान रहना चाहिए।

हम पंडितजीसे प्रार्थना करेंगे कि आपको राहु महादशा प्रारम्भ हो रही है और शनि चतुर्थ (ढय्या) चल रहा है, अतः आप दाहिने हाथमें सुवर्ण अंगूठीमें विशुद्ध नीलम, गोमेद और पुखराज धारण करें तो आपके लिए श्रेयस्कर होगा। भगवान् काल या समय बड़ा बलवान् है, वही मनुष्यको राजा और रङ्क बनाता है, तथा समय सदा एक सा किसीका नहीं रहता—

कालः समविषमकरः परिभवसम्मानदः कालः।
कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च॥

अनुभूत तेजी मंदी और राशिफल

[लेखक—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन सामुद्रिक विशेषज्ञ सम्पादक 'भविष्यदर्पण']

शारीरिक अस्वस्थताके कारण 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा पाठकों की सेवा करनेमें नहीं आती इसका हमें दुःख है फिर भी इस बार जनरल स्थिति लिखकर सेवा की जा रही है।

आषाढ़ी पूर्णिमाको ग्रहण था किन्तु बादलोंके कारण न दिखाई देनेके कारण ही यह अभी २९ सितम्बर तक मन्दी का दौरा चला था। इसी दिन बुधने पश्चिममें उदय होकर मन्दीको समाप्त किया। ग्रहण कालमें बादल होनेसे सदैव ऐसा होता रहा है और होता रहेगा। जब कि ग्रहण पूरा हो तो ४।४ दिन, पौना हो तो ३।३ दिन, आधा हो तो २।२ दिन, चौथाई हो तो १।१ दिन आगे पीछे बादल वर्षा होने पर ग्रहण प्रायः श्रेष्ठ मन्दा (खाद्य वस्तुओंमें) लाता है। ग्रहणके पश्चात् ऐसा होने पर निश्चय ही मन्दा आता है।

आश्विन शुक्ला १० शनिवार दशहरा क्षय राजा वा महान् नेताओंको महान् भयकारी सिद्ध होगा, जैसा कि गतवर्ष भी दशहरा क्षयका फल प्रत्यक्ष देखनेमें आया। तारीख १४ अक्टोबर को गुरु वक्री हो चुका है अब २६ अक्टोबरको बुध भी वक्री होगा यह योग सम्बत् २००९ मार्गशीर्षमें भी बना था तब श्रेष्ठ मन्दी ग्वार मटर अरहर उड़द मूंग सरसों अलसी मूंगफली चांदी सोना आदिमें आई थी, फिर कार्तिक मास तो चांदी सोनामें प्रायः मन्दा लाता है। साथ ही यहां दीपावली भी शुक्रवारी है जो कि प्रायः वस्तुओंमें विशेषकर अन्न तिलहनमें अच्छी मन्दी लानेकी अपूर्व क्षमता रखती है। हां, यदि इस दिन दीपमालिका समय हवा इतनी तेज चले कि दीपक बुझ जावें तो तेजी कारक भी समझ सकते हैं, किन्तु अन्तिम परिणाम मन्दीका ही रहेगा। ता० ९ नवम्बरको शनिके उदयसे मन्दी कारक योग है, प्रायः सब वस्तुयें मन्दी रहेगी। वृश्चिक संक्रान्ति तीसरे

वार चौथे नक्षत्र और रात्रिमें लगी है, पं० मीठालाल व्यास ने अपने 'सन्क्रान्ति प्रकाश' में ठोस मन्दी कारक माना है, अन्न तिलहनके भाव सितम्बरके नीचे भावोंसे भी नीचे भाव आने की सम्भावना है। अच्छा हो कि २६ अक्टोबरको ही मासिक मन्दी लगायें। मार्गशीर्ष वदीमें चौथ मंगलवारी सप्तमी शुक्रवारी अन्न तिलहन ग्वार, मटर, चांदीमें तेजी लावे तो आश्चर्य नहीं। आगे ३० नवम्बरको गुरुदेव पुनः वृष राशि पर आवेंगे बादल वर्षा योग है। गत ६ अप्रेल को आते ही तेजीकी थी, अब उसी राशि पर आ जानेसे प्रथम किये फलके विपरीत फल अर्थात् श्रेष्ठ मन्दा होगा, किन्तु आगे तुला राशिमें मंगल आते ही वर्षा कारक होते हुए भी शनि मंगल योग हो जानेसे गुवार, मटर, अरहर, मोंठ, मूंग मसूर, सरसों मूंगफली, अलसी, रुई, रेशम, जूट, बारदाना एकदम वढ़ने लगेंगे यहाँ सीधी मासिक तेजी लगायें, चांदी सोनामें नजराना लगावें। भयानक तेजी मंदी होगी।

ता. ७ दिसम्बरसे शनि मंगल योग चांदी सोनामें श्रेष्ठ मन्दा लावेगा, सम्भव है कि बैंङ्क बेचने लगे। जब कि २ जनवरीको इन दोनों की अंशात्मक युति होते ही एकदम तेजीका बोल-बाला रहेगा। शनि मंगल योग लूट पाट चोरी अग्नि भय विस्फोट भूकम्प आदि निश्चय ही दिखायेगा।

आगे वृश्चिक राशिमें मंगल पहुंचते ही महान् उथल पुथल होगी। वर्षा भी होगी, राहु भी ता० ३० जनवरी सन् ५४ को बदल कर बाजारोंमें पुनः भारी घटा बढ़ी करेगा, वर्षा भी होगी। आगे पौषी पूर्णिमाको चन्द्रग्रहण होगा। 'कर्क राशि पै मंगलपारो। ग्रहण करै दुर्भिक्ष विचारो।' भारी तेजीका प्रतीक है। सारी वस्तुयें एकदम तेज होंगी। किन्तु बादल आदि होने पर फल विपरीत होगा। लाभ हानिका उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा।

नवम्बर मास तुला कुम्भ सिंह धनु राशिवालोंको नाना-प्रकारसे सुखदायी सिद्ध होगा। तथा मिथुन मकर वृश्चिक वृष, राशि वालोंको महा अशुभ रहेगा। दिसम्बर मास सिंह वृष धनुराशि वालोंको श्रेष्ठ तथा कर्क मीन कन्या तुला मेष वृश्चिक राशिवालोंको महानेष्ट रहेगा। २ जनवरी से व्यापार होशियारी से करें या बिल्कुल न करें। जनवरी मास मकर कुम्भ मिथुन तुला राशि वालोंको महानेष्ट तथा वृश्चिक सिंह मीन राशि वालोंकों महाश्रेष्ठ रहेगा।

न्यूयार्क काटन फीगर की तेजीमंदी

[श्री गरोश, विद्यासार दैवज्ञ]

नवम्बर १९५३ ई०

तारीख	वार	ओपनिंग फीगर	तेजी मन्दी	क्लोजिंग फीगर	तेजी मन्दी
२	सोम	२-३-६-९	सम	२-३-६-९	सम
३	मंगल	२-३-६-९	मन्दी	२-३-६-९	मन्दी
४	बुध	२-३-६-९	,,	२-३-६-९	,,
५	गुरु	१-४-७-०	,,	१-४-७-०	,,
६	शुक्र	१-४-७-०	,,	१-४-७-०	,,
९	सोम	१-२,५-८	,,	१-२-५-८	तेज
१०	मंगल	२-३-६-९	,,	२-३-६-९	मन्दी
११	बुध	२-३-६-९	तेज	२-३-६-९	तेज
१२	गुरु	१-४-७-०	मन्दी	१-४-७-०	मंदी
१३	शुक्र	१-४-७,०	,,	१-४-७-०	,,
१६	सोम	२-३-६-४	मन्दी	२-३-६-४	मन्दी
१७	मंगल	२-३-६-९	,,	२-२-३-९	,,
१८	बुध	१-४-७-०	,,	१-४-७-०	,,
१९	गुरु	१-४-७-०	तेज	१-४-७-०	तेज
२०	शुक्र	१-२-५-८	मन्दी	१-२-५-८	मन्दी
२३	सोम	२-३-६-९	,,	२-३-६-९	,,
२४	मंगल	२-३-६-९	,,	२-३-६-९	,,
२५	बुध	१-४-७-०	,,	१-४-७-०	,,
२६	गुरु	१-४-७-०	तेज	१-४-७-०	तेज
२७	शुक्र	१-२ ५-८	,,	१-२-५-८	,,
३०	सोम	२-३-६-९	सम	२-३-६-९	तेज

सूचना—स्थानाभावके कारण यहां केवल एक मासका ही विचार दिया गया है। आगामी अंकमें पूरे तीन मासका दिया जावेगा।

दूसरी बार [illegible]

महामहिम आचार्य

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रीय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रीय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति किंकान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय-) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंकोमार्ग व्यय सहित ।=) में।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा

मूल्य २) मार्ग व्यय ॥=) अलग।

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन

'श्रीराष्ट्रालोक' का भाष्य

यह ग्रन्थ विश्व-साहित्यमें एक अद्भुत है। सोलह वर्ष पहले इसका निर्माण हुआ था, यह संस्कृतमें है। इस अद्वितीय ग्रन्थको राष्ट्रभाषानुवादके साथ प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। इस सम्पूर्ण विशालग्रन्थ के प्रकाशनमें लगभग १२०००) बारह सहस्र रुपये व्यय होंगे। यह सम्पूर्ण व्यय एक ही महानुभावका होगा, वे महानुभाव ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय वर्णके हों, साथ ही सच्चरित्र एवं आर्यप्रकृतिका होना आवश्यक है। उनका सचित्र परिचय भी इस ग्रन्थके प्रारम्भमें रहेगा। ग्रन्थकार के साथ ही इस ग्रन्थके प्रकाशकका नाम भी विश्वमें अमर रहेगा। उक्त नियमानुसार जो सज्जन इस ग्रन्थ प्रकाशन द्वारा राष्ट्र एवं साहित्य सेवाके साथ अपना जीवन सार्थक बनाना चाहते हों वे निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें।

व्यवस्थापक---'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ......इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है ...... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ......।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी राज्यपाल उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है। .... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।.........."

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी भू० पू० शिक्षामन्त्री उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकल रहा है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किंवा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"...... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ......"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा—"......'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।....."

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"... 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।...... प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।...... आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"..... 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर श्रीस्वाध्याय [illegible] (शिमला) से प्रकाशित।